MSS No. 277 Subject Hindi

Name of MSS बिहारी सतसई

Author हरिकवि

Period ____ Folios 264

Script (Hindi) DEVANAGIRI Source Prithipal Singh

Missing Folios ____

1

म्र...
...
...

No 34 277

B-chari Satsai

Tika Hari Das

Leaves 704

pages 524

...वसे

277

277

1

मूल ॥ जो ग्रंथ सा बहि पे सरहो ॥ ३ ॥ टी॰ नंदकिसोर बिहारी सदा
यह बानक मोहि यमा उवसो ॥ इहि प्रकास या दोहा मैं कवि ध्या
न करि उपास्य कृष्णचंद्र को ग्रंथ करौ है ॥ सीस बिषै मुकुट कटि कै बिषै
काछनी है करि बिषै मुरली उर मैं माला है यह जो बानक बना
बरै नटवर बेष है या बेष सो हे बिहारीलाल तुम सदा मेरे मन मैं
बसो यह स्वभावोक्ति अलंकार जाको जातक हेत है अंग्रपाचंतर
मैं जै सो जाको रूप गुण तैसो कहैं सु जाति ॥ कितनेक टीकाकार ऐसे
ही या दोहा को अर्थ करत है सीस सो जै से बानक बनावै
सो सब निकट और ठौर जा दोन ही या तरह सो हमारो मन नम
बिषै बसै तुम बिना मन और ठौर औ दो लगै नहि या ही तरह क
र काछनी इत्यादि लगावै या बानक सो तुम मेरे मन बसो
कि काहू या करे बानक मैं रहु मेरो मन बसौ पंडित ताकी उक्ति ना
कसो है प्रात समै नायक आसे है तब नायिका कहै है पूर्वार्ध
को अर्थ पर बानक जो तुम्हारो नटवर भेष पराये केरा

a

जो रावे कै भेष तासो मेरे मन मैं बसो मेरे घर मैं मेरे पास म
त बसो को तुम बिहारीलाल हो ठौर ठौर बिहार करत हो
कि वा गीक ही ए दूसरी नारि ताको हार गल मैं राषो है और त्या
ल है रात जगे हो ता सो भोर लाल है पान की पीक जावक सुं
दरी लागी है तासो लाल भये हो ॥ मूल दोहा ॥ मोहन
मूरति स्याम की अति अद्भुत गति जोय ॥ बसत सुचित
अंतर तऊ प्रतिबिंबत जग होय ॥ ४ ॥ प्रतमुत्तर स भगवान की
व्याकुलता वर नन भक्त बचन ॥ कवित ॥ ऐसे सब और तिहू
र मैं है ब जैसी बा नंदकिसोर पै पेषी ॥ ताहि बिलोक कै

सोन की मूरत को वरनै, प्रतिरूप विसेषी॥ और कहूं कहे हो स्व दरस्या
म की, अदृश्यता रीत बताय, अवरेषी॥ अंतर राषी वस्त्र
लिये कै तउ जगमै प्रतिबिंबत देषी॥ वार्ता॥ गुरु सिष्य
को कहत है, स्याम श्री कृष्ण तिनकी मूरत मोहनी है, ताकी
गति कृपा, अति अदभुत है, सो तहु जोय देषसु दर चित के
अंतर भीतर रहत है, भीतर भीर रहत है, तोऊ जग मै प्रतिबिंबत
होत है॥ प्रतिबिंब को अर्थ लखत नासे भासत है, जो कोउ के हृदे
मै भगवान आवत है, ता हि सव जानत है, परमासो ही है इह अति
अदभुत का [illegible] मो दीपक फानूस मै रहत है, बार भी भासे है [illegible]
मान जानी ये, अन्य लक्षण॥ अन्वय पद संबंध पद निका
टर है, के दूर, अर्थ करत मिल जात है, याह जानत सब सूर॥
पद जाहि पद सो अन्वत हो, ताके निकट है, किंवा दूरि रहै, अन्व
य न करे तो न जक धारत इत्यादि दोहा को न लगै, अंसे लगा
इये स्याम की अति मोहन मूरत है, और के देषत मोहत हो
त है, याकी अदभुत गत देषसु दर जो [illegible] चित ताके अंतर भ
वसत है, जगमै भासे है, जो वस्तु [illegible] वस्त्र मै रहै, सो बाहर भा
से नही, को [illegible] मै दीवर है बाहर भासे नही रहा विसेष अलंका
र है, चित को [illegible] त आधार है, [illegible] से आकास मै मूरत अदृष्ट
है, तीसरे अर्थ॥ स्याम की मूरत प्रतिमा मोहनी है, ताकी गति
कृपा अति अदभुत है, देषत प्रतिमा को भाव देव बुधा विवाको
पी गहे प्रतिमा के अंतर मध्य जो सु चित कहीये निरमल चित
मत्ति को वसै तेउ तौ भी जगत मै [illegible] प्रतिबिंबत होत है,
भासमान होय सब वा [illegible] को विधमानै किंवा वा [illegible] को संप्रन

2A

जगत प्रतिबिंबत होय आरसा न होय तौ नौ लोक देखै ऐसी
सिद्ध होय ॥ चतुरार्द्ध सो इन सूरत स्याम की है ताकी प्रति
अद्भुत गति देखो वसत तुव चित अंतर सु चित को ऐसो स्वभाव
अंतर हृदै मैं वसत है यह सु चित है सु चितको अनुकरिलै सो कहो है
गर लघु लघु गर होत है तौ भी जग मैं प्रतिबिंबत होत है कहै सो अ
न मैं वसै है अंतर ता सु तौ लोक मैं जाहर होत है यह अंगे अद्भुतता
पंचमार्द्ध ॥ नायक मान छुडावन आयौ है मानिनी सो नाय
का कैं कबहू की साषी कैवें ॥ [illegible] स्याम की [illegible] स्याम की ती
[illegible] को [illegible] स्याम की है [illegible] को कहि है बाधीरस
[illegible] रस [illegible] रूप मैं सो इन सूरत तो है [illegible]
[illegible] प्रति अद्भुत गति की अंतर प्रति [illegible]
[illegible] जो [illegible] है जो [illegible] कहै [illegible]
[illegible] है यह [illegible] प्रति अद्भुत गति [illegible] ताके जोइ को
अद्भुत देखत तुव चित नायक के हृदै चित मैं वहै है अंतरत [illegible]
अंतर [illegible] है यह वात कहि ते जगत बहुत [illegible] सबी
[illegible] ता मैं प्रतिबिंबत होत है [illegible] जाहर होत है जगत कहै [illegible]
[illegible] जानो जात है ॥ [illegible] ॥ जग जानी विपरीत [illegible]
[illegible] सबी के जगत [illegible] होकि [illegible]
नायक तेरे चित मैं वसै है तौ [illegible] अंतर राजत है ॥ [illegible] ॥ स्या
[illegible] प्रति [illegible] है जे [illegible] राधा [illegible] जिनकी प्रति
अद्भुत गति देखो [illegible] चित वै अंतर वसत है [illegible] वैसेही
[illegible] ॥ तजतीर [illegible] हरि राधा कांत न [illegible] कहि [illegible] राग ॥ [illegible]
[illegible] कुंज [illegible] होत [illegible] ॥ ४ ॥ यह [illegible] है ॥

वि
३॥ टि

३

कवित्त ॥ तीरजमुना सरद ऋतु को है कैसो सरद ऋतु वीरजमुना सरद ऋतु
जुवन सोभा की है लग मै ॥ राधा वनमाली की सरस ऐसे रस्याम उत
सकल निकुंज कैलि सत सार जग मै ॥ तासो करवीत यह निगम प्र
सिद्ध विधि और विधि सकल से नहि तुरत जग गये ॥ उगर ग प्रति होत
प्रगट प्रयाग गाजिन के मरत के लकुजन के मग गये ॥ टी० प्रका
स ॥ उर सिद्ध सो उव है सकरत है है जमुना तीर जमुना के नजहा
उह हरि राधका को जो है तन ॥ और दत ता मे अनुराग करि सेवा
र करे सो कहा सुंदर अंग न को वसाव है कहा सुंदर कीत है जो सि
ब करे है तीरजमुना मे विशेष परत है ता वरन के है है टीका वृज विषे
क्रीडा करवे को जो निकुंज ता को है मग पंथ तहा पग पग मे
एक एक पग मे प्रयाग जो है धरनी ता मे प्रयाग जो है तीरथ राज सो
होत है ल द न नाहो ता को कल होत है ॥ अर्थ पद कवित्त को सम
जना यव जमे वैठ राधा कृष्ण सो प्रेम कर काव लिंग प्र ल का
र है ॥ काव लिंग जव उत सो अपुष्ट मरजमुन होय ॥ तीरथ
प्रयाग को जगत सो समरजमुन की भीतरा ये ॥ दूहा ॥ रैग्रंथ
उद्धव जी व्रज सो जाय के श्री कृष्ण प्रति व्रज देवीयन की रक की
त कहत है ॥ जे राधका जी जानती के र तुम न हि प्राननाथ है
हरि राधका जी निहि जमुना के तट जी हो आली कहा व कर राव तो
जहि प्राननेद ती को जह मात ॥ औ धुनी मे अनुराग करि के प्र
वउल की कहा रह लाट है ॥ जिस वृज विषे क्रिडा करीवे को जो है निकुंज
ता मे जो है मग पंथ ता मे पग पग मे प्रयाग होत है विछली ल्ली
ल आवे है उधजव सो रोदन करे है स काररंग है से तर अरे र
र ते जो कजल दिये पो ता सो स्याम से जहा पावन मेवरिके जा

प्रा

वकसो मिलकै लाल होत है गंगा जी कौ जल सेत जमना जी
को स्याम ता तें प्रयाग होत है ॥ तीसरो अर्थ ॥ हे सषि अपने का
र्य हेत अवर को अपवीत प्रकार न यैं तीर ष्यनाम दरसन को है
॥ दोनो पाये दोहा ॥ नायक और इष्ट्रि को देषै है तब नाय
का के पक्ष की सषी कहै है हे सषि तनु दत जोहै नायका तनुका
दोहै दुतजा में औसी जो नायका अर्ध ते ताको तीर ष्य दरस
न कौ तें सो राधका में अनुराग कैसे सोभा को अधक करे है
जहि राधका हो वृजके लनि कुंज मयग जो है सो वग का में प्रया
ग होत है देषकै भाव धर मो कहो है जहां भाव धरे है तहां देषको
प्रतिबिंब सेत स्याम भाव को प्रतिबिंब लाल परे है ता सों प्रया
ग होत है मन में यी प्रतिबिंब परे है उपर रिया सीकू सो भाग कहे
सो ॥ चउरा र्थ ॥ जमुना के तीर नायक और नायका न को देषत है
तहां नायका की सषी कहै है जमुना के है तीर ताको नायक प
हरि कहिये आपनी प्रयासो मोमय मानके डरै है सो पहरे है कार्य
नाके अर्पित जे जो नायका सुमै गी मारग करै गी राधका
तनु दति पेतसी है द्युति जामै ते नायका को राधका को अर्प
राजी करके का कूं अर्ध कहुन ति कर को अर्थ करै जैसे
को उवात कहै है ता पर लानी बात कहि कै अनुराग जैसे रा
धाका को वृजके लनि कुंज मग पग पग मैं प्रयाग होत है असै
सी सोभा सो अर्थ पिछलाजानी ते ॥ मूल ॥ दोहा ॥ सघन कुं
ज छाया सुषद सीतल मंद समीर ॥ मन है जात अजौं वहै
वा जमुना के तीर ॥ ५ ॥ यह पूर्वानुराग है संजोग मै जमुना के ती
र सो चित की वृति होती [illegible] सी सो व ह भावना के रवै सो ही होत है

जो

४ वि
टि
4

कवित्त ॥ सघन निकुंज छायो सुखद सुहायो अह मंद तासु भृंग गुंज
पुंज मधुपनकी ॥ अकूलत जमुंज अति बिंदन के वृंद आमे विवि
ध विहार तैसे सुगंध कुसुमनकी ॥ लतकाल ललित छवि ललित
ल्लिहल हात जे सुतोवि हारसुमंद के सुवनकी । कुलप्रापप्रा
रे की सीवे ऊ जमुना के तीर अरु निरख हो ही गति व हंसनकी ॥
वार्त्ता ॥ श्रीकृष्ण मथुराको गए तब विहार की कुंज देख नायका
वे न हे सखी सघन निवड कुंज है ताकी छाया भी सुखद है तहा सी
तल मंद सुगंध पौन है मन है जात अरु जो वै है नव आवे पदी
त व जमुना के वा तीर जो है कुंज तहा नायक को वै ठ्यो पावे
पदी अरु जो अवलव है मन है जात है उहा वे बैठि पावे जे
विरहनी के सीतल मंद समीर सुखद को कहि वे जब
जान्यो नायक उहा वे ठ्यो है तब विरह को भयो नास तासो छा
या सुखद सीतल मंद समीर कहो यह हास्य तिप्रलंकार ॥
सुमरन अमहे दे ह जहा लता ना नायक काह ॥ किंवा ॥ नाय
का उहा गइ है नही दुर सो कहतो है सघन कुंज छाया सो
सुखद है अो समीर सुखद है अरु जे अवभजो को उ इहा
जात है ताको मन व है वे सो ही है जात है जो हो श्रीकृष्ण
के रहे जो राजी हो त है अरु सन्तान अरे सो है जा ह देख लागत
है अरु व श्रीकृष्ण उठ के और कुंज गत है जमुना के वा तीर
मो है को अव हे तो है पहु भी है ॥ मंद र है से सुख प्रीत मके
सुख चों नन की उपमा व है ॥ तीसरो अर्थ । बंउ ता नायका
हो कहत है ॥ घन के अव कठोर ता जाको रहे सो घन हम
तुमै देखे बिना दुखी हो त है तुमै देखान हो आवत है ता तें कहा

है सघन कुंज मै बैठी है। या सबद सो नायक कौ है। जाकी घया
उमकौ सबकी देन हारी है। पत्नि कीउ नै। विंग ली है। सो व ताकी
कौं तसो उमसो लसयहे है। कौं। अंग। आछो न। है वचन आछो
न बंडता तो लावता है। कहे बात सो वित बउ अरु बित उच तसमा-
न। जै से खद्योत सो रात कूं समै सो तआवै है। पे। अंग सुंदर नहीं
कि वा जाकी कौं तसबद है बंडन करन वा ली है जा है। यै सब
जाता है। ऐसी उमारे मन वसी है। मेंद महंडु उमरे उनमै
समकते नहीत हासी तछलस मीरहै है। कौ। अपर्य करी यहै
ऐसे पाया है। आए टारा है। करि आए जामी ए मन है। मनकर
जात है। अजो। अवभाव है। वा नायका जहा जाता है। वाकी सच
करि बह्यो। आगुरसो वतावै है। वहदे बोजमना के तीर मै।।२।।
[illegible]
[illegible]।।सूलो। जहा जहा ठाढे होत
बो स्याम सुअ गासिर मौरा।। उमस बिन छिनग है। ऊँ दूत दगता
। अजौ वहठौर।।६। इहा परकी अनुराग श्री कृष्ण देवौ है। तेई ठौर श्री कृ
ष्ण के भावना करि कै मे ज्ञन कौ। अग्रमण करि तहै। सो नायका
कौ सखी कहती है। कवित।। के लसुबसागर मे रे तरंगर मै
परि परी विविधा विधा करित मनोरथनु। तन मन बाढै तो
उमगअनुराग भाग लागत है। मधावा सची को। अनु है। ते अनु।
कृष्ण प्रान प्यारे की दुहाई। आति छवि छायो। जिन जिन कुंजन
मिलत होरी स्यामघन।। तेइ तेइ कुंज अवउन है। विलोके
बिन माइ गाहा रावत हारी कतौ। पजे दृगन।।।। हरि अंकास

वा

है

ह

२

री

रहे देहविहारी को नहीं। जब कछ समय पूरा के गए। तब नायका सखी सों
कहत हैं, जहां जहां स्याम को ठाढो देखें कैं सो है स्याम सुंदर जिनके
सिर को मुकुट है। अति सुंदर रहे हैं अरु मन हूं नहीं तौ भी ठाढे से हैं विनवे
और सो अज्ञो। अम थी दृगन को गहरहत तें हैं। व कहि राखति है वा ठौर
देखन नायक जाइ आवै है ते उनमें नायक को रूप बस आत है
। और ठौर नायक जाय न हि सकै यहां अप्रथम विभावना है।। हे
तु हि भाति विभावना तिन ही कारन का न।। दृगता के गहवे
को कारण नायक सों नहीं ही है कार जा दृगता को गहे नो सोहै
स्मृति अलंकार हू जानी है।। सवैया।। दोहा।। सखी सों कहत गोपाल
कें उर गुंजन की माल।। बाहर लसत मनो पीये दावानल की
गुंजा ज्वाल।।२।। और गुंजन धीरां कै बैन सखी सों।। सवैया।। भागव
डु निरखो पाइ स्वान को आज ही है ए लखां उघरी की। औन
अभाल बत लाजत हैं कछु मोहि तो मैं न की मूरति फीकी।। देख
री मोहन के उर आभा सु तौ माल विराजत गुंजन की नीकी
पी पी हुती अगर अज सुतो वहु ज्वाल मनो वडवा गन ही की।।
हरि प्रकास।। नायका को वचन सखी सों ऐ सखी गोपा
ल के उर विषै छाती विषै गुंजन की पंक्ति सोहत है मानो
पीती वडवानल की ज्वाल बाहिर लसत है। सो कहत हैं रहो
उत्प्रेक्षा सिद्ध वस्तु उत्प्रेक्षा ऐ व वस्तु को दृसत बस्तु की रहे
प्र हां संभावना कहि और की जीये सो उतैं तौ गुंजमाल बस्तु
विषें ज्वाल बस्तु की संभावना उत्प्रेक्षा संभावना बस्तु
है ताका लछन।। वस्तु द्विविध उत्प्रेक्षा तास पद प्रगट उक्ता तास
पद देखा।। संदेह गोपाल के उर विषै दावानल की ज्वाल

5A

तैं अेसे उत्प्रेक्षा मानो उनकी मालाने दावानल की ज्वाला पीवी है सो वा
हरलसत है भगवानने दावानल पीयो न हो औरउ तौ अेक जामें यह उत्प्र
क्षा संभवे है मानो मालामें दावानल पीयो तो सो भी कठोर ज्वाला
हरे मे पहरे है औरनी कोन हो सही जात है तव अेसे उत्प्रेक्षा ॥ नायक के
गरे की माला सपत्नि के गरे मैं देखके नायका कहै है हे सखी गोपाल
के उरकी उजनकी माला या नायका के गरे मे अेसी सोहति है सत है
संभावना करै है मानो मालाने दावानल की ज्वाला पीवी सो वा हरल
सत है को हमारे नेत्र देखबे सो वरत है ॥ मूल ॥ दो० ॥ चिरजीवौ जोरी जुरै क्यो
न सनेह गंभीर ॥ को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर ॥ ८ ॥ सखी
को वेन सखी सो ॥ कवित्त ॥ मानत कौन हमारी कही जह दोउन मांज गु
रु धारे । को घटि है चिरजीवौ कहै छहि हे कसी जोरी विरंच बनाई ॥
है उत वे वृषभानुसुता इत ए हलधारिके बीर बडाई ॥ ८ ॥ हरिप्रकास ॥ सखी
की सखी सो उक्ति ॥ हे सखी जो राधाकृष्ण की जोरी है सो चिरजीवौ जुरे मिले सो
को न होय अति गंभीर स्नेह वे हेत हि है । प्रीत वरोवर है सो भासहि ॥ ला
यक है सो की जोरे वैर ब्याह अरु प्रीत ॥ यामे कोन घटि है दोउ वरोवर है
ऐक वृषभानु की वेटी है वे जो कृष्ण सो हलधर वलदेवजी तिनके वी
र भाई है इहां सम अलंकार है ॥ अलंकार सम तीन विधान जोग
को संग ॥ यहां ववनको मेल नहि भयो जो इनमे वृषभानुजा के सो तो
उनै नंद नंद कहो चाहिए यातमै सखी को अस्न ताहा नायका को वेन
सखी कहै है चिरजीवो इह जोरी जुरै तो क्यो न होय सनेह गंभीर हो तहां
इहा घटको न है एक वृषभानुजा तव नायका की उक्ति है हलधार के
बीर हलधर पद सो गवार जानी ऐ ताको भाउ गवारा ॥ मूल ॥ दोहा

दोउ बरोबर प्रीति तेज परे ताहा को नव है ति तकि सार सार

नितप्रताहे कहा हिरदत वैसावरनमननाकौ॥ चहीं यातें जुगलकिशोर लषि
लोचन जुगल अमेकौ॥ ५४॥ यहि जुगलकिशोर किशोरी को सोभाग्य सौ
उनको आराध्य कहा सबी सबी सो कहत हैं॥ सवैया॥ नित श्री वृषभानसुता नंदला
ल विराजत हैं सुषपुंज छयो॥ कवि कृष्ण कहै मन हीलस हैं कविका उरना
य कहूं गरो॥ सुषदे बहि हासत सवै सजनी विध सो तिन वै अभि लालन हो
ए हहराव विलोकवे के जन में अजीरो मन लोचन कौ तानयो॥ हरिप्रकाश
माह्नि की उह्नि मिं॥ सौ श्री कृष्ण वलभद्र [illegible] कह हे सदा एक ज
हि एक चित्त हिरदत जो है वैसवरन वैसवय क्रम जा [illegible] को जा [illegible] सावरैन कहिक
आश्चर्य है ऐसे मन माको ऐसे कहै ऐ जुगलकिसोर है॥ दोउ कसोर है
तिन लोचन में देषवे कौ जुगल को आश्चर्य लोचन के जुगल जो उनको
हि दैत है ऐक जो उनके सोरुपर्दे को नहि जानत है सौंदर्य को आधिक्यं ग
किं वा वरणन पर्वरण करवे लायक वैसग्रव [illegible] ऐसौं ऐ कहे अ
मन ए कहै। किंवा जुगलकिशोर नंदजी को कृष्ण वसुदेवजी को वलरा
उ तिनै देषवे कौ अौर पिछलौ आश्चर्य किंवा श्री कृष्ण को वसुदेवजी को
पुत्र जानत है॥ ऐसे हे कोउ सुमन की उक्ति मन सो अौर सब आश्चर्य वै
सो हि वै सवरण मन ए कहत नेको आश्चर्य वैय सवरण उगारि जातवर्ण
अौ मन जाको ऐसे कहै जुगलकिसोर को देषवे लोचन जुगल अनेक च
हियत है नितप्रति ए कहा हिरदत है वै सवर्ण याको आश्चर्य वै श्री कृष्ण
वलभद्र समवरण न है सा यामे जाति है अौ मन जाको ऐसे कहे॥ किंवा वै
य सके वर्ण अवर अौ मन ऐ कहे जो किसोर ते हे सो किसोर तो है॥ या
आश्चर्य में सबी वचन सबी सो जाणिये किंवा सबी सो सषी राधा
कृष्ण की तारिफ करै है वे यसवरण जानी ते गोप जानता कहै किंवा राध

6A

सोर्ह वरन की स्यामा कहावत है कृष्ण स्यामा है, स्यामा में प्रकार स्या
म में प्रकास है ॥ प्रकार सब वर्न है व्याकर्न है ताको जुगल ब
खानिहि किसोरी किसोरी ही जानी ए जुगल जो किसोरी किसोर
पर ता प्रबंध में श्री राधा कृष्ण जानीए यह रास प्रथम प्रलंकार
॥ प्रलंकार समझी भाविध जाप नाग के संग ब उ ताकी उत्ति मे
लगाय है प्रात समै नायक प्रात है ता नायका को क्रोध देख नायक
क पद की सखी कहति है ते ॥ ओर नायका पास जात नहि है तासो
इसपे रहे बैठे है इनकी ओर देखत ब नायका कहत है ॥ भित प्रति
ऐक तन हि एक रसत ते तो सदा ऐक जोर रहत है इनको उनको वैसहि कहि
कर मांगि ऐक सै शोका तो रहे है तैसी का तो बुहरे है मन ऐक है जै
हो कुरव लामन इनको जो सो वाको ऐ जो पुगल किसोर है कि सोर
किसोरी है इनके हृदय मै बसी बैठी है जाको देख वे को लोचन ॥ ग्रलोक
चाहिए इन देने ही को कहा देहौ देखन ना देहु इने यौ हितारसे है ॥ अब
हित की आबन रै सो है रूप रावरो ऐसे सो बंडु ताको हैत है ॥ मूल दोहा
मोर मुकुट की चंद्रकन यों राजत नंदनंद ॥ मनु ससिसेखर की अक
स किय ससिसर सत चंद ॥ ८० ॥ परकास में कुंवर की सोभा सखी को नैननाय
का सो भाषति कौ वचन सम है ॥ सवैया ॥ आज लखो वृजराज कुमार
देख सिंगार बने सुगरे है ॥ रूप की रीत कहि न परे अवलोक विलो
चन मोद भरे है ॥ कृष्ण कहै, ससि सोहत मोर किरीट चंद्रिका बड़े
बने है ॥ ससिसेखर सो हरि सेखर चंद अनेक करे है ॥ ॥ हरि
प्रकास ॥ सखी नायका को प्रतेक्ष है पर नायक के नायका को मि
लापो चाहत है मोर को जो मुकुट ताकी जो चंद्रिका ताकी सो

वि
टी

7 साभातै

यों भांत रैसी राजत है नंद नंदन हास भावना करै है मानो सखि हो बाजो
है महादेव सखि चंद्र ज्यों है सो पर महा कवि बैजा है जिन की प्रकास
सो प्रकास करि दोउ जीता हन हि सकै है जो भी सिव को उ जी न हि तो भी
मान लीजै सखि सखिवर पद सो पर प्रगति निकसो सिंहै एक चंद्र माधा
रयो है तो प्रथम महाक कैं सत चंद्र करें या उजी सो सिव रसात
चंद्र क करें या उजी सो सब रसात चंद्र कियो ॥ कोइ कवि कहै है सारद
वने का मन जगायो सो श्री कृष्ण के उपजायो है एइ ईजी प्रद्युमन ॥ यह जो
वृज लीला है तब काम की उत्पत्ति न हि भई तब कहे कइ वार लीला प्र
गट होत है तब काम उपजावे करि इ यों को कर कहि वा र के जद
की ईजी ज्यो न हि है तो प्रकास मोर चंद्र को भै स हेउत प्रेदा प्रसिधा
सप दा स उत प्रेदा ॥ मूल दोहा ॥ नाच प्रवान क हि उठे विन पावस
वन मोर ॥ जानत हो नंदनंद करी परम दिसा नंद किसोर ॥ १२ प्रागमन
ले का सखी सो वैनं सखी सो सखी वैन संपवै ॥ कवित ॥ राधा यो वि साखा
सो कहति ता को रूप मोर स्वरूप विज्ञप र प्रावर बतै दिखायो रि ॥ जानी
पर व हि वित चोर नंद नंदन ध्यान आली वर कान मन कुहत प्राजगद्या यो रि
लस त हि हेत व ह कालकी सुआनी वे त पू लता स्म मन भै सो वन छ
व छायो री ॥ विन उन प्रहु द्यान य ऐ हरि सत मन नाच नाच मोरन कु जहुस
री या यो री ॥ हरि प्रकास ॥ लिछ तो नायका सो कालकी प्रीत भूषन ता
र ता ज्ञान के सखी कहत है घन स्याम रूप कृष्ण को देख वे ता दिन
पा वस वर्षा रितु विना वन मैं मोर प्रवान क नाच उठे मोर वर्षा रि
त मैं नाचत है पा हि लछ ना सो जानत हो मैं पादि सा विवै नंद किसो
र तो हि नंदनंद करी ॥ राजा की कही ॥ किं वा है मतो ह नायक को भेलाय

नंदकिसोर साष्व ॥ यादिसा को नंपत्त करि प्रपर्व उ ॥ मैं वेराजी करि
तिहि प्रसंग संयोग उचचना नायका किंवा उढा नायका होत सबै वैन
श्रीकृष्ण के प्राप्त आन किंवा विरह ब्या कुलनायका कोदी
र्घ दै सबै को वैन प्रस्मान प्रलंकार है कपायि श्री करै का
सु के प्रस्थान उरता मोर के भाव वो है तिहि हो श्रीकृष्ण के प्राप
वै जानि प्रपर्व लछन ताल छन सयाप्रकास ॥ प्रीति प्रानतें
पाउ लखे सबै कहितासा लछन तेवहु लछन ता कवगनकहे
सरा ॥ दोय जातीय सोर ति करै ताहि दे ष प्रनवाप ॥ प्र
ना संयोग उचनाकै ह रीकवताहि वनाय ॥ प्रीतम कौनै
कारनै प्रातेन ही हंके ॥ चिंता जो मन मैं करै उत्कासोर होत
मलदेह ॥ प्रलयकरनवरालागे जरजलधरहै कसाष्व ॥ स
रयतगर्व हरेत हरि बन्दिरधर गिरधार हष्व ॥ वीर रसनेव
रधान को सवा है रूप पावद ते उत्साह मष्व ॥ कवित्त ॥ प्रलय के उम
उधान प्राए वृजमंडल में मंडत प्रसंउधार लागे नरि प्रदीके
निरहा विकल भ ए गोपी ग्वाल गायन व कहु के हीत मेरे है इति रज
न प्रदीको ॥ ताहि समै वसुधा कोलाल प्रे हो ह लदेष हरि वहरैया
मतेवृजकी विपतको ॥ पातले उठाय राख्यो गिरवरि वाम पारि
दूर कीयो सब गर्व सुरपतको ॥ इति प्रकास ॥ वीररस नायका कौइ
वै हि सषी नायक की वीर उत्साह तो प्रलै करि ऐ नाहा किंवा
प्रंग की चेष्टा जानैरो प्रलै करिवे कोवरसवेलागे प्रलय काल
के मेह प्रर सदा वरसे हे सो मेह उर के मिलाके ऐक साष्व है
वरसन लागे प्रलै विमानमन हवरसे गे उ प्र देवनाम हैराषी ॥

८ वि·

४

तब गिरधर श्री कृष्ण हरिषकैं राजीहूं के हरिष वीर का प्रस्पार
है, यासों वीररस प्रायो। गिर जो गोवरधन ताको हाथ पर धर कें इ
रयत इंद्र को गर्व हर्यो यह काव्यलिंग अलंकार है॥ काव्य लिं
ग जब युक्ति सों अर्थ समर्थन होय। हाथ पै गिरधार कें या
तें इंद्र पत को गर्व हर्यो सो समर्थन कीयो॥ मूल दोहा॥ डिग
त पानि डिगलात गिर लखि सब ब्रज बेहाल॥ कंपकि सोरि दर
सकै सरेल जाने लाल॥ टी. लाल कृष्णजु सबनसों सबनका, यौं
कवित्त॥ लोपत भयो बलि को मघवा तब कोप कै मेघ सबै भक
लावे॥ गोधन कानन धापे जब ही सब के उर में भय भारि भगावे
ताम उगे हि गुलाब तब ही गिर लोग सबै ब्रज के प्रभु लावे॥
जोप किसोरि निहार सकै पत गात भरे नंद लाल लखावे॥
इति प्रकास। सबहीं लोकनीतैन॥ पान जो हाथ सो डिगै है ताहा
गिर भी डिग्यो है ताकों देखि लखि सब ब्रज के हाल बाकुल भये
लोग देखत जोर के कनी भैं बल हानि हार तौ परब को लाज हो
न तानह डिगै तैं ला भय ताहु पर लोग एता जानो कि सोरि के दरस
ते कंपे है, तब लाल बरेल जाने के किसोरि दरस के वो भी पाठ है,
कि सोरि के कंपा उभई सो देख के लाला बोले जाने इहा कृष्ण को
हिंगार रस भयो लाज संचारि कंप सो बरू ब्रजवासन को भ
यानक रस है तांप्रत्य को ब्रज बेहाल प्रत्यक्ष कारण लाजक
नि काव्यलिंग भी संभवे मूल दोहा॥ लोचे वो वे इंद्र लो तो तें व्र
प्रलै प्रकाल। गिरधारी राखे सबै गो गोपी गोपाल॥ १४
इहा वीररस श्री कृष्णचंद्र नै गोवरधन धरि ब्रजवासी सब राखलीने

8A

कवित्त ॥ लोचन सभा गरजन को ... प्रतिरूप वत प्रभुता के उमगि
समाम मनः आए है ॥ आस करि कहि वारि वारि सब लोक है के ब्रज के घ
हाकुः ऐसे बल ... न बलाए है ॥ मेंडि धारा धार बरबत विकराल घन
मानो महाप्रलै ए के साथ बलन आये है ॥ ऐसे समै नंद के स्याम नंद
र गिरि धार गोपी ग्वाल बृंदा सब ही बचाय है ॥ रसिकप्रकास ॥ उग्र
सो गोपी सब श्री कृष्ण को गुण कथन करे है सो कहु अर्थ

हावरजंत ॥ इंद्र सो ईद्र परजंत कोपे ब्रज पर कोप कीयो मेघ
ना ... ने तुम्हारे ... आदि दिने सब लोग के उकेप जाये
को उको मारे जितने अकाल प्रसमय मे इले काल रोयै प्रलैक
रि वे लगे गिरिधारी ने सब राखे गो गोपी गोपाल इन सब कीर वा करी
को ... पदरी बृज मे आई है तासो कोउ गोपी कहे है तो सबै कहिए
है सबै सखी सब पस सखी जानती रहो पतिका ... नाम गिरधा
री नाम साधि प्राय है कछु आसै लिये है पहार धारन करर ... करी
आवृत्ति वर्ण अनेक की सो है अनुप्रास ... वरण को पठनो
सो आवृत्ति पकार लकार आदि जानती है ... ॥ लाज गहो
वे काज ... धेरर है घर जाहु ॥ गोरस चाहत फिरत हो गोरस चाहत
ना है ५ पदारथी लीला नायक को वचन नायक सो ॥ कवित्त लाज क्यो न
गहो विन काज मग घेरे रहे काहे रतनाउ के ... आने से हो ॥ गो
रस न चाहत हो गोरस को चाहत हो भली भात जानत हो कहो तुम
ते से हो ॥ कृष्ण प्रारा प्यारे जगविदत ... तिहारे गुन ग्वालन के चोरबे
को घर घर पैठ हो ॥ अवण स्रवण ऐसे चलन चलावत हो सो ...
लख रहत लस जमन लै है हो ॥ रसिकप्रकास ॥ दान लीला मे गोपी

हमको जगात देह कौ। अब पोर जगात मांगत हो। तुमै लाज नहीं
। आवत या तैं लाज गहौ। वे कान्ह कहत कौ घेरि रहे। आवहु हम घर जात
हैं। तुम गोरस मैं इन कौ रस हे सखी सो लीन्हा चाहत फिरत हो। गोरस
कौ नहीं चाहत किंवा स्वयं इन ताकौ नाय कासे कहत है। लाज
गहो। तुम इहि के मन की बात नहीं जानत हो। अब मधि गय ताहो
लाज गहे छोर कछु प्रगट करत है हैं। वे कान्ह कहत घेरि रहे जो कछु
हम मैं बहू छाहे तो पसो कहो। अब वे इस हम बन मैं लेब लैया गैं
रह मै सेकत हो कौ ई दिबै तौ घर जाय घर जातौ रहै। गो धार हम सों
छूटै है। तुम गोरस दही दूध चाहत तो फिर गोरस ई इन कौ रस
नहीं चाहत हो जौ ई इन कौ रस चाहत हो तौ मिलाय पहु धुनि ताम्मै
हो पनौ उन्मत्त काव्य पहु जयक। अलंकार कछु रचना होवा
त अपापो नहीं। विलास गोरस गोरस ॥ मकरा कृ
त गोपाल के कुंडल सोहत कान ॥ धरको समार सी धरम मनो डो
ठी लसत निसान ॥ २४ ॥ श्री कृष्ण को ध्यान है। अरु तन मा
१ हृदय मै कंदर्प प्रवेस भयो पर। अब जो मन ॥ सवैया ॥ मोमि
लाल वृजराज लला उतो ज्ञानि निसान रहै ॥ कामक
है इन पै रख रहे अप्रभात के पंकज सो मारहे। मं जु ता को मन
मो मकराकृत कुंडल पोछ वह छाजर है ॥ मानो मनोज धरो
हो पमदर द्वारन सन विराजरहै ॥ हेरि अबका सा, नायक के
मन की इनि नायकाको प्राश्न हि सो भासु नायक के मिला
यो चाहत है। मकर मो ग्राहि ताको है। अप्राकृत स्वरूप नाको। ग्रे सो
मो कुंडल सो गोपाल के कान मै सोवत है सो अपापावत है।

9A

तकि कौं है सम रजो है काम सो हिय सो मन सो है पर तामें बेठी है
सखी गारे तो रूप उन सुनत है या सो डोठी देत निसान
लसत है वा मम कर धाम है कुंडल बसु में निसान की संथा
बनाउ न्यास पदा बसु लखे दा ॥ मूल दोहा ॥ चित्त पर धारी जौ
हु सोरे हरि नके गात ॥ हरि राधा इक साथ ही बल गत
से जात ॥ टी० इहां दोउ नके मिल वौ गली में जात ते कही
आन परत है सखी सखी सों कहत है ॥ कवित्त ॥ दोउ रस भीजे रूप
री जेत हनाइ भरे हु के सामे उमगात गात गात है ॥ रूपत
करत बड़राइ के लखे है चार और कौन जाने ऐसे प्रवीनन की बात है
जहां वाही है तहां प्यारी देवि लोकि पत जौ हु को प्रकास तहा
का हु लखात है ॥ कहै कवि कृष्ण बोल कुंज में निसंक भरे
दोउ ते कसाथ ही गली में चले जात है ॥ ॥ प्रकास ॥ सखी
सखी सों कहत है या ही जो ... नी सों मिल के
हरि नके गात रहे है नायक स्याम है सो नायका की परछाई से
मिलो है नायका जो है सो मिलाइ के और राधा गली में हरि के सं
ग ही चले जात है इहां संका ॥ प्रवति न्या ॥ प्रापद ... पावनो धि ॥
संचारि पर कियो नायका संयोग हिंगार भीलता ॥ प्रलंकार मी
लत जो सा दृस्यते से दृ जबे नहीं आय ॥ किवा मान करावे मा
न ... उपद्रव सखी को कुंमी सखी वचन नायका सो है राधा हरि
नायका के संग मै ही गली में चले जात ही ॥ और वही अर्थ ॥
मूल दोहा ॥ गोपिन संग निस सरद कि रमत रसिक रसरास ॥
लहा है अति गतन की लखत लखे सब पास ॥ टी० इहां नायक दृष्ट
ता है रास मंडल में आपनी चतुराइ करि के सब को प्रसन्न राखे

२० वि
टी।
10

कवित्त अरुनाके प्रतन [illegible] उरहाई छुबहाई ऐसी सरदाय
न जौन्ह विसद विलास है॥ गोपीकान संग रसरंग कौ उमंग मैं उम
गमन मैर रनरयनरस नास है॥ अबला अनेक रुन ये कीनी मंद सा
लक छुअ दरअन चातुरी की कला पै प्रकास है॥ सब ही कौ का
रि गरे सब ही के लगि यो सब न विलसै क्यो का हु साव सिये
पास है॥ इति प्रकास॥ सखीसखीवैना॥ गोविन के संग ये निस

सब नायका नव

२ रात सरदा रितकी है मन को अर्द्ध क्रीडा करत है॥ रसकुलो
श्री कृष्ण रस के नाम अनेक राग को रास गोपिन कौ मत्य ना
चत मैं गतिन की जो चपलता हाँ है सो है अप्रति चंचलता है ना
च मैं सता है सु रपति रप इत्यादि गत चंचल तगत जो लगता है सा
सौ सब नायकान नै पासल लीये है वे चातुर्य प्रगट करतो है इच्छा
रहि है पाँइ तासो रस पुष्ट भयो॥ प्राश्चर्य संचारी दत्ता॥ नायक
वियोगी संकार एक वस्तु कौ कौजी एक नैन नै और अनेक॥ सत
दोहा॥ मोरचंद्रका सुयम सिर चढके तकरत उसाम॥ लखी
ता पन लेर त सौन पति राधा मान॥ अर्थ नोति कौ उ लघुमान
सबकी ठौ पायगर्व कौ ताको मान अंगतौ जनीए॥ ताहा कहीए
सवैया॥ स्याम सुयाम जानै आपनै ही सवै राधी व नायक के चाव
न हो धरिकै॥ जिनयाको ननजीमे उमान करै अब तो सबजो
गला बीवर है॥ कहा कौन के मोरकी चंद्रका धौ होहि ठाउ के ठार र
हि धरि दे॥ वृतन आन कुमार के मान न सयेत रवा गतरै उर
धौ कत है॥ इति प्रकास॥ तोरे सीनै नायक कौ सिंगार वनायो
स पनी के हन तरा धका जी के पाव की हा सी मोरचंद्रका को
सिर पर करत है॥ हे मोरचंद्र कौ ह स्या मके सिर पर बउदे

10A

लाँबी देखौं जी तौ को राधका जी के पाय पर लोटत के से मिटत
हैं। लेमिटत हैं राधका जी मान की तो हैं। नायक को श्रृंगार
बनाय के तऊ मान करत हैं। तौ ऐ बनायो श्रृंगार राधका
जी के पाय पर लोट जो गये हो तिहि। अब लंका राग जो तिहि। स्यो
स्याम और के कि जैसे पर उपदेस।। स॰ त दे ह॰।। सो ह॰ तो ओढें पी
त पट स्याम सलौने गात।। मनो नीलमनि सैल पर
आतप परयो प्रभात।। २०३ ह॰ पीतांबर की सेत आ नायक को
बैन सखी सों सखी को बैन नायक को सो यहि को बैन।। सवैया
बनि जात छवि सो हरि नैन मन मोह्य प्रभा मन मोह्यो बरो हत है।।
समता कहा ता छवि की कहि रह बयो तिहि लो कहूं मैं कै है।
सखी सुंदर स्याम के लेवर मैं पट पीत लसै मन मोहत है।।
मन नीलमनि के सैल के ऊपर मानो प्रभात को आतप सो हत
है।। हरि प्रकास।। सखी नायक की अद्भुत सोभा सु नाय
कै मिलायो चाहत है। सलौनो गात लावन्यता सहित है।
अंग जाके ऐसे जो स्याम कृष्ण सो पीत पट ओढै सो
हत है। किं वा स्याम के सलौने गात पर ओढे सो पीत पट
सोहत है। नीलमनि को जो है सो सैल पहार ता पर मानो प्र
भात को आतप धूप परी है।। २ ह॰ ३ इति सपद बसंत प्रे
हा ३ ति। गात पट बसु मैं नीलमनि धूप की तर्क कहि सर्ल टि॰
कि तीन गोकुल कुलबधू को। ना कि ना सिखा दीन।। कौने
ना जीन कुल गली है। मुरली सुर लीन। २२ ह॰ मुरली की
धुन पैठी है। सो सबकी सिखा देत है। तासो बालन की यो

२२ वि
६.

॥

सवैया॥ गोकुल मैं न किती कुल नारि पतिव्रत पालनहा
रि प्रवीनी। औ अजहूं तिन मैं कोउ नी सत हरि लखि पऊँ
कौ मैं न लीनी॥ पै अब तौ वा नट नागर की छवि कौं नव ई वृह
प्र धीनी। वा रस लीं धुनि कान परैं कुलकान विदा करि
कौं न न कीनी॥ इति प्रकास॥ कोइ नायका कौ हिया वै है
नायक कौ और मन दै हइ है। कुलवधु कौ धर्म न हि तासु
अनुराग भई नायका कौ वै न॥ कितीन गोकुल कुलवधू है
व्रत है रूप अर्थ कौ न कौ न मै सी बन हृदय ई है सी बउ
रूप दीपा है उ हा प्रा यद्धि कौ न मैं न हि छुवा है लग ली कु
ल अवनी कुल कौ पंच कुल धर्म छोड़ो है उ। अर्थ सरली
के ला मैं ती नहीं के नायक मैं प्रास हो हीके। कै वा सर
ली के स्वाद मैं लौ नहीं पकै। प्रति चित्त लगावै। कं
ठ को धुनी विसे तसो का कुत्तासो पागे प्रश्न हि सो उत
र निकस्यो चित्त प्रलंतार विनप्रश्न उतर जाहांते कहे
अमैं हो है। विसेबोत्ति भी जानी। विसेबोत्ति जैसे है तसो
कारज उपजे नाहि। सीस हैं तसो कुलगल्ल कौ रास गोन
हि भयो॥ अलंकार॥ प्रथम रुप रहि कै पार हि औठ दीठ
पट जोत॥ इति वा हकी वांसुरी ई वृधा कै बरजत हा॥ २२
२ हनायका श्रीकृष्ण के मुरली व जावत री सी है सो वह सो
भाभा नायक रीस सी सो कर ति है॥ सवैया॥ वन तेह री वा
न के सोवन के वृजराज कौ लो डलो गावत है। अब सं
द की चाह भरी वन सो नलिनैं न च कोरस गावत है॥ जब
दीठ कौ औठन कौ पट कौ रस कान न्यौरंग मिलावत है॥

11A

तब तासु सीवांस स्वारे की लख्या उरचाव के रंग दिखावत है ।।

हरिप्रकास ।। सखी आ[illegible] वर्द सो ... नायक की मिला
वे चाहत है ।। जब वांसुरी को अधर धरि औठ वि बो धारत है त
ब हरि के औठ की दीठ कबट की जोत परत है । जब हरी ता वांस
की जो वांसुरी है सो ई अग्र के धनुष व समान होत है ।। ई अग्र को
धनुष जो मेघ मै उजै है ता मै श्री अग्र नै करंग है ता हत तदउन अग्र
लंकार ।। तदउन तजउन आप न जो औरन के उन लोप । जो क
हार अपजाय आ ते हरि उन को त्याग नहीं है ... उपमा
मी है धनुष उपमान वांसुरी उपमेय सी वाचक सा धान
धर्म को लोप है ।। प्रथम विलास ।। सिंगार सब के दे
सावर्नन [illegible] ।। छुटी है सिरुता की अलकन लको जो
बन अंग ।। [illegible] अमिस दिपत ताक तारंग ।। [illegible] वै
संदि सखी सो सखी कहत है अब [illegible] का सो सखी निवेद
न करत है कवित ।। [illegible] वती यान की है [illegible] कहहरे रस कान
[illegible] है ।। स्वाधीन [illegible] लोकत है परलोक तार व करत नि परी है ।।
छूटन नहीं सिरुता की [illegible] व जोवन की दुति आनधरी है ।। संग
उह नके ताप ता रंग रहि तै तन की दुति रंग भरी है ।। हरिप्रकास ।। ना
यका सो सखी वैन ।। सिरुता लरकाइ की अलक नहीं छुटी है जोव
न अंग मैं अलको है आयो है नहीं ।। [illegible] ।। [illegible] तक
[illegible] रंग को [illegible] ताक तारे समी [illegible]
त है को वाको [illegible]
र है [illegible] धारत [illegible]

देस की

रस ॥ [illegible] किसोर वय पुन्य काल सम दोनौं किन्ह

पुन्यन पाइयत वैस [illegible] संधि सु जौन ॥२४॥ इहां नायका कौ की लर

काई अरु तरुनाई वैस की संधि है सु नायका सबी हो कहै, तहै

तवै ता ॥ उ [illegible] जैसे तब [illegible] न [illegible] सारी [illegible] द बाव सि

तहै ॥ तब सो उ [illegible] अंतर कौ समय पाय अरु तरुन [illegible] प्रेम बढावत है

इतहू जब वैस किसोर दिन सहु है, बय अंतर आवत है ॥ [illegible]

को उ पूर्व पुन्यन ते वि वसं [illegible] को [illegible] न पावत है ॥ इहि प्रकार

वै संधी वर्णन कर सबी नायक को मिलापे चाहत है, बारहमासी

नान के बारह [illegible] है, माघ मैं [illegible] दे ॥ [illegible] मैं [illegible]

ते है, [illegible] मैं वै [illegible] है, आदि [illegible] है, [illegible] है ॥ [illegible]

तमै कोउ अवस्थान है, [illegible] पर कोउ [illegible] है,

कोउ [illegible] है ॥ याको नाम संक्रमन सो अति [illegible] है,

पुन्यकाल है, तिय मैं संक्रांत होत है, तिय जो नायका सो

तियहूं, किसोर जो बय क्रम सो तरुनता [illegible] है, [illegible] जो सु-

[illegible] है, किसोर [illegible] को आमनो है, [illegible] न करे तो

आगे बय संधि [illegible] लगे [illegible] ॥ [illegible] इत बबय संधि

कही है [illegible] अंतराल पुन्यकाल सम दोन दोन कही है दोउ अ-

वस्था को जानो [illegible] अवस्था को आमनो सो [illegible] को

पुन्य काल ताकी समान है, [illegible] है, सो [illegible] तहँ

[illegible] पुन्यान के [illegible] सो पाइयत है, बय संधि

[illegible] पुन्य पुन्य की [illegible] ॥ [illegible] को [illegible] सो

[illegible] है पुन्य है, संध्या काल सम दोन याको [illegible]

12A

संक्रमनि को काल । अरु वयसंधि को काल । ए दोनन की पेद उस
में है । और । अव्यवसे इ जानी ए किं वा है । छ ए वय जो कात
है वयसंधि को ताको समदों विदाद । अनजाने है उप
ति इ है । अर्थ है । औ । अन्य काव्य मैं दन्य सउदा को नाम सङ्क
त को नाम प नन को नाम इ दा रुप का । अलंकार । उपमा
न । उपमेय में भेद पारै न सु बायँ ता सो रुपक कहत है । जैसे कवि है । स
रुदाप ॥ तियसो तिथि है । तिय उपमेय तिथि उपमान ता
को भेद न ही जान्यो जात । अन्य पुन्य मे । आवृत दीपक पद की
। आवृत । अर्थ दीपक है । मल दोस लाल । अलोकिक लरकई ल
बिलबिल बीसि हात ॥ । आज काल्हि मैं दबीस उ २ उ कहौ रिझात
२५ दहाम ख्यानाय का को जोवन । प्रकुरि तासो सबी नायक सो
निवेदन करत है । अकुरित जोवन है ॥ सवैया ॥ केसौ ह सी
ललालर काइ मै जोवन जोत ल सो ही भई है ॥ बाल विनोद उ
ते उचटी रुच का मक लालर सो ही भई है । ताहि विलोक सि
हात सखी वनिता न की बान कु सो ही भई है । आज ही काल
मै बाल वधू की कछू छती या उक सो ही भई है । हरि प्रकास
सखी वैन लालन का कहे जो है । अलौकिक लोक मे मैन हि ऐसी
जो लरकाइ ताको देख देखके सखी हि हात है । आज काल मै
देखहै उर जो छाती सो उकसो ही भात है उकसवे की तरह है । आ
ज काल मे लोको त ॥ लोको ही कछु वचन सो लीन लोक
प्रवाद ॥ अथ जोवन वर्णन ॥ दोहा ॥ माउ के उपरौ ही भ

२३ बि
१९

13

सीपहु ताके मिसहि होमिस दिन है रन जात ॥ २६ ॥ जात जोबना
है सषी नायक सों कहत है तहा सषी वैन सब ओसो ॥ कवित्त ॥ प्या
रे मनमथ लाल उर वा रस मल वेली [illegible] नव जोवन की जोत दिन द्वै
कहते भरत है ॥ देषत सरिचाचिते उर बितवन लागी कायकी
कहानी कहु कान न भरत है ॥ बकउरे मनु की को
२३ के [illegible] हों ही भई मैं सकल मैं होत सचितौन हू भरत है ॥ स
व की बधाई मति जहा तीबार बार गुंजन हारि मिसकरे है रहे बोल
रत है ॥ २७ ॥ प्रकास ॥ नायक सों सषी बैन ॥ जात पो वनानी
ता को भाव कउघरे है अपो भाव कहो के आपुसों एक तरह सो
लवतरह सों न है अरु मैं हीपो देषत पद है ता सो कुच जानी ए
उघार न है अपो उघार है जो सदहस अपो ताहि कुच कोकछु रोक
मरुकहिए भार सों प्राय परयो ता सो सीपक हार के मिस
कर के छलकरि बैं ग्रन्थि पट मैं हार दे [illegible] साचे मैं गुजी को
है सीपक को गती कोहै तिसो छाती रात दिन देषत रहत है
पर का सोहि प्रत लका ॥ छलकरि साद्य तउ परमह परिया
सो ही ठकुराम ॥ मत ले दोहा ॥ रेक पी जेसब है तो पर कूउब
है जोर ॥ किते न ग्रे पमन जगकर तव पन पवउ तीवार ॥
२८ ॥ प्रस्ताविक कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ एक पसे तो परे
च है हो रूकम भिजरहे रूक बूड गये है ॥ एक व हैं तिन कीन
तही सुध एक हैं धीर जछाउ दये हैं ॥ कोरद ईपर लीमर जा
इ कि लोक तें मय पर मतामतो है ॥ वे सन दीवउ ती [illegible] र याजग

14A

ह॰ रिप्रकास ॥ उलही पान व वधू दे र. मै ज्यो ज्यो जोवन की जो
त. कि वा जोवन अरु जोत बढ़त है त्यौ त्यौ पूर्व की भाषा मे ते है तैसै
ऐसा ही न सबद बसौ त सब वदन विकास लखन दृष्टि होत है सो त
इ बमे ले है ता है रहे अर्थ र हु उ लास लग अंकार है ॥ उन अंग न
जव ए कत घर अरु उलास ॥ उन तो उन दोष ते दोष उएा ते देख
दोष ते उएा ॥ इ हाइ लखि के उमत सै जम मे दोष ॥ मरसे दोष
नव नागरी नख सख लखि जोवन आमिल जोर ॥ घटै बढ़ै तो बढ़ै
घटै रकम करे अरु और की और ॥ ३० ॥ या नायका के तन मे जोव
न आयो सो अंग बढ़े है तो घर ए गयो घटे है तै बढ़ गए सो आमि
लके अप्रसंग कर सबी सो कहत है सखी को वे न नायक हू सो न
मावे कवित्त ॥ सुवरन वे लीसो नवे लीको ललति तनु
राजत अरु दे सो अंग ति सो भास रसायो है ॥ का तो है ह कल धौत ॥
वाल मन मथ न के जोवन अनलत होत आमिल हु आयो है
॥ और ही ते और को तर कम व नायका ही अमल जमायो सव
ही के मनो आयो है ॥ घटै है तो बढ़ै की नैबढ़ै सो घटायदी ने
कहै कवि कहा अंसो बल मन लायो है ॥ ह रिप्रकास ॥ सखी
की उक्ति नई जो नागरी नवीन नायका आको है जो तन सरीर
सो हे ल ख दे स ता को तरह कहि ते ॥ नायके जोवन सोइ है का
म को पवगायो ॥ आमिल सहाकम है सो जोर है जोर को अर्थ ज
लभी पाइ जामी तो ॥ रम क कहि ते हैं बढ़ी एपी तो कहि ए ता को व
ट कहि के ट वढी एती सो घट करि घटि होटी एती सो न बडी करि
सबरे अठौर मे लगाइ ए दे हल दीपक न्याय करि ते र अरु ओर की

(right margin:) ॥ दृष्टि ॥ दूजे ॥

जो कछु वाल कपनामें सर वाकि यामें सो अवनही और ही
की भासत है ते सब को यार डारे है । या पीछे नायक को अलंकार
उपमान र उपमेय में भेद परे न लखाय ।। ताको रूप कहत है
जैसे कवि समुदाय ।। मूल दोहा ॥ लहलहात तन तरुनई लच
लगि लौं लफि जाइ ।। लगे लांक लोयन भरी लोयन लेत
लगाय ।। ३१ ।। इहां नायक को सखी सो भाखे बात है सो नायक
सखी सो कहै है आसंभव ।। कवित्त ।। लगल गे तनमें लहल
हात ति तरुनाइ ताकी नई तरुनाई रही छवि छाय के ।। कुचन के भा
र चपि लगलगि लौं लपि जै नवच लतागय दगत सम्हार समा
र कैं ।। कहैं कवि प्रमन बाहिब लौ बाभरी मानो माहा मोह
नी मैं देह धरि आइ है ।। सखी मल समत अति चार को सो अप्रा
कमानो ऐसी लांक बारी लेतो लोयन लगाय कै ।। टी
प्रकास ।। नायक सो सखी वैन ।। तन विषे तरुनाई जवानी
लहलहात है । लहरात है रैहै । लांक लोयन भरि याको
अर्थ लांक कटि लोयन लावन्य भरी सो ताकि रकै छीहै ल
चलगि लौं लपि जाय बलात के लचकै लगी लौ बैं तकि
वासको ताकी तरहल पकजात है । यार अर्थ लोयन में
बनी सो लागै तो लोयन लैन लगाइ तो सौ इनको
लगाय लेत व सकरलेत है । एसो वमनेज ताको उप
मेय उपमान जहां वाचक धर्म सचार लगी उपमान ला
क उपमेय सो ता वक लचत कसा धारणा धर्म ।। गल
सम जस कि छीन स्याम तच सच सजंघ सक मार ।। गरान

15A

नममवचन अनपलब्धि विप्रुरंभ है बार ॥३१॥ सवैया ॥ नि
पतत है तमकं अप्रभ्रामिनको उप देषा तिली मब हारे ॥ स्वा
मक गंधा उआयस किन्हिन सो है तसंदर लांवे लघारे
मैनमम्मो अ पने कर के मन लन होर वनाय संभारे
देषत है मनप्पा कग पोन वनागरी के हस देस मिरारे
॥ रसिकप्रिया ॥ सह जम आवत विना पुलेल लगापसकि
हेन है ॥ स्याम कांत है संसकार किऐसो पविज्ञल कसार
है अर्थ हे उपरिवार को विप्रुरं विनोद देष के मन जाय
चढे है वच अप्रवचनहि देवे है ॥ जीकमे नरपायन है
उठे है बार अप्रवचन है चउवे को उवलीवचन है सोठ कीआ
के वृत्त है नायक नायका के [illegible] वसमर एक करे है ॥ स्यतिग्र
लंकार है उमार नयभस देह अतल ल तो नायप्रकास
मन लदे हो ॥ वेई कर औरन वहै ज्ञारे कौन विचार ॥ जिनहि
उरसेता [illegible] गीन हीउर औ बार ॥३२॥ यह नायक की
आनहि न नायका के हाथ पन दे है ॥ होवार औरत नाय
कस ही हाक्रत है ॥ सवैया ॥ पान लहे सा सीर है सति
मउपर मोल्ह गर्वोर्पते है ॥ केलपरी ती बटी उप्ररी अं
गरीन अचंद्रप्रमानह होते है ॥ वेई हाष्य वहै चलको कर पा
यो विचार कहाधो ठते है ॥ मेरे ही तो उरज्ञेग जिन सो
तिनको रत है उरे कहे है ॥ रसिकप्रिया ॥ नायका के
व हाथ सभार है नवनायक पीछे होत आप सबी के उठाय
की आछे कस संभारे है [illegible] वनाय का मायकवे कार को पार हासि [illegible]

२८ २६ वि.
ल.
16

।आगे भी हमारे के सब भारे पै वे ईकर वे ई हमारे हैं। औ
रण वे है। वह सभार तोरे मनहू और ऐद को न विचा
रे इह भेद है। तीन ही सो हि तो मन हमारे उर साचो है। ति
न ही सो कारस उरझे है।। विभावना।। कारज होय विरुध
तो यह विभावना जान उरझवे को कारण नायका तीन सो
कारस उरझे। मूल दोहा।। कच समेट च। रि कज पट तट बाली

८

सपॅ डारि का को मन बांधौ न इह जरा बांधन हार। ३४
यह जूरो बांध तनायका नायक ने देखी है।। सखी सो कहे
त है।। जाति वर्णन।। कवित्त।। नैन ग्रैन मैन के से वाणा व
रसाण धरे आनन की ओप कहू जेसे चंद पहरे की। कं
नक लता सी मजेऊर जेउ तन गोरे बुल बुली कंचुकी
लव जरंग रहरे की।। कैसे के विकूल समट की ली चारुहू चित मन
चट की लीनी लरट कचो बन्धरे की।। सीस पट डार भुज
जेउ लट समेट कच को न मन बांधो बहू बाधन मेरे की
।। रि प्रकाश।। नायक जूरो बाध। तरे बस्य रन वरे है। कि सके
रव कचक रिवे भुजा आगे हाथ पा को उलट करि सीस
सो पट सो बटो कहीत कांधा पर डारवे को न के मन को
बांधा नहि सबै। तर कहि ते ताजर आ सो जूरा के बांधन
हारि जे जगत मैं नायक को है।। स्वभावोक्ति।। अलंकार
जैसो जाको रूप गुन तैसो कहिए।। मूल दोहा
छूटै छूटै वे जगत ते सट कारे सुकुमार।। मन बांधत
त वे नीव धै नीलद्ध बीलेवार। उपरून नायका के चरदे

[illegible]

16A

कविउक्ति ॥ सवैया ॥ सोहत है सुकुमार उदार सी वारुणी लागत
नेरे ॥ मेचक लांब सुगंध लसैं कुवि देव तामैं न धरि रहै नर
केरे ॥ छूटे हू टावत है जगते इन को कछु कौतक टौनी हो
है रे ॥ नीरज नैननी कहे ते मन बांधत वेनी बंधी रे ॥ किधो
कचते रे ॥ टीप्रकास ॥ नायक स्मरण करै है नीसछवीले
बार जब छूटे हैं तब है मत्त है जगत तो हु डावत है जगत को
व्यवहार महीं करन देत लटकारे है सुकुमार है ॥ हमा मे
न को बांधत है वे वेनी को छोरी बांधत है ॥ किंवा नायक को
धो है उरलसु की धो है ॥ वे नी मैं श्लेष काढे चमत्कार
नही मिले कौ ॥ वक्र रूप विभावना है ॥ जावैं प्रकार न वस
ते कारज प्रगट होत ॥ मन बांधबो वेनी तांधवे को कारण नही
उन्सवः मनलहोत ॥ कुटलग्रलक छुटी वरत मुख वछी मे
उतौ उदोत ॥ वंकवकारि है जन्तो दामरते टा होत ॥ रद्दसो
रुलापर काछूटै ते सो भाग्र धावमई सबरी सखसो कहे
ताहै सखी मोप का होकहै नायक नायका सो कहै
कविउक्ति सवैया कवित्त ॥ जगमगर हि सुखचंदकी ग्रंमंद
दुति चांदनी तहां ती हि तग्राणौ जाम धाम मैं ॥ तादां सुदेस
लाभ हकलसिंगार चाह प्यारा बसकी मेघ मस्ता मावृज
वाम मैं ॥ कामप्राण प्यारे कीसों ता दो उरछुटरहि कु
रलग्रलक सोपालहि प्रभिराम मैं ॥ ते तो मन वढि गये
उमग उदेत नक दीऐते विकारी ज्योरसे या हो तदा मतौ ॥
टीप्रकास ॥ सखी की उक्ति नायक सो कुटलग्रलक है

ना०

१२८ वि
२८ ९
१ 17

वैंदीवर्नन

सोमुखचंद्रह्रू रूपरत है या ते यो तो पातर है ३ येतत्र प्रकास वढ़ि ग
यो वंक कहिए टेढ़ी वकारी कहिए वकारी ताको देत्तहि औसे दा
मके ॥ प्रकहि ते पाहोत ताप हि एतिव ॥ प्रत्संकार है" उपमेय ग्रा
उपमान जहा वाचक धर्म सुचार ॥ पहि ऐति वमाहि निनजहहि
प्रोपमा विचार ॥ सु ॥ प्रत्तक उपमेय दा मैव काहि उपमा
न ३ दोताता साधारि धर्म सुन्यो वाचक ॥ मूल दोहा सवै एक
ठेई लागै वसनतरु हापेचमम ॥ गोरे मुख वैंदी लसै अरुण पी
तासित स्याम ॥ ३ अरु ॥ प्रभ्यो तो ग्रहि छी होर को प्रभाव ग्राई
ग्राम्रहि यो सुग्राहि छोउ लगै तत्तहि कहिए ॥ सवैया ॥ नीके के
हंगपत्रली को उनी को लगै इसवात प्रतत निसाहि ॥ होर सुहा
या वसे तो सुहाय पता मे सव है उमगे छवि माहि ॥ केसो वढ़ा
वतयो दहिए नव नागरि के मुखचाद मे गाहि ॥ गोरे लिला
र सैवि दुली सित ताराती हरी पीरी अरुकारी ॥ हरिप्रकास
उत्ता ॥ नायक सखा सो कहत है दे सवय रहे सखा सुहावनी
हौर मे वसे सो सुहावनो उलगे ॥ अहनपीतासित कहिए
वैंदी ते मुख सो तहै ॥ इहां दृष्टांत ॥ अलंकार है ॥ यावविं
व प्रतिविंव [illegible] को जहां दृष्टांत नाम ॥ वैंदी ते मुख लसत
तो ज्यो सुहावनी हौर ये वसे सो सुहावनो
लागे ज्यो गोरे मुख से [illegible] वैंदी ॥ मूल दोहा ॥ कहत सबै वैंदी
दीये आंक दस गुनो होत ॥ तिय ललार वैंदी दीये अगनत [illegible]

[illegible]

इहां बेंदी दीने तें मुख की सोभा अधिक बढ़ावत है॥ सु नायक सखी
सों कहै है सखी नायक सों कहै है कवित्त की उक्ति सों॥ कवित्त॥ जोबन
सों मिल जगमगात अपार अंग पिय मन मनहू को मन देखें रसमो
त है॥ कहै है कवि कुंकुम बिंदु बदन सो छाय रहे है सरसाहिंगार बरसत
सुधा सोत है॥ कवके उरौं सेइ कै तरनि मंडल मध्य बेंदी के देखे तें
अंक दसगुनो होत है॥ वह नवनागरी के लिलार पर बेंदी
लागे वाके अंग गन तें उदोत है॥ अथ प्रकास॥ नायक को नायिका
कहत है सखी कहत है बेंदी दिये सों अंक दसगुनो बढ़त है
सो तिय तेरे लिलार में बेंदी दिये सों अंगगन तें उदोत प्रकास बढ़त
है इहां ब्यतिरेक अलंकार॥ व्यतिरेक उपमान तें उपमेय अधिक
को देख॥ अंक दसगुनो आलम अंगगन विंदु ली देत॥ अंक दसगु
नो तो भाल में अंगगन तें उदोत किंवा नायक के लिलार में बेंदी दे
खि के बढ़त वाकी उक्ति तिय के लिलार की बेंदी दीये तें उर मकें अं
गगन तें उदोत बढ़त है धीरा [illegible] तो लै बनै॥ विध अधो दोहा को
व्रति अर्थ [illegible] देत॥ भाल लाल बेंदी छिये छुटे बार छबि देत
गहो राहु अति आदु करि मनु ससि सूर समेत॥ २४॥ इहां नायका
देत है॥ सखी सों कहै सखी कवि उक्ति॥ सवैया॥ नवनागरी के
दो लाल विलोकत आँखिन के नव सी अरुनाय रसी में देस सरो
रु छूटे छबि अति प्रीय लसी॥ मनो आनन में अति आदर वै
मानै एक तहि दोउ राहु ससी॥ अथ प्रकास॥ सखी नायक को मिलावै लागै

रूप की प्रसंसा करिकै भाल विषैं लाल जो है बैंदी कुंकुम केसर कौ ता
कौ ताकौ छाप कै छुरी रहु पाठ है तो छुए तें छुटै जै है बार तें छव
देत है। रु बैंदी सोभा वढावत है। तहां संभावना करत है। कै
ससि आरा है तामैं प्रति प्रापत करि प्रति प्रउ कर [illegible] कै सपदि
चंद्रमा कौ ठीक ठौर पकर्यो आरा है नै प्रति प्राप्त करिकै मानो
ससि समेत सपदि कौ पकर्यो है। ताहि मैं ग्रहन लगे है
ता समै ससि सपदि समेत पकर्यो है ताहि मैं ग्रहन लगे ता समै
सत सरि की संभावना है। कह्यौ छुटे बार छवि देत बैं सो लगे
दौ प्रगट कीजै ते मानो ससि सपदि कौ मिलिकै प्रति प्राप्त
करिकै राहु कौ गह्यो है। सतु कै बडे सो जपसी छुटी परति है तो
कह्यौ छुटे बार छवि देत है। है उन को सपदा वसत त[illegible] प्रेत॥ मा
ल मैं सहल की बैंदी मैं रव की बार मैं राहु की तर्क करत दोहा॥
पाइल पाय लगी रहै लगे अमोलक लाल। भोडर हू की
भास है बैंदी भामिनि भाल॥ ४०३॥ अन्योक्ति है। ई कनी
च है और धनिकु है वह नीच हि की ठौर रहै। गो अर यह लोयमा
न सौं अर [illegible] निरधन है तउ उन्चो ठौर है। गो॥ सवैया॥ जो
जिहि ठौर के लायक है तिहि कौ वस कासउ हि पावत है॥ देखो
निज रास सिंगार के भेद मैं देखी ते नाम प्रतत दर है है॥ जद्यपि
लाल अमोल लगे तउ पाइल पाइन ही लगरे है॥ है वह
३ भोडल की बिंदुली तउ भामनी भाल हि पै छवि देहै॥ ओर
प्रकास॥ और वेइल सौ कोउ और को तत है पाइल जो वरन
रूप वसो पायन लगी रहत जौ वैसी है अमोलक जाको मोल नहि

18A

ऐसे लाल रतन लगे हैं सो उस अभरन जारू की जो बेंदी सो टीकी
आसनाकि सोभा या मिनि नायका ता के माल सै उत्तम जो नि
तौ रधान है सो पै भी उत्तम आसन के जोग नीच धाम करे सो भी सेवक
ता के जोग अप्रस्तुत प्रसंसा अलंकार या को अन्योक्ति कर
त है ॥ जाल टार सिर और के कहें और की बात ॥ तासों अन्योक्ति
कहत है ति कवि ता सर सात ॥ कि नायका विक दासा मैं नहीं कहे
तासों और अर्थ भी जानी ते सखी अभिसार करावति है ॥ तो
वर सुन्दरी है सब तरुण सिंगार काहे को करत है पायल तो तेरे पा
ट मे लगी रहत है ॥ औ हां के तभी दूरे नहीं लगे [illegible] गी चही
स अमै के नायक अमोल कहि ये जा के रूप उन क है बेंदी महीन [illegible]
ऐ अब वसी करत है प ला मैं [illegible] मो लके आप भी है मानी तेरे
माल मे सो उर की बिंदी सोभे गी सु ला ॥ भाल लाल बेंदी सत
न आवत रहे विराज ॥ दुकला कुज मै वसी मनो राहू सपमात्र
उ हां बेंदी नायका के ललाट मैं अहतनु की सोभा सखी नायका सो
कहत है ॥ कवित्त ॥ कवित्त उदय समे रो का वंद सो वदन तैसी
नई तरुनाई की उमंग गोरे रंग मैं ॥ कंचन की नारी वारी का करे
[illegible] सारी ता मे [illegible] सत के सी मांग उत्तमं ग मे ॥ भाल पर रोच
न को बिंदु [illegible] दे तताये अह तत [illegible] गंग सरस्वती संग मे
ज्ञान समान तम को [illegible] धाधार की कहा मानो वसी है निसंक
अतानि [illegible] ॥ सवैया ॥ सखी नायका की सोभा वि
मानि ले जानो चाहत है ॥ हे ललन भाल विबें जो है बेंदी
ता मै आमत कहि ये अव्रत विराज रहे है ॥ मानो बाम रन

ईछकी कलाहै॥ बैंदी सोकुजमंगलहै तामैं बसी है राहु केउ
रसोंबैंदी आबत मैं सथा बनाराहु केजु भय सो है ताते ईहां
है कहिबेंता॥ [illegible] मूलदोहा॥ मिलबदनबैंदी रही गोरेमु
ख न तसाय॥ ज्यौं ज्यौं मद लाली बढ़ै त्यौं त्यौं उघरत जाय
॥ २४॥ मदपान समै नायका की सोभा नायक सखी सोंकहै
सवैया॥ कहूं आज समझी मदपान समै सललना की प्रभा जीय
तोनटरै॥ कविकृष्ण कहै बलकै तल सैं मनमोहन कैं मन मि
ग्रंबंक मरै॥ उदी बदन की बिंदुला की रही मिलगोरे लिला
नेजानी परै॥ अबनाउ बढ़ै [illegible] की सुबज्यो हीं ज्यो त्यो हीं त्यो
जोति बसे उघरै॥ अथ प्रकासा॥ नायक नायका की तारीफ क
रै है मदपान मै गोरे मुख चांद की कि बारह बंदनकी बैंदी
मिलरही थी॥ नलखाय थी॥ अब जो ज्यो मदपान की
ऐते लाली बढ़त है त्यो त्यो उघरत जात है मद की लाली सो
रंग बाके पीके लगत है इहा उनमीलत प्रलंकार॥ उन
मीलत संदेस्यन्ते मद्यं कुरैत बमान॥ इहां मद की लाली
ते चंदन की बैंदी जानी गई॥ मूलदोहा॥ तिय मुख लख ही
रा जरी बैंदी बढ़ै बिनोद॥ सुत सनेह मानो लीयो बुध
पूरण बिधु गोद॥ ४३॥ इहां नायका के माथे मै हीरा की बैं
दी है॥ ताकी उपमा सखी नायक सो कहत है॥ नायक
नायका सो कहै कबिउक्ति॥ कविता॥ कनक बरन तन ज
गमगाय रहे तौ च केउ जाम पै गोभाप्रासपासकी नो है॥
सब लख केलाप विरची विरंच नवे लहीन करटपार जरे
जजग कीनो है॥ ललित ललार पर हीरा की लसत बैंदी

19A

मे

कहै कवि कृष्णदेव है मानौं रूपयौ नीनो है ॥ मोरे जान मोहमति आदि
कुसुमें सुकरि कुरंगम पंकज मध्य अंक ऐ बुध लीनो है ॥ इति प्रकास
नायक वचन है। तीय राधा मुख अरु वदनो या अरु वदन में देख हरि तासो
जरी जो है। वे हि ताही सो कहै सो विनोद कहै ॥ विनोद को अर्थ आ
नंद लीजीए आनंद देत है ॥ यह जो विधु चंद्रमा ताने
सुत पुत्र के सनेह सो बुध को मानो गोद में लीयो है ॥
जो तिस यै बुध को रंग हरत है ॥ सोक ल को साधन के
सीत देखवे मो हित न जा जावे है। इह दोहा अर्थ है
फल दोहा ॥ अथ बैनी वर्नन ॥ तहां देख मन तीर धन विक
ट ॥ ४४ ॥ सखी वचन नायक सो श्लेष कर कहै है ॥ इह दो
हा कृष्ण चंद्र का मैं नहीं ताकी सवैया प्रवीनो तै ॥ सो है
गृह है गनै लाल सो सार दा मोहन की लाग गंग मापग
यहां जहां विलोक के रे मन तीर धन ॥ जा के तगी चाह
जाय वलायन ॥ देनी सवैया गृही यों [illegible] मगनैनी के
वैनी सदा परस्तो करै या धन ॥ इति प्रकास ॥ सिष्य
को सूपर आसन है। मानस विचार करै है गर तीर धनक
रवे को बना [illegible] यास गनैनी के पास सो वैनी को लिखर
है है ॥ या मैं रूप की वडाई श्लेष मैं वेनी पर सो है। इहु वे है या
सै मह तम जाहि देखके कहै मन कठन तीर धन मैं वला
य जाय काव्य लिंग अलंकार है ॥ जहां तीर धन जा मैं

सवैया

वै

याको सार्थक अर्थ

20 वि

20

गाराध काजी को दिक ही वेह हैं मैं देख करयत । ओर वे से हि रहि
वे नीधि वे मी सी जी दे रूसारी को वर्नन । नी को सस तास
सारचर टी को जडुत गाराघ । छवह वढा वत रव मनो सस मंडल
मे आय ।। ध्वइ हा लसारचर टी को हे उचमास बनायक
सोक रत है । नायक सवी सो कहै नायका सो कहे कवि की
उक्ति ।। कवित ।। जोवन जोत अगमंग हेत सिंगार आसार सा
वत है ।। रीझ रहे लस लाल के लोचन सोय ही ये यह आवत है
सोहत टी को जात पनरसो तिप मालम हा छव पावत है ।। मान्डु
८ चंद के मंडल में नि नायक सो मवढा वत है । टीका ।। स
बी नायका को उक्त कौ है नायक हे सो ।। नराउ सो जरटो
जो है सो मे को टि के सो ललाट मे सो भत है ।। टीका
भटोर त हा सम उ लम उ अ ता मे आपके मानो छव को वढा
वे है ।। आकास मै वढावे है ।। इहा उत्प्रेक्षा वस्तु तप्रेक्षा
टि को वस्तु उक्ति है ता मै रव की संभावना ।। मूल ।। दोहा ।। टो
ह वर्नन ।। गउ रव मर्वर नी अलक चित वन मौह कमान ।।
आंध व कार ही वडे नारह तारे गमतान ।। कवित छंद गउ को रवा उ
वां को हेप तो वडउ याहे ग्रंथन मै गात पहवर नी कमान की
अधाकाइ दे षी पे निकाउ है वका उ ही ते अलक चितौन
मौह वरनी कमान की ।। कहे कवि कृष्ण रीत जान तप्रवी
नत्व हीजर नीकी [illegible] क की सुरंगमय की जानकी ।। वांके
हीते पालकी के वासके वढत मोल वांकी रज हूती रै

20A

हरिप्रकास॥ नायक के रूप सों नायका के अधिक अधीन
ह्वै बैके हाथ उनकी बस होवै है। है सब ही इतनी वस्तु
विषै आवनो है आदर सो वर्नन करत है॥ गंड की रव
ना। अंबर नवल। अलक चितमन। और ते है। औरत
रतारी। औ तुरंगम धारा। तानगाय बेसे। पौरुष वर्णन केव
लन है॥ दीपक अलंकार। उपमान ही उपमेय वसो इकपद
लागत सुभाव॥ दीपक तासों कहत है जो कविहै सरसाय
पहा। आधि वका इहि पद समसो लागत है॥ अथ दोहा॥
नासा मोर नचाय दृग करी ककाकी सौंह॥ कैरै सो
कसकत हिये गड़ी कटीली भौंह॥४७॥ इहां नायका
की भौंह नचाय वे कौ वे ब्हाँ दे बनायक सबही सो कहत है
कवित्त॥ मोतन हेरि पे सनसैन सों वतरात बड़ वानी तारस हीकी॥
सेकरती रतकी दृ तु हेतु नवाकी नका इत है समता की॥ ना
क वड़ाय उनायके औठ नचायक रीद्द गसौंह सकाकी॥
वाहु बकी वे कटीली सी भौंह कलेजे में सल सी सालत ताक
की॥ हरिप्रकास॥ नायक की उक्ति सखी सों॥ नायका पर
क्रिया॥ नाक को मोर कै लोचन नचाय के चावा की सौंह क
री का ताकी तरह कसकत सालत है। हियेको। अर्थ ह
मारो मन जाने है॥ कटीली टेढ़ी ईसी जी तिरगो है भौंह।
जहां सुभावोक्ति अलंकार है॥ और उपमा अलंकार दे
उ अवसमें निरपेक्ष हैं। याते संसृष्टि है। उपमा जाति
सुभावघाती सो आवत इक जहां रहै अलंकार वह

२२ वि
ति

२१

निरपेक्ष संसरू॥ स्वभावोक्ति जहं जानीए वरणो जाति
स्वभाव॥ ... और उपमेय को दृढ उपमेय लीजै सो वाचक
सकि वै साधारन धर्म॥॥ अस दोहा॥ और पनच कुटिल
धनु बरुदाक समरत जिकान॥ नैन तार नम गति तिलक
सरस्वती कै भास भरता जि॥ इहां नायका कुल तिलाट
सौ सिंगार है॥ सो सबीना बका सो कहत है॥ ग्रंथ का
नायक नायका सो॥ नत ता... हगायक पाव दनो कुल
है॥॥ कवित्त॥ कुवित गोय कमान लसे जाके कोज्यारु केस
र और बनाइ॥ ताको लै तीर गह्यो जिन के रुरके गहताप र
भाल लगाइ॥ बेलन ओबराबे वरा मैइ ससाज सिंगार स
नो ज प्रगटाइ॥ हेरत ही मे सुप्रवीन कुरंगन हीन न दया उर
मै कठनाइ॥ इहां प्रकास॥ नायक सस्म न करै है॥ तिर
छौ तिलक और सो है पनच बिसा गुनमय ग उती दानुध व है।
काम है॥ कानकुहुति मार मादा को होउ कै मारत है॥॥
ता हला जो है मग बौर के बीच मै गो तिलक सो है सर नाक
पर को तिलक सर के सोई भाल पलता के प्यार ताम
परे सैं व इहा सर वांगर का॥ उपमान उपमेय मे
जो पदार्थ न लखाय॥ ता सो रूपक है॥ जैहै॥ कवित्त
उदाय॥ अस दोहा॥ नैन वर्नन॥ रसा हिं गा मन जनकी
ए कंजन मंजन नैन॥ रंजन खंजन अनु बिना अंजन
न गंजन नैन॥ यह नायका के नैन की सोभा सखी ना
यक सो कहै॥ नायक नायका सो कहै॥ सखी सखी सो कहै

21A

सवैया॥ कंज कुरंग ग्रुमान न भंजन पीय मन रंजन नैंन अनि
यारे॥ खंजन मीनन के मद भंजन अंजन ज्यों रंजन हू बिन रोंक जात
रे॥ लाज समाज लसी ललि सी रस रंग भरे बिधि सों न सुधा
रे॥ कृष्ण कहै उपमा कहि ऐसिय जात जगमोहन तेरे उजारे॥
इहां प्रकास॥ सखी नायका की उक्ति नायक करे हैं॥ किंवा नायक
स्वामि करे हैं॥ कमल खंजन की उपमा देत है॥ ताको तिर
सकार करे है॥ कमल तो जल में मज्जन करे है इन तो सिंगार रस
को मज्जन करे है॥ उहां सिंगार रस को मज्जन करे है किंवा
वलु इन सिंगार रस को मज्जन कीयो है॥ सिंगार मज्जन कियो है
इहां दोहा अर्थ॥ सो कंजन के अंजन भंजन कहि ते है इहां
अर्थ इहां दोहा अर्थ सो भ्राजे सो [illegible] ता है॥
श्रृंगार को प्रगट कीयो है॥ सोन है संभवे लक्षनायक
टि॥ ऐसकार जानिये अंजन सो रंजे बिन खंजन के गंज
न कर मवालो नैंन है सो जे कंज रहे है अप्रतीत खले
श्रृंगार सो है॥ समजस पासों ताते रूप कूं अपर बरतर प्रतीप
उपमेय को उपमान न वस्प ताते प्रतीप कहनो है॥ वृत्ति अनु
प्रास॥ वृत्ति वार्ता प्रतरक कैवहे पर वृत्ति से जानो॥ जो
गजगति सी सीतिम तें यनो मैं हास्य न मैंन॥ चाहत
पीय अरु दे तातें कानन सों बतनैन॥ ५० इहां नायका के
नेत्र की सोभा अरु ताहू नारू को विलास पीय की चाहत सखी ना
यका सों कहत है॥ कवित्त॥ लीनो उच देस महाम्र नीकी
नाके तन नैंना गकलाकु सलविमल विलसत है॥ तन मन मोहन [illegible]

वि.
रु. दी.
22

कानन को सेवत जगत जो जनवंत है ।। कृष्णप्राण प्यारे की
अहारु जिनके खत ही बिरह कृ ते सरु ष सकल मेसंत है।
सरल सुभाउ उर मांझ धारै स्याम हू वि प्यारी तेरे नैन मन
हरन मंत है ।। इति प्रकास ।। सखी की उक्ति नायका सो
नैन का मसो उ महा प्रमद है तानें जोग जो मिलन ता की जु
गुउ पाय मानो मत्ते सबाइ मुनि जोग सिखावै है ।। काम
मिलन की जुक्ति सिखाउ है पीय सो गुर्द्ध है त ता ते कृत्यारा
हत है या ते मैन कानन को सेवत है कानन मे सेव
कानन ताई ज [illegible] नेत्र है जो कोउ जोगी होत है सो वृक्ष
होत हे कृत ताकाहत है ।। सो कानन न सेवत है ।। ई सा जो म
गप्रौ कानन मे श्रृ ता सहाउनी मैं न सो ह यकु मा मेरा सि
बते रहउ त्वेन्नो ।। मूलदोहा ।। सायक सम सायक ने
यन रंगे त्रिविधा रंग गात ।। झखो विलख दुर जात जल
लख जलजात लजात ।। पुनः ।। इह नायका के नैनन
की सोभा सब ही नायक सौं कहै है नायक सखी सों कहै है
नायका सो कहै है कवित्त ।। सायक से घायक है तीक्ष
णता रल दृग से त स्याम श्वेत रक्त त्रिविधा रंगे गात
है ।। कहै है कव कृष्ण जाके उर मे चित ताहि रुधनर
होत गात घरम घाम न होत है ।। ते ते पर भौंह ते
विषम विष अंजन सो पासि ते बिसेषा विपाउ
रसा रसात है ।। सकल वि लोक जल वि लख दुरत
सरमारु कृत बिपन लजात जल जात है ।। इति प्रकाश ।।

हरिप्रकास॥ कितनैं प्रौगन नग मैं नहि करैं है श्रावक हीं ऐनदी
प्रहवचकहि ऐ वचन उमा ऐ दोउ वटती बास खडवे के समैन ही
जव वडे है इनि भी मैं है उ कलवल मै परे है विकरैं मेत रैं है ग्रै
से जानीऐ वचन मजव वडे है गहाल गामभो चार प्रकार के
दरसन है स्रवन दरसन स्वपन दरसन चित्र दरसन प्रतक्ष दर
सन जिन नाथ का को रूप मुन्यो सो भी ज्यो ताहि कै पालेत
है इमै कै पास श्रावक मनोमित लन विना दुखती है किंवा स्वद
श्रावक मपो ता तो भी जो जिन स्वपन मैं देषी सो चरहि लैप
रै चरहि ला की चित्त मैं कोइ जो से वारै नि करनी हि सके स्वय्य
श्रावक मया मिलन विना दुखी है किंवा मेघ वरसत कै कित
ने नदी के पार प्रथि सार कर माय का पास चले ते कमी जे प्रौब
हला ये पंक मैं परे कितने मैं बूडे कितने व है हि आर जाको प्रय
हि कै प्रर्द्ध प्रसिद्ध सव जानत है आर परचत किंवा है की हौर
श्रे है वहै हि आर जैसै उन दौ हि प्रवर्त्या कै कै ईंद के लीऐ कै
कै को क के परै जगत मै केतने प्रौगुन कोन हि करता है
नप जवीन जो वपता की चउती वार जिन चित्र मै देषी सो
वूडे चित्र देषत हि जगु से है रहै प्रलप श्रावक जिन साता
त देषी कि तो वाबे रहे अवे को फिरे जव न हि देषै है ना वर्षा
स की धारा वहै है किंवा गुरसिष्या सो करहि जो है॥ है सिष्य चउती
नाप चउती वप जगत मै केतना प्रौगुन नहि करता॥ हि वार
ता रोक प्रौगुन प्रवनै मन को मातीकरि चेदेद मै सो वपहन
नै को चउती वार नप को चउती वार हो क क्रिपा लागी माते दीपक

ही

१२ वि
१८ त
14

मत्तदोहा ॥ अपने अंगके जानके [illegible] जोबन नृपति प्रवीन
स्तन मन नैन नितंब को बड़ो इजाफा कीन ॥ २८ ॥ नायका नाव
जोबनमें बनता सखी सों सखी सों वैन सवैया ॥ जोबनमें
पमहा परबीन विचक्षनता [illegible] रहरीता गई है ॥ राजु सराजु
लस्मो मवला तानको कटि संचु की संपत जी तलई है ॥ २९
की तेसिहता के सहायक चातुरता चितावारु भई है ॥ मैनरु
रोजनितं बनको अपने अंगके बडवार दई है ॥ इति प्रकास
सखी नायक को अस्तुत करत है अपने तनके अपने
पदके जानके जोबन जो प्रवीन राजा है अपने सर्व अंग
को जानत है ॥ स्तन कुच ताको ॥ मन को नैनन को नितं
बन को बड़ो इजाफा अधिकाई कीनी कुच को पहार करि
बडो कीनो है ... मनको नैनको कानन तांई नितंबको बडो करत है मनको
चपल ... प्रतिकार है ... को अप्रत्यक्ष कियो अ
पने अंगके जानके हेतु इयाफा कीन तर्क मत्त दोहा ॥ दे
है ... सवै बद ... ते है ति ॥ २९ ॥ पद ... नव जोब
नाम ... मनोज्ञ है ॥ ताको जोबन आवत देख सौतन
गनंद ... लागे ॥ सोनक ... से ... तिनके स
मरु ... लागे ॥ जोबन ... नजोब
न जोतके ... लागे ॥ सो ... मती

त

औन

[illegible]

[रंग] सखीवैन नायकसौं ॥ रंगे त्रिविधरंगगात ॥ दिनतरुके
रंग होरंगे है पातनैन सायक कानताके समै ॥ सेततस्या
मलहैं लाल है ॥ सायकके सम्म ते नायकहूं है मारनेका
ले गाहू है बे मीन सोविलबाप के जलमाहि पजात
[ल] है देषवेकूं कमसों जात है ॥ अब पुरुनोस समरु वहमारो
नही ॥ नेत्र अप्रतिरुद्ध है ॥ २ ॥ व्यतरेक अलंकार है ॥
व्यतरेक उपमान ते उपमे पअधिकोदेष ॥ नेत्रनमें
नायकता अधिक सलदेषि ॥ अरते ॥ रतनवरवरे
देई मरकजकुमैन ॥ होड होडी चढ़ि ले चितचतुराई
नैन ॥ ५२ ॥ पानायकवे जो बनअप्रापी हैं ॥ सो चतु
राई अरु नैन बहु न लगि ॥ सो सखी सखी सो कहत है
सवैया ॥ नैनन कीबडवारि सखै ॥ चितचातुरी की उप
मी चतुराई ॥ चातुरी की अधिकाई लखी तब नैनन औ
रगहि सरसाई ॥ कहै वरवा नरते परसी
समनो जकी पाई ॥ होडीपरे उचले बडमानो वि
लोचन औ चित की चतुराई ॥ हरिप्रकास ॥ सखी नाय
[हेतु] कसों कहत है अरतें तौन हरिहरत है बरपरे वलमरे है ॥ मानो
नैन का समरक दीनी है ॥ उतकर्ष दीपो है ॥ देखै कोनजी
ते याको नामसमरक चितचतुराई औ नैन होडा होडी बड
ले अप्रसिधा स्पदा वस्तु है ता ॥ नैन है जमरक मैमानो ॥
बेलनसि बरी जलियतो बहुरअहे रीमार ॥ कानन चाही नैनन

२ १४ वि

२३ वि

23

कुलटाके वचन सखीसों नागर नगर सिकार याव दतेव
दृत्त नायक जानें सवैया॥ कानन चारी कहा मोर उत्तपर
दौर करै परमे मृग वा ऐं औ ठग्र मैं औ प्रबूके रूनो गुन गर्व
गए नागर मार गँवारे॥ धा पलकै चिर लेत सुधा नैन
लोन पकै पति कौतुक हारें नी के मनो जनु प्रवीन
करो लाा बेलन नै कुरंगा सिखा रौं॥ टरप्रकास॥ सखी कहे
तें नायक को हेत परिहास करे हैं॥ हे प्रवीन वहार जो प्रहे
रसिकारे मारका भहै ताने कानन चारी जे है नैन ता
कौं मृग जे है नागर नर प्रवीन सरता की सिकार से लन
को भलेसे सिखाएं॥ औसे बड़े हैं॥ औ कानन चारी वनवा
री जो सेखी तां स्याह गोस को सिकार सिखा मैं है॥
किं वा पक्ष प्राश्न तक कानन चारी नैन मृग को नागर नर
नक्र सिकार ऐसे जानी ऐ नागर नर मन पहा वु है व
वन जाहो नायक को सामान्या होता है ता हैं औसे जा
नीऐ॥ कानन चारी नैन मृगं की नागर नर नर नायक ता
न सिकार नहीं है तौयी सिकार सिखाय जो हो ऐक नैं सि
खायो सुक सोक तू तारनैं न सौं रहा रुपक कान नर हा भ्र
बम गमा नर को सिकार रहो अदभुत रस सिंगार मैं॥ मूल
वरनी तें सर मैं नके औसे देखे मैंन॥ टरनी के मो मान तो हरिनी
के ऐ नैन॥ ५४॥ पर नायका के नैनन की सोभा सखी नायक
सों कहै॥ कवित्त चेर कीने खंजन कमेर कीने कंज पुंज उपमा
ने कैं घेरे प्रति दूव के लगे न हां॥ सो हतौं सालपे सालै सोतन को

संगत दोस लगै सबके विद है ॥ इहां प्रादि ॥ अप्रमाद सती है
कुह्मक है जगमे इह बात प्रस्तुत प्रवीनु नहीं अप्रस्तुत ही है ॥ वंक
सृ औरनको संग पाएकै नैननहू गति वंक गही है ॥ हरिप्र
कास ॥ नायक की उक्ति नायका सों ॥ किं वा नायक सो उ
क्ति ॥ बउ ताकी बचन संगत को दोस सब को लगै है ॥ क
है सांचे बैन सबि लोग जिन ते बैन बचन न कहै है ॥ कि
वा साचे बचन कहै हैं हे कुटिल भ्रू भंग वाकी जो है भ्रुकु
टि ताके संग ते नैन कुटिल गति वंक गति भए हैं नायका
की उक्ति ताभै हे कुटिल हे ही बात वो लो है ॥ उनमे दोषवनिका
रे है किं वा कुटिल वंक वो लत है टेढी वाकी पूर्व में टेढ़ वं
कुवक कहत है ॥ ऐसी भ्रुकुटी के संगते कोई कुटिल उ बदाइ
कहत है किं वाह बोध को ॥ और ॥ दृष्टी वे सही बडे तास सबी
को नायक वो ॥ अनायकै कहत है ॥ हे सखि यस सबी कुटिल
उन दाई जो वह नायक है पर कैसी है वंक भ्रू है कर्के सहै
और चडाए रहत है जाके संग ते नायक कुटिल गति भए हैं
उनहीं है पहले प्रीत कर पीछे त्याग करै है ॥ इहां प्रतीत उल्ला
स अलंकार है ॥ गुन औगन जन वते करतै दारै ॥ और
उल्लास ॥ और न दोषन ने न ते त्याग ज्यौ ॥ मूल दोहा ॥ गहे जा
ति न संग है सन अगुन बानिक सबै न ॥ याही ते मानो की है वा
तन को विध मैन ॥ ५६ ॥ ऐ दोउ प्राप्त सत मे नैन न मे
बात करत है कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ इत वृजराजन को कुमार सरास उत

देवमनहरतकरता वितावैनहै ।। चवलकटात वरजीतनमद
नहरऋबकेनिकर, प्रतदेखो, ऐसे मेनहै ।। काक्रुदव
देदनीके वृबमानमंदनीके हरनीके नैननते हरनी
केनैनहै ।। टरिप्रकास ।। नायकसो सषी वैन वरक
हिएसोबहै मैनकामके सरगोहनादिताको जीते है
किंवावरकहतेवलतासो कामके सरजीते है ।। ऐसे
दहै मैन, ऐसे पातरहके, अर्थ हमनहि देखे । हरिनी
मृगी ताके जे नैन ते हे हरतैनैननीके है ।। हरनी
वारयासनाहमको बहै, याको, अर्थ हरनीसम चारु
ऋदसीयो वितइ सिविवे ।। किंवायावात केइ ढकरवेको
दाउवारसंबोधन हे हरि हरनीके है जे नैन ताते हेहर
के नैननते हे हरतनीके नैनहै नीके नैनक हवे
तो हैसो, अर्थ सम ढन हाय ।। नीके इगकरहकामसर
जीतनको इगसो पे ।। ऐसे जमक, अलंकार है ।। जम
कसबकोविरसवण, अर्थ जुदो के जान ।। हरनी
तासाचौवैन ।। कुटलवंकभ्रू संगमा ते कुटलवंक गतिनैन
परि ।। यह वरतताविकसंगतको दो बलगैर हद बोतकवि
ता ।। सवैया ।। और तो जैसोइ संगरहे हगहै उमसी विधान
नवहि है ।।

27A

हे नंदकुवार बाच अंग उरन विव दोउ है के है। नारी नंदजो है
मनदस्ताचे सत है किं नाना पकार बैन सबी सो है। नारी
जो है कुमार को निरखत है रहा परया यो नितृ अलंकार
है। मिसकर कारज साधा दे जो है। वितर्क हाव। उहा
हलकर दरसन साधयो॥ मूल दोहा॥ डीठ परत बांधी
अटाच उधावत मुंह इंत॥ रतउत ते चित दुहू न के नट लौं आ
वत जात॥ ९४ रहा दोहु न के चित लागे है सो परस्पर अ
वनी अटान चे तानि संकदे बे है उत को म मरत आवत
है उत को मन उत जावत है सखी सखी बैन॥ कवित्त
प्रीत पुंज वाढे आप आपने अटान चढे मिरखनर ढो मैं
आउ अबै सखौं तवितरत है। प्रौर कोउ जानत नती
न की अनंतगति छलबल भरे ऐसे उरमउ रत है॥
वा दो डीठ वरत नउरत लागा टिट की नट की सी कला प्र
गट करत है॥ हरप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ इह सो उहै
वर तरस रीत आपनी आपनी अटा तसार मा पुकना
पकनो बांधत है लगाई ता पै मन दोरत है को ई
बातके कोई देख तै गत ता सो न ह्वै डरत है रहा उ
हा दे पत के मन आवत जात है कि वा दोउ की दृष
मई तेकु नरत तादौ ते कू नट उहा सो आवत है दू
जो नट रहा सो जात है दीठ वरत रहा रूपकालं
कार है॥ ढुसो पमा मन उपमेय नट उपमान है

न

रसी

व

अपनी

दोहूनके वि
त बलबल
भावै दोह
प्रौर धावै
ताहू लखय
तारी जधार
त है॥

नटकी अरु आवत जात है

28

सलदोहा॥ उरे उरजन के दृग गर्म ... करके नसीने चीर॥
हैं की फौज है ... लालौ परत गोल दै भीर॥ ६६ ॥ उरे उरजन के
नैन छुधघट मैं मिलजात पेल के ओट स घ्रत सब सोक
हाता है॥ सवैया॥ वेठी अलीगन मैं न वनागर प्राणोन
हू चललवारो विहारी॥ लालकी डीठ वचाय वे को ऊव
घूघट ओट कसो ननि हारी॥ नैन सो नैन उमें गाभि ते
नार है पट ओट कि तौ पचहारी॥ रोक सकै न हरै लालकी
फौज ज्यों गोल वै प्राति परे भहभारी॥ रसप्रकास॥
सखी सखी वैन रूपक कै अर्थ रस ताकी लीजीए सि
नहीं॥ जौ है ... लाल की चोरी फौज है वे तौ गोल की फौ
जमै जो है वह कौ जता पर भीर परे नायका की ओर घूं
की आषपात सासी सो जनायक के नैन रवनी
जानीते ... लाल की रीत मनि रहि दृष्टान्त अलंकार
भाव विंव प्रतिविंव कै ... वात मै तेक वात की छाया परै
लीने है॥ सार ... रूनामा ... सतदोहा
... पनासिंधु तन तैरन पावत पार॥ लोचन लो
का के अंग की सुंदरता देष कै नायक के नैन ...
ई जकत है ... है सो नायक ... सखी कहै ... सखी
नायका से कहै कि वा सखी सो सखी को वचन कवित

हरिप्रकास॥ नायक कहै नंदगाउ ऐक पैंडे ऐक दुगतासी कुंवन नाव
कै भार। ३ गमगात सी वलकै ठठकी बरीर है पार चितई फेर च
ली है मैं निहारचे हमारे चित्त कौ लीऐ जात चोर ही चोर नी सबी
को दिषावै है वह जो गोरटी गोहनारि स्यामा को तूं ग्रलंकार। मु
गौर उचै प्रंचर पलटि मोर मोरमुह मोर॥ नीठि नीठि भीतर गई डीठ
डीठ हो जोर। ८१॥ इहां नायका पर की यांचेष्टा सषी सो कहै है ना
यका नायक ने देषी है सो वार कार सषी सो कहै ॥ सवैया॥ रुप
की ग्रपार प्यारी गई निज ग्रह द्वार जाकी छवि पार रतवारी पैको
रको॥ मोहि देषते सकल जाय के चढाई गौर वाहि चित मन मार ली
नो चित चोर है॥ गौर मोर मुहि प्रगरानी जमुहानी इन ग्रालस
वलित नैन वटरारी ठोर कै। नीठि नीठि गई गौन भीतरा सरोज मुषी
डीठ हीलगाइ डीठि नीके नेह जोर कै॥ हरिप्रकास॥ इक को वेनस
षी है॥ गौहन कै उंची करी॥ प्रंचर को उलटि कै मोर को [illegible]
गौर के मुष को मोर कै नीठि नीठि कै ते हू कै से भीतर गई डीठ सो
डीठ जोर स्यामा वो तूं के सो हू कै ते हू भीतर गई डीठ सो डीठ जो
र ॥ स्यामा वो है ता हू जा नी राव र मै जात सुभाव॥ गौह उचन
मुष मोर वो कहि ग्रनुभाव प्रकास॥ सत नाहीं॥ जौं वंतसी वि
त मन न चित तें भई ग्रोर ग्ररसाय॥ फिर ३३ रुक न न कौं गगन पन दे
गन लगनी पासाय॥ ८२ यहां नायका की चेष्टा देष ना
यक के चित्त मे वसी है सो नायक सषी सो कहत है वैसे ही पे
रित चै पर ग्रभिलाष॥ कवित्त॥ बिरषा निहार नव नागरा नि
सी रत ठाडो वन वारी मनमथ छवि छाय कै॥ विरह सव सो की

२० बि
स

30 ससिवदनी लजाय कै सो, ग्रैंचत सी मन भई, ग्रौठ ग्रलसाय कै
लगन लगाय चित्त सौं गई चुराय कै चित्त सैला सौं ठगकी सी
मूरि बाए कै ॥ उत चित्त वत्त सब काज विसराय कै रूप ग्र
विलोकिवे की ग्रास उर लाय कै ॥ इहर ग्रकास ॥ नायक की उ
क्ति सखी सों, ग्रैंचत सी मानो खैंचत ल्येत है, ग्रैंचत सी
चित्त मन चितै कै, ग्रलसाय कै ॥ काहू की ग्रौठ भई सी,
रउरूकवे को उचीहूं देषिवे को मृगनैनी दृगनको
लगनी या, ग्रास ह्यो लगाई माति पै रकाहू दे वे तौ गतो
जो नायका, ग्रापनी हू की कहा कहै, तौ मृगनैनी सषी
को संवोधन जानौ ते, ग्रभिलाषा संचारी, ग्रलसाय
वौ, ग्रनुभाव, ग्रैंचत सी इहां क्रियाके ग्रागे सी वाचक कै
ता सो उत्प्रेक्षा मृगनयनि लुप्तोपमा ॥ दोहा ॥ सटप
टात सी ससमुषी मुष घूंघट पट ढांक ॥ पावक झर सी झ
मकु कै गई झरोषा झांक ॥ २३ ॥ या नायका मध्या ला
ज काम सम सो नायक सषी सैं जैसी भांति देषी है, सो ग्र
वस्था कहत है ॥ सषी को वैन सषी सो संभवै ॥ कवित्त
मोहन की मुरली की धुनि सुनि सुनि श्रवन ताल लाल कत्त
, ग्राई ससिमुषी तट पर सौ ॥ नैसिक उरक, ग्रानि नग्र
विलोकवे को उरदं विलोनो, ग्रानन लजाय वर सौं कैं

30A

कहै॥ कवि कृष्ण बा न जान कीनि काई देषि वे के दृग व्याकुल
मदनचरपटसो॥ दीपक॥ कीतरपगर कहि धौं पावक की गा
कगई रसकहू रोस उठ पटसो॥ हरिप्रकास॥ नायक की
कगई रसकहू रोस उठ पटसो॥ सट पटात है व्याकुल भई
उक्ति सषी सों सटपटात सी मानों सट पटात है॥ प्रगन
३६ प्रपंचंद कबी रुब को घूघट के पट सों ढांकि कै प्रगन
की ज्वाला सी रस मकु कै सरोबा मै रा कहू कै गई सटपटा
तसी ३ हा उत पै तापा वक सरसी पूरन वमा स सीरुबी
उद्दीपक जानी है॥ मूल दोहा॥ नीवी पै नीची निपट
डीठ कुही सो दौर॥ ३८३ चै नीचै दीपो मन कुसंगम क
सर॥ १७४॥ ३६ दोहा कृष्ण चंद्र का मैं न ही ता की सवै
पाप्र बी नोक्ति॥ ३६ नायक को बैन सषी सो नायका
की चित मन की बड़ाई करै है॥ सवैया॥ मगमेरु क
१ प्रा जननई तीय को मुषचंद विलोक सुधा सो पीयो
वर कंजन सै लोचन सां नाहा हाए सो फिर कै चित ई लालचा
तहि पै॥ १ प्रत नीवी पै नीची कुही सम दौर कै॥ डीठ व
ला कनै जोर की रसपै॥ ३८३ चै सषी मन मेरो कुलग
मरा रकसोर कै नीचै दीपो॥ हरिप्रकास॥ सो कुसंगप
नी सी दौर कै ३ बिंदु लपा को १ द दी उची उचै सापकै
नायक कहत है है सषी रमारो जो मन है कुलंग वक्री
विसव ता को सर सार कै नीचै दीपो कुही पा ही तर स उ
उरै पूरन वमा उपमेय १ प्र २ उपमान जह वाचक धर्म लुप्त

पूरणउपमालीनजन्हालुप्तोपमाविचार।।
उपमान लौं वाचक टेरवें धर्म।। मूलदोहा।। इषउपमेयाकुसि
मनैनीपटी विनजह॰ भौह॰ कमान।। तीपांकुतंक
वं वा विलोचन बान।। ७५ अथ जगतरस सखी कौ वैन चितचलवेजाचुकतोन
नायककोवैननायकासो।। नायककोवैन नायकासे
कवित्त।। सरवरति कहांतें इह अति अद्भुत गति तेरी कमनेती सखी सोहंअवे
तहे।। कहैकविकहाएतौअगरविलोकियत भ्रकुटीकमनेतीवेरनतनवन
तनतहैं तिनतेकठतडीठिकुटिलकराच्छसरचूकति कमानविनजहही
कैहनतिहैं।। तिरीयाविलोकानकीनिरषी अनौषरीतिनचलन्वितवेजे
त्तिकोतसरातिहैं।। तरिप्रकास।। नाइककिंवासषीकततहैं।। तिमेरीमतिहितअ
तकहांकमनैंतीकमानचलाइवोपटीविनजहगुनविनाभौहकमा तेतियतक
नहैं।। [illegible] चितजोदेषिवेमैनहीआवैं [illegible] है।। वेजो
सानानाकोचूकैनही।। वकदीठीजोविलोकनिसोवानहै।। चितजो
देषिवेमैंनइहावैसोईवेजाहैं नीसानाकोचूकैनही।। टीठीजोविलो
कानसोवानहैं।। ठैठातीरनिसानमैंलगैनही सवहीआश्चर्यदूसरी
विभावना।। हेतुअपूरणतेजवैकारजपूरणहोत।। विनगुनधनइत्या
दि।। चितनीसानामैंनचीचूकतहैं।। इहांकार्ययाकोआश्चर्यमानेहै।। मूल
दूहैयाबरेसमीपकौमानिलेतमनमोद।। होतदुहुनकेदृगनहीवतरसहसीविनोद।। ७६।।
दोउनेकन्हीमैंवातैकरतहै।। सुषमानतहै सषीप्रतिसषीविचक्षण।। सवैया।। प्रे
मसुभायईहूनकोकैंहूमोपैवनैंनवखानतहै।। चाहकलाकितचातुरीकीरसभाउभरी
उरआनतहै।। जद्यपदूरिषरेईतऊवेसमीपहीकोसुखमानतहै।। नैननहीवतरा

28A

जेतन कोछवि को कवि कोविद केतिकितौ उपमानन तावत।
तातन की छवि दे अबके तावनै न लगै न उतै उतै धावत। सा
हस कोरि सयान घने बहु भांत अनेक उपाय बतावत। सो
भा के सागर मांझ परे अब पैरत के सेहु पार न पावत॥ इह प्रकास
ध्र्व तास हत जोराव री सौ साहस नायका किं वा नायक कहत
है हजार साहस सिपे नभि को रूप आवर्त्त तामै नहीं अटकै र
जउत आदि सान कदु छवि तत करन ही है नेय रहजे अबै सो हजा
र जतन कीऐ भी सोयन जो है नेत्र जो सोयन है लावन्य
ता माहि रूप मै॥ प्रतिबिंब परै सो लावन्यता को समुद्र नाय
का के किं वा नायक के तन जा को थोरि के पार नहीं पावत है उ
न कहे है ता सो पूर्वानुराग नहीं जान्यो जात है। औरु ब्य
संचारी लोचन सिंधु तन रूपै उपमान उपमेय को। अप्रेरक
पक लोप मुलोचन जमक अलंकार पद को आवृत्त सो समल
पहुँचत उटि रन सुभट सो रोक सके सब नांहि॥ लोचन हूकी भी
र मै। आंख उते चल जात है॥ इहां प्रौढा पर कीया नायक
नायका नायक की चितमन देष सखी सखी सो कहै॥ भीर
भई सुभ काज समाज मै लोचन आन जुरे नर नारी। दोउन
के उमगे मन चाह सो प्रेम के भार भरे अति भारी॥ काहू
कीरोकी चितौ न रहै न बिलोकत आपुस मै नर नारी॥ औ
छिव सौ ठहराय भटू सब तै कछु प्रीत की रीत न्यारी॥ इह
प्रकास। सखी सखी सौ बैन पहुंचत है उरि कै। अर्थ॥ भट कहु
कर कै रन मै सुभट की तरह सब नहीं रोक सके है लोचन हूकी
भीर है तौ भी आंखि उतै नायका की और नायक की आंखें चल जात है

अटकना॥

कै सबैया

लौ वाव करण ल्सम३ उपमेन । प्रांच उपमेयपद्द वको साधारण ध
म॥ उपमा [illegible] अलंकार॥ और प्रतिबंधक है जो भीने जन को जानो
विभावना। प्रतिबंधक के होत ही कारज पूरन मान॥ वि सोत॥ वि
सेषोक्ति जहं है तासों कारन जउ पजे नाहि॥ कारण रोकन हार सब
का जान हु गणा रका है॥ सवैया॥ गडी कुटम की भीर मैं रही
वैठ दै पीठि॥ तऊ पलक पर जात उत लाल जैह सौ डीठि॥ ६९
ग्रह नायका के नेह की निकाई प्रकट तै वै की चतुराई नायक क
हत है॥ नायका पर की या॥ सवैया॥ प्यारी प्रवीन सनेह सानी
नम ते सिष लो सब की निधि त्यो ही॥ कै से हु मोड रहे नाँ इहै
सबु भी चितवा है॥ नि ने हनि चौ ही॥ वैठी बधू गुरु नारन में
तऊ नारन वा उ बसी सकचौ ही॥ लाज पगी पलक तऊ पी
जात उ तै उ सुडीठ है सौही॥ अप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ कुटुंब
की भीर मै गडी है गडी को ग्रर्थ उहा नजर ही न ही प्रावत ब
डो कुटंब यह भी पाठ है॥ पीठ दै के नायक सो वैठ रही तऊ
भी पलक उनही को पर जात है॥ जो भी सह जै है सो ही पाठ है॥
विभावना॥ प्रतिबंधक के होत ही कारज पूरन मान॥ सस
गड क उगत सी चल ठठक चितई बली निहार॥ लिटे जात चित
चोर टी वहै गोर टी नार॥ ७०॥ नायका की वैन नायक सखी सो क
हत है॥ कवित्त॥ मन मय बान नैच पलक प्रानि प्रारे च बाअ धार प्र
स उत प्रतिसर सात है॥ सौने सोह देखत न वौ ने सो उरा
न लौने कौन की नमता लेख वे को ललचात है॥ उगरी क ठिग
त सी चल ती फिर ठाडी भई बहुर वि लोक चलत मद कुमस का त है
जोवन मरोर भरी गोरटी गयंद गौन कौन पै है चोर टि चुराते हित जात है

31A

परहै। प्रतिरी उर सीमति ठानत है॥ इहप्रकास॥ सखीस
खी सौं न॥ दृपत दूर बड़े है समीप कौं मन नमैं मौं। प्रानंद
मान लेत है किंवा दूर है जो म्याब रे समीप। प्रतिस
मीप कों। आनंदमान सेत॥ ३॥ इन को नेत्र मैं वृत्ति है
वात कों रस हसी। औ विनोद होत है, पहाँ हर्ष संचार
हसी। औ विनोद पर किया नायका विभावना। प्रलंका
र॥ होतइ भावता विभावना विन हि कारन काज॥ दूरहर
नौ भी। प्रति समीप कों मोद॥ उदाहरन॥ छुटै न लाज न ला
लचै प्यौ लखि नेह नग्रेह॥ सटपटात लोचन खरे भरे सकोच
नेह ॥७७॥ पहाँ मध्या है, लाज कौं तन है सखी सखी सौं बैन
कहैया। नायक मैं मन भावन कौं लखि प्यारी मिसं करि देख
कैं ना॥ देखवे कौं तरसें हि पराह बसाय लगी चितवैन लहैना
छूटै न लाज। प्र छूटै न लाल बौ लोक की लीक उल्लंघ परैना
या ते सकोच बस नेह भरे। प्र कुलात हैं बरे न लजात सेनै ना॥ २
इहप्रकास॥ सखी सखी सौं बैन॥ लाज न ही छूटै है। पर लाल वस
सवे को नहीं छूटै है प्यौ पीया ने मैं हैं को गेह घर मैं किवि
पिता के घर सौं न है। जाको प्यौसार कहत है देख के लोच
न नायका के सटपटात है कहा करो को करै [illegible] से प्रेम सब
रे संकोच सो परे सत हैं सो भरे नायका मध्या भाव संधि है॥

२

मि

३२ वि
ति
32

सभाप्रकास ए कहे तिहके चिन्तते भाव चिन्ह उत होय॥
संधि सराह ताकौ विकहै उदाह रण रस मैं होय॥ पर्यायो
क्ति अलंकार॥ है पर्याय अप्रमेय कौ क्रम होय अभ्यासा
एक॥ नेत्र में ष्यो कुलाल लजा प्रीत मद लदोष॥ करे
बाह सौ चुटक के बरै उठै है मैन॥ लाजन वाएं तर पेंत
करत बूंदसी मैन॥ २० पह मध्या नायका॥ नेत्र ताज अप्र
हचाह दोउन के वस बूंदसी करत है सो सखी नायक सो
कहत है कौंप का सोव है सखी सखी है हैं संभवे॥ कवित्त
मैन नव नागर के तर लाज रंग अंग द्व वकी तरंग रंग रंग
न धारै धरै॥ मदन प्रवीन ति नै फेर कै सधाव त है घट घूंट
की ओट अद्वै है कौत क कौ करै॥ कीने चाह अब उठी सेंच
र कच पल से तबर उठै है प्रीति उमग भरे भरे॥ लाज का
ग वस तर फर तनताई धारे करत बूंदसी पग धरत है रहे॥
हर प्रकास॥ सखी नायका की चाह है षसखी सों कहत है
चुटक के पाछे अब छोटा की पाव छूडी सो चुटके सेज
किये॥ लाज साइ है वा गत ता सो नवाय का बचो तर फर ताण के
नैन बूंदसी करत है नावत है बूं देखि पाइ है ता के आगे सी
वाचक है जहां कृपा के आगे सी वाचक है अब उत्तरा स्पद
वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार

32A

मूलोदाहरन नायक सरसे लाइकै। तिलक तारुनरत ताकि।।
पावक उर सी उमक कै गई उरोजन झांक।। २४ ३६
नायक नैं नायका उरोजन झांकत देखी सो जो सीमा
त देखी है।। तैसें ही सखी सें वासना सो कहत है कहत
है सवैया।। सा जो सिंगार भरी छवि आरसी पै विरहान
वार गई है।। वौ कुमारी कछू औ बैसो आइ रसी छेहु नैक
नि हार गई है।। रा करनैं कल बीजन बते तब ते सुध मो
है विसार गई है।। पावक ज्वालसी बाल विलोकि कै
नायक तीर सो मार गई है।। इह प्रकास सखी सों नायक बैन
नायक नल का के तीर सुथान तिलक लगाइ कै तर
कके उरोजन मैं झांक गई है।। उपमा है।। मूलदोहा अ
नि आरे दीरघ दृग गहे कितिपन तरुनी समान।। बरनि
तमन और कछू जेहत सहेत रुजान।। २०।। यार पारस्ता
विक अन्योक्ति है व नैक बकी उक्ति सखी सो वचन ना
यका सो कवित्त जगत मैं सब सौं करत सब प्रीति अंत
प्रीति रीति जानत जे प्रीति के निधान हैं।। करता सिंगा
र रव पव सब कौं उवै सिंगार करवे के मेद माउ मै विनान।।५

अनियाँ नैने कजरारे दीरघ दृगन वारे कै तीन ततन मध्य मंड
ल मैं आनके प्रेम मसै उर चित मन कछू और ही है हो जव स
आप निरखत ही सुजान हैं ॥ रसप्रकास ॥ नायका की प्रसं
त सखी कहै है अनियारे नैन सो दीरघ नैन सो जो अनी
सो कितनी तरनी तो हू समान नही है अर्द्ध कि बुतातै
तो समान कितनी तरनी समान सगर्व नही हैं वह तो सञ
निरवचनीय चितौन कछू और है है जा सो सुजान प्रवीन ना
यक बस होत है ॥ कि वासें दृसी तर रहू जानि जीव बस होत
है यह ॥ व्यतिरेक अलंकार है ॥ और भेद कातिसयोक्ति
व्यतिरेक उपमान ते उपमेय अधिको देष ऽ सब देर आव
जा सो सबी मी भि बात विसेष ॥ अतिसयोक्ति में इक व.
है उह विध वरनत जात ॥ और हेर बो दी बीये और याकी
वात्त ॥ मूल दोहा ॥ चमचमाय चंब लन पन विच घूंघट
पटझीन ॥ मानो सुरसरता विमल जल उछलत उग
मीन ॥ टी ॥ यह नायका के नैनन की सोभा सखी नायक सो
कहत है ॥ नायक नायका सै कहै सखी सो कहै कवि उक्ति ॥ क
रूप की रसात आज देषी वृजवाल लोक केती सोभास
नी वाके नैनन से सरीर मैं ॥ टी ॥ पानट रत उदमाउ मोहत तो

24A

हारे हैं तवा है। प्राय अपने प्रतम पर करत कटाछ मन न म नम पकी
कलान कै ।। वदन को निकसो तो रूठ है तो त मेरे जान वे ननको
संग्रह कहि नहीं तेहू जान कै परम प्रवीन दोउ याही ते परस्पर
लोचननमहीमें बतरात सुषमान कै ।। रसप्रकास ।। नायक ना
यका नैननसो उसारा करत है सो देषकै सषी पीछे कहत
है संसार मे सत पुरस है तिनने मर ।। निकसे वे नरु षतोनि
कसे जे वचान है ताको रूठ जान कै मानो नहीं संग्रह की बात है
याहीकारन ते विधाता ने साची बातन करी वे कोने नैन कीए
हैं वनाय मानो यसारा की बात सात्य ही है इहा सिद्धास्पदा वस्तु
त प्रेक्षा उनकी बात मिथ्या इस हेत नैनन वै न सिद्धास्पद ।। स्नेह
दृग नलागन वेधत तियो विकलता करत ।। अंग अग्यान ।। ऐते रेस
व ते विषम भई हम तीन तान वान ।। ५७ प्यारी कुने ज देख नायक
को विकलतता भई रूसषी नायका सो कहत है ।। सवैया ।। भौंह
मान विना जिन तैं दृग ही दे ठे चलो उनम और अग्र नैरे ।। नैनन आनी
अ प्रचूक लगे हिय वेधत कोह विदारे नहीं तेरे ।। और सवै
अंग वा कुत ते सर सात वि षाधार तो लागत घने रे ।। रीत
गहे सब ते विषमै विषमे सर ई दृग तीखन तेरे ।। रसप्रका
स ।। नायक की उक्ति नायका सो नेत्र हमारे दृगन सौ ला
गत है उर कौ वेधत है आन और अंग को विकलता
करत है ऐ बाल तेरे जो ए हई तन नैन हैं सो तीखन बान है
सब ते बरछी तीर कटारी ते विषम है तुने हन नहीं जात हैं अ
सगत अलंकार को प्रथम भेद तीन अंग सगत को जप्रकार नहीं है कारन

दृगनमें लगेन्हा सीऐ जाहीको ताहीको ये दैकारज ये दकौं
सौंप्यो और गैर पथको ॥ मूलदोहा ॥ विरहचार दौरत दुषी पत नि
ट बले नै कर है न ॥ ऐ कजरारे कौन पर करत कजाकी नैन ॥
५८ ॥ रहस्य कुलसें कौन पै करत कजाकी याव दसाव हत
नायकन सो प्रीत जानी सषीको वचन नायकासौ
कवित्त ॥ खानन के निकट निसंक है वि हार करै कोट
तौ टरै चित्त वित्त हर से न्यारे ॥ नवत मनोज के प्रवल पृथसीकार
कहै घायल करत उर घरक धरै न रो ॥ दृग घोटकी प्रौढ गहे
घात है है फेर फेर दौरत ता दीह सीयत निचलेर है नरे ॥ वे
चलठ और अन पारे कजरारे प्यारे कौन पै करत कजाकी ते र
रैनैनरे ॥ प्रकास ॥ परकीया नायकासो सषी प्रजानसी
हैके कहत लीकरत है ॥ मिलवे करता है फेर दौरता दबपता है ॥
कजाकलूटे राव री रहीत रहे है मिश्च लषोरोभी नहीं रहत ता है तै जो
तेरे कजरारे का जरसरहता न्ये त्रै है ॥ सो कजाकी कौन पै करता है
जो नायक सो सबी को वचण है इ तौ विना कजरई कजरारे नैन
जानीऐ ॥ इहालुप्तोपमा अलंकार है नैन उपमेय है और वाध
मि है वाचक उपमान को लोप है कजाक होइ रहत ना उपर
तो जानीऐ ॥ मूलदोहा ॥ प्रपचित मनवर्नन ॥ बरी भीर ह दि
ये कै कितहू है रतप्रार ॥ कौरै डीठ मैं सडिठ सो सबकी
डिठ बचाइ ॥ ५९ ॥ रहस नायकाके चितै वे की सहजी सषी सा सेषा
कहै तो होय नायका परकीया कवित्त ॥ सोने सो गात ते
हाई सी वैस सनेह सनी रस कौ वरसावै ॥ नायके चाहन

की चतुराई कहा सो कहै है कहत तो नहि आवै ॥ और भई अज्ञात
तरुन माननी को है कोउ येहन पावै ॥ ध्यात गहै जु रैडीठ सो
डीठ फिरै सब की वह डीठ बचावै ॥ इति प्रकास ॥ परकीया
नायका सखी सखी बैन ॥ बरी अज्ञात जु भी रहै ताको भेद कै
कितहू कहूं और हाय कै इत अपार यां और अपार नायका नाय
क की और अपार है उनकी डीठ जु और कहीते मिलवै फिरै सब की डी
ठ सो बचाय करि रहा विभाव नाम अलंकार है ॥ प्रीति बंधक के
होत ही कारज हूं लिन मान ॥ और प्रीति बंध कहे तो भी है दूकों
मिलवौ कारज भयो ॥ मलदोहा ॥ सजात कुटिल कटाक्ष
सर कौन होय वे हाल ॥ कठिन जुही ये उसार करि तउ रह
ल तो नट साल ॥ ९० ॥ ये नायका के नेत्र बाणक के हृदै में चुभे
है सो सखी नायका सो कहत है कवित्त विधौ सुधौं तीरते
तीतन को बचावे पीर जाम यह वात जो व सकल उरत है ॥
लागे वृजनारन के कुटिल कटाक्ष सर कौन होय विकल
बिहाल सब गात है ॥ विक्रम निधान अति पारथ के वान
हूतै येरे जान इनके अमोघ उत पात है ॥ दिब ये न घाय
उरक टतउ सार करतो ते परदेखो नट साल रहजात है ॥ इति प्र
कास ॥ सखी की उक्ति सखी सों ॥ कुटिल टेढ़े बांक बदाई जो कि
कटाक्ष सोइ है सर ताके लागत ही नायक कौन वे हाल होय
उसार तीर जो है हृदय कै कढ जाय नट साल टूटी भाल अग
मो रहै कठिन जु ही या उसार करि हृदै कों दो उसार कहि ए
छेद सो कर कै कढि जात तो भी नट साल रहत है ॥ वितर्क संज्ञा
रीका बालिंग वे हाल हो मो कटाक्ष के लागे सो सामर्थ्य की

किं वा विरोधाभास भासत जहां विरोध सो वहै विरोधाभा
स ॥ कैउ सालन ट साल रहै उहै विरोध सोभास ॥ मूल दोहा ॥ स
वही तन सउहात छिन चलत सबन दै पीठ ॥ वाही त
न ठहरात ये कबिलनमा लौ दीठ ॥ याल छ ता
नायका सो सखी कहत है सखी को वैन सखी सो वने
कवित्त ॥ लाल मनमोहन की छबि परछत नो वल
सीरस्हे माहवहू रावत है मोही ज्यो ॥ प्रीत उर अंतर की
प्रगट ति लो छिप त सो है कीरे कैसे नव हत वाराचो
ति सों ॥ सब सो लसत मिले काहू सौन ते रीझे ठपी
ठ दे चलत फनन वहि की ओर ज्यो ॥ रत उतते ॥ रवि
त चोर ही कि ओर आइ रहत है ठहराय मं चकी कट
से ज्यो ॥ अरथ काय ॥ सखी सखी बचन ॥ सब ही त
न सब ही की ओर सनमुख होत है छिन ऐक वेर सबन
को पीठ दे के चलत है ताही तन न ठहरात पर इय
कहै नायका की ओर के वा वा नायक की ओर ठह
रात है कबिलनमा सी कबिलनुमा लोक की पत्तरी
ओरन की ओर रहत है पछम की बान की खुचक पष्प : वर्ग
मे लाग्यो रहत है ॥ कोई तरफ फेरत सो कोउ दे रे तो पतमा तर
फ को फिर है ॥ इहां पूर्ण उपमा अलंकार है ॥ दोउ उपमे
य कवितमा उपमान लौ बाचक सउहात ने धरम ॥ मूल
करत नट ता सरत बिजन मिलत बिलते लजाता ॥ मरे
ओन मे करत है नैनन ही मे बात ॥ ६२ ॥ ए दो उधर मे नैत्र
नैनमे बात करत है सो सखी सखी सो बैन ॥ कवित्ता भ ओ है

न
मरे
हि

26A

२ बनताऊ बावतनमेद कोऊ उमहत दोऊ पोसनेह सनी घात है ।।
छिलता मिलतपुनि बिलसतामि लतर सुहलसत लसत सुहकातम
सकात है ।। प्रेम पगे दृग प्रवीण प्राण प्यारी पीय मनैनिनहि
निदुन करत सब बात है ।। ना करत हां करत रिसात बिसतात ही
तमीजत लजात नि । जो कात है वी कात हो ।। इत्र प्रकास ।। लोग
न होभौन भरत्तो है तातो नैनन ही मे बात करत है कहत है नाय
कतौ हां केत मे बलाव के र सोर करत है तब नाय का नरहै
नहीं करै है नहीं कहै वे को जो सो भाविवेक होत है तासो नाय
करी गत है तब नायका खीजत है कोई नाइ[illegible] मे जो पेर नायक
केनेना मिलकै खिलत है हलत है तब नायका लजात है
देनकै सखी सखी सो कहत है ।। परकीया नायका विभावना
अलंकारा प्रतिबंधक के होत ही कारज दृर्शमान भरयो भौन
वाधाक है जौ मनकारज करत है ।। प्राधा दे हमे कारकदी
पका । कारक दीपक तेकमै क्रमते क्रियाग्रनेका ।। कह
तन रतरिस तखी जात खिलत मिलत लजजात ।। सत
सब ग्रंगकरताखी सुघर नायकमे हसिबाया ।। रसउत सेताग्र
नंतगति पुतरी पूरन परराया ।। ६३ ।। इह नायका की पुतरीनु की
कौ सोभा ग्रह नेह कौ ग्रध का उम[illegible] बीना यक सो कह
त है कवित्त ।। चारु प्रभा पल कै जल कै मदु पीक तद टीप है
रे सुपर्श है नायक नैन हसि बाय सबै रस मे पुरु धताव ग्रवी
न करी है ।। कृष्ण कहै प्रति बायन सो गति लेत मनो वसुधा
मै ग्रति आरभउ है ।। लेत रिसाय मे [illegible] बात कर पातर साय कि धौ पुतरी है

२७ वि
टी
27

६

हरिप्रकास ॥ नायका वासकसज्या ताकी चंचलता देषस
षी नायकसों कहत है वा नायका कौ प्रांष की जोबत री
है सो पातुर आय है उतरि पन की सिरदार है सिरदार पन्यो
निबाहत है ॥ नाच के चार अंग है नाच वो गायबो बजा
यबो औ उबटायबौ नेहरूपी नायक नचावनहार ता
मै सात अंग करि कहिबो नटबोरी औ बीजबौ हस्तानी
ए चार हस्त अंग मे सिषाय करि सुघर कर राषी है औ
र पातर है दोऊ एक अंग मे सुघर प्रवीन होत है रस सो जगति
होयकै अनंत गति लेत है और पातर है सषी सगति
ले त है ॥ रहस रूप को अलंकार ॥ उपमान ह उपमेय
मै भेद परै न लषाय ॥ ताहे रूपक कहत है जे कवि
है सम दाय ॥ रस दोहा ॥ के जान बन मजन कीते
वै ठी बौरत बार ॥ कच अंगुरन बिचबीच दै निरषत
नंदकुमार ॥ ६४ ॥ सषी सो सषी वैन ॥ नायका वारमु
का वे है रहै दोऊ कुच आंचर कामै न सी ताकी सबै याप्रवी
नरा यजु नै [illegible] रा सवैया ॥ मनु जो के उरज के जड़ गी कच बैठ
कै बोरत है पीय प्यारी ॥ आंगुरके सान के बिचबीच दै
पै लषै नंदकुमार हमारी ॥ कै तो सषी सो कहै मेरी नंद
कुमार लषै अंगुरी कुचमारी ॥ उ ताके है बिच आंगुरी का
स विलोकत नंदकुमार हमारी ॥ हरप्रकास ॥ सषी सो
सषी वैन ॥ कमल नैनी नायका स्नान करि के बार
सुरझावै है ॥ केस औ आंगुरी के बीच मै है दूषदेष
कै नंदकुमार को निरषो है किंवा नायका नाम कहै सो है

33A

कोऊ बैठी मुख ढांकि उर लोगन की भीर मैं ॥ कहै कवि क्रिस्न वाके
चंचल विसाल लोल लोचन जुगल लगलकत मीने नीर मैं ॥ केश
नमन निहारि छवि निरषि अधीन विवि मीन उछलत मानो सर सरि
नीर मैं ॥ २२ प्रकास ॥ नायक की उक्ति सखी सों ॥ नायका के चंचल
जो नैन सोई नायिका जो है घूंघट पट ता मैं चंचल भाव मानत है ॥ ऊर
सरता गंगा जाको नीर मल ताजल स मैं मानो जुगल कहै पे
देषि मीन उछलत है ॥ विर्त कसंचारि वचन अन्नभावते
अन्नरागधिंन है रहा उत्तासप दा वस्तु तपेक्ता है ॥ पट मैं चंचल
की संभावना ते नैन मैं मीन की संभावना ॥ मूल दोहा ॥ नैन
कुरंग मग अलक छवि छूटी लागी पाइ ॥ जिहि चडि मन
चंचल भयो मति दीनी विसराय ॥ ८२ ॥ सखी सखी वैन वा
नायक को सखी सों ॥ सवैया ॥ जानत ही वाल विसाल छवि की
तरुनीन मैं वानक अंग बनाय कै ॥ ता की अनूप म सोभा
निहारि तार्हू पर आप पउ विसराय कै ॥ नैन तुरंगम तीर ही को
अलकावलि चाढि लगी जिन आय कै ॥ आन पहोंति
न मैं चडि के मन ने मति मानो दई विसराय कै ॥ २२ प्रकास
नैन तुरंगम हैं अलकावली सोई भई तिन कैं लागी ति
न तुरंगन पै मन चडि कै मति विसराय दई ॥ नैन मन घोरा
सो रूपक ॥ मूल दोहा ॥ अमी हलाहल मद भरे स्याम
सेत रतनार ॥ जीयत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इक
बार ॥ ८३ ॥ सखी सखी वैन ॥ दोहा ॥ कृष्णचंद्र का मैं नहि
ताकी सवैया प्रवीनो कि ॥ सवैया ॥ खंजन मीन सरोज

कुरंगन को गर्व [illegible] देखत गर्व रितें है ॥ और रूप उत्ति धारे कु
विके रकटाक्षन सों कट जात चितैवे ॥ नैन प्रेम वि
सवाह नी सो भरे सें अप्रसेन सरंग ह्वै तो के ॥ जी वैं मरे दुख
द्रूम पर है ॥ अप्रस्तार जिन्हे एक वार चितै तो है ॥ इस प्रकास
अप्रस्तुत विषम दर्शन स्मरे है मानो तासे लेत स्सा
म ॥ प्राणन्तो है ॥ जो इन कूं एक वार चितैवे है तहां एइ
न कूं ॥ एक वार चितै वे है तब के जियत है मरत है दुख
दुक चरत है तौ ॥ प्रेमता दि को धर्म जिवन्नादि के
इह ॥ अलंकार पद्या संबस बीस सखी सो कहत है ॥
मत्तदोहा ॥ फूले फरकत ले फरे पलाव राइ ठौर बार ॥
करत नवाब ताविविन पन पापक घापक ज्वार ॥ ८२ ॥ ३२
दोउन कैं कटाक्षन की चोट करत है ॥ और नाकी दृष्ट बचा
वत है सखी सखी वैन ॥ सवैया ॥ अंजन अंग कहै कहु
नी सीख एनव जोवन नायक है ॥ कांदत फूलते निसंक
ग है करवाल कटाक्ष सनायक है ॥ और टको छललवरी
पलावे ले लावे प्रति जौम सो त्यायक विपलोवन चेर
वचावत है तियनैन के सैन के पायक है ॥ इस प्रकास
नायका नायक कौ देखितां है सो देखकै सखी सखीसों
कहत है ॥ ग्राम दसों फूले मानो पर इकत है ॥ पांउ दत है

३४A

तौ को । अर्थ । लै करि कटि औ छाती सो उरै है वस्त्र कर । औ कट
वि जो है । करवाल तरवार वि पन न पन पाइ कविपक कही है
दोउ के नायक नायका के नैन सो चाप करवाल का
दै है । करत व बावत घाइ हजार ॥ याको । अर्थ । हजार घा
व करत है ॥ औ वचावत भी है । आप घाय लान ही होत
है रहै । अर्थ । आछे नहीं किंवा हजार घाय करै है । विन
को ही है हाथ अविलत्ता सो वचावत है जा लाही सो द
र जन के रनादे वलवै किंवा दोउ न के नैन पाइ करि है
सो ही हजार घाव को करत है । औ दंपत को विचावत है
। अर्थ यह जो दंपत को कटाक्ष की चोट न होय तौ । प्र
फुलाय मरै किंवा मैं बाल नैनं के कटाक्ष की चोट न हो
य नैन ही । प्रफुलाय मरै ॥ ३ ॥ उदाहरन है लिखत है सो आव के
वचावत है । हर्ष संचारी कहा वा प्रभाव घाव सब लत
क है ॥ घाव को । अर्थ । घाव न ही मैंन सो पाप करत वक
रत वेहू ॥ जा पद च वाय न चीक नी चलत व हू दिस सैना
त देखन छाउत हू हू नके हू लीर सी हौ नैन ॥ पर नायका
पर की पास देउ न के नेत्र देखे है । ताव हू लत ही मैं हो
हा हा सब हा सो कर तौ है । सवैया ॥ मैं हू की घात लगी जब
ते तव तेरे सरीर तरे हैं नैन हू ना ॥ देखत ही । अर्जु मो पस मरे
उरै कौन न करै कुल का न कहा की । जहा पद है न चवाय नली
उप हा हा सब सैन तव लै चहू ओर की । जहा व छोड़े न नैन हू हू को ।

अप्रकास ॥ तथा सषीवैन ॥ जद्यपि जौवी चिबाय निंदा न सह
त तातन सो चौक नीछ बचन हू दिस सो से न उसारा होत है ॥
तउ दै पात रहू न कोर सी से मैं न उजे है तोर सी न है छाउ
त है पूछीन रंग यत यत सचारी से न पद तेपाकी पथा विसे
षोक्ति ७ अलंकार ॥ विसेषोक्ति जिहहे ते सो कारज
नाह ॥ सेन हे तहां हसी को त्याग न ही भयो ॥ नासा
प्रबन दोहा ॥ जटत नीलमन जगमगत सीकर हार
मांक ॥ मनो अतिचंपक कली बसरा ससोत निसंक
ष ॥ यहा नायका की नाक मैं हार कहै ताकी उपमा
कवि उक्ति सवैया ॥ पूरी मय चंपक के कलि मैं कच वे लसत कि
र नैं क निरषत ही रहत वित चेत है ॥ प्रफुलत चंपक जमे
सो है करतार कि धो तिसको सम नका सोरभ आसमे तहे
नीलमन जटत छबीली ते रे नाक पर सीकै सो लसत
महा सोभा को निकेत है ॥ मेरे जान मुकुलत चंपक की
कलका पै वैठो ५ अलि सावक निसाकर सेत है ॥ अप्र
कास ॥ होने की सीकर उपर बौर हात है जरा वजत है
त है नीलमनि सो जटत जगमगात है ऐसी जो सीकर
सो नाक बहार ई किंवा नाक के सीकर हार ई तहा संभा
वना मानो पौचं पाकी कली वै सके लि संकार तहा है
सषी नायकचि चाह वढावत है चलै है न हि तो सो न होत का

वेधकअनियारेनअनवेधतकरतनिषेधपं॥वरवससुवेधतमोहियेतोनासाकोवेध॥२॥

35A

~~वेधकअनियेअमनमनोंपरवानि॥अनुतोंअरितमवसरसतहैसोवासाको~~

वेध॥दूपं॥कृस्नचंद्रकाया॥यहांनाकवेधीकीसोभानाइकुनाइकासोंकहेहै

कवित्त॥अनियारेनैनवरवेधतविरानेमनकहाअचरजपैनेसरसस्भाय

के॥तोहिपनिरषिवृषभानकीकुमरिअद्भुतकीतरंगरहीमरेउरछाय

के॥वरवटमेरोहियोवेधतहेप्यारीतेरोंनासिकाकोवेधमनरहेक्यों

घिरायकें॥सोहोंकियोनेहकीनिकाईकौनिकेतकिधोंसुरवकेमधुपनै

सुविरकीनोंआइकें॥हरिप्रकास॥नाइककीउक्तिनाइकासों॥तीक्ष्न

नेत्रअनिताकोअनीकहतहैंवरछीकोछुरीकौंअग्रभागसोअनी॥तैसेंग

केकोंनअनियारेनेत्रवेधकहेसोवेधतहैंताकोंतनिषेधमत्तिकरै॥वरवटय

जोरावरीसोंमेरोहियोंवेधतहैं॥तेरीनासिकाकोंवेधकिंवा॥वरवटसमा

मगोलकोहैसोवेधैहैं॥अनीवेधैसोजोग्पहीहै॥वरवटनामगोल

वस्तुकौं॥अतिसोंदर्यव्यंगि॥अभिलाषरसाचौथीविभावना॥ज

वेअकारनवस्तुतेकारजपरगटहोत॥वेधिवेकोकारनवेधनही

मूस॥जदपिलोगललितोतऊतननपहरिइकआंक॥सदासंकवढि

येरहेरहेचढीसीनांक॥कृस्नचंद्रकाया॥यहांनायकाकीनांकमेंलौंग

देषिकैसषीनायकसोंकहतिहै॥कवित्त॥किधौंहैवदनछविदीपति

सुमेरताकीजगरमगरजोतिपूरणप्रकासिका॥किधौंकविकृस्नचार

चंपककीकलिकापैंसहजसुगंधनिकसतजातेस्वासिका॥जदपि

सुचंगअतिललितौलसैतऊतमतपहरिडरपतिउरत्रासिका॥मा

नकेभरमभरीमोहिनविलोकिरहेमृगनैनीनिरषेचढीसीतेरी

नासिकाहरिचंद्रका॥सठनायककहतहैसापराधदेषिनाइका

[margin, partly legible: ...]

सोदेषिकैजहियजोभीलवंगाहंदरिहैतौभीत॥एकग्रांकनपहरि॥एकग्रांकवें।
ग्रर्धनिश्रवनपहरि॥लवंगहैकहुताष्षोमानकीसंकाहदयमैंवठौरहतिहै
सुभावहीतेईहेरीचढौसीनांकहे॥लषमोहीववात्तेकरैतिपटकपटजियु
जानि॥जाहिनउरग्रपराधकौसठकरितारिवषानि॥रसिकप्रियाकोछं
ना॥लेसलेकरलोगललितकहिदोषदियो॥गुणमेंदोषहदेषमेंगु
नकल्पनासुलेस॥मूल॥वेसरिमोतीदुतिझलककपरीअोठपरग्रायचतो
होइनचतुरतियकौपोपटपोंछ्योजाइ॥८१॥कृष्णचंद्रका॥यहनाइका
केग्रोठउज्जलहै॥समोतीकीझलककेललाईकेमध्यस्वेतझलकत
है॥यहचूनौंजानिपोछतिसषीयाकीभ्रांतिदूरिकरतिहै॥ग्रथवामो
तीझलकदेषिकैसषीनिरधारकरिकेपोछतिहैं॥जोनाइकासषीसों
कहैतौरूपगर्वितहोइ॥सषीकोवचननायकासो॥सवैया॥ग्राजसि
गारवन्योतियतेरोजगमगजोतिसमूहकरै॥देषतग्रासेवारहीवा
रहियोहरिकोंकहिकौनहरै॥वेसरिकेमुकताकीप्रभाग्रतिउज्ज
लग्रानिपरीग्रधरैहै॥होइनचूनौं॥लग्योमगलोचनक्योपट
सोग्रवपोंछिपरै॥हरिप्रकास॥नायकासषीसोछिपाइकरिकैं
नायकसौंरतिकरिग्राईहै॥ग्रोठग्रगौंछसोंपोछतिहतासषीच्
नाकोछलकरिकहतिहै॥वेसरिमोतीझलककीदुतीग्रधरमैंग्रा
यपरीहै॥चूनानहीहै॥चतुरातियनसवबातनमेंजानतिहै॥प
टसोंक्योकरिपोंछीजाय॥पोंछिकपोलग्रंगोछतिग्रोठग्रगौंछ
समेंठतिग्रोषिनग्रोठनभोहै॥सुरतांतमेंग्रैसोवर्णन॥परक्रिया
नायकापरियायोक्तिग्रलंकार॥परियायोक्तिप्रकारद्वैकहुरना

जो वूनाके भ्रम सो नायका पोछत है तौ भ्रांतापन्हुति है भ्रांता
पन्हुति उक्ति सौं भ्रम परकूं जब जाय ॥ अलंकार दोहा ॥ रुद्रहै सी
मोती सुन पत्तान पगर वन्नि सांक ॥ जहुं पहुं रै जगह गर सतत स
सतरह सतसी नाक ॥ टी॥ यह नायका कीन ची सी सोभास सखी
कहत है अपन्होति कवतान्हु मैं वनै ॥ कवित्त ॥ सुरन समेत
नाक पाहीते कहत सुकत नरुक्ति उकत पुरी सी धरसत है
कहै कवि कृष्ण मन मोहन के मोहवे को मोहनी की सिद्धि या
मो सोभासर सत है ॥ तो कि पहरे ते जगन पन रसत अपन्हुति उ
क्ति वर सति पानो भानो नास कहसत है ॥ अथ है न उर मो निसं
कतू गरव कर है उकता के गपासहतल सत है ॥ हर प्रकास
नायका ते सखी वैन रहु जो है मोती है सोई सुगंध गपनाम
उत्का सुई ला किं वासु गंध सुप सतरह सो गूछो है ॥ तासो
ते नपात निसंक गरव कराजि है तो कि पहरे सो जगके हुगको र
सत है ॥ रसत को अपन्हव सकूर के लछना सो आनी ये अथ
हसत सी मानो है सै है ॥ अथ ही नाकत सैहूं ॥ सखी की उक्ति
जग हुग कृष्ण जानी ते अपन्होति मे भी लगत है ॥ उत्प्रेक्षा
अलंकार हसत रेह क्रिया है ॥ ताके अप्रगेसी है तासो ॥ सल
वेसर मोतीदान तही को पहुं है कुल जाति ॥ पी वो की अधरा
न को रस निधार कदिन रात ॥ टी॥ अपन्होति को उत्प्रेक्षा है
कुल मैं मयो तलघु मान सजन हा व डीठोर पहुचे तहा कहीदे ॥ स
वैया ॥ कोन विनाम करौ कुलजानी कौं जो वमो अपावनो ई जग
नी ॥ है सव ते उत्पनी तहो अहरु आई है तेरी ही वात मसी वामे ॥
तें ही ल हा कातरव को पतला है तहि के सांर हे सकता धनि
a

द्वौ सखि सात्ति पके प्रधाराम तनीके निसंक है पीवौ करै दिन॥
रू.प्रकास विरह मे नायक को प्रलाप है वेसर मोती धन्या र
है॥ कुलजात को को न बूझै है सो पी को कुलजाति पंच
र जाय के प्रौढ के रस को निदर कै निसंक पी पौ करै दिन
रात यह द्रव्य ज्योति मै भाल जै है॥ दामा र प्रसून मे निंद
वताज मृति निंदा प्रस्तुति हेतु निंदा को त्यान॥ म.त.दो.॥ लस
त लेत सासी छ कोत्तर लतरोना कान॥ पर [illegible] मन मोहर सतरे स
ललर विप्रति बिंब महान॥ ४० पा.त रोना वर्नन॥ सखी को बै
न नायक प्र.कौ कवि उक्ति॥ कवित्त॥ छवि सो मिहास तृप ध्या
न की ज्यो तोस प्रगट सकल सिंगार साज बन्यो है एवान
को॥ कहै कवि कृष्ण बार प्रभा की निकाई त्यागै गरब ति ला
स रहस पर वनितान को॥ सो.त.रोइ ऐस प्रमी ने हे ता लाख
छ कौ ना त [illegible] तरोना रतन कता [illegible] काननके॥ येरे मा
ने देव नक्षत्रन मैरलम्न तातर दे षी ये प्रगट प्रतिबिंब
मेर [illegible] आनन को॥ २.प्रकास॥ सखी व.ह.ताना यकानसो मो
प्र सक्ति है नायका ताको छवि सो ताल लखायके नाय कापास
ले जानो बासत है॥ है.तर लवंब त प्रश्न कहो [illegible] रहत
है मैं केत प्रंगकी छवि वरनत हे सो सुनो स[illegible] सांसहो
छ को तरोना ता कीवा के कान मे लसत है, सुर सुर नग गाजी
ता के सलल जल मे मानो प्रात का त्र के सूर्य ता को प्रतिबि
व पर यो है॥ कै वा नायक ना रा को सो सुरत की बात कहत है
त व नायका मा प्यो न बाय कै ना ही करत है ताव तरोना वेव
ल सो तहे सो देख कै सखी सखी वैन पटा व सुलुप्रेता उत्प्रेक्षा सपदा सारी मेर

प्र
सौ
ति
का
वेद
[illegible]

॥ अथ अोठ वर्नन मूल॥ द्युति दुराई दुरत न क्यों प्रगट करत रत जत पा॥
छुटै पीक अोरै उठी लाली अोठ अनूप॥ ४८॥ इनको रत
के चिन्ह देखि सखी नायका सों कहत है॥ पर कोपा नायका सखी
सों कहै है। तेरो अनत संभोग दुषता है ई॥ सवैया॥ नूतन
वारत नायक सजे कच पूलो जु है फिर अाउ बनाई॥ होत कहा
लपटै पटरू सी कै कुलाल की पोछि के अाई॥ देति कहे रति रं
ग की भांति सदै मन की रीत उरै न दुराई॥ पान की पीक छुटै अ
धरान अोर कछु प्रगटी अरुनाई॥ रसप्रकास॥ अन्य संयो
ग दुषिता नायका व्यक्ता सो अादर कर कहत है है द्युति
संदरी दुती दुराये दुबाय दुरहे न हीं तू अापने रस की
सो नायक कौ रत को प्रगट करे तो सो रस का कहत है॥ ना
यक ने तेरे अधरपान की ये है ता सो पीक छूट गई है॥
अोर लाली अोठ विषै अनूप ... ही है। किंवा लगत ता सो
लाली कहत है। तहां अंदेस अपूर्व। ते सत रदरी लो द्युति
सो दुराइ नहीं दुरत है॥ रत के रूप को प्रगट करत है अौ
र वेसे ही॥ पहले अपूर्व मैं अप्रस्तुत सों दावाजरु त॥
निंदा अप्रस्तुत सो होत जहं अप्रस्तुत निंदा को ज्ञान॥ अौर
पद होइ दूनो पदन मैं प्रतीत सपो ति॥ अौरै पद जहां सजी
ऐ अधिकाइ के है ता प्रतिसपो ति भेद कवि है कहत सु
कवि सिनेता॥ मूल दोहा को वर्णिवंड प्रति पूक त अंच
ली डोठ मुस्काइ॥ फिर न हरें ... रि पे न हि परस चिबुक
की गाड॥ ४९॥ अंग देखत देखत ठोडी की गाड नायक व सहर
रतो नाहि सो नायक अवस्था नायका सों कहे अष्टवा सखी सो कहै

चि

चार

३८

38

डीठनदी वस्तीतरतीछि रमा तस्लि कानन ते निकरी है॥ तीन [illegible] पहार बड़ी प्रति प्याकति हैनउहा ठहरी है॥ वाहरवली मुखमंडल में की द्वबी वही है ते विध ऐसी करी है॥ ठोडी की गाड में जाय परी रूप री है पतीत ताहा ते टरी है॥ [illegible] प्रकास॥ कुच से छै गिरता ते चंड के प्रति प्याकत के भई जो प्याके है विश्रा मको है॥ कहुं वार विश्राम करे है जो उस की है चाह सो प्रागे चली चिबुक की गाड बाउ तामें परी फेर नहीं मट ही और ठौर नहीं गई परी तेरहे कुच गिर ३ हार प के हे के बरनई है॥ रमा नो के संग॥ [illegible]॥ ललन स्याम छक [illegible] मनो गुलाब प्रसून॥ ८२॥ ३२नायका की ठोडी पै लीला की सोभा सखी नायक सो कहत है

कवित्त॥ कुंकुम गारि कि यो मनो देह में हाल कमार सुगंध को भौना॥ रूप सुधा भर्यो चंदसों आनन प्रीतम के मन को हरि रौना॥ के मधुपान गुलाब के फूल में मत्त पर्यो मनो भौर को चौना॥ हरिप्रकास॥ सखी की उक्ति नायक सों॥ हे ललन ललितजो स्याम लीला जो इनाहे ता सो॥ चिबुक में दूनी छबि विचरी है॥ बड़ी रहमी पाठ है॥ मधुमंदिरा मधु फूल को रस ता सो छक्यो मधुकर भौरा सोमा नो गुलाब के प्रसून फूल [illegible] ता में पर्यो है॥ किंवा हे ललन नाया के चिबुक सों दूनी छबि विचरी और ठौर में जो या की छबि है सो ई रहति है॥ हे स्याम लीला में चिबुक में भौर की ओ गुलाब प्रसून की तर्क उत्प्रेक्षा अलंकार

ऐसी बचनी जोई ओठी की गाड में स्याम तिल है मानो गुलाब प्रसून में भौरा

तेरे ऽवसा ठग है ताने चिराक चौंध मे
अंग के जो चावरून ताहें

38A

मूल॥ ऊरे ठोढी गाड ऽगहि नैन बटोही मार॥ चिलक चौंध में रूप ठग हाँसी फाँसी डारि॥९४॥ रसचंद्रका॥ इह ठोढी की गाड कौ वर्णन नायका नाइक सों कहें सखी सों कहै सखी नाइका सों कहै॥ सवैया॥ केसनि के वन कों उपकूल तही भृकुटी गहि ओट विचारें॥ चारु सिंगार सिंगार की चोंध मैं देत प्र चंड इगानि हि तारें॥ फाँसि गरे मुसिकान की पारि कै ठोढी की गाड कुवा गहि डारें॥ प्यारी महा ठग तेरौ सरूप ऽपातन जि मैं नवटोहिन मारे॥ हरिप्रकास सखी वचन नाइका सों भयो जो चौंक चक चौंधी॥ जैसैं सूर्य देखि आंखि मे चौंध परत है। पहलें गहि कैं के रि हासी सोई है। फाँसी ताको डारि कै नायक के नैन सोई हैं वटोही॥ ताकों मारि के ठोढी को जो गाड है तामें डारयो तहां ई नैंन॥ तासें अन्यत्र जात नाही॥ इहां रूपक सर्वांग है॥ उपमान उपमेय सो अभेद कियौ॥ मूल तो लखि मो मन जो लही सो गति कही न जाति॥ ठोढी गाड गड्यो तऊ उड्यो रहै दिन राति॥९५॥ रसचंद्रका॥ दृष्टान्त अनुराग अद्भुत रस नाइक कौ वचन नाइका सों॥ कवित्त॥ तेरौ तन रा जै वृषभान की कुमारि जै सो ओसो छवि पुंज तिहुं पुर मैं न हत्तु है॥ ता मे और अद्भुत रीति अवरेखी ताहि सुमिरि सुमारि आचिरज उमहत्त है एक रसना सों मो पै कहत न बनै नैन क्यों हत्तो हि लखि मेरो मन जो गति लहत है॥ जदिप मगन ओढी ठोढी गाड गड्यो मन तरू देखें औ आठो जाम उड्यो ई रहत है॥ हरिप्रकास॥ सविलाष नाइक कौ वचन नाइका सों तो हि देखि कें मेरे मन मे जो गति दसा लही है॥ सो काहू सौं कही नहि जाति है॥ आश्चर्य है ठोढी के गाड मे पर्यौ है। तौ भी दिन

२

रात उड्यो रह्यो जहं है विलास करवे को अनेक मनोरथ रहवैन मैं वरच्यो है
विरोधाभास है। भास जहां विरोध सो न है विरोधाभास गाइ मैं परतीत
है तो भी उड्यो रह्यो विरोध सो है। अपनी दीठ मानत नैनन सौं सदा। लौने अ
बजोगन लगे यो कहती नाई ठौर। दूनी है लागन लगी दिये दिठौन दीठ।
४६ रहत दिठौना वनैन॥ नायक नायका सो कहै है अरु सखी सो कहै सखी सखी सो
सवैया॥ तो तिल वैरतकी दुति लाजत साजत राजत आपकी येते॥ मोहनका
वरनीन पर है छवि मोहन न्याव ही मोल लीये तै। सुंदर आनन नैंन लपात
कहो अप्रसिध्यो स्त्रितमान ही ये तै॥ तो मुख वे अब लागन लागई दूनी है
डीठ दिठौना दिये तै॥ रसप्रकास॥ बाल मुकंद जी के मुख पै जसोधा जी
की सखी ने दिठौना दियो सो देखकै सखी सखी सो कहै है॥ लावन्य यस्या
जो मुख है ता मैं दीठ ना ही सो कैसु [illegible] की पातर कहै ये ॥४६॥ कही ये हेतु ता
सो दीयो सो आवडी विसेष॥ आगै रोक अनी लागी षी, अब दीये सो दीठ है
ना ताको दीठ कही ये दोष सखी सो कहत है देखकै दूनी है के लागी वेला
जगी ठरह दस रो अर्थ किये पै न रहत दोष नही किं वा [illegible] नायका के प्र
संग मे है तहां सखी सखी वैन रह। विषम अलंकार जहां भले उद्यम कीये ते
बुरो फल अपार॥ दिठौना कीये दीठ लागी दूनी लागन लागी॥ फल दोहा
पीयती यसो मसके कहो लखबे दीठौना कीना। चंदमुखी मुखचंद तें भयो चंदम
मकीन॥४७॥ रह नायक नायका सो कहै है अपना सिंगार करत सखी सो
कहै है॥ सवैया॥ प्यारी को चारु सिंगार निहार रही पीय पी को अप्रति मोद भरो
है। चाम च बोडा कही मुसकाय सही विधि रूप सके लधारयो है॥ याकुमुख की
अकलंक प्रभा सकलंक मयंक बरो निंदरयो है। जो मुख पै ते दिठौना
दे अजन्म लेप रूसवंद समाए कियो है॥ रसप्रकास पीय नै अपनी ता नासे सखी कहे

39A

दिठौना देब कहै है चंद्रमुषी तेरे मुष चंद्रमा ते भलौ सो जे दिठौना देवै चंद्रमा के
समान कीयो दिठौना सो कलंक समक है ताहू पर मुष चंद्रमुषी तौ पहलेक
है फेर चंद्र समकीन नहि बनै ताहू ग्रैसो अर्थ करी राहे मैं यानें काव्य
मै लिख्यो है ॥ चंद्रो तु काम्यकौ चंद्र नाम अंबु जल को काम्या को काम्या की
टी कालिंदी प्रशस्य जारीफ करवे लायक माबामै चंद्र को चंद कहत है
ऐसे चंद्रमुषी तारीफ करवे की लायक माबामै चंद्र को चंद्र कहत है ॥
तेरे मुष है तो चंद्रमा ते भलो है मुष तै चंद्र के समान कीयो किंवा
जा कारन ते नायका को शृंगार करि दिठौना दीयो है दीव ने ताहि तीव
सार सकै करत्यो है ऐसे चंद्रमुषी सषी नायका को मुष चंद्र ते भलो
तैं चंद्रमा के समक कीयो ॥ चंद्रमुषी इहां लुप्तोपमा वाचक साधारण
धर्म को लोप किंवा है चंद्रमुषी सषी याको मुष चंद्रमा के समान
कीयो है जौ भी भलो है उपमान चंद ताते उपमेय मुष भलो कहयो व्य
तिरेक अलंकार ॥ व्यतिरेक उपमान ते उपमेय अधिक कहै देषि ॥
मुष वर्नन सूत ॥ सू २३ दत्त हे मुदित मन मुष सुषमा की और चितर हत
चहूं ओर तें नहि चलत बन चकोर ॥ २८ इहां मुष वर्नन सषी नायक सो क
हैं कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ मुष को समूह वृषभान की कुमारि तेरे मुष को प्रका
स जगमगत अमंद है ॥ याही ते ति लोक छवि हार चित्त है अरु या मासर
रत दिवै चकोरनि नंद नंद को ॥ दीसत है निसा को रौं विधान विनान कछु
दे हो उमगत प्रति आनंद के कंद है ॥ सकल विलास छांडि ऐसे प्रास
लागे रहें और जानै कमल चकोर जानें चंद है ॥ इहां प्रकास ॥ नायका
की उक्ति सषी सों हे रे सो रूप गर्वता किंवा नायक तारीफ करै है स्वपद के आग
ये मुदितमन सो निश्चै मुष सो चंद्र ही जानत हैं ताते मुष की ओर हि हरना

40

40

परम सोभा वहू और परसारी ताकी और चितै रे रहत है चहू और सो निश्चल नेत्र ते चकोर किंवा सुषसमा की और सुषमा है सु समा की औरै है अविध है याकी सी सुसमा अन्यत्र न ही जाकी चकोर निश्च चितैर हत चकोर रहत भ्रांति अलंकार॥ मूल दोहा॥ पत्राही तिथ पायै वा घर के चहू पास॥ नित प्रति रहन्योई रहत आनन औप उजास॥ ४८॥ यह सुबको प्रकास सषी नायक सो निवेदन करत है नायका सषी को कहै तो सुमरण जानीए सवैया॥ ऐते मान आनन की औप को उजास रहे गेह आस पास अति चंदनी विहार कै॥ तिथ निरधार करिवे को सुघर गनक बोलि तू जैवे उरहत विचार कै। पत्रा बोलि दे बनाम तिथ को बतामे के रपून्योई कहत बहु कै मुदी निहार कै॥ कब हू कपत्रा देषे कब हू बदन प्रभा कहन सक तौ किवा ता निरधार कै॥ इसप्रकास। सषी नायका को नायक सो अस्तुत करत है॥ ठौर ठौर तो पत्रा मै तिथ पाय उथे जानीयै है वा नायका के घर के बहू और नित प्रति सदा पून्योई ऐमासी रहत है आनन जो है औप विमत्कार विसेष ता के उजास सो जो का जो को ई कहे है उजास तो तेक और हो तो है घर को वहू और पून्यो को करिकै पून्यो को चंद उगै है वा गमै बन मै छायार हत है। तो भी उजास होत है किंवा नायक और नायका के पास सो राति मै आयो है नायका को धहे तो॥ दीपा नही बार्यो है सोरे षके नायक नेक हो है अंधेरा घर को घर मै अमावस को बसाय राख्यो है तब चंद ताकी उतिना नायक सो पत्रा ही या को अर्थ हमारो ही कही ते हदा सोन त्यो है जहा सो मे आवत हो किवा घर कहीते लगाई द्रो सो औषकै है गरको नाम गरूर नहीं गरूनी को नाम गरू है ताके चहूँ पास बसू और नित प्रति पून्योई रहत हैं आनन औप के उजास सो आनन औप के

40A

उज्जास सों नहि कह्यो । औ पउ जास कह्यो तासों पहिजानी ताके आ
ननमें तोउ जौंन सौं छबि है ताकी प्रीत सौं कसी सौं मो है । औप जाके उजा
स सों पहिचानी परत है परसंबन्ध प्रकार । परसंबन्ध रूपक ल वरजर्जे मेघ
सठ हराय ॥ और ठौर व जामें तिष्प वारये हैं रहि नहीं रहि पहिचानी परत है
अप्रस्तुत वर्नन होत ॥ नै कुहू सोही बानन जलबो परत मबनीक ।
वौका चमकत वौध में वरत वौध सी ढीठ ॥ १०० ॥ इहि प्रकार नहि सी
जान्यो उर सखी नायका सों सखी ताके प्रसंग में ॥ वौका की चमक कीव
डाई करै अपना नायक नायका सो कहै है । तो संभवे ॥ कवित्त ॥ सीसफू
ल दमकत तिलक रतन मलात जोति ताके हांबू हू जगमगत अमंद है ॥ भाल
की विलक चारु रलक कपोल मकरउ मगत परत प्रति उ जिनको विंउहै ॥ [illegible]
हि वलि मैं कहूं उस कान की विसार वानि चकत है रहत निहारनंद नंद है ॥
वौंका की चमक कौंधि चाल सों न परत नीकें चारु मुख चंद है ॥ इहि प्रकार ॥ नाय
का नायक पास वैठी है ता समै सषी ताटंक की कांति सी वदैत है ॥ नायक तौ रूप
दबि । और देवर सों है तनैं कहूं सोही वानन को तजि तैसो मुखनायक को
नीठ के सहू देख्यौ जात है ॥ चारु दंत प्रभा सों वौंका ताकी जोच
मक न ताकी जो वौंधा है वि की जोस लक र ला रला हट वा कच का
ता में ढीठ कहि ये देखिके वौंधा सीच कवौंधा सी परत है । किवा दरवौंध
सी परत है ॥ अन्ने तार स्यदा वस्तुता पेता ॥ इहां का व्य लिंग भी अलंका
र है ॥ मुख को नीठ देख के दांत की चमक सो समरथन कर्यो है ।
मांग दीवर्नन । दोहा ॥ गडे वडे छवि छाकु छवि छि उनी छोर छुटै न ॥ रहे सुरं
ग रंग रंगि उही नह दी महदी नैन ॥ १०१ ॥ इहां में दी को वर्नन सखी सखी सौं
प्रहर जो नायका को बैन नायक सो तै सो उत्तर प्रहर नायक को वैन सखी सों है

सवैया॥ वाकी छबीली छबि उनी की औरछा रहि विवि जना रई भयो है
तापरत्याहलसेन हरी महरी दल विद्रुम जीत लयो है॥ जाकी महदी छबि के
मधछा कि कठैन अंजौं गडि ग्रे सेगए हैं॥ ते विधलोचन वाहि के संग
मैरा चिकै मानो कुरंग भयो है॥ टीकाप्रकास॥ नायक सखीसो कहत
है वडे जौं विके छाक मत्त तासो छकि कै मत्त होय कै हमारे नैन छबि
उनी कब्बा ओउरी तौं छोर अग्रभाग तामैं गडे है कहि पैलागे है
छूटत नहि है कानउगरियाको जोनखताकी जो महदी ताको र
रंग कुंपरंग उहीकहि पै वाही सोरंगि रहे है॥ नहदी तहां पंजाब
की भाषामैं मंहदी कहत है॥ कुरंगको द्रष्ट सोलन हि कौ सो
महदी को रंग तो लालही है गडे बडे छेका अनुप्रास रंग रंग जन्हा
जमक मानो वाही रंग मैं रंगरहे है लुप्त उत्प्रेक्षा॥ अथ कुच वर्नन
कवित्त॥ वरनन पावत निगम मग जग उपज्यो अति त्रास॥ कु
च उतंग गिरिवर गह्यो मैना मैन मवास॥ १०२३ हां कुच वर्नन नायक ना
यकासों कहै सखीसो कहै॥ सखी कहै तउवनो॥ कवित्त॥ लरत मात
मानि दन के मन लान वसात लेकौन वसैयो है॥ वेद को पंथ चलैक
हकै मै सबै जगमै अति त्रास गयो है॥ कोप्रम कहै त्रव लौ सगलि
तावन घास हथ्यावल गाढ गह्यो है॥ उच्च उरोज पहार कहू छोर मनो
जमदि प मवास गह्यो है॥ टीकाप्रकास॥ कवि कौ उक्ति॥ निगम वेद॥
निगम जाकी सम नहि औ मगराह सो वरनन नही पावत है॥ कौ
वा वेदको कहो सोपायो सोनहि वरनन ही पावत॥ कैंवा॥ पर
स्त्री को निषेध गहि आदिमरजाद उठे है जासो जगत मै अति
त्रास उपजत है कुच सोई उच्चपहार है तासो मैन जो काम सो है मै
ना कौ लगि लग्नको पद मैं जाता के मवास जान गह्यो है उरगमै अ

स्थान सो अवकास रहतु उपमान है उपमेय के अभेद से रूपक ॥ अ-
लंकार ॥ मूल ॥ गढ़े बाढ़े कुचन छिगाय पिय हिय पकोठ है राय ॥ उकसौं है ही तो
हि पै सवै दई उकसाय ॥ २०३ ॥ इहां नवोढा है नायक की याही सो बहुत आ-
सक्त सो सखी नायका सो कहत है ॥ कवित्त ॥ पीन पयोधर मधुर धरसे
निपते उर उपर ह्वै है जावै ॥ कौंसहि पीय के हिय भामिन सुदर रूप अन-
पनवै ॥ नैकु बिलोचन लोल भरोन बजोबन जोति जगी नअवै ॥
ते कहूं उर जात नही पिय के उर ते उकसाइ सवै ॥ टीका प्रकास ॥ सुधी कोवै नायका
सो औ सखी को बैन सखी सो ॥ गाढे कहि पिय कु भेर बाढे कहि ए कुच जोवनयो
धार छिगपास पिय के हिय मे कोठ है रा दई ॥ पीके हि ततो अपर्व रूप किपिय
के मन की आसक्त याहि मै भई औ रहे सुनन की बास घर गई इहां वो
त्तवि भावना है ॥ जबै अकारन तसु तेकार जपर गट होत ॥ उरउक
सबो उकसाय बेको कामन हि है ताते उकसी ॥ मूल ॥ ज्यो ज्यो जो
बन जेठ दिन कुच मित अप्रति अधिकात ॥ त्यौ त्यौ छिन छिन क
टि छपा छीन परत नित जात ॥ २०४ ॥ इहां नायका अग्र है छजोबना
याके जोवन बढ़त है जैसे कुच बढ़त है तैसे कटि घटत है सो स
खी सखी बैन ॥ कवित्त ॥ बांतन रूप की रासि लसे तिह लोक मे ... र
और वितीक लही किन ॥ बाल अवै सरू माई ति लोकि कै तोर
ति बार ही बार ही तत्त तन ॥ जोवन जेठ ज्यो आवत त्यो त्यो उरोजन
को परमान बढ़ै दिन ॥ त्यो हि त्यो होन लगी कवि कृ छय छया
कटि छीन भरी छिन ही छिन ॥ टीका प्रकास ॥ सखी नायका सौ क-
हत है जोवन औ जेठ को दिन कुच औ मित दिन प्रमाण ॥ कु-
च औ ... मित जैसे जैसे अप्रति अधिकात है तीसघरी सौं
बढ़त बढ़त है त्यो त्यो ताही तरह छिन छिन कटसोर है छपारात

सो नितंब हीन परत जात है रहत रूप कछु ॥ है रूप कै है मानत को मितल
न्ने पाग्रमेया ॥ अस नितंबवर्नन ॥ लगी ग्रनलगी सी जिउ कहि
करि बस विधि हीन ॥ कि येमनो बारहि कूसर कुच नितंब प्रति पीन
१०५ कुच का वर्नन ॥ जो वन प्राप्त होंग्रंगचरि वढि गये है सो
स बनि नायक सो कहत है ॥ कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ रूप सा घेन
रे रचन बच के सुधारे विधि अंग अंग सार सकद समर भीने है ॥
ता ते तरुनाई ने वनाई कछु और रे विधि हीन करे पीन ग्रह
पीन कर लीने है ॥ होसहोस लां का प्रति सूछम के राखे तातें
लच कत जानन के जतन ऐसे कीने है ॥ कहि हारी कुच ता
को सधि के कसर मानो उर जानितंब प्रतिपीन कर लीने है
सरप्रकास ॥ सखी वैन नायक सो ॥ विधाताने कहि कोव
सी कसरि ऐ प्रति हीन कसे है ॥ लगी ग्रन लगी सी सीव
दसं दे हू को जनावै है ॥ लागी है कि वा ग्रन लागी है ॥ वा
हि की कसर सो मानो कुच को नितंब को ग्रति पीन कबूकी
यो है ॥ लगी ग्रन लगी सी हू संदेह ग्रलंकार ॥ ग्राधा में
हे उत्प्रेक्षा ग्रलंकार ॥ ग्रत्नु जंघ उगल लोयन निरे कोरब
रे विधि मैन ॥ केलत रुन के ऐनहिये के सत्तरु नरुष दैन ॥
१६ ॥ ग्रथ जंघ की सोभा नायक सखी सो कहै है सखी नायका सो
कहै नायका सो कहै नायक सो कहै है ॥ सवैया ॥ कोरे कहारे कु
रूप कटी कर कोतम महोत प्रभाउ नहीं के ॥ सो हतज संपर पीनस
चिक्कन मैन न मैं मनमोहन पी के ॥ के लैलो लक लारे निधा
नम हालक वदय कोकदली के ॥ तो जुग जंघ विरंच मनो नव नाय की के

वन्या है सौकरे है वे से दे है
ति के ला ता ते जो तत वृत ता ते
ष देन वाले है॥

42A

हरिप्रकास॥ सखीवचननायकसौं मैनजो कामसो विधाताहै॥ या नाइकाके जोजं
घजुगल दोऊ जहां सो [illegible] लोइन लावन्यनिरके चलतौं है॥ आपनी सोभा
करि रस्कार कररवेवाले है॥ वाके दुष्ष है॥ रतिसमय चित्रैं को राकेपंभको आ
क्रान्ति होति है॥ हे तरुणाके ल्हि सामें विसेषसुख देनवाले है॥ तरुणासें वोध
नकरे तौ नाइका सामान्या॥ तहां वस्तु उत्प्रेक्षा॥ औ जमकनिरे लोइन वस्तु के
लिततरुणाके लिततरुणा जप्रक॥ जमकसब्द कौ फिरि [illegible] वरण अर्थ जुदौ है जानि
के राके दुष देन वारे याते अर्थ उपमा है॥ मूल॥ मुरवावली न॥ रह्यौ ढीठ ढ
ढसग है ससि [illegible] रिगयो न सूर॥ मुह्यौ न मन मुरवान चुभि भो चूरन चपि
र॥ २०७ ॥ रस चंद्रिका॥ नायक वचन सखी सौं॥ रहे दोहा कस चंद्रका में
नहीं ताकी सवैया प्रवीनोक्ति॥ सवैया॥ चषकं जस रोवरि आनन देषि
सषे कुच भूधर चैन दियो॥ पुन नाभि सुकूप में कै सब ही कदली
मंजंघ विलोकि गयो॥ फिरि कै गहि साहस डीठ [illegible]र त्योन डरयो जिनि
लरकौ ढाठ ठयो॥ मन मेरो मुह्यौ न चुभ्यो मुरवान में चूरन सो चपि चूर भयो
हरिप्रकास॥ नाइक वचन सखी सौं॥ हमारो मन ढीठ है सो ढाढ़स साहस ग
हे रह्यौ॥ ससि हारि गयो न पाको अर्थ डरपि नहीं गयो ऐसो सुंदरी ठौर में
आसक्त किरा॥ हमारी कहा दास होइ जीरत डरन हो कियो सूर है हमा
रो मन मरवाण सों और ठौर जाने की सकति नही रही चराचर करिवे
को कारण नहीं तासो कारज भयो॥ विभावना॥ जे वे का कारण वस्तु
ते कारज परगट होत॥ वर्नी चूरन करि मुरवा गिरे एपोऊ कठिन है
तिन की चमन आयो रमते चूर भयो॥ पापम हावर॥ पापमहावर दें
न को नाइन बैठी आय॥ फिरि फिरि जानि महावरी एडी माडत जाय॥ २०८

ते

ह

हे

ठि

चु में मुर
न है चू
पा वर गा
ना ता से
व न के पिव
वे चू र भये
वा है। है

क्रमस्चंद्रका॥इहनाइकाकेपाइनकीसहजअरुणताकोंअधिकपसषीसषी सौंकहेहै॥नाइकाहूसोंसंभवेहै॥कवित्त॥पाइमहावरदैनकोनाइनिचायमसौंउ महीअतिआइ॥एडीगहीठकुराइनकीकरजामेभरीतिहुलोकत्तुनाई॥जा निमहावरमीडतिज्यौहीज्यौधोवततौसरसातिललाई॥कोमलताइप्रभा प्रभुताइविलोकिसवेचपरीचतुराई॥तरिप्रकास॥सषीवचननाइक कौ॥पाइमेमहावरदैनकोंनाइनआईकेवेठीफेरिफेरिमहावरकोंजानि केएडीकोमीडतिजातिहे॥जानैहैमेंमहावरदियोहे॥जोमहावरदीयेहो इगोतोमिसिलेनेछूटिजाइगी॥सहजकीललाईसौंभ्रांतिमानअलंका रभयो॥मूल॥कोहरसोंएडीनकीलालीदेषिसुभाइ॥पाइमहावरदेइको आपभईवेपाइ॥८९क्रमसचंद्रका॥इहांनाइकाकेएडीनकीसोभासषी नाइकसौंकहतिहैं॥कवित्त॥कोहरकहाहेजीववंधुकेसुपटतरहोतत्र्प्रे सीदुतिसहजएडीनउठतिऊलिकें॥चापनसौंपाइनमहावरलगाइवेकोआ इठकुराइननिकटउलिउलिकें॥कहेकविक्षेमचारुचरणविलोक तहेनाइनविचारीगईसवसुधिभूलिकें॥तरिचंद्रका॥नाइकसो सषीवचन॥पाइमहावरीकहतहैं॥ताकीसुभावकीलालीदेषि कैंपापमहावरदेइकोकोनदेइआयुवेपापभई॥वेपाइकोअर्थइहां वेउपाप...उपाइहतभईउपापकछुनहींचलेइहांपरणोपमा कोहरउपमानएडीउपमेअसीवाचिकलालीधरमपायपाधया सौंजमक॥क्रमसचंद्रका॥यहनाइकाकीआसक्तताजानिसषी नाइकसौंप्रीतिवटाइवेकोकहतिहेवानीकोउपमा॥कवित्त॥

गजगति है सी तेसी लहू तब ही ते मन को त्यागि दे सम्मी पाइ ताकी रसनक
रुनाई सी॥ तब ही ते वाके उर लागी अति चरपरी तामें मिल वेको
ललक है घनाई सी॥ बानी की सुरसाई ते सरस मधुर धुन का॥
लि कहू ते री उन बानी लुन पाई॥ कौ है ते नवाके उर मदन नाम
हरें उठे याही ते हौं कहत जरूर तो सौं आई सी॥ स्वप्रकाश॥ ना
यका सों सखी वैन॥ चित को चाव सों समझि कै मन को रोचक तुहा
रे पाव मैं नूपुर बाजि कै नायक की मिलन की उत्कंठा बढ़ी तासों
ताप लगाइ ही तिन की यों सखी कहै है॥ सखी सुनत ही सुनन को इस मैं
मैं तेरे भूषन की माधुरी धुन सुनिके कौन ही ललचाय॥ इहां
सुन सुन पद को प्रवृत्त है॥ तासों प्रवृत्त दीपक अपदग्रह गर्भ
उहू नकी आवृत्त दीपक नाम॥ अथ आभरन वरनन॥ कुंत
सोइ हैं तत्व गुन पायके आभरन जरे जराय॥ जीत सोता नूव उ
ति सुठ रिपरसो ताहु ल॥ [illegible] पाय॥ २११॥ इहां नायका के शृंगार
को प्रारंभ हरि कहि आभरन पहिरयो है॥ ताकी उपमा सखी
नायक सौं कहत है॥ कवित्त॥ प्यारी शृंगार संवारत बैठी
आभरन को आयो तहाँ दधि दानी॥ त्यौं ही ह्वै गई अति त्यौं ही
रही नव नागरी मोह तें रूप लुभानी॥ नीको जराय आभरनौ
रतन सें पग के उत्कंठा सु पाय बखानी॥ पाय परसो है मनोरथ
आप कै तिन की सान तरों ना सो मानी॥ स्वप्रकाश॥ ना
यका सों सखी वैन॥ सो इत उत्कंठा पाय कै उत्कंठा को प्राप्ति
होय कै आभरन उत्कंठा को भूषन नासो सत है जराव सो ज
रयो [illegible] पाव के उत्कंठा मैं अंदेसो दर्प कहत है आभरन तो पाव मैं

उधार जो तिरवना करनि मैं बरन तामैं दुति सो जीत्यो॥
तरनि रवि ताकौ तरनि है ताम्रके मानो पाव में ढरक्यो है॥ उबटक
है ताते अनवट मैं तरिवना में जानिये सो एक बचन कीये
अर्थ इहां एक ही नै जीत लीये इहां दाहासांति मैं बैबे सगार
ऐ लखै ब मतकार नहिं भासै॥ इहां हेतूत्प्रेक्षा है॥ तरवनन मैं
जीत्यो इहां हेतु॥ गति वर्नन॥ दोहा॥ पग पग मग अगमन परत
झू चरन अरुन दुति झूलि॥ ठौर ठौर लखियत उठे दुपहरिया से फूल
११२॥ इहां नायका के चरनन में अधिकाई अरुनता की॥ सखी सखी
सखुन वैन॥ नायक नायका सो कहै सखि॥ नायका सो कहै॥ कवित
पालवा उतर प्रवीन यासी धामधर द्वार नीमैं ब लतनी की
गति है॥ कृष्ण प्रान प्यारे अवैसा को तोक निहार तव चरन अ
रुन दुति प्रतिउमगत है॥ जहां जहां औ झेविपरत अग्रोडी
आइ तिनकी उलक जगा जोति सी जगत है॥ जहीं तहीं
फूल दुपहरिया से देखियत कौन कीन मति है बैं अमयेंपज
तु है॥ रस प्रकास॥ पग पग उगउग मग रास हां तामैं अगमन क
हि ये आगे को परत है चरन दुति जाकी जे अरुन दुति सा
ल कांति ताको लागके झूलबे॥ ठौर ठौर में देखवत है दुप
हरी पा बंधुजीव के फूल उठै है नायका जाति देखि सखी
नायक को इव सो ललचायकै लेगयो चाहत है॥ सेको
अर्थ इहां मानो दुपहरीया फूल उठे है मानो वसंत प्रेतपाल
रूखन वसन वर्नन॥ दुरित न कुच बिच कंचुकी चुपरी सारी
सेत॥ कवि आखरन के अर्थ लौ प्रगट दिखाइ देत॥ ११३॥

उहांकंचुकी के विचकुचसो ॥ उपमाने ॥ तिनकी प्रभा देषि नाय
कनायका सो कहै, सषीनायक सो नायका सो कहै ॥ कवित्त ॥ कं
चन वरण मन हर रण अडोल गहवे को गोल गोरे सीस स्यामता धरत है,
उन्नत ता केरे रे वरे चीकने लुनाई भरे मदन वसीकरसे मन को हरत है ॥
ऐसे उनै कुचसेत कंचुकी तिसो छोमा सखा रीएगुराएन उरत उघ
रत है ॥ कहै कवि कृष्ण जैसे स्कव के आंकण के अर्क उमंगहीठ प्रगट परत है,
हर प्रकास ॥ सषी वैन नायक सो वाके कुच कंचुकी चोलती ताके बीचमें
उरत छिपत नाहीं है ॥ ऐसे अस्तानो को प्रकास है ॥ जैसी हिचु
परी है, सो धालगाई है ॥ सादी है, जामैं कसी दाछा पान होहै, फेर
सेत है, कवि के आंकन के अइहरन के अर्क से प्रगट दिषाई देत है ॥
रुति अर्क भासे सो तो दोष है, नैवद किसको अर्क करत सबको
नहि भासे है ॥ तहां ऐसे जानी ॥ कविन के आकन को अर्क जे
से प्रगट दिषाई देत है, ते से कुच दिषाई देत है ॥ पूर्णोपमालं
कार ॥ अर्क उपमाण कुच उपमेय लो वाचक दिषाई देत साधारण
धर्म ॥ दूसरा अर्थ मैं दृष्टांत कि वा कवि के आंकन के अर्क सो तेजो
प्रगटसा कहै, औरन को दिषाई देत है ॥ दिषाई देति सब को पारादर
सान कहत है ॥ मूल ॥ भई जु तन छवि वसन मिलि वरणा सकै सुनवे
न ॥ अंग ओप आंगी दुरी आंगी अंग दुरै न ॥ २२४ ॥ उहां नायका की
सोभा सषी नायक सो निवेदन करत है ॥ सवैया ॥ हर कंचण वेलसी वा
लकी देह की दीपत को वर्नै कवि है ॥ अरता ही पिली जु तिकं वण की रु अवनूपम
ओप परी ह पाति है ॥ कछु जात कही न कही अंग प्रभा अरु चीर मिले जु भई
छवि है ॥ उहां आंगी गई दवि अंग की ओप सु आंगी सो अंग कहा दुरै है ॥

४५

45

अरप्रकास। नायकसों सखी वैन तान को छ विवसन सोभि सकै जैसी गई
अब्रम परहरहदि सो वैन वचन न नहीं वनी सकै। अंग की अप्राय सों अप्रागी
बोली दुरी छिपी अप्रागीसों अंग दूरै नाछि पैन अंग अप्राय अप्रागीदु
री॥ मीलत॥ अंग अंग दुरायवे को कारन है तासों ... न को दर
सन होत है॥ कारू कारन तजि वै काज होय विरुध अंग अंग्रे
गदुरैन॥ विनो हि जहर है तहो को दूजउद जो भा ह॥ किं वा ति
जी विभावना॥ लक्षन॥ पहरैन सखन कनक के क अरप्रावत
उर लजत॥ दरपन के समोस्वाद हहि दिखाई देत॥ अथ सखी
नायका के अंग की निकाई कहत है॥ जौ मसखन को अप्रतर
ता जामि नायक कहै नायक ... नाय का को तौ अवनै॥ कवित्त
हित की नोवात हित ही सो करअप्रावत है ता तेता कै हरत छ वीली
छ विपागकै॥ तेरी समता कौ रंति रंभा उर वसी है न तेरे अप्रन्तराग
दत्तारेर है जो अप्रन्तरागी कै॥ तौ नेतेरे अंग तामे हैताने के ए गहनेए
कि मत हरत अप्रवरु नहि है त्यागि कै॥ नीके नीके तनवारती के पती कै
लागत है मोरवारे हैं मानो भकर सो सागी कै॥ अरप्रकास॥ सखी
वैन नायका सो भूषन तु कनक के गहत है इह वात तौं सोहत सो
प्पार सो करत वे मो अप्रावै है॥ भूषन पहरें कनक के पर भी पाठ है॥ न

कनक के भूषन मति पहरे इह भी जानी ए ए तेरे देह मे भूषन दर
पन के चारचा से दिखाई देत है इह मति जाने जो मखी निंदा करत
है हमारे अंग विषे सोभित सो न ही है सो न ही। तेरे देह की सोभा को
भूषन मे लोक रहत है॥ विषम अप्रलंकार॥ अप्रौर अहो उद्याम की पे
होत बुरो पल अप्राइ॥ लक्षन॥ मानहु विधत न अप्रछ छु वसु छरा पवे
काज॥ हग पग पौछन के की मेंभूषन पायं दाज॥ अथ कृष्णचंद्र का

45A

रहै नायका के तन की छबि सखी नायक सों कहत है सखी सखी वैन

नायक को वैन नायका सों सखी है सो हैं इ॥ कवित्त ॥ तीन लोक

को रूप नाइ लूट लाई देखै रूप की ॥ निकाई नंद लाल सलखावने हैं॥

तेरी दुति ऽआगे ऽअली कुंदन के गहने ए फीके फीके लागे ऽऐसे गात छबि छाये है

डीठ के परस ही ते मैले होत ऽअंग ते रेउ जलत सहत विरंचि ने बनाये हैं॥ तिन

की निकाई स्वछ राखिवे के हेत ताते तो हग न को मानो पग पीछन बनाये हैं॥

रस प्रकास॥ सखी वैन नायक सौं रूपकी ऽप्रसंसा करत है विधाता ने जो या

के तन की जोति ऽअद्भुत छबि ताको स्वछ निर्मल राखिवे लीये मानो हग नैंन

ने वत ताके पग ताके पौंछन को भूषन तो पाय दाज करे है॥ मानो संदूरी

वाका मैं रहै द्युति वाके ऽअंग ऽप्रति सुंदर है भूषन वाको सोभा बढावत है

सो न ही विछुना के नजीक पाय पौंछवे को बिछुना रहत है सो पायं

दाजक हो वैं है ऽऐसो ऽप्रसंस करै [illegible] मीव सो गकी हृष्ट भूषन दोप

रत है ताको पाव पौंछवे को करे है तो सांच सी है संभावना न ही बने॥

उत्प्रेक्षा ऽअलंकार नहीं है॥ ये रहै छबि को पाव रहे राख नो [illegible] चाहीये॥

ताको पौंछ री लागी रहे रामनी चाहीये मानो दृष्टि वाधि उनि राखि मैल

गायो चाहीये॥ किया के आगे मानो को ऽप्रयोग याते ऽप्रसंग हेतू

दाहे रूप तो ताम भूषन पाय दाज न पक॥ उत्प्रेक्षा संभावन वस्तु हेतु

फल तो स॥ वस्तु विधि हेतु स्वरूप ऽप्रसंग हेतू स्वरूप दपो [illegible] हेतु रूप फल [illegible]

सिधा स्वरूप ऽप्रसिद्ध धाम पद मान॥ प्रथम प्रसंग करि रहै भाव तसे उत्प्रे

क्षा पहचान॥ मूल॥ सोन जुही सी जगमगे ऽअंग ऽअंग जोबन जोति

सुरंग कसूंभी कंचुकी दुरंग देह दुति होति॥ ३३ पर्वी नायक विर्ह॥

सुबरन वेली सी तिन वेली की ललित गति जोबन की जोति मिल ऽअति सरसातै है

चमुचहीचूनरीरंग॥ गहिगातकीउराईनुअरतमतिरसवरसातहैं॥ तपकी
तारंगअंगअंगतेउमगसोभाहै।भावु।रंगसोभ[illegible]तअरसातहैं॥
कंचुकीकसुंभीसारीपरहैंसुरंगतअमोलरंगरंगसोउरंगधरसा
तहैं॥ टरप्रकास॥ साषीवैननायकसोकावेअंगअंगविषेजो
वनकीजोतहैसोनजरहिसीपीतचंवेलीसीजगमगतहै। किंवा
अंगअंगविषैजोहैजोवनअरजोतिताहेसोनायकासोनरहरीसी
जगमगातहै।सुंदरहैरंगजाकेऐसेसोकसुंभीकुसुंभसो
रंगीकंचुकीचोलीताकेप्रतिबिंबसो॥ देहकीदुतिदोपरंग
होतहै।पीतलालकिंवादेहकीदुतीसोकुंचकीरंगहैजहं
अंगजोतिउपमेयसोनजरहिउपमानुतीवाचकजगमगा
बोधा॥ दोहा॥ छिप्योछवीलोमुहलसैनीलेअंचरचीरमा
नोकलानिधरलमलेकालिंदीकेनीर॥ टिका॥ नायकाकेमुष
कोवर्ननसषीनायकसोकहतहै॥नायकाहूसोकहै॥ कवित्त॥मा
नतीनहारीकोगईहौतौनगिरधरताहिदेषमेरोमनपरयो
छबभीरमें॥ कामप्राणप्यारेतनाईकीललाईहोतिजगरमगर
वाकेसोनेहेसरीरमें॥ खंजनपमारविवकीरकीप्रभानिपर
बदनउरासवैठीनीलसारीनेचीरमें॥ मेरेजानपूर्नकलानसो
ऊललिलानिसारदसुधानिधकरि[illegible]जाकेनीरमें॥ टरप्रकाश
साषीवैननायकसोनीलेचीरकेअंचलसोछिप्योछव्यो
छबीलोसुंदरजोमुषजोलसैहैसोमेंहैमानोकलानिधजो
हैचंद्रमासोकालिंदीजमुनाजीताकेनीरमैझलमलातहै॥
वस्तुत्प्रेक्षा॥ मल॥ लसैमुरासा। यप्रवनयोमुहानउपीपाप॥मानोपर[illegible]

८

[illegible]

५६A

इहांमोतीनकेझुरासानायकाके श्रवनमें हैं ताकीसोभादेषसषी
नायकसोंकहतहै ॥ प्रथमवानायकाकेकपोलपै स्वेदकनदेष
सषीनायकासोंझुरासाकोवर्ननकरिकहैं तोलछताजानीए
कवित्त ॥ व्रजजनवनागरीकीआगरी वितोकीछवि देषवेकों
नैनललचायललकत हैं ॥ कहैं कवि कृष्णवरी वानकवितो
कहुगेरीरूपजेजवते लगतपलकतहैं ॥ तहनीकेश्रवनझमात
झूमकैहैंहलासेकरनाभरनहूंसेंछ्राइछलकैतहैं ॥ मेरेजानपरस
कपोलरहेहूकेउरउलह्योप्रस्वेदतेईबूंदरलकतहैं ॥ हरप्रकास
सषीवैन ॥ किंवानायकवैननायकासों ॥ हे तियतेरे श्रवनमें
काननमेंझुरासाजुराउ ताकीतरह कौजानीतेहीनपदहू
षनविहारीकोंकेषननहीयोयातरहलसैमानोंकपोत
केपासस्रोमसोस्वेदतपसालवकताकीकनीसौछायरह्यो
हैं ॥ अवताकोस्वेदविंदुपरसतहैं तहैं स्वेदकीसंभावनाउत्प्रे
क्षाअलंकार पूर्ता ॥ सालतहैं नटसालसीक्योंहूनिकसत
नाहि ॥ मनमथनेजानोकसीषुभीषुभीरूपमांहि ॥ २०
यातें नायकाकीषूभीकीसोभानायकसषीसोंकहै
सवैया ॥ राधिकाप्यारीकेप्रानननकी छवि तीनहूलोककीप्र
नरुझीहै ॥ मैंमिरसीजवतेंतवतें मतिमेरीलुभावतहांअरु
झीहै ॥ रघकेवोहितकाननपैज्योंके विराजतहैंयोंप्रवनपै
षूभीहै ॥ सालतहै जुमनोजकेनेजेसीनौकहियेमतमें
रषुभीहै ॥ हरप्रकास ॥ नायकासोंदूतीझुरासीनायककीह
कीकहतसषीकहतहै षुभीषुभीजीयमांहि ॥ षूभीजोतेरेकानि
मेषनसोनायककीहियमेंषुभीहै गडीहैं अंगमेंहू [illegible] षोतीर

सो नरसाल नरसाल सी सालत है कोउ तरुनि करत नहीं हूं
सो है मनमथ काम ताको जो मैं जो ताको नौ कर अगम्भाव सी है
किंवा मनमथ को वान प्रसिध है। ने जा प्रसिध नहि प्रसिधा वि
रुधा दोष है तौ। अर्थ प्रर्थ जानी ए मन को सामर्थ्य पीड़ा
रूप अर्थ है सो जो के पहने जा ताकी नौ कही प्रतीपमा॥ सुभ
सुभ अलंकार॥ दोहा॥ अजौं तर्यौना ही रह्यौ श्रुति सेव
क इक अंग॥ नाक बास बेसर लह्यो बसि मुकुतन के संग॥
२२॥ यह सखी को वचन॥ परस्तावि क प्रजो जनर इक रंग अ
श्रुति सेवत तर्यौना सो तर्यौना ही। आवे सो काहू के संग न ही
तिन नाक बास पायो का कछु मी जे वे दके दोष हे तारे श्रुति
कानन कू कहि ए तौ संभवे॥ कवित्त॥ संगत लग्या वै रंग
श्रुति हितकै सेवत तर्यौ सौ धरधा अर्थ। अैसौ नै मन लायो हैं
कहै कवि कृष्ण जा सो सब के ऊकर तो है। अजहूं लौ तर्यौ
ना ही तर्यौना ही रह्यौ है॥ प्रेम के प्रभाव की उहालौ प्रद्धि का
ई जाकी चित्त प्रापति न रुप रमन रह्यो है॥ विमल सुढार
मुकतन संग बसि नाक को निवास बेसरि सो बेसाह लह्यो
है॥ अर्थ प्रकास॥ नाय कनायक रातको है स्याद सबके प्रियतन
में सखी सोप्रियतनमें सखी कहती है॥ हे अंग अंग तरुणा सखी
अजौं तर्यौना ही रह्यौ है॥ श्रुति सेवत एकै एक श्रुति को सेवत
एक कान में तारकी रह गई है और मन नहूं रहे हैं नाक में
बास अब सी ती बेसरने पायो है। बसन मुकतन के संग अ
कताके संग बाते के ता में मोती लगे है॥ सखी रिसाय के क
हत है प्रस्तुत अप्रलंकार॥ जीवन अमृत जैसे सच्छ तिनकी प्रसंस

47A

अधर्मो॥ अव भीत न हुतो तऊ होत रह्यो श्रुति सेवत तरु ताकूं अंग॥ अंग
नर है एक तरु है सो श्रुति वेद को सेवत रह्यो॥ कं कोऊ एक अंग विषै श्रुति
को सेवत रह्यो वाम मार्ग की श्रुति मैं कह्यो है अंक नाम पुरुष को अंक
नाम पाप को॥ सु गोविंद बैठत नको कई बार होत है॥ नहीं है
अंक दूब जा विषै ऐसो जो नाक वैकुंठ ताको वास वेसरने पा
यो सरकत हि बबराबरि वेसर वतिपन हूं बराबरि को नाक के पास
वेसर को जो पायो सु तो तो जीवन मुक्त है वै छम वतिन के संग मैं
वासि के रेउ अधर मैं दोहत कासिब है॥ कि वा अंजन जो वृह्मा
सो भी प्रवर्ताइ नहीं तस्यो॥ श्रुति सेवत ता विचारत॥ एक जो
वृह्म ताको है अंग आभिन संकरार्थ को मनत है व्रह्मादिक को
पूर्ण ज्ञान नहीं॥ जाहे मुक्त होई उत्तराई वेसो ही जानीये
अलसोरठा॥ मंगल विंदु सुरंग मुख ससि केसर आड गुरु॥ इक नारी
लहि संग रसमय किय लोचन जगत॥ २२१॥ रस सिंगार को सं
गार सबी सबी लोक है कवि की उक्ति॥ सवैया॥ मंगल विंदु सु
रंग विराजत भामनी भाल में सोहे विद्यो॥ आनन चंद कला
पर पूरण केसर आड मनो गुरु आयो॥ छविमय के हरि एक नारी मैं आउ
समो पर पूरन योग लियो॥ नैन भरे रस केवर सोक लिये नासम सु
रि ते उमगाए अधर कास॥ सखी ससी वैन॥ सुरंग लाल जो रोरी को विं
दु सो मंगल है॥ मुख सो ससि है॥ केसर को जो आड तिलक सो
गुरु वृहस्पति है॥ ऐसी जो एक नारी रुचि विषै मुख वर करि ता को
संग मैं सह करि ते वेर समय अद्भुत राग मय वा की को है लोचन को जा
गत के सारी रात जागत है॥ दूसरो अर्थ॥ मंगल अंग सो सव अधो वृहस्प
ति एक ना तिमै एक रासी मै संग मैं लहि कै जगत रसमय जलमय कै

इतनेग्रह एकनारि मैं प्रामै मैं नावसा होइ॥ रूपक प्रसे काराम्लत्स
गोरी छवि जुनी नख प्रत एछ लास्याम छवि देइ॥ सहताउक नरछवि
नकरे नैन त्रिवैनी सेइ॥ २२३॥ इहनायका की प्रांगुहीन की सोभा
नायक नायका सों कहै है॥ सवैया॥ कामत ओ तिलसै लसै छवि
जुनी प्रत लाल प्रभा नख की लरैंनी॥ तापर स्याम छवि लाकी
पाविछ वि नैननकों लख लाजतन्नवेनी॥ सोचन संतत है राणि
कृत्तिनि मेष कुरै खत हीय गमैं नी॥ तो करि मानु विराजत राधका तीर
पराजकी रीत त्रवेनी॥ टरप्रकास॥ नायक नायका को देखि कै ग्र
वने नैनन सों कहत है॥ छवि नकरे नैन त्रिवैनी सेइए नैना छवि नक
एक छवि नखी एत्रवेनी सें इकेरति जो है रमन सो अनुराग को लहत है
पावत है छवि जुनी कमनेषा गुरी सो गोरी है सो गंगजुनी जानी ए॥
नख जु प्रत एसो सरस्वती जानी छवि लाग्रंगु ठी स्याम सो जमुनाजी
सो है तौ है प्राग त्रवेनी कहि है तासों गंगा प्रादिक की प्रतीत छवि नकीपु
प्रेसो भी पाठ है नायका के नैनत्रवेनी है तीन रंग नेत्रन में है याते नै
न जो है त्रवेनी ताको सेइ कै वरुन तकाल लों देखि के रति तप जो सुख
ताको पावत है॥ जैसी नायका है गोरि जाकी छवि गुनी है इतना दि जामै
ए इहनायक वैन सखी सों॥ रूपकालंकार॥ मूल॥ तेरव मकन
२
कै पाल्स रतिवाति की वहि विकान॥ लाल लाल चमकत चुनी चौंका छवि
छु समान॥ २२४॥ सखी को वैन नायक सों॥ सवैया॥ वातक हा तरूनीन
की लाल लखें चित आत चलैं तह एमिन कैं॥ तातिय के वर प्रांगनाकी उपमा
न चुनी गए चोर चुनी न कैं॥ कंचन टंडी कपोलनकी कातिं छबि छबि
हि बसि मोह मुनीनके॥ चौंका के विहु समान रहे चमका हट लाल
हि लाल चुनीन कौ॥ टरप्रकास॥ सखी वैन नायक सों कनक कातरि

वनातरकीसोककोलगालताकी उतिकेबीचहीविकानी॥
बीचहीतिकी यह जोलोकोहौं है॥ कि मह मोलवु पायोनही न
वाहिविचहीयहबीपाठहै॥ कनकतनननारेडीकपोलकीउति
मेवाहिके तिनकेबीचहीविकाई॥ अर्थ॥ कि मिलगईलालला
लचुनीचमकतहैचोकादांतनकेचिन्ह समानरूहुं मीलतअलं
कार॥ मीलतजोसादृस्यतेभेदपरेनलखाय॥ सादृस्य सोना
दुरगिनवमा॥ किंवा॥ सखीहोसकरतविन्हु उरावत है सवगर्वता
उदूनायकाभेजानीतो॥ मूल॥ सारिडारिनीलकीउटअरक
चुटैम॥ सोमनमगनकरिविरिगत्मेप्रहेअहैरीनैन॥२८५॥ प्रउ
नायकाचेहूगरेखिसखीकरकौमनहरिपरहतानहै सोसखीसोक
हतहैकर्ह्वाविकेप्रसंगकोलिकै॥ कवित्त॥ वाहूवरजोवनकेव
नमैविहारकरैकाहूकैनरोकेरहैविक्रमअप्रकापके॥ मउल
कुटलिवालखुंजनप्रामितवालतरलकटाचागहै अप्राप्र्युदालह
पाकै॥ सारिडारिनीलीअोद्धर्वतअचानकहीकरतअचूकचोटहतन
अरेरीमनमधपके॥ सोमनकुरंगकोपकरलेतहहापाहुव्ही राधातेरेनैना
अरेरीमनमथकै॥ नायककोवेननायकासोकि वालबीसो॥
नीलकीरंगीसारिडारिहरनजोचकरतहै सोअपतनेअंगमें
डारपाबंधातहै ताकीओटहअरकेचूकतानाहि है हमारेकहेसो
अरककपनोनिपरहूदउयोंपों किंवा अरहचवेतकसीरताकोभीचूकैनहि
नाहिपकरतहै हमारेजोमनसोहेमगकईवरमातिविसबकर
करसापललकिंवाकरवाविकहिगहेहै किंवालगैहै करसोवलहो
गहतहै अर्हनायकाअरहैसखीअरहरविकारीमैनाहै काईकहतहै

कै

रद प्र
काह

अहै रहै री जिनधरे ॥ रूपकालंकार ॥ मूल ॥ तन न भूखन अं-
जन दृगन पायन महावर रंग ॥ नहि सोभा को साजियत कहा बैहि के
अंग ॥ १६१ ॥ इहां नायक की स्वभाव के सोभा सखी कहत है ना-
यका सखी सौं कहै जो रूपगर्वता है उ विद्धि वृहाव दिहेउ
कवित्त ॥ सहज अरुण उजल कनकी उठत छटा तिनके निक-
ट कहा जावक कौ रंग है ॥ गात की आई आगे मोन के आभूषण
की के हेत सात रंग सोभा को न संग है ॥ अंजन हू आंजे विन
नैन कजरारे देखत है एरी अनेकन को होत मानै भंग है ॥
तो तन तरिकि जारक हू सोभा को न साजियत सोयत जान नि
बहु गात ही को रंग है ॥ अर्थप्रकास ॥ सहि वैन नायका सों
तन विभूखन न दृगन मैं अंजन पायन मैं महावर को
रंग नहीं सोभा को साजिये है नहीं बनाइ है सब सोभा की
सोभा नहि साजिये नहि बनाइ है कौन काज अंग सराही
ए सहज की जो सोभा है सो कही नहीं जात है कहिवे ही को
अंग इह भी पाठ है अंग मैं कहिवे ही को इन सों सोभा नहीं
किवा नहीं जा के उपकी सोभा कौ कहत है तो अंग को न कु-
ही तेसी लगत आभूलंकार भूखन आदि अंग के रूप मैं मिल विरम
जात है ॥ मूल ॥ पाइतर न कुच उच्चपद [illegible] ठ ज्यो सबगा-
य ॥ छूटै मेरे रहि पै उहैं बहै मौ लछवि नाम ॥ १९२ ॥ इहां प्र-
तोति के उलघु मान सु बडे ठिकाने पर वो कहत है ए सवैया
सुत मम मोल खरो लघु नाम भई उति पतीन उही मघ्यानो ॥

कौन हू भाष्यत स्रो घुंघची न वनागर के कुच उच्च ठिकानो ॥ याही
ते मो हिं सब जग का मन तो हू अमान बरे प्रघ कानो ॥ दोहा ॥
टेर हू जे है उही अब कास मागं ग विजार व कानो ॥ इस प्रकासना
यक वन जाकी मासला सौ करत है ॥ हे बिरमी अंजात हनी को कु
च सो है उच्च पद उच्च स्थान ताको नेपाय के ॥ सन गाम को उग्याते
री ऐसी सोभा बडी जो कोई देखी है ॥ जो कोई जानत हैं ॥ व
हु अत्यज बाहर है इह और कुछ पर जात हु त्यारो मोस ऐ प्राहु वि
ऐसो नाम बिरमी करि जानी व है रहे है अ जा नाम माल जा ते रिहै
जो ॥ इह उल्लास अलंकार ॥ कुचबे अनसौ बिरमी मे अनु
अन ऐ गगन जब ते कते घरे ऐरे उल्लास ॥ कोइ मीख बडे ठि
कानेप हुचे ता वर मी लगे है ॥ मूल ॥ उर मानि की उरवसी घटत उ
टत दृग दाण ॥ इ लकत बाहर भर म मनो तिय ही प को अनुरा
ग ॥ १२८ ॥ इह उरवसी की सोभा सखी नायक सों कहत है याते
अनुराग की छवि ता प्रगट करत है तो तिय पद से बोधन
रूप नायका लक्षिता जानी ॥ कवित्त ॥ आज की निकाई के
छ वरनी न जात मो पे रूप की तरंगन अनंद वरसायो है ॥
अंग अंग आभूषन जोति जगमग होति ऐसी लोचना उ
रत रंभा उन पायो है ॥ मान कवी वसी उरवसी तिय उर पर दृग
ताको दुख दंद देख तन सायो है ॥ मेरे जान पूरन है अंतर को
अनुराग हिय भरि बाहर छलक छवि छायो है ॥ इस प्रकास
नायक की उक्ति नायका सों तेरे उर बिबैं मानक लाल मन
ताकी उरवसी बोकी ॥

ताकौ उदाहरन ॥ अट कार कारन निरबहे गये को जो दाह दाग विरह सो उप
जे ता सो घरत है छीन होत है है जि परम विषय को जो तेरे हीय मे
अनुराग है ताहौ मति कै मानौ बाहर उलकत है सखी की उक्ति ना
यक सो हीय तो तिय को मन विषय को जो ता हीय को अनुराग है ता
सो भरि कै बाहर उलकत है और वैसे ही जानीये कि वा धीराधी
रा करत तो है मध्या ताहि वनाय ॥ अप्र प्रगट ताकौ कहि कै
पहिचानो जाय ॥ नायक सो धीराधीरा को वैन ॥ सो उत कैग
रै की उरबसी पहरै दै खिवैं आधा दोस मे [illegible] को पगउ या आ
धा दोस मै कोप प्रगट ५ इहां उत्प्रेक्षा है ॥ और वस्तु क[illegible] व
स्तु के संभावन जहां होइ ॥ उक्तानुक्तास्पद ताहि वस्तुत्प्रेक्षा
जोइ । एक वस्तु की दूसरी वस्तु करि जहां संभावना और कीजी
ते ॥ सो उत्प्रेक्षा सो दोय तरह की एक उक्तास्पदा एक अनुक्ता
स्पदा उक्तास्पदा को अर्थ को संभावना क[illegible] वे की ठौर
जाको कहि[illegible] सो होय जाकी संभावना करिजै सो संभा
व्यमान अनुक्तास्पदा जो की संभावना कीजीत सो हो
य जा विषै संभावना कीजीये सो न होइ जहां क्रिया अ
ग वाचक आवै तहां जानीये अबै वतसी चित मन इत्यादि
विषैमान को उरबसी विषै अनुराग वस्तु की संभाव
ना उरबसी संभावना को विषय अनुराग संभाव्य
मान ॥ मूल ॥ सोरठ जस तेज वपर्दोस का पहरे अप्रति द्व
रोति ॥ जलवा पर के दीप तौ जगमगात जगजोति ॥

१२८ ॥ कृष्णचंद्रका

ह

50A

यहु नायका के तन की दीपति सखी नायक सों कहति है, अरु ना
यक सखी सों कहै, तौ ऊ बनि आवैगी ॥ जानीयै जो नायक सखी
सों कहै, तौ ऊ बाग दीता होइ ॥ सखी सखी सों कहै, तउ संभवै ॥
कवित्त । कनक बरन तन वनक विचित्र वास वास मके
३८ बौ ज्यौं आमोद के बोलत है ॥ वाके आगें और न के गात की
निकाई लागै मन के निकी धोरे लागत ज्यों पातु है ॥ जब
पहरत बकुरि या कि सारी तब तन की घोस है जगम
गात जोति है ॥ कृष्णप्राण प्यारे छबि छाजत आव मसूज
लवार रखे दीप लौं जगमगात जोति है ॥ अर्थ प्रकास ॥
सखी बैन नायक सौं कहत जो है, पचकोरि या वस्त्र ज्योति
विसेस प्रतिबिंबित होत है, सो तौ ताके पाहरे सहज ही रू
सन विसेष न है, पहरे तौ भी प्रतिछबि सरस है । जल त्वा
दरके दीप लौं पानी की चादर द्वै रहे ताके पीछे ताखर
है, तामै दीपा रासै है, ताकी तरह तन की जोति जगम
गात है ॥ उपमा पूर्णोपमा ॥ नायका तन उपमेय जल
चादर उपमान ॥ ज्यौं वाचक जगमगात धर्म ॥ अब
रस के धोई होवती चर की ली कब ज्योति ॥ फिर तार सोई
कबगर जगर मगर द्युति होत ॥ २३० ॥ रति वर्णन ॥ सखी ना
यका के रूप की निकाई नायक सों निवेदन करत है ॥ कवित्त
बैठी आप अरस बृजनी गरसर सों बैठ देख मन मोहन की रु
ध्यान द्उगरी ॥ कृष्णप्राण प्यारे की, दिसाई दीस हाई बैस ॥

तैसी दई विधि नैसुकै लसे सोभा सगरी ॥ इनमैं वदन जोति विस
द वरण धोती पहरै लसत सो तौ रूप अनग प्रगटी है ॥ रसनाप्र
कास प्रति जगरमगर रत है वगर सु है कै प्रकार जोति वगर
रस प्रकास ॥ टका तरत की धोई ओवती है कि वाके रत की
भिन्न ई धोव [illegible] दाल को धोवत है बटकी लीच मान्यो तम
बकी जोत है ॥ रसोई के प्रकास पास फिरत है ॥ उक्ति जगम
गात है ॥ सोभा वृत्यनुप्रास लंकार जगरमगर सातों को नि
मूल ॥ जरी को र[illegible]रे वदन वढी बरी छवि देख ॥ लसत
मनो विज्जुरी छिपे सारद ससारवे बा ॥ उत्प्रेक्षा नायका
के अंग सुवै कि नारी की सोभा सखी नायक सो कहत है ॥
कवित्त ॥ प्रान प्रेम हारी वृषभान की दुलारी ज्युति धारी
प्रति सकल सिंगार तन [illegible] रवै ॥ जगमग जोति तन बसो
वन की देखत ही मन को गातो दुख दंद सब भाजि कै ॥
तन सब सारी ता पै कंचन कि नारी गोरे प्रानन बेच है को
रप विछबि साजिके ॥ सारद कै पून्यो के सुधानिधि कै प्र
ताप मानो रस्तो दामिनी को मंडल विराजकै ॥ रसप्रकास
सखी वैन नायक सो किंवा नायक वैन नायका सो ॥ जरी
को जो कोर किनारी ता मैं गोरे मुख सो प्रति बढी जोति छ
वि ताहि देख सारद सरद को चंद्रमा ता को परिवेष मं
डल को पै मानो बिज्जुरी लसत है ॥ रस ॥ उत्प्रेक्षा मैं व
स्तु बिंबे को रवस्तु मैं चंद्र बीजुरी सो संभावना ॥ मूल ॥

जे

साजि

51A

तीजपरब सैतन सजे भूषन बसन सरीर॥ सबै मरगजे मुह
करी वही मरगजे चीर॥ १२२॥ यह नायका प्रेम गर्वित्ता मरग
जे चीर ते सुरत के गर्व भयो ता ते सिंगारन कीनो॥ सषी सषी
वैन॥ कवित्त॥ सौतन ने सु सिंगन गोरव के षरव साध भूषन
वसन वहु भांतन सवारे है॥ तिलक तमोर वे दै वेस रती
नासहि प्रजनन सौ प्रांजे वारु सौ वनाय प्रन्यारे है॥ कृष्ण
प्राण प्यारे को रसाय वे को झूंडा झूडी चपलक राति
हाव भावन संवारे है॥ उहां कू राति राति मरगजे चीर रही
के सो सब ही के नीके भूषणों कर डारे है॥ १२२ प्रकास सषी
सषी वैन॥ तीज परब सब तियन तौ भूषन वसन सजे तौ
सरीर सौ जो सिंगार करे वह मरगजे चीर वा नायका
के मन सुमरगजे चीर सो नायक के प्रस्वेद सौ सन
सौतन के मैले मुष करी॥ कि वा वह रूप के गर्व सौ
सिंगारन है कीयो तौ भी प्रेम सी सौ भासमई सो ति
सन रसकी रहाई ही संवारि वगा॥ प्रसंगता प्र
स्त लंकार जो मन्निपट पहरे सो मलि सो ति बिबै मलि
नता मरगजे चीर सो तन के मुख मलिन करवे को कारन
नहै ता सो काव्य भयो दूसरी विभावना भी नानी
परत है॥ सूत्र॥ देषत सो न जु है फिर तसौ नज
ही से प्रग॥ इति लवरनि पर सो तहू कारतव नौ ठीर
गा॥ १२३॥ नायका के प्रेम गर्व की उराई सषी नायक
सो कहै॥

कवित्त॥ सरद जामिनि गौर दुति लसत अपार लखि मैन ह
के मन भाव उपजै अंग अंग को ॥ प्रीति सुकुमार तातें लच
कत लंक भार सहत न सकत विवि उरज उतंग को ॥ रूप
रसाल उमंग भरी सौन वास लास कहा कहा वनक वर
नवा के अंग अंग को ॥ वार तन सु वपर पहरत हि नमा हि
तन दुति मिलत तिके सर पारंग को ॥ इति प्रकास ॥ ना
यका वाग देखै है सखी नायक सौं कहि विसे नायका के
वाहत है नायका सौं महंदी पीत चंदन सी देखत वि
रत है सो नहीं पाके अंग है दुति के जो है लखत नत्ताल
से तन जो पट है ताके वनौठी रंग करत है वनौठी रंग
कपास के फूल समान रंग ॥ इहां तन दुति अंग प्रकार है
अपनो गुन तजि औरके गुन लेत है ॥ सू ल ॥ पवरं
गरंग वैदी वनी उठी भरी सुभ जोति ॥ वा रैवीर वि
नौठ पाचटक वो गुनी है ति ॥ सूध ॥ इहै नायका
नायक नै जाइ विसेस देखी है तैसी भांत सखी को क
हत है सखी नायक सौं कहै नायक नायका सौं क
हैं सखी सखी ॥ कवित्त ॥ ललित लसौं सो पवर
गवे दी वरी उगउ गउ ठताअमैसुम जोत है ॥ वं
जन सें अंजन सा तअनि पारमै न अधरा अधरन
गोरे गहु कारी मात है ॥ गौ है लागत कीह विसा है
वो उठे है कुच लच कत करसु मन मनार स गोत है

52A

गहरे सहसवतन पहरै बिनोदही बीरस्यौं उनीनकाई कीच
रक चाह होत है ॥ अप्रकास ॥ नायक सो सखी को उक्ति ॥
किं वा नायक की रंग नाम तरह को भेद है ॥ पांच तरह
के रंग की बेंदी वनी है ता सों भुरक की जोति उगी बहै है
ताको जु बहु प्रकास मानमई है उपमा भी भला है है ताको
बरंग को होत छिनाक ते पंच उनी जानी ते नाही ॥
ता पंच रंग बेंदी उजनी कहे है ते पर बिनोद ही पाची रजा
म ललाई ग्रीस्याम ताहे सा वहै रे चटक चमतकार
चौउनी होत है ॥ वेंदी सो भुरक में पंच उनी सो
बीर के बानक सो चौउरती मई ॥ पांच चौका वीस
वीस विसवा की चटक रूर प्रकट है हा प्रगट उलोप्रकट
लकार निजउनको पंरहे गते बढ़े उप्रकट उनजा
न ॥ चीरसौं चौउनी मई ॥ भला ॥ बेंदी मललाल मोर
बनी सासि लालित से वार ॥ १६ ॥ ग्रामे राजे बर रोई
सरजा सिंगार ॥ २४ ॥ अनाय का की सखी मन की सो
भा सखी नायक सो कहत है ॥ कवित्त ॥ बेंदी
बढ़ा जात है ललत ललार पर नी की नव जोवन
की जोति निरखत है ॥ सिलसिले स्याम सटका
रे सुकुमार बार निरधारि बार पाव सारन सरत है
ग्रंताम प्रधर प्राति प्रसुणतमोर भर बंजन सेई
गम मै ग्रंजन धरत है ॥ सरजा सिंगार राई तन
तप्र पार उति सौत न की ग्रांसन मे छरसी परत है

रसप्रकास॥ सषीनायका कौ प्रथम सिंगार करावै है॥ तं
वह तासिंगार कौ है कोक रत है तयोंही सरदसी है॥
सिंगार मै वेंदी षबषै पान सिर मै सिलासि सेवी
करनै वार है गप्रंजन दीयो पही जो सह अवे सिंगार
है॥ ता सोतं ब रंग प्रतिराघ मै है सो मै है सा जे है व
हमीवाठ है॥ मातिंग प्रसंकार॥ छवि वर्नन॥ म-
हैरी री लसरीर हो छवरह छवी लेसा सा॥ जो
नकतिसी होत दुति मिलत मालती माल॥ २२६
रहा नायका के अंग की सोभा सषी नायक सो नि
वेदन करत है॥ कवित॥ नीकी लहे वृषभानु सु
ती नवजोवन जोति जगी अंग अंगन है॥ ता
विलोकत लाम न मेरो तौ सोउर स्तो प्रतीति
रत रंग है॥ है लछवी ले लषै छवसीउ हो
कौन है तैस भाउ उ अंग है॥ मालती माल तन
दुति सो मिलसो नजरि के प्रकास तरंग है॥

२

रसप्रकास॥ दुतीये नायक सो॥ हे छवीले
लाल हो मैं तो भीति मधावा की छवि देष के रि
झंगे॥ वाके अंग मैं मिलत है लागत है
मालती बवेली की जो माल ताकी दुति अंग
की दुति सो सों नजरि ही वंचली की सी दुति
होत है॥ इहातत गुन प्रसंकार॥ तद गुन तत
जगुन प्रापने संगत कौ गुन लेइ॥ मालती
माल मै अंग की पीत तासी नी

वी

53A वीवरपता

मत्ता ॥ मीने पट मैं झलमुली झलकति है ओप अपार ॥ सरतरु की मनु सिंधु मैं लसति सहल व दार ॥ २३ ॥ हास्य चंद्रिका ॥ इत झलमलीन कों वर्णन है ॥ सो उपमा सखी नायक सों कहे है ॥ इकु नायका सों कहे है ॥ सखी सखी सों कहे है ॥ है कवि की उक्ति ॥ इस चित जाके कर नाभरन व्रष के दिवाकर से नैंन इंदीवर की छबि सरसत है ॥ अधर सुधाधर से वदन में किलकत लत्ति कपोलन की कांति है ॥ अंतर लालित झीने वसन में झलमलीक है कवि कह फूलकत औसी भांति है ॥ मेरे जान सागर मे उरवा ... द्रुम ... पल्लवन सहित प्रगट रसमाति है तरि प्रकास नायक की उक्ति नायका सों ॥ किंवा सखी की उक्ति नायका सों झीने पट में झलमुली ॥ कर्णभूषन जाकों पीपर पात ओर नाक है ते है ॥ सो झलकति है अपार ओप्प कांति सो सुरतरु पारिजात मंदार संतान कल्पवृक्ष हरिचंदन ताकी पल्लव सहत उदार मानों सिंधु समुद्र में लसति है ॥ उत्प्रेक्षा सावयव उत्प्रेक्षा है ॥ और वस्तु करि वस्तु कौ संभावन जहां होइ ॥ उत्प्रेक्षा सपदन तांव सउत्प्रेक्षा जोइ ॥ झीने पट में समुद्र की संभावना झिलमिली में सपल्लव उदार की संभावना ॥ मत्ता ॥ फिरि फिरि चित उत ही रहत तु टुटी लाज की लाव ॥ अंग अंग छवि झौर में भइ भोर की नाव ॥ २३८ ॥ हास्य चंद्रिका ॥ इत नायका नायका के अंग

अंग की छवि पसरी भयो है सो अपने चित की आसक्ति सषी
सो कहतु है॥ नाइका कहे तेऊ वचनें कवित्त॥ जोवन महानद में
रूप को सलिल भयो लरल तरंग ता भावन को भाउ है॥ अं
ग अंग छवि की उमंग औ भारी भौर स्वहल करावत है
का स्यो चित नाउ है॥ चलि पैन सकल मन लरै हैया हि
ठौर तरकि तीन का जिमि छुटी लाज ल्याउ है॥ लाग तिन हैं
हू कुलकानि की विसाल वल्ली धीरज अचल पतवारी को
न पाउ है॥ हरि प्रकास॥ नायका की हकी कति किंवा॥ ना
यक की हकी कति सषी सषी सो कहति है॥ फेरि फोरि चि
तउत तही नाइका की ओर किंवा नाइक की ओर रहतु है
गुरजन की लाज की जो लावरसी सो टूटी अंग अंग जो
छवि को और समूह ता मे चितु है सो भौर मैं की नाव भ
यौ है रूपक अलंकार॥ सत्त्व॥ केसरि के सरि क्यों स
कै चंपक कितक अनूप॥ गात रूप लषि जात दुरि जा
त रूप को रूप॥ २३९॥ रूसमचंद्रिका॥ नाइका कौ वचन
सषी सों॥ इह दोहा रूसमचंद्रिका मे न ती ताकी सबै या
प्रवीनो क्ति सवैया॥ सूरति वाकी च ढी चित मे रहै ए
क पलो हू वैनें न विसारत॥ जाति यके तन कौ उप
मा करिवे को रहै दिन राति विचारत॥ केसरि
कैसें करै सरि चंपक कैंतो अनूपन जाइउ चारत॥

गात सरूप के रूप सषी द बिजात हैं, गात को रूप निहारत ॥
२६ इति प्रकास ॥ नायक सो नायका की ॥ औ सषी की उक्ति
कि वा सषी की उक्ति नायक सो के सर जो हैं रंग केसर
कहि ऐ बराबरि को ॥ कारि सके वष्पा को कितक कित
नो क सरूप है ॥ को कुधुनी सो न हैं वक कितक अ
रूप पर, बी पाठ है, गात को रूप देष के गात रूप सो ना
को रूप द बिजात है ॥ प्रतीप अलंकार ॥ सो प्रतीप
उपमेय सह उपमा अनादर होइ ॥ अनादर उपमे
य तें जब पावे उपमान ॥ के सर्व दाक जाति रूप
मैं अनादर पायो ॥ मूल ॥ बाहि सबै सो यन लगे
को न जुवति की जोति ॥ ताके तन की छांह ढिग जो
न्हा ह सी होति २४७ ॥ इह नायका की दीपत तस
बी नायक सो निवेदन करत है, अह जो नायक
सषी सो कहै, तो गुन कथन सम वत है ॥ कवित ॥
आज छवि आगरी बिलोकै नव नागरी, अंग अंग रूप
की तरंग उमगत है ॥ कहा आगि प्यारे वरनत तन
बनत को हू जोबन की जोति जगा जोति सी जगत
है ॥ को है, ऐसी औरति पंडरन र नागरनि बाके आ
गे न्हा की जगा जोतसी जगत है ॥ वाके सौने तन की
लसत परछांहीं आगे सरद जुन्हाई परछांई सी ल
गत है ॥ २८ प्रकास ॥ नायक को बैन पत्र बीन जुराग मैं
सषी हों वाहि नायका के देषे तो लोयन ने उलाटि
जात है,

वासों छुटत नहीं है, बाजुवती की जोति कैं नतरन की
है कहू वे मैं न दिखावत है, जाके तन की छाया के छिग
न जीक जौ अ चांदनी कि बाहर वे मैं जौ अ तारा को भी
कर तरे है, सो छाया सी होति है ।। जौ उपमे पछा
टा उपमा लसी वाचक साधारन धर्म मलनता
को लोप है ।। धर्मलुप्ताउपमा ।। किं वा सखी की बाप
र कीया नायक सखी को देखि कै सखी सो कहत
है, वा दिन देख हमारे नेत्र लगे बैर है ।। कैनतरन की

ली

कैं न ततरन की बाजुवती की जोति कांति है न कछु
रहत प्रभ छाया सो तो जो अ मैली होत है ।।
छाया के नगीच जाकी मलनता तासौं जौ अ छा
या सी मैली होत है ।। मूल ।। कहि लहत को न सब दे
खि सौं न जाय मे जाय ।। तन की सहज सुवासना
देती जोन बताय ।।१४१।। नायका के तन की दी
प्रगट सहज सुगंध सखी सखी सो कहत है ।।
सवैया ।। बेलत खोर पिति चनी बोल उरीती य
सौं न जू हिन मैं जाय बै रंग मै रंग रहौ यिल
कै सुकि स विधु रंचन होत लखाय कै ।। औरन की
प्रबली बै रधी ते सुगंध के लोभ रहे उमराय कै
लोक रही तौ उर कुंज मैं वार तो देती न प्रसंग सु
बास वताय कै ।। इति प्रकास ।। नायक वचन सखी
सों सौं न जाय बवे लीपी त मैं जाय कै ।५२१६।
पीपी

55A

न

तब याको कौन लाह सकै पै तौ पाय सकै पै तौ ए सखी
याह जानत है कि का कौन काह सकै पै जो पलानी
ठौर मै है और कौन ठौर पाय सकै पै तातन कौ जोपा
की सहज सुबास माहै ।। तो जोब ता हून है ऐती
र है ३ जो भी लाज अलंकार ।। ३ नभी लाल सा है स्य
ते ये फेरे तब माने ।। जन क्रूर बात तै ये पे फांसे
हार छवजल जब तै परे तब तै छिन बिछुरै न ।। ५२
नटरता बूडत तरता रहता घरी लौ नेन ।। २२ नाय
का अवतमे नेह की आस जा सखी सो कहत है ।।
कवित्त ।। अंजे निरखे तो मै नृज राज को कुमार का
कू जाके अंग अंग आली मन को हरत है ।। कृष्ण
ग्राल रतार की उलाई बनि काई दे बेकोर रतिय
ति अति लाज अण भरत है ।। जाकी सोभा सतल
मे जब तेन पन तव ते घरी लौ छिन नाह मति छुर
ते है ।। ऐसे भएरतन ही कारत अनेक भाव भार
नटरतपु न बूडत तरत है ।। हार प्रकास ।। सखी सोमा
याका की कौ कहत सखी को कहत है ।। हार की जो छवि है
सो जल है ता मे परे नाय का के च बजब तै तब ते छि
न बिछुरत नही काहू हृदय मे आस जह तै आसमार
है वरत को अर्थ आस वारै है आस मे बूडजात
है आस मै तरत है घरी की रीतत रहै है कि वात
की नाय का सो कहत है हार के मैं न तेरे जो छवि सो
जल है ।।

म्रल

परे

१४२

स

जामैं जब तें परे ऽप्रेम सो आनी तें घरी उपमान मैंन
उपमेय पलसौं बाधिक अधिक है ऽप्रादि धर्म दृष्टिंत पमा
ऽप्रलंकार॥ मूल॥ दोहा॥ क्योंक सुकरि रहेव स
कॅली नैमार॥ दोहि उसार कि यो हि पै तनद्रुति मे
है सार॥ १८३ परनायकाको तनद्युति नायकस
बीसो कहत है॥ सवैया॥ राध कारंग मतीबो
मनोविध तीन है सोक कोरूपदी यो है॥ ता
हि ऽप्रलि ऽप्रविलोकत है पिय लोचन प्रेम पुर
षपीटो है॥ जद्यपि वे तौर लोकन है धरि कै
[illegible] प्रतिधी [illegible] र यमे रोहि यो रहे॥ तद्यपि बा
न की द्युति मे निकसार ने मे दुसार की [illegible] ही
सिवा देत है सखी तासो नायका बैन॥ हियाहू
मा रामन नायक सौं मिलबेको नहीं चाहा
कस्कर बैंचकर रहो बैरहनस सकैया॥ मा
रजो है कामता नै बसाकरि सी नौ नायक की
तन द्युति मे पकै उसार की यो बार पार की यो
न हांपहुच्यो जो सखी तनद्युति मे [illegible]
उतनो जोर है॥ ताको कहत है॥ तनद्युति [illegible] सौ
र [illegible] कठोर ताको भेद है रह ऽप्रद्ध॥ जउ को भीमे
है तो मन की कहा बात है॥ विभावना ऽप्रलं
कार॥ जबैं ऽप्रकार मबस्तु ते कारज बर नट हो
त॥ तनद्युति मे दिबे को कारण नहि ता मैं ये हो

मूल

…प्रकास

56A

पहरत ही गोरैं गरैं यौं दौरी दुति लाल॥ मनौ परस पुल
कित भई मौलसिरी की माल॥ १८४ कवित॥ सौरभ सहू
त चुन चुन कै कुसुम बार ऽआपने कर ता मन ग्यो गुनाउ
ही बनाइ॥ मैं तौ नाय दीनी उन लीनी ऽप्रति आदर कै
पहरी ही ये मैं प्रान प्यारी हित तासर साउ॥ कहिए प्रान प्या
रे वाके गोरे गरे तो ही छिन उपजी नवल उति रही ऽऐसी
छाय॥ मेरे जान लाल मौलसिरी की लसत माल
पुलकित भई वाके तन को परस पाइ॥ रसप्रकास॥ नायक
नैं माला पठई सो रंग की कतस बीकरत हैं हे लाल
मौलसिरी की माला गोरे गरे पहरत ही वा दुती दै
री सो भाम ईरह ऽप्रर्थ मानो उ मे परसत कै पुल
कि भई उ हमारे संबंध माला के संबंध सो साव कभाव कै ऽ
यो छबि दौरी किंवा मानो बाके ऽअंग सौ परस कै
माला पुलकित भई॥ ग्रह ऽग्र हेतु कौ हेतु करि सं
भावना रहे और॥ सिधा सिधास्पदा ताहा हेतु उत
प्रेक्षा ऽग्रौर॥ पहले ऽग्रर्थ मैं माला के स्पर्स सौं उ
पज्यो उपुलक ता मैं नायक कौ सपरस रूप जो
हेतु ताकी संभावना॥ ऽग्रसिधास्पदा वस्तूत्प्रेक्षा
ऽग्रास्पद संभावना कौ विषय जा मैं संभावना
करीते मूला॥ कहा कुसुम कहा कौमुदी कितक

५२
५२
57
१५५

आरसी जोति॥ जाकी उजराई सबैं॥ आभि उजस हो
त॥ [illegible]॥ यह नायका की उजराई सखी नायक सों कहत
है॥ नायक कहा कहै तो संमवै॥ सवैया॥ बाल बनी ब
रवान कवै दई विधि तैसी पसंद रताई॥ फूलन की द
ति ता लन है तौ अ तौल अभा अंग अंगन छाई॥ चौ
न की चांदनी चारु कती अरु आरसी हू रति जोतम
पाई॥ न्यान की उजस होत है आबन हात बातन
की उजराई॥ अर्थ प्रकास॥ सखी वचन नायक सों कु
रुम कहा कछू नही॥ कौं मुख चांदनी कछु नही आ
रसी की तो कित नीक जोति है आबन मै प्रकास हो
त है कि वाउ अलनामा सिंगार को है आभि श्रृंगार
रूप होत है॥ रस प्रतीप अलंकार॥ अन आदर उ
पमेय ते जब पावै उपमान॥ कुसम आदि को
अनादर है॥ मूल॥ कंचन घन तन बरन बर रह्यो
रंग मिलि रंग॥ जानी जाति सुबास ही केसर लाई
अंग॥ १५६ या नायका के अंग की उराई सखी
नायक सौं कहत है अपना बाहै बस वे की उजास अं
गराग कौ निवारन करत है कै अंतराबन जानि नायक
नायका सौं कहत है॥ कवित्त॥ जो कछु तो तन मैं त
ती सुरती न लहै रति रूप नि काई॥ जा पर जोव
न जोत जगै कवि को बरनै छवि की सरसाई॥ ॥

वा के अंग की जोत के आगे जा की सुद्धि चांदनी अंग में उजारी है त है

57A

रंग मैं रंग समाय गयो तव कंचन तव कंचन सै तन
मैं घसलाई ॥ अंगरूप धन कौन लौ है सर[illegible]र के
सरवास सहित सलहाई ॥ सर्वप्रकास ॥ घन पद पाठ
है तहां सखी वैन ॥ कंचन सै तन कौ धन कहि ते वह
तवरण रंग सौं वरणे वहै ॥ जातें केसर कौ रंग सौं
रंग मिमर ह्यौ है ॥ सुवास हीते अंग के सर लागी
जानी परत है धनते र भी पाठ है नायक कि वा सखी
नायका सौं कहत है हे धन नायका कंचन सै तौ तेरो
गोरो तन सरीर है वरण रंग सेत बहै किंवा वरण
वर वरण श्रेष्ठ नि नायकन तें तू बर श्रेष्ठ है किं वा और जो
है तेरो रूप सरूप तातें तुही को कोई वर स्त्री न नायका
नहि है सखी कहत है तेरे रंग सौं केसर को रंग मि
ल रह्यो है ॥ तेरे अंग मैं केसरि मिलाई है ताकी
सहितें जानी जात है ॥ रंग सौं नहीं जानी जात है
किं वा तेरे अंग मैं सुवास है केसर मैं वास है ऐसे
सी जानी है ॥ उन्मीलित अलंकार ३ उन्मील
त सादृस्य तें ये तफुरे तब जानि ॥ यथा ॥ अंग
अंग नग जग मगत दीपसी सासी देह ॥ दीया
बढाय हू रहै बढो उजेरो गेह ॥ १८० यहां नाय
का के देह की दुति सखी नायक सौं नि वेदन क
रत है ॥ कवित्त ॥ दीप की सी लौ रह्यो ऐसी सरी
नको रही जन समोइ मामे में ही नी लसतो है

जरत जौंका हार के रूषन ललत छबि अंगन मैं
लसत जगाजोत सी जगत है॥ दीपक के बड़भाग दी
पत उजास है। तिब डोई प्रकासच कबौधी सील
गत है॥ दीपत की दुति भरि भवन अंबर लजासर
धन है बाहर की अंधकार उलसत है॥ इह प्रकास॥ सखी व
चन किंवा नायक वचन नायका सौं॥ अंग अंग
मैं नग जगन बाहर हीरा आदि जगमगात है। दी
प की सि खासी देह है दीपक के बुझाये ठौर बताये
भारी है जे इस में बड़ो उजास प्रकास रहे है॥ इह
बरूप अलंकार रूपक रूप है सैंग गुन तजि पिर
नि जगुन लेत॥ दूजे सौ गुन नाम है कि पैत
रन के हेत॥ दीप बढाय हर स्तोत मधुति छा
यन केत॥ इत्ला॥ कूकपूर मन भेर हो पिसत नद
ति भृत्तास॥ छिन छिन बरि विचत सो लखत छ
बीन अग्रात॥ २४८॥ इह अंग की दीपनि काईस
सीनायक सौ कहत है। सखी सौं सुसंभवे॥ कवि-
कुंदन सौ गात लजात सौं न पनतो की दीपत
गुढाई सी भवन मांझ है रही॥ कंचन की कीचौं
की पर वै ठवर वाल सा जैसे कलसिंगार जोति
जगमगवे रही॥ मोतिन की माला सजनी नै प
हराई सु तौ तन दुति मिलत कपूर के सौ है रही॥ ए
क अलीबहरज की सी चढि रही तैरू कर वेकोन
वै तिनकू साप्त है रहि॥

११प्रकास॥ सखीनायका कैं कहै पकौ प्रस्तुतनाग
कहौ कहतु है नायका कैं तन की दुति सो थल
कै मुक्ता लजो है मोतीं की माल सो कपूर मन
मय हो इरही है॥ अप्रस्तुत विकपूर मन ही सो
ररही है॥ भ्रांति वसतें सरीर विवर्न भै है प्रावी
नजो है॥ अली सखी कौ भीतरन कै छुभाय के
लखत है जानत है॥ कपूर माल की भ्राहता पावे
बिसे तू ता पै धारे उठावै जो तरुता के लीए है उठ॥ आ
वै॥ जा हत ताद उन॥ अलंकार॥ भ्रो भ्रांति है॥ उतें
व लीनै प्रथमे उन से नरता को छोड़ितनु द
ति कै उनलीयो॥ स्मरण भ्रम संदेह ऐ ल
छण नाम प्रकास॥ मूल॥ सरी लसत जोरे
गरे धास तु पान की पीक॥ मनो गलूव दसा॥
लकी लाल लाल उति लीक॥ ४१॥ टीका॥ वर्नन॥ ए
सुकमार तास खी नायक सो कहै है॥ अप्रस्तुत ना
यका सो कहै है॥ सवैया॥ प्यारे मैं प्यारी तिहा
री लखीन बातें सिख तो लजुनाइ भरी है॥
केसर की सुकमार मनोहु विपर्जन ते सो॥ औ प
विचित्र करी है॥ गोरी कै गोरे गरे मानमो हतु
सो है जु पीन की लीक परी है॥ वा सु उतीवद
साल की लाल मनो उति की प्रतिलीक परी है॥
११२ प्रकास सखी बैन नायक सो पान की पीक

२

गोरे गोरे मै धासत है बरी ॥ प्रतिसे भत्त है ॥ है सालला
लजौलीक ललकी रेंबधि जाति है ॥ लालजेज वाहा
ताकी उलूवद गलकौ ॥ खन है पारसी मै गलकौ
नाम गल है पानवीक मै गलूवद की संख्या वनाव
सुन्येत्ना ॥ सवैया ॥ बाल छबीली तियन मे बैठी आ
पछपाय ॥ अरघट हि पात न ससी पर घट हो तल
खाया ॥ १५० ॥ २ ॥ नायका की अंग की दीप्त सिंह
याकू सौनि वेदन कहत है नायका के हू कहते उस
म वै ॥ कवित्त ॥ लोनेत म वारी वन वास मो नि हा
सपपारी सुधर हि वाकी उजी यारी मेरे मन यै ॥
कहैं कवि कृष्ण ऐसी लालित लगाई लखै मे
रे जान यामनी दुरी है नायक घन मे ॥ छवि सो
छबीली उर नारन की सकुचत वैठी आय
अंगन उराय ती पगन मै ॥ अरघट होति परम
ठ पट दिय कह तौ जोति जगमगर हि अब लम
वन मे ॥ प्रकास ॥ सबी वैन नायका हो ॥ बो
लजो है छबीली जे नायका तिन मे आपकू
को छिपाय कै वैठी ॥ अरघट प्रलगर प्रगट
पान ससि बील भार परत है ॥ याते सब
कू पार गट होति है जानी जाति है ॥ नायका
उपमेय ता न उपमान ससि वाचाक प्रगट
ताधर्म ॥ लूप ॥ दीठन परत समान द्युतिक
नक कनक से गात ॥ भ बलाकर कस से लग ॥

है

59A

परसपिछानेगात ॥१५१॥ कसचंद्रकाय॥ यहनाय
काकेअंगकीसीप्रसखीनायकसौंकहतिहैं॥नाइकाहस
षीसेंकहेतौसंभवै॥कवित्त॥आजुलालएकब्रजबालमें
विलोकीजाकीललितललुनाईलखिलोभमनसिहातहै
साजतिसिंगाररचिपचिकैंअनेकआलीतिनहूकें
चेतसवहेरातहिरातहै॥करतविचारपैनहोतनिरधा
रकछुजेसोईकनिकतेसोवानिकोगातहे॥कौमरें
केवितानवलुजानियतकरपरसेतेआभसनजा
नेजाहे॥तरिप्रकास॥सखीकोउक्तिनाइकासोंकिंवा
सखीकीउक्तिनाइककीउक्तिनाइकासोकनककेभू
षनकनकसरीकेगातमेंडीठिनहीपरतहैं॥नजरिन
हीआवतिहैं॥समाणद्युतिहेकेवरिद्युतिकहैं॥पर
ससेछुएसेपहचानेजातहै॥भूषनकरमेंछुवतके
करकसकठोरलागतहैं॥उन्मीलतअलंकार उन्मी
लित ... सोपरसतेभेरफुरेतवमानि॥करकसप
तभेद॥मूल॥करतमेलिनआपछविहिहरतजु

करेरे

सहजवि[illegible]का[illegible]स॥ अंगराग अंगन लगे ज्यों आ
रसी उसास॥१५२॥[illegible]॥ इहनायका के अंग में केसरि
लागि है नायक कों इत में ही आवत पाय सुहात नांही यह जा
नि सषी नाइका सौं कहति है। जो नाइकु नायका सौं कहै
तौ ऊ संभवै॥ जो केसरि लगावत सषी सौं नाइका कहै
तौ रूपगर्विता होइ॥ सवैया॥ मैं न कीसो हनी सी लषि न्या
इ लीनों हन री झि रहैं सपागे॥ जोवन रूप सुहाग सषी
लषि सौतिन को उर दाहन दागे॥ केसरि लागे तें अंग लग
बात ज्यों आरसी दीसें उसास के लागे॥ ऊजेरी लोगन
और कपूर नवनागरि तेरी [illegible]इ के आगे॥ हरिप्रकास॥ रू
पगर्विता कौ वचन॥ पीछि लैदो होमे जे सों वचरा है तेसें आ
सी जी जोध्य वि है ताकों मलिन करत है॥ सभाव ही ते जो है
अंग कों प्रकासता सों करत हैं॥ अंगराग केसरि चंदन
अंगन में ऐसो लाग्यो है॥ जैसें आरसी में उसास मुष की वा
फ लगें॥ किंवा पत्नी कों लगायो नाइक औरभलो उद्यम कि
ये होत बुरो [illegible] फल आइ॥ अंगराग सोभा के लिये लगायो
सोभाबिगारत॥ और उपमा भी है॥ अंगराग उपमेय [illegible]

(margin) कैतकलगै अंगराग ज्यों पाछे सषी ज्यों नायका कों कि व समझाय हसं
केसरि लगै

अरु सी गुप[illegible] मान। ज्यौ वाचिक मालिनु करनौ प्रका
स है सो साधारन धर्म॥ कुलावरन वासकुमारता सम
विधर ही समाय॥ पंखुरी लगी गुलाब की गातन जा
नी जाय॥ २५३॥ यह नायका जरहज सुगंध जोबनाकी
अरु पारु कुमारता सखी नायका सो निवेदन करत है
जो नायका की सेज की पंखुरी जानी सखी नायका सो
कहे तो सहजता होय॥ सवैया॥ नीतन फूल मरोर कै फूल प्रभा
तन है बसेज ते जागी॥ प्रात हि मनमोहन प्यारी प्र
माल बरीर रहे अरु प्रनराग॥ वे सो अंग सुगंध है
वे हिये वे सी पदम लतार सपागी॥ कौन कहै आति ते जा
नी परीन गुलाब की पंखुरी गातन लागी॥ हरप्रकास
सखी की उक्ति नायका सों [illegible] तासरा है ताहै वरन वा
स गंध अरु कुमारता हैता सब तरह सब विध सो समा
यरही सिर तरह ही गुलाब की पंखुरी गात[illegible] मै लागी
है सो नहीं जानी जाति है॥ कुंवार ए वाल सुकुमार
ता याको अर्थ वर[illegible] कहिये प्रैचु नही है॥ वास सु
कुमारता जो गुलाब की पंखुरी की सब विधर ही
समाय॥ मिलवे की जो[illegible] सब विध है वास अरु सु कु
मारता सो गुलाब की पंखुरी मै ही समाय रही है॥
कटाल चैन हि पै ली जै [illegible] पंक की सो [illegible] दिन ये दी
पक मै समाय रह्यौ है वाहर न हि पैलो तैसे पांखुरी
लागी है गुलाब की गात मै सो जानी जाति है यह लेखक मै

५२

61

मीलत अलंकार॥ मीलत जो सादृस्य ते भेद परैन ल
खाय॥ दूसरा अर्थ मै विसेष॥ रहै विसेष विसेष प्रकारै
उ समता मांग॥ यथा॥ अंग अंग प्रति[विं]वपर दर्पन
से सब गात॥ उघरे तिहारे चौहरे म्रवन जाने जाति
१५४॥ टीका॥ नायका के अंग की उजराई सखी नायक सों
कहत है॥ सखी सों कहै है नायक॥ नायका सों कहै है सखी सो
कहै है तो सब भांति सम्भव है॥ जो नायका सों सखी सों क
है तो रूप गर्वता॥ कवित॥ वदन विलोक ससि सम
ता लहै न कोऊ लोचन निहारै जलजात हू लजात
है नागरन वे लीन बासि ब लोलन नाईं परी वानक
विचित्र सब लोचनाहि रात है॥ कहूं कवि कृष्ण प्रतिउ
त्तम लसत वाके उकर से गात जहां सो भासर सात है॥
अंग अंग प्रति प्रतिविंव के हूं ए कठौर रोक ए कम्ह
वन अनेक जाने जाति है॥ इह प्रकास सखी को वैन
नायक हौं कि वा दोउन के वैन नायका सो दरपन
से साफ गात है यारी की ठौर परे जानी है अंग अंग
मे प्रतिविंव परे है॥ तासो ते कहै उघरे तिहारे
चौहरे जाने जाति है॥ कहूं प्रतिविंव सो प्रतिविंव प
र कै दरपन से उहां से के अप्रधर्म आनो भासे है तासो॥
उक्तास्पदा वस्तुत्प्रेक्षा॥ गात मानो दर्पन है गात वस्तु वि
सै दरपन की संभावना॥ उपमा लगावे तो उपमा मिल
गजाय अरु वस्तु करि जहां वस्तु की संभावना होय इहै उत्प्रेक्षा

61A

त्रास्पदम सावस्तुत्रेता है ॥ मूल ॥ ढ़ंग ढ़ंग द्धवकी लौंर ३ वजत जाति वृद्धे ॥ सती पातती अतउ नमेमह सी दे ॥ २५५ ॥ रसनायका की नाजक ता ग्रसरी त सखी नायक सौं कहत हैं ॥ तवैय्या ॥ कंचनकं जकी रंग कलानिधि कं चु की हाया सुभाव हती सी ॥ वा मनना गती की जिस द्यो सरहे ३ तिमें नन मारध ती सी ॥ ढ़ंग न ढ़ंग उ मंग द्रुह्हें दुग्र भाकी तरंगरस रंग भरी सी ॥ पातती वा की वृमोठि ताउ विधुंस नलागत हे मह सी ॥ सखी सखी वैन ॥ सरकास किंवा दाउ को वचन सखी है नायक सौं ढ़ंग ढ़ंग वि बैंद्ध विकी जोसव पार ज्यो सकिंवा ज्यो सत्सरी कौ का सखो ३ पर तजा लौं ३ घरत जात हैं द्रुह्हे हे कहि एं वृंत द्रुह्हे हे प्रनत ॥ सती प्रतिपा ^ तती हैं पातउतो भी हुव सो यात प्रक दी दे हे सगतौं

२ मानी वृद्धे हे रहा में किया सब्दे ताके ग्रागे सी वा चक है प्रन ज्ञास्पदा वस्तु त्रेता जाके विषे सेमा वनायक हि ते सो न हि कस्तो ॥ मूल ॥ रवनस विपत तप द्वि रिपें कंचन से तन वाल ॥ कुमलानी जानी परें ३ रवंपक की माल ॥ २५६ रसनायका यकावेस प्रग की ३ रा ई प्रेसी है रुव दे की माला जो नी नहीं परत है ॥ हेप सखी नायक सौं कहत है

[illegible] कवित्त॥ लाई बनाय प्रवीन प्रलीन चं
न व चंपक माल सुगंध भरी है॥ सो प्रवीन कर मे नवना
गर कृष्णक हू उर मे पहरी है॥ कंचन से तन की छवि मां ×
गई मिलि रंच नहीं उघरी है॥ वाहर ही सजनी चकसी
कुमलाइ गई तब जान परी है॥ रसप्रकास॥ सखी की उक्ति
नायका सो है वा सकंचन से तेरे तन मे॥ चंपक की मा
ला पहरी तेरे उर सो तो रही भी नहीं लखियत है॥ नहीं जानी
जाति है॥ जब कुमलात है तब उर मे जानी परै है॥ उन
मीलत सादृस्य पुरे तब मानि॥ कुमलाई ते मद
सुकमारता वर्नन॥ मूल॥ सब न मार समार है कौ
उर तन सुकमार॥ सुधे पा[illegible]न परत धर सो पा
ति के मार॥ १५॥ उर सुकमार तास नायका सो
कहत है॥ प्रजोजन यह कि भूषन न पहरत विल
बनहार पात वे गवलै॥ कवित्त॥ विरचौ विरचे हारे ख
तिसुकमारतान श्रोपटो तिह सोक की सुनाई कोस
के लिहै॥ कृष्णप्राण प्यारे की सो तोरी इह पतीरा
बी तेरे मन मोह नहू नैनन मे मेली है॥ सोमा हीके
मारस सुधे पग न धरत मग कै ठौर लचकत लगजो
नौ[illegible]ली है॥ कि जैसो तो दिजकह बूरत मसाकी केके
से प्राय न न सो भारी भारे लै है॥ रसप्रकास॥ रूप
गावं ता कि वा नायका को वचन कि वा सखी को

62A

ऐसे जो सुकमारता नहै सो कोप करिकै स्तनन के भार को सभा
रके धारन करे है धरके है ऐसे हारा पद्मी तामें सखी पायन
ते परें है सो भाहु के भार सों विधाता ने अद्भुत सुंदर ताता
सी है ताके भार सों कि वाट हू कि सोभा भी वा निर्तंब है॥
ताके भार॥ अथ व्यक्ता कुचाकार होत जहां अप्रैरव सुकोसान
वक्रोकत ता सोका है जो जग में कुस्तन॥ कंठ की धुनि
विसेष सो काकु॥ स्तन भार सभार है॥ न संभार है उ
अर्द्ध सखी पायन पर ततेरी दे टीनति है॥ वक्रोक्ति अ
लंकार॥ मूल॥ नंदकुँवर त्तसरही पच रै नाजुक कम
ला वाल॥ भजत भार मधमीता उ घनचंदन वन
माल॥ १५८॥ टी॰ नायक के हृदै में उर नायका वसत
है ताकी प्रीत सों अप्रिकार सखी सखी वे न॥ सखी नाय
का सो कहै जो प्रीतम निवेदन कवित॥ नित्य माहां नके हेत
सों कुम लाय तसंतत चित्त विचारकरें॥ प्रीतिबंदन अ
गतों मैं नहि वहु फूल नकी नारमाल धरै॥ अरु जो व
कस्तूक लिंगार सजे कवि का कहुं कलाके सेपरें॥ रहसोंही
टोनि सखी सौ उरै अप्रीतिनाजक श्री पत मार मरै॥ इहां सखी ना
यका की सुकमार ता नायक सो कहत है है नरजुक को मल जो क
मला लक्ष्मी सर सुवाल है जो घनचंदन वनमाल सों हिय मेंहदूं मै धरै
सो जक कलन हि धार त भार वोज ताके मय सों भाजत अैसी सुकमार है
कमलासी वास यह वा वकसी ता को लोप है वाल उपमेय कमल उप
मान नाजुक साधारण धर्म लुप्तोपमा अलंकार॥ सरोज प्रर्थ कि

वा सषी नायक की विरह दसा नायका सों कहत हैं हे नाउक कमला
वाल विरह मैं दुषदाई जानि कै घनचंद नवबनमाला को हृदै मैं धरत हौ हर जो कै
है जब न हीं धरत हैं मार के भय सों भीत है रहे के भाजत हैं ऐसे से विरह में ही
भये हैं तौ सर्व रोग नष्ट नायका कौ विरह निवेदन सषी नायक सों करत हैं ॥ अर्थ
वहि है हर घनचंद नवां माल लिये धरे जो उहू नाउक कमला वाल जु है
सो वा कौ रास वगर न सा गत हैं ॥ विरह मैं मार के भय सों मार कहिये चूल्हा ता
के के भय हैं ता भीत हैं भजत घनचंद नवबनमाल चूल्हा से मान जानत हैं ॥
वक्रार्थ नायक दैन सषी है ता मार के भय सों भजत हौ हमारे हृदै मैं नाउक
नायका है वा पर मार परै गो ॥ चंद्रमार्ग ॥ सषी सषी वैन ॥ हे सषी नाउ
को क जो है यस हर ता को कमला जो है लछमी जो है बाल सो हृदै मैं धा
रकै जब न हीं धरत अन्त प्रीतम मारे प्रीतम दे मार परै गो ता सो ह
न सब सों भजत हैं त्यौं मैं हृदै मैं धरयो ॥ वक्रार्थ ॥ उर लिष्यो सो
कहत हैं जो है सो ॥ हरि को ग्रीव कमला सष्ट्री हू ते नाउक
रुक मार वाला श्रीराधिका जी ता को वडो हृदय मैं धारे कोई विष
य [illegible] सुष मैं जब विश्राम न हीं धारे केवल उन ही कू रूप मैं
मगन है रहे हैं घनचंद नवबनमाल प्राप्ति जो उपभोग सामग्री
है ता सों तो मार चूल्हा के भय सों जै सो भी ता हेर भाजत हौ ॥
हू फल ॥ घालेपर वैके उरन सकति मैं [illegible] कुवाया स्वकत हि पै गता
वके उ वारवै पत्र पाय ॥ १५९ ॥ रह नायका के चरणन की रुक
मार ता सषी नायक सों कहत हैं ॥ सषी सषी है सों संभवे ॥ सवैया
पौन लगै ग्रति कंपके है तिवल्लव त्वके से विस्तार करै ॥ कृष्ण कौ है
कहु के सरग्रंलगाई तो सौंत उदार भरै ॥ पत्रा के नाउक पाव मिहा
रकैं ना पलगावत दासी उरैं ॥

63A

धोवती फूल गुलाब के लै दै तउ रूरवै मनि छाल लोवरै ॥ इहप्रकास सखी बैन
नायक सौं छल सो केरि ताको परवे कै डर सो हाव लछु नायकन हित के हैं ॥
गुलाब के रवासो मनवायक वे यत है धोप्रयत है ॥ तब भी हिये मन में कैवा
मन करके रिस करत है ॥ अर्थ यह सव हि रिजकरत है छल सौ परवे को है
देत हाथ को नहि छुवावनो ॥ हे उमान हेत अलंकार ॥ हेत अलंकृ
त होत है कारन कारज संग ॥ मूल ॥ मैं वरजी के कै वार तउ तकि त
लेत करोट ॥ पंखुरी लगै गुलाब की परि है गात खरोट ॥ २६० ॥

यह विस्रब्ध नवोढा नायक सयन मैं फिरत ताहि नहि ताते सखी
डर दिखाय समझावत है ॥ सवैया ॥ मैं वरजी न हू वार अनेहे न
हि मानत हू कव नहा नो करैंगी ॥ लेत करोट उतै अरु अपेध पर बीउ रको
लौरु तौ कहा धरैगी ॥ कोमल अंगन ने अंगनि हार तबै रुक मार क
को सम करैगी ॥ पांखुरी गात गुलाब की लागि जो है कहूं तो ख
रोट परैगी ॥ इहप्रकास ॥ सखुबनायक सोय है तकौ अपनो दो
ऊ ओर गुलाब के फूल धरे हैं नायक के उबसता कोई और
नायका को नाम अप्रापत वर्णय को मान करके फिर
कै सोई ताहि अप्रतारग सखी उर नाय मान छुडावति है
मैं कर बारवार जी यतन अप और कत को अर्थ करत है कोक
रोट लेत है ॥ इयगर्व ताकू हेत है ॥ इतुमारे गात मे गुला
व की पांखुरी लागे सो कहूं गात मे खरोट परैगो । वक्रो
वैन कोई अप्रे सभी कहत है नायक नायका वे उलाव
की पांखुरी वतलायै चाहत है ॥ तब नायक को हावक की

औटकरै है जहां सखी बैन ॥ इतनो तू कर की औट सो जहै
और अपर्ना वाहि ततरहू पहू ता अपर्ना मे मानहु डाननो वर दा
यो है ॥ सवैया ॥ अरुनावरुन जरतारी चरन अंगुरी अति सुकुमा
रा चुवत सुरंग रंगसी मनो नव विद्रुम अरुण के भार ॥ १६१ ॥ यह च
रन अंगुरी की सोभा नायका सखी सो कहति है नायका सो
संभवता ॥ कवित्त ॥ मंद गति है रै कता हंसन सहित कत सम
द गयंदन को गरब गरत है ॥ कृष्ण प्यारे प्यारे स्वरन
मिहारे वा के जलज समूह जिय वसु जरु धरत है ॥ अति सुक
मार जरतारी की पद अंगुरी नाअंसे अवरु नाई को उजास उ
धरत है ॥ मैं रे जान पर्यो अरुवन को अपार मार ताहि ते
उमगारी निचुर्यो परत है ॥ प्रकास ॥ सखी बैन नायका सो ॥
आदि अदोहा है ॥ अरुण रंग नायका के चरण है अंगुरी
अति सुकुमार है ॥ विद्रुम नके भार सो चपि के सुरंग लाल
अंगुरी ता को रंग सो चूवत है मानो ॥ कि वा उरय अंगुरी को
विसेषन है कि यो लाल रंग चूवे है सो पद प्रकासी ॥
मानो की अन्वा की या हो अनुता स्पदा वस्तु उप्रेक्षा ॥
कंदै वो सो प्यो सुरै है पुरु प्रतजान ॥ रूपर हू चटै लखि
लग्यो सव अंगन अवान १६२ ॥ यह तापर स्ता वि कस्मने की
नो तौ सरक पाते बरच अधिक मतो का वि उक्ति ॥ कवित्त ॥ सुंद
र सुहाई सुकुमार सब वदनी की सोभा की निकाई कवि कहै
को वखान कै ॥ नन्द नंदिनी सा सुग्मीर खसि हा जात वे अति

१ 64A

गतिसों कै इजाकीवेसवानकें ॥ इसरने सरपाविचारइ
कुमार हि दें कानदै वो सो दैयावहू पुरहष्टि जानकै ॥ क
है कवि कृष्ण वा कैस पाग्र वि लोक वे को लोभ लगमा
गन जगतल गो ग्रानिकै ॥ सप्रकास ॥ सखी सखी वैन ॥
नायका के इसरने वहु को पोरो रूपपा जानकै याके
हाप ॥ मे पोतोरो ग्रन्थग्रा वै है छोरा हाप है ॥ छोरे हाप
सारे नौसी खेगी तो वडा हाप सो भी देईगी ॥ कनदै वो भी
छोरे वो सो तैतानू हि छोरे ॥ रूपकी रहवे टो वार हना सोल
जिकै सब जगत ग्रापके मागने लग्यौ तीन प्रहर बन जातन
पी
विन बांधु न कलजो है ॥ कोई टोंभी ग्रापकी करे है ॥ इसर वाको
रूपन है रहपुर है पतारे दयकी जहां पेटा रैदान ताको उपा
यकी यो वहुत दै मोपस्यो विषमग्र संकोर ॥ और भसोउ
द्दिमकि टैदो हातिवु रोपफलग्राइ ॥ दूहा ॥ ज्यौं ज्यौं प्यास ई
रहत त्यौं त्यौं वियत ग्रघाय ॥ सगुन सलोने रूपकी मिन चख त्रषा
बुझाय ॥ १६३ ॥ यहां नायका के नैन लगे है ॥ सो सखी सौ कहै है
कवित्त ॥ हरइ बंदप लोचकोर है रहत जानि लोभ नवा न लग
न और सी गहत है ॥ देषत हू देषत रहत दि षसा पा सागी है
तग्रानि भेष टो विसेषा उम हत हैं ॥ दौनो कहु कृष्ण प्रारे
कौस लोनो रूप ताते नवु रन त्रषा कुलन न सहत है ॥
६
नैन तन हाति कैपारु ॥ सां ॥ नन न मैरे ति पत ग्रघाइ
त्यौं त्यौं प्यास ईरहत है ॥ इति प्रकास ॥ पार
को नायक की हक को कन सखी सो सखी कहै ॥ ज्यो
ज्यो नगको ग्राघाय के पीयत है सादर देषके नैन होत है ॥

कीया नाय

[illegible]

तौ मीठ्यो सहेरहतो र१त सेउ बबरे बवेको वाह सेमैं ईररह तैरे। स उ...

रूव॥ लिवन नैठजाकी वीगही गहेग वसहरा॥ मह नोकते जगत व चतुर सिते र हरर॥ १६६

सो है नादि उनसह जोहे॥ ससोने सावन्यास है तत रप जाको अरु पदि
ताको है चबावाह सो वब है ने उमे न हो बुराई है न हो मिटे है तो
कमै प्रसिद्ध है। तोन सो प्यास व रूत लगे है सलोनो नाप दसहि
प्रापा पर कुर अंकुर॥ अधाय के पीवतो है॥ प्यासे रहत है य
विरोध सो है॥ विरोधा सों अलंकार है॥ याते जहा विरोध
सो वहै। विरोधाभास॥ [illegible]॥ रूपसुधा आसवछक्यो आस
व पीवत वनैन॥ [illegible]ले अोठ पियाव दनर है सगाये नैन॥ १६४
यह मद पान समै नायका की सो भाई ब नायक छक्यो सो
सखी सखी वैन॥ सबै प्यावार हती के वन आयो सयो कहे तौन
वनै कछु कैतक भारों प्यावत रंग भरी मृगनैनी रहे। इति[illegible]
अरमौन उजारो॥ आसव रूप सुधा सो छक्यो मधुली के की
[illegible]सग यो लधि प्यारे॥ प्याले सो अोठ पियाल खनैनल
गावै रसो छवि सो मति वारे॥ रसप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ सुधा
हो आनंद कारी जो वाके रूप सोई है आसव बाको मद पान को ये
है ताको नाव कछु क्यो है॥ याते आसव पियत के वनै नही॥
अजीर्न होय प्यासा मैं तो अोठ सगावर है। पीयाव बद
न मैं नैन लगाये रहे तो सोभ सावक भटो॥ तु ल्याये
[illegible] उपमान न की कि वा उपमेय की। जोधर्मन को
ऐक तालगायवो॥ [illegible] नो ठोर मे अोठ नेन उपमेय हैं॥
[illegible]॥ उसह सौति सालोगहे य गन तन नाह विवाह॥
दारे रूप उनको गर्व[illegible] है अदछे है उ छाहे॥ १६५ ३२ ना

[illegible]

65A

पर्‌जा

यका कि न काई सषी नायक सो कहतु है और प्रगट करतु है।।
किं वा ई सात्विक भाव होत है जो वे संध कहि दे तौ भी सम्भे
याते चितेरे नये कोउ हू लिषत बनत नहीं। कवि ता रूप
की अवधा ऐसी और ने बनाई विधि जा के सब वे को ला
से बताम नायवे। ताकी सोभा सि सबके वैठत गरब करि
अनत हि मन होतिष्ठ मद्यान नायवे।। ऐसी भांत आ
र आरु कूर करु वायगये बहुर चितेरे तिनै कहुं लोगन्का
वै।। कृष्ण प्राण प्यारे उह चित्रनी विचित्र गति काहू वैनव
न्यो या के चित्र को बनायवे।। स्वप्रकास।। सखी कहि उत्ति
चितेरा सो।। गरूर नाम गर्व कु स्यागरूर गरबी को भी कहत है
गिरते न किरवे गरूर हैं नगाहरू ते है गरूर चितेरो या नाय
का की जसवीर को अपनी चित्र कौ गर्व गरु है कै लिखने
वैठी ताकी सूरत न लिखी गई।। याते जगत के चितने चहु
र चितेरा कूरवे व कू [illegible] नहीं यातें हैं चतुर वे बकू यामें याते
रूप की [illegible] काई किं वा सबी वैन नायक हो है चतुर
म वा के रूप [illegible] समझत है किं वा जैतिसवीर लिषै सो देषबे
लिषै है वा को रूप देषे [illegible] कंपा सात्विक होत है।। ताते स
र्व विगरे है सो कूर भयो किं वा चतुर कूर के है भरो वाकी छ
वि अभि और है जात है दिन दिन और ही सोभा विसे षह
त है ता बिन की लिषी सवी मी कु नहीं रहत है अभि और
अभि और या तरह की चोलन है सम अप्रधिका जानीते है
दृष्टि तेरा गर्व सौ जानीए मुसलमान चितेरा गरूर जानीए
और प्रत्यक्ष वैसे हो।। नहीं अटे अटे तरह को कूसर सैव को हि

ग

क

66

औरबातमें और है अर्थ करै जहां जान॥ ऐसे बहुद्ध दे मां
कीब केहू कति उर आन॥ जहां काकु है पद तो बकोक्ति जा
सोरठा
नीऐ॥ रूपक॥ सो॰॥ तो तन अवधि आनंद बरूप तो ... सब जग
ज्यो
न के॥ मेरे दृग लागत रूप दृगन लगी अति चटपटी॥२६०
रह॥ नायका के रूपसो नायक के नैन उरझें हैं॥ सो अपने नैनन
की ताल पन करत है॥ नायक को बैन नायका सो॥ सवैया
सुंदरता की नहीं परमावधि तेरे तिया की अति पाय न बेली॥
कीरमनी रमनी वही रूप राधिका तो सम है इक जे हू ली॥
तो तन सो हैं तु नाई की खानि लग्यो है सो कमेरे नैन
बेली॥ लो मैं रूप लगै मन नैनन लगी मन नैनन तो तनता बेली
रूर अंकुस॥ नायका की बानी नायक की उक्ति॥ तेरो तन अन
प आश्चर्य रूप अवधि है सो अन्न पदार्थ नहीं काहू के सं
पूर्न जगत के रूप सोदर्प तो हीमें लग्यो है॥ मेरे दृग रूपहो
लागे हैं और दृगन में अति चटपटी अति अकुलानि लागी हैं॥
तन मे रूप लाग्यो है॥ रूप में दृग लागे हैं दृगन में चटपटी
माला दीपक॥ अगले अगले जो गिनै जहं प्रथमा अप्रधान
उदित होइ॥ तहां माला दीपक कहत कवि पंडित सब कोइ॥
उदाहरन॥ दीपक ऐकावलि मिलै माला दीपक ना
म॥ लग्यो रहे क्रिया तासो अन्वय जासो दीपक॥ एकाए
क हिरहे एक ठौर उत्तम सो तीर नलग्यो रूप सो तन न
ही लग्यो॥ रूप सो दृग लगे॥ दृगन सो चटपटी लगी॥
रुला॥ भाव वर्नन॥ नवली नाम नदि साघाक ईसिरढ्कैस
कवि समाह॥ गली अली की ओर हैं चली मली बंधवास॥२६८

परकीया नायका की दसा देखे सखी सौं कहत हैं॥ कवित्त॥ आज मैं अ
बानक बिलोकी बृजबाल एक बारहि उतै रहि मोरे हित तामैं विहार कै॥
दामनी लसै है नचार बार सुरी कलार तीक काम हू की कामनी करै
र उरोवार कै॥ उवली उघार कै दिखाय कै गंभीर नाभि घूंघट टारि
हार कीनो सकुचि सम्हार कै॥ भली भांत सौं करी गली मैं न बना
गरी अवली की ओट चाहै चली ईं यों निहार कै॥ दूसरो प्रकास॥ स
खी सखी उक्ति॥ नायक कौं चूं बाहि मैं उवली नाभि दिखाय कै॥
पीछे संकोच को संभार करि संकोच कृत मव नायक के सिर को अ
क कै॥ आली जो है नायक सो अभिलाषी तर हू चाहत है देन कै अ
ली सखी को ओर हू कै चली॥ हाव उकाम विकार ते दंप
पति के तन आय॥ चेष्टा भेद हू भांत कीते कहि येस वहाव॥
स्वभावोक्ति अलंकार॥ जहां जाति को रूप बरनन करे॥ मूल॥ के
व आवत हू गसीर सो बेला उबलेन॥ दरसन की साधे रहै सू
धे रहैं न नैन॥ १६८॥ यह नायका अपने नेत्र की दसा स
खी सौं कहत है॥ देखे तो लाज ते देखन ही सकत अन देखे
अकुलात मध्या पर की या है॥ सवैया॥ का हू अली वह
वे रंग ली रह आवत चारु सिंगार कियौ हू॥ देखिवे को ताव
हित ब है लल चाय र ह्यौ नव लाव ब लै हू॥ लाज अबु
न क आइ बहै पछता तहू हैं अपने मन मैं हू॥ सोहैं चितै बै
की साधे रहि उरू धौं बिलोचन होत न कौ हू॥ दूसरो प्रकास॥ स
खी सखी बैन॥ के वा के उबेर या गली मैं आवत है नायक जहा
नायका को घर है फिर उहां सोच सायं हूं है ही बलतत है॥ या हू अ
दीया को दरसन को साध रहत है चाहे हूं न है॥ मन मै रूधे नैनन हि रहत हैं॥

है तउ अलंकृत होत है कारन कारज संग॥ क्योंकि परकीया नायका है
नायका नायक विचारै है कोई मत जान सोय मिस करि कै दृष्टि नैन करि उत
को चाहै है नायका को देखै है॥ यातें सूछम नैन निरखत है॥ मूल॥
विहसि बुलाय बिलोकि उत प्रौढ तिया रस घूम॥ पुलकि पसीजत सुत को
पीय चूम्यौ मुख चूम॥ १७०॥ नायका प्रौढा है सनेह की अधिकाई
पीय ने सुत को मुख चूम्यौ॥ कै आनंद मानत है सो ब कभाव है वा तस
स्वरूप है॥ कवित्त॥ प्यारी प्रेम उमाहते प्यारी पै सब भाव हियै हुल
साती॥ सुत को आनन चूम्यो पिया तिय चूमत ता हिय महारस माती॥ चाह उते
मुसकाय बुलाय हितै रुख पाय लगावत छाती॥ गात पसीजत रोम खिलत होत अ
नुराग के रंग मै राती॥ रसप्रकास॥ नायक अपनी बडी स्त्री को जो पुत्र है ताको
मुख चूम्यो है॥ सो छोटी स्त्री बुलायवे को चूम्यो है सो सषी सषी वेन विहसि कै
बुलायवे को बिलोकि उत देषीयत है विलोकियत अे सो भी पाठ है तो अनुराग मैं
लगि कै नाइका की ओर देष प्रौढा जो है स्त्री सो रस मे घूमि कै अनुराग को
मत्त होय कै घूमियत है भी पाठ है तो अनुराग मे लाग कै॥ पीय के सुत को जो
मुख है अर्थात पीय को चूम्यो तातें चूमि कै पुलकत होत पसीजत है संबं
धतें सात्विक जानीते का संधि प्रौढा असंगत अलंकार और ठौर सौ कीजै
और ठौर को काम॥ वाही ते पीत मुख चूमवो सुत मुख चूम्यो वाम॥ पीय
के मुख मैं चुंबन वाही ते सुत को मुख चूम्यो॥ मूल॥ देख्यो अनदेख्यो की
यो अंग अंग सबै दिखाय॥ पैठत सी तन मे सकुचि बैठी चितै लजाय॥ १७१
या नायका को परकीया को चितैवो लाज करवो देषतो सो स सो नायका हो
कहत है॥ कवित्त॥ सोहत सहेलिन मै बैठी हित छबीली बाल सैन सूनि तहा
नि कहे आचानक हि आय कै॥ मेरी ओर देख्यो उन देख्यो अनदेख्यो
मुसका कै अंग अंग सकल दिखाय कै॥ पैठत सी तन मे सकुचि मन

67A

ऐसें चितसी चितमनचाहि वैठी रसि मरत सजायकै। उरू सकारे चितमनस
कुचन को छूटरतन रहि मेरे हूप मउराय कैं॥ द्दारप्रकास॥ सषीसषीवेन
है सवतरै सषी नायकाको अंगअंग दिषाय नायक को देष्यो सो अन
देष्यो सो कियो॥ मानो नाहि देष्यो है चितरलजाय अपने चितमैं स जा
यकै वैठी ऐसें अपने तनमैं सकुचकै वैठी है मानो सब अंगअंग ऐसे
मीकरत है। ऐंठतसी॥ पैठत निपाहै ताके आगे सी वाचकहै॥ याते अन
त्ता स्वदावसुप्रेत्ता॥ ऐंठतसी तनमैं रहि स्वभावो त्ता है॥ मत्ता॥ रहे गुही
वेनी लषै गुहै वे के तो नार॥ लागै नीर चुवामने नीठ सुषायेवार॥ ११

गो

गोपी को वेवनाय गोपाललजू श्री वृषभानु सुता के घर आये॥ ना
यका को सिंगार करन लागे वेनी गुहत सात्वक भये तो सषी सषी सो वाकय
कहि नायका जानके नायकसो कहत है॥ सवैया॥ गोपी को भेष
वनाय गुपाललजू श्री वृषभानु सुताघर आये॥ होस जिजानत नीके
सिंगार करो सुकहो करौं वेनी सुहाये॥ वेनी गुहावत प्यारी कहो

ए

सुघराइन दै कित तें मुकताये॥ नीर चुवान लगे अव हूस सटकारे सेवा

रु

र जे नीठ सुवाये॥ द्दारप्रकास॥ नायक नायका की वेनी गुहै है॥
नायका वेन॥ रहे तुम वेनी चोटी गुही तुम सो न ही गुही जायगी
हमारे गुहिवे को तो नार ढगलव्यो देषो नीठ के सेरू जे वार सुवारे
तामैं नीर चुवे लाग्यो अस्वेद सात्वकभयो ताको तरह सो करत हैं स्वा
धीनपतिका॥ वतामो नत अलंकार॥ वत जो हि कछु औ तिहाक
है उरै आकार॥ मत्ता॥ रूलहउलहनवर्नीन॥ स्वेद सलल रोमांच

रु ला

कुसगहउलहन अरुनार॥ दिये दिये संग हा चाके रूप लेवे ही
हार॥ १२॥ १२ विकाहृ समय [illegible] उनके अगिस नेहके अधिक

तो

ते सात्विक भाव भये सु सखी सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ मंद मंद सीती
र घसाधि कै वेद विधान सों दान दीयो है ॥ स्वेद भयो सो ई नीर भयो
अरु वेपुलक कुस पुंज लीयो है ॥ मैन मुनिंद अज्ञा पै कर सके ॥ लखि ये
अभिलाष कियो है ॥ दोउन पै अपनो अपनो यौ दीयो हू च्य ले वाही
हा च्य ही यौ है ॥ टी॰ प्रकास ॥ सखी सखी उक्ति ॥ सात्विक जो स्वेद पसीना
सोई सलिल जल ता सों संकल्प करत है ॥ रोमांच सो कुस है ता को ग
हि के पुलक न अरु प्रिय हू च्य से वापानि ग्रहन वरदू सह मिकौं
पावक पहरै है मानो है तव विटीको वाव कहु रद्द ओवै है तासयैं
हाथ ही के संजपरस पर हाथ मेहि यो मन ताको दीयो ॥ रूपक
अलंकार ॥ दू॰ सा॰ मान हू मुदित वरामनी दुलहन कर अनुराग ॥
सासु सदन मन ससन हू सो तिन दीयो सुहाग ॥ ३ ॥ नायका नवोढ
जोवन दे विना पकैं ती के वस भयो अरु सो तन हू को सुहाग इनिती
नो सु सखी सखी वैन ॥ गौने आई दुलहन लौने तन वारी मानो
नगर नगर ते त्रिभुवन को भाग है ॥ विधि ने सवारी उन वारि री की
सी वरु प आगे रूप रति को रति कहू न लाग है ॥ मेरे जान मुदि
वरामनी को नेउ जानि आइ ही ते सौंप दीनो करि अनुराग है ॥
सासु मै भवन दीनो प्यारे लाल मन दीनो प्रीतपन दीनो सवसो
तन सुहाग है ॥ टी॰ प्रकास ॥ सखी सखी वेनो दुलहन मै अनुराग वा
हि करि कै मुदित वरामनी मै सासु ने सदन घर हू वा ले कीयो ॥
लाल न मन सों तन सुहाग दीयो ॥ है मानो को अर्थ जानो उम
छांद पीवं अद्वैसी सुंदरी नायका है नायक आसक्ति हाय कै

नायका हा पा कातिन

घरको बाजै याहि को देहगो दीयो को । श्रद्धी सद्धनासों गयो जानी
जानी है सास सौं सदन गयो लसन सौं मन गयो ॥ रूप सौं तासौं गयो
किं वा ॥ मानो सो उत्प्रेक्षा जानी ॥ और तरह को और तरह की संभावना
कीजै । मानो नायका नैं रूढ दि बरामनी मैं सासको सदन दीयो
लसन को मन दीयो सौंतन कहा नदीयो सुहाग सौं तान रूहाग दि
यो ॥ उत्प्रेक्षा ॥ परयायोक्ति ॥ पर्यायोक्ति प्रकार द्वै रचना होवात
सुल ॥ नीर धान वोढा नार तन छुटत लर कई लेस ॥ यौ प्यारो श्री
तम तिया मन रूहवसत परदेस ॥ २७९ ॥ इहां नायका नवोढा है ।
याको जोवन आवत देखि सौतिन को निराश भई है ॥ सखी सखी बैन
सवैया ॥ केहन सी दिये देह की दिपत मैं न मनो निज मोहनी घा
सत ॥ छूट तासी लर कोई कछु तन नाह पर मरंग तरंग उछालत ॥
आगम ते अति प्यारो लगे पति मानुह कहू परदेस को चालत ॥
बाल बधू तन जोवन आवत सौतिन के उर सूल सो लागत ॥
हर प्रकास ॥ सखी सखी सो ॥ नवोढा नार के तन मैं लर कोई
को लेस अब सो छुटत है यह सिर बक श्रीतम नायका तिय
को सौतन को रोम भयो ॥ मानो परदेस को चलत है इह अर्थ ॥
जामै जोवन आवतो वाको अस ताको पयो यह अतिशय
हमैं नहीं मिलै गो ॥ संका संचारी व्यंगि मध्या नायका ॥
चलत है मानो की यासो मानो की अर्थ पहै ॥ ताते अर्थ तास
पदाव स्तु उत्प्रेक्षा ॥ लक्षण ॥ डीठोई बोलत हसत प्रौढ विलास अ
प्रौढ ॥ ज्यो त्यो चलत न चितवन पन दृढ करती नवोढा ॥ २८०
यह मद पान समै सखी सखी बैन ॥ कवित्त ॥ आजु वार नी की बार

६९

69

नीकी मैं वि लोकी उर सोभा प्यारे नैनन मैं प्रवसौ वसत है ॥ ज्यों
ज्यों वह ढीठ्यो दै दै बोलत सरस वैन नागर नवेली हू रहै रवें हसत है ॥ कहै
कवि कृष्ण उर लागवे को ललकत प्रौढ के से सकुच विलास विलसत हैं ॥
त्यों त्यों छकी तिय नैन [illegible] विता के नैन पलक न हू की गति [illegible] दरसत है
ह २ प्रकास ॥ सखी सखी वैन ॥ ढिगई करवे ढीठाई दै के बोलत है हसत है प्रौढा को
सो विलास करे है नायका प्रौढा है तो त्यों त्यों [illegible] पवके नैनन हू चलत है
वाकी चेष्टा सों बंधे हैं तहा कारण कहत है ॥ नायक वस्त्र बनाय के छैल है ॥
ताहि छैल की है ॥ [illegible] है नवोढा न व विवाहित्ता नायका कों हर्ष संचार स्वभा
वोक्ति है अलंकार ॥ नायका जैसो रूप [illegible] वरनत ताही रीत ॥ स्वभावोक्ति तासों
कवि आनत है कृष्ण ॥ मूल ॥ सनि कुज सोच बुध लगन उपज्यो जदि
स नहि जो ॥ कौन नृपत हू जोग वे लहत देस सब ॥ [illegible] प्रश्न ता
ग है ॥ नायका के [illegible] जनमत है [illegible] नायक के [illegible]
ल सखी नायका सो कहत है नायका पर [illegible] या नायक सखी सो कहै है तो
संभवै कवित्त ॥ दे सीरक वसनत विचित्र वरवानक से ज्याकी जो
ति हीसों जगमगात सोभा है ॥ वह सब वह सरस बोलत सरस वानी वरस
त मानो प्रथि बुंदन को मेंह है ॥ कहै कवि कृष्ण कौन भूपत है जो
ग करै रजधानी सकल सुदेस पाय पान है ॥ जे नव [illegible] सजन है प्रेम नल
सत सनि ऐसे लग्न योग समै उपज्यो सुजान है ॥ २२ प्रकास ॥ सखी नायका
सों कहत है ॥ राजजोग कहत है कोजु जो सनिश्चर है मीन लगन सो बुध
में है ॥ [illegible] कोसो करत [illegible] उच्च व [illegible] प्रोल [illegible] जामी एरतमा
ही [illegible] तो [illegible] को प्रोल दिन है [illegible] ना में सन
में [illegible] उपज्यो है सो न पत [illegible] कोन हू जोग करै देस है

सोई सुदेस है ॥

सुररदे सौं ताको लखि कै पाइके रूपक अलंकार ॥ सखी को नहि मोपक रै हूं ॥ तब उत्तर अलंकार भी जानीए ॥ उत्तर दैवै मै त ह्व प्रश्नोपरत लषा ३ ॥ प्रश्नोत्तर को भेद एह रूप मकहत कविराय ॥ याको दिव्या अलंकार कहत है ॥ मूल ॥ वितई ललसबौ है वषनउठ घूंघट पट मांह ॥ छल सो चली छुवाय कै छिन क छबीली छांह ॥ १२८ ॥ इहां नायका परकीया ऊंचे ठाकर गई सु नायक सखी सो कहत है ॥ कवित्त ॥ सरनसुधा निधा सो वदन दिखाय करि घूंघट की ओट कीनी कछुक सजाय कै ॥ घूंघट के पट मै हूं निरषि निसंक चित मनल सवौ हितवा ह्व बंक नीजतायकै ॥ केहूं विकृ छम यदुम ऊं कै अली की ओर खली कहि छल सो छबीली छांह छुई है हाहा करि को हो जाहि ऐ तीछ्वसो हि उहमो हीतै नट रत्त रही हे री गछाइ कै ॥ सुरप्रकास ॥ सखी सो नायक की उक्ति ॥ लाल चमरे ने च सो मेरी ओर बितई देषी घूंघट पट के मांह उठि कै प्रगट कर कर खे ह मैं सछ नाकरि कै सखी नहि जानै ॥ छल करि कै छबीली नायक जो है सो छांह अपनी छुवाय कै चली किं वा छबीली जो है छाया ताकी जो छाया भी छबीली होत है ॥ जाके तन की छांह छिगजो हू छाह सी होति ॥ अभिलाष संचारी क्रीया विदग्धा ॥ वचन क्रीया मै चातुरी कारे उक्ति ह्वै तामे हेतना ॥ ता ह विदग्धा कहत है वचन क्रिया समेत ॥ हमारे मन तुम्हारे तन सो छाया समान सज्यो है यह बात जताई सूचभावोक्ति अलंकार ॥ मूल ॥ कीनेहू कोरक जतन अब कहा काढै कौन ॥ मो मन मोह न रत पलाषि पानी मै को लौंन ॥ १२९ इहां नायका परकीया ऊढा ॥ अपने मन की आस ता सखी सो कहत है ॥ सवैया ॥ जादिन ते वरवानक सो निरख्यो वलवीर कालिंदी के तीर मै ॥ तादिन ते नरु हा कछू सांधा को लव ... सर सो मन सरीर मै ॥ नैनन मांर वसी वह मूरति जाय पर्यो छबि छीर मै कोटि कीये हू कढै कहू केसे विलयो जयो स ज्यो लौन ज्यो नीर मै ॥ सुरप्रकास ॥

नायक की उक्ति सखी सों कोटि जतन किये मैं हे सखी तू अब कहि कै कौन
धरै मेरो मन मोहन के रूप सों मिलकै पानी मै कौ लौन भयो मिसरी कौ
जो नायक की उक्ति सखी सों हे सखी तो मोहन को मन वासों जो नायक कौ कार
पर है तासों मिलकै और बेसे हि दृष्टांत अलंकार उपमान है उपमेय उनको
वाचक धर्म सो जान॥ दूध विंव प्रति विंव जहां दृष्टांत बखान। मूल॥ नै
हन ने नैनन के कछु उपजी बडी बलाय॥ नीर भरे निस दिन रहै तौ न प्यास बु
झाइ॥१८०॥ यह नायक को वचन नायक के वचन नैन की त्रास कहि स
खी सों कहत है॥ सखी सखी सों इनकी विवस्था कहे तौ संभवे॥ कवित्त
एक पल सौ न लगै पलकै ललकै सखि वे कहूं लागी चटी॥ नीर भरे निस
द्यौस रहै न रहै तउ प्यास रहै ज्यो बाउ चटी॥ आठहू जाम तपे तरपे उपचार हू सौ
न घटै न घटी॥ यह प्रीत लगी नहीं आबन सों कोउ पावक ज्यों धम सै
प्रगटी॥ हरिप्रकास॥ नायका की मन सों उक्ति। कि वा सखी सों वूझी न्हेरा
गमै॥ नैनन को नेह प्रीत नहीं है कछु बडी बलाय रोग है सो उपज्यो है
नित प्रति सदा नीर भरे इ रहत है। अर्थ। कि नायक सों मिले बिगर
आंसू भरे रहत है। तौ भी प्यास नहीं बुझावत है देखबे की चाह नहीं जात है
वित्तक संचारी विसेसोक्ति अलंकार॥ विसेसोक्ति जहि है तासो कारज उ
पजे नाहि। नीर भरे कारण तासों प्यास बुझावे कारज नहीं भयो॥
प्रतिसेध॥ सो प्रतिसेध प्रसिध जो अर्थ। निषेध्यो जाय॥ नेह न व
डी बलाय है नैनन को दरसाय॥ मूल॥ छला छबीले लाल को
नवल नेह लहि नार॥ चूमत चाहत लाय उर पहरत धरत उतार॥१८१
यह नायक को सनेह नायका मैं अधिक है सु वाके छला को पाय
वाके मिलबे को सुख मानत है॥ लाज ते मिलबे को प्रयास नहीं क
रत नायका मध्या परकीया है सु उ तो होइ सखी सखी सों कहत है॥

70A

सवैया॥ नागरि सैंन न नेह लख्यो न न नागरी आलीन सौं दुरावै
देषबे कौं अकुलात हीयौं अति लाजन सौं बिनयै न ह्वै आवै॥
नंदलला के छला सह के तक ताहि रहौं न निमेष लगावै॥
चूमत दृग व तज्ञ आनन सौं कव रूप हरै कव हूं उर लावै॥ टीका प्रकास॥ स
खी सखी सों उक्ति॥ हे सखी लाल जो है लाल नायक ताको छला अरु सखी
नत सनेह मे नवल प्रीत मे सखि पाय कै नार जो है चूमे है उरछाती
सों लगाय कै चाहत है देषत है पहरत है फिर उतार धरत है चूम वोर
त्यादि मन को भाव अनुभाव री ताको प्रगट करै है॥ जाति अलं
कार॥ जाति जै से सोरूप गुन वरनन ताहि है॥ लछन॥ पाकी जत
न अनेक करत न कन छाडत गैल॥ करी बरी दुवरी लष लगत भरे
चाह बुरैल॥ १८२ यह नायका की लगन सखी नायक सो कहत है
सवैया॥ रौ मन रौ मन सो उरगई ही वसै धसि प्रानन मांज बगी है॥
हो कर प्याकी उपाव सवै हारि जंत्रन मंत्रन हू न डिगी है॥ देव दुषाय
करी दुवरी दुरी वावरी ज्यों सुधि बुद्धि भगी है॥ ऐसे पै वाकी न छोडत
गैल बुरे लहू रावरी चाह लगी है॥ टीका प्रकास॥ सखी की उक्ति परकीया
सो लोग अनेक जतन करै प्याके हैं तोरी जो चाह होई बुरे ला सो लगी है
बरी दुवरी करी है ऐ तो ला रोंन ही छाडत वाके पीछे रैह लागी अर्थ
किं वा सखी की उक्ति नायक सो बरी दुवरी नायका कौ करी है लगकै
और वे सहीं जानी ऐ॥ चाह सो बुरे लरूपक अलंकार॥ लछन॥ उनहू
र की रूसके उतै उनसो पीसका यह॥ नैन मिले मन मिल गयो
दोउ मिलवत गाय॥ १८३॥ इनदोउनके गाय मिलवत मनमिलगयो स
षी सषी वेन॥ कवित्त॥ उन्ह सहा की दैंके हां कीयै नई सी गाइ मोपै
नाहि रत काहू वे तेउ गद ये है॥ उन उसका पक ही अरु उटी न वावते हो गा

-श्रे है, मासरि हि, है, और सो नन तें हैं ॥ कहै कवि कृष्ण मिसे वे नमहो
वे न, अरु नैन सोरी रे नैन रस व सम ते हैं। मूल ली सधायौ नन को
नयौन की सुयार रहि गाय मिसवत दोउ मन मिजात है ॥ स्वकूल
नायका पीछे है गाइ आजे ताके आजे नायक उन नायकने हुँ लेके
उनवउ और जा और नायका पी ॥ ताकी और स्वकी हाकी हसी कर
वेके लीते और और हाके तो नैन आ ही तरह मि सौन हि उनना
गाइ मिलवत है कि वा नायका गाइ मिसावन गइ पी तहास ही सखी वैन
औरउरी सोहि बायके कहत है उन नायककी स्वकहि पचाइ अर्थ ते
पी नायका मुसकाइ रहो नैनके मिलत मन मिल गयो जा हि सखे
रन सो या नायका हो हसके स्वकहि ऐचो हकी के अर्थ करि रह नाय
काहि नायक हे मुसकाय रहि तबनै ननके मिलत अरु उरास हत पसत के
मन भी मिल गयो। जामें दोउ नायका नायक गाय मिलावत हैं गाइ दुह
तहे, केप्रसीगपकरै को उहत मिलायवो उहवे को कहत है। नायका मि
मन मिलायो अरु संगत और काज आरंभत ऐ औरै की जै दोर ॥ किंवा नैनन
के मिलवत ही मन मिल गयो अरु पलाति सतोहि ॥ नैनन मिलवो हेतु
मन मिलवे को काज। वपला उनते जु रानन हि तहि का जा। अप्रतीस
दोहि अरु मन हाकार नकार जहांग॥ हग मिल हेतु मिलाप मन काम
सो गइ है, रंग ॥ मूल ॥ पेरक धू करि दोरते फिर रचि नई मुसकाइ ॥ आइजा
मन लेन हि पने है चली जो भाइ ॥ २८ ॥ इह नायका पर कीया विदग्धा
सो वे छल कर गई उह नायक सखी सो कहत है ॥ सवै पाय वेली लीपकर

लायवो आरंभो

इ, ट, अ, के

आई अबानक कंचन बेलि सी बाल अकेली ॥ जोबन जोति जगी अ
ति कीरत की, दुति लै निज पाय नवेली ॥ अब महा मुरकै बितई सुमनो अत
कान मैं यों मनो मैंली ॥ जा मन लै रस जाय नदै ये पाई जियनेह जमाय
नवेली ॥ रसप्रकास ॥ सखी हो सखी तैर देह ली जात तोई जाय कै कहू देहरव
हा ना करूं कै चेरि तेफिर किं ता दिर कै उसका यकै नायक की और चितई
जा मन लै नैके आई ही हि यमैं नेह जमाय केहूँ ढ करि कै च ली व अस्त्र
संगत अलंकार इहि जमाय कौ आरंभो नेह जमा तो और का जआ
रंभी ता औरौं की जै दार ॥ बेर कर वे मैं कछु लसोरथ साथो । पर याते ॥
ति प्रकार है कछु रचना सो बात ॥ मिसकर कार जनसौं हौ । दै जो कछु बित
रहत ॥ मूल ॥ हमत सुबकरकम नाउ मह मिलन की लाल ॥ ज्वाल
रुखी सी जरत लखि लगन अगन की ज्वाल ॥ १८५ सखी नायक सों बा
का यारो बित प तकाकी लगन की अधिकाई ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राण
प्यारे लाल जनहीं ते यह एन्यारे नव हीं ते प्यारे पलक लन धारत है
ससक ससक अति दीरघ उसास लेत तलप तलफ उधबुध बिसारतें
बिरह हृ तातन की भिर ष प्रबंड ज्वा तनि हवै हिये मैं ज्वाल रुखी को धरत
है ॥ मिलबे की कामना हिये मैं धरैई दुरखी अवस वसु बन कौ हौम
सो करत हैं ॥ रसप्रकास ॥ सखी नायक सों कहत है लगन जो है बिर
ह सो करत है हो लाल तुम सो मिलबे की कामना अभिला बासो ताके
नाक्का कै सुबकारि हमति वरावत कोई छुडामान न हार नहीं
याते सूब कार कहयो ज्वाल रुखी सी जरत है निरंतर प्रकासक
रत है ॥ ताको लबदेख कै जो लगन प्रीत सोई है अगन ताकी ज्वाला
कै ज्वाल रुखी उपमान सी बाबक लगन अगन उपमेय जरत ता सा
धारन धर्म याते पूर्णोपमा ॥ लगन अगन सोई तपक ज्वाल रुख

बीसी जो है रहाउ वमानसी वाच कर्तों [illegible] । अन्यच जरत पात्रु पालो कीजे
तौ मानो के अर्थ मैं । कैहे ज्वाला अ बीसी जरत सी मानो । अन्य तौ
स्वदाव सुत्रे दाविं वा है सो सना य कारुम सो मिलवे की काम
ना । अभिलाष करिकै रुष सो हो यहि है फूल की मोती की माल
सुगंध मैं है सं सारथे सोगता को रुष है ताकू वहू होम करत
है जो वाके अंग मैं डारी तो है सो सब वर जात विरह मै । ऐसे सो वा
न कवि कहै है ॥ सीत लजान वियोग न के उर तै लर मोतिन कौ उर माह
वो चर के पर के मुक ताह ल ज्यार भट मनो भार भ जाइ ॥ छाती
सो धु वाइदी पाबा ती कोन वार लै ॥ दूजे प्राले व सान । आधा
दोहा मै बहौ । अर्थ तीस रौ । अर्थ कामना र हा काम ज दोना
अदा पद है लालत स्तारे मिलवे को है जो वा को मानाहि पति
उम मिलवे को चलावे पीजब याहू नही करै पी ॥ तानाहि
को काम रुष बारि [illegible] यति । अर्थ ते लिंग वचन वियक्ति पि जा
तहै ॥ उरको [illegible] होम तवौ होम ता । ऐसे सो यी जानी र
रकार की ठौर अकार मी पढ़ लेत है ॥ औधार सीसी रुसब
रत्तादि दोहा मै विलता [illegible] रवलता तपदो धेरपावक
उरते रत्तादि दोहा मै दूषि [illegible] रदे व पदो ॥ वके दार्थ ॥
सखी सो बैन ना पक को है सखी ताहि रुष कर काम हतायति है ॥
नारुप है मिलन की लात [illegible] नरूप जो की लाल गत
पंच मार्थ ॥ सखी वै नाना य को [illegible] ताहि रुष कर कामना
होम त है ॥ ब बार्थ ॥ है सखी [illegible] म सो मिलने [illegible] की कामना
के रिला ल रुष को है म जि [illegible] त है ॥ मत्त
मै तो ना न्यो लो प न न उर त वा [illegible] है जो ती ॥ को सा तान तडी ठ को
किये सीसी तै तती

च

ज़

की
दाँरत

डीठ किरकिटी होति ॥ १०६ ॥ यह नायका अपने नैनन की आसक्तता सखी सों
कहति है अरु अधिक अगट करत है कि जब तें अंबर देखी तब तें कछु औरे स
नैना हैं ॥ कवित्त ॥ जा दिन तें आली नेक ही कमलन मों स्यामल तेल लो
चन सलोने देखें अंग अति हित वढि है जा दिन तें मैं रूप ऐसो जानी नील नैन
मते जोत को प्रकास कछु अधिकाई बाढि है ॥ और तही नैनन विध्यान
नमे वगर गई मदन रस जासन वरत जाहि जों है ॥ कौन रहत जानत ते
डीठ है को डीठ वीर होत किरकिटी के उसकन कादि के ॥ रसप्रकास
सखी सों किंवा नायक सों ॥ वंउता नायका की उक्ति है को कामे जान्यो
ऐसो जान्यो ऐता हमारे इन लोयनन को उहत्वारे लोइनन सों उरन
के मिलता के जोति प्रकास बढत है वढेगो ॥ को है जानत कौन जा
नैत्तौ जो डीठ को डीठ किरकटी होत है ॥ किंवा पूर्वानुराग मैं नायका
मैं नायक को देख्यो है ॥ चौंकि विना देखे वाकु सरूप के कहत
है वितर्क संचारी किंवा नायक को वैन मनहो वितर्क संचारी विष
म अलंकार ॥ विषम अलंकार तीन विध अनमिलन के संग ॥ का
रन को रंग और कछु कारज और रंग ॥ और मन लौउ इम कि पैहे
त बुरे फल आय ॥ दृग मैं वढिवे को यलौउ द्वाम की तो डीठ किरकटी
भई ॥ मूल ॥ वसिसकोचं दसवदनं बलसा बुदि घा कलितवाल ॥ सिव
सों सोध ॥ तति पतन रहू लगन अगन की ज्वाल ॥ १०७ ॥ या नायका
के लगन लगे तें सनेह की अधिकाई है या तें अगन भई है ऐसी दसा
की दसा सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ जा दिन तें लाज छोनि वनै है मनभा
मन सों जा दिन तें मैं न की मरू रत भरत है ॥ जा सउर लोगन के स्वासन

जोति

साकत पारि ऐकर आस लागी निसवासर भरत है॥ वसंत सकोच दसवदन
के वसपात कछु नव सात ध्यान वत्ति को धरत है॥ लगन की ज्वालन मे
वालनि जदेह को सिता सौ वह सोधन सौ तन को करत है॥ इहप्रकास
साखी की उक्ति नायक सो पूर्वानुराग मै संकोच सो है दसवदन रावन॥
ताके वस मै वसके रहे कै अवनो सांचपुनो ऊमहि विषे आसत्ति ताको
दिखावत है वाल॥ लगन अगन की ज्वाल मे सीता जी को सोतलै बौ
अपने तन के सुद्धि करत है सीता जी जैसे अगन मे अपने तन को स
रीर सुद्धि की यो संकोच रावन रूपक औ उपमा अलंकार जानीए॥
मूल॥ जौन ज्ञात पी या मिलन की धरत जुक्ति उबदौन॥ जो लहिए
संगसजन तौ धरकन रक रहै कौन॥ १८८॥ यह पलाविक अग अनुरागी को
वचन॥ कवित्त॥ उ है छैरनी के जहा मिलवो है पी को मीत रहै सत ही को
रंजी को अवदत है॥ या पै जो मुकत पद दरस्योन प्रान प्यारे सर स्यो
अधाकु दुवारे छौन सहत है॥ कहा तवने है कोए है जात न अनेक सांति
जात मांत मांत न को वास अधि कात है॥ रहे वौव नै तौ मन मा मन सौ
मिलि जो दैन रक मिकास है तौ मन न संकत है॥ इहप्रकास॥ अतिअ
भिलाष सो पूर्वानुराग मै नायका की उक्ति जो नीय सो मिलवे की
ज्ञात उपाय नहि औ क दचित्त ज्ञात मिले तो वा मुक्ति के सुख मै ध
रदी नी॥ वैसी जुक्ति जो त्याग की यो जो सजन क्रय ता को संगपा
इ तौ नरक हू को धार कस्वी कार कीयो या हि अनुज्ञा अलंकार
होत अनुज्ञा दोष मै जब ली जै गुन मान॥ तिन संग सुख लहि उनाने
कनरक कुंडनि प्रानि॥ नरक दुबता को स्वीकार करै है॥ काव्यलिंग

73 A

उन्नको त्यागकरनेको स्वीकार समर्थन कीयो ॥ उक्ति ॥ कीमिंदा होति
है जहां ऐसें जानीए ॥ उद्धवजी ग्यानको उपदेस कियो है ताहां वृजदेवी
नके वैन ॥ प्रीता श्रीनंदनंदन किंवा नरक जो है सो कनाम निंदाको
है तासो करत है परकीया को स्वीकार कीयो ॥ मूल ॥ मोहू को त
जमोहू दृग बेल सागउहू गेल ॥ छिनक छाय छवि गुरडली छलेछ
नी लेछैल ॥ २०४ ॥ यह नायका अपने नेत्र की आसक्त सखी सो कहति है
कवित्त ॥ जा दिनते मोहनी कोमें नेकडार दीनो उन रूप की मिठाइ ताहा री
तेक सम्पले है ॥ के तो हठि करि राख हारी और प्रबल की त्यो त्यो प्रीति
वस करि उनही को हूलसे है ॥ मोहू सो जु हू जो नातो पल कमै करि हा तो
छोड सब तातो ताको गैल छाइ बले है ॥ नंदको कुमार आली वीसर
सो ठग है हरि देख तही देख मेरे दाउ नेनह ठके है ॥ हरि प्रकास ॥ हवीनउरा
गम्ने परकी या नायका की उक्ति सखी सो ॥ हमारे जो दृग है सो दसना
सो मोहू त्यार तजि के वाही नायक की गैल राह को लागि के बसे ना
यक के संगजात है नायक की छवि जो है सो गुडकी डली है ताको
छिन ए कछु छाय के दिखाय के जानीए ॥ छवीलो छैल जो वर है छैल है
तानें छल लोठगे प्रसिद्ध है ॥ गुरकी डली ॥ के छोहन करत है रूप कमि
सा यो किंवा ठग ताकी उक्ति नायकसो ॥ एछवी लेछैल अपने घर
सो तो मवा नायका हेत प्रसन्न हो यह के मोह छोडा यो प्रब मोह तजि के
हमारे नायका के गैल लाग बले वाकी छवि गुरकी डली समान है ता
को छिन कतो क छिन छवाय के छलो ठगे सो तकी उक्ति ये छवि को
उरडरी को है नितानही ॥ मूल ॥ के जाने हुं है कहा वृजउपजी अप्र
तीप्रजा ॥ ममलागने नन लगे बढ़े न म गसगं साभि ॥ २०५ ॥ अह

१४
74

नायक ॥ अथवा नायका कै दृष्टान्त राजत विरह भयौ है सो विरह की आगि
तें मन व्याकुल है सो सखी सखी सौं बैन ॥ सवैया ॥ दीसै न धूम रे बिन ईंधन उन्नत
है प्रगट न सिखा है ॥ नेहि के नैन मैं लागत ही मन मानि लै है सब अंग
मदा है ॥ लोचन नीर रैन बुझै उपजी बृजमै कोउ गैम हा है ॥ दीठ न ही उ
वरै नक हू अब जानै कौ आजे धौ है हा कहा है ॥ हरप्रकास ॥ सखी नाय
का कौ सिखा देति है कौन जानै कहा होय जो जगत मै अग्नि आग उपजी
है आश्चर्य आगि उपजी ॥ नैन लगै सो मन मै लागै है ॥ याते प्रेम के जे
मगर है ताके लगन जीव लागि कै मति बलै या सो दूर य जो लगवे के
दे उ अपनी मिलवो अरि जरवो अ संगति अलंकार नीन अ संगत का
न अरकारन न्यारे ठाम ॥ नैन आगि सो मिलै मन बरै ॥ मूल ॥ तजनम अ
ठान नहू ठ परतो सठ मत आठे जाम ॥ रहै वामं वा वाम को यह काम बे
बैन अभी ॥ कवित्त ॥ लाल मन मानन ठ भारे निठुरे तज्या सो विरह आग
न मै वर तनै हूं नाधै है ॥ वे ही वाम काम वाम देव के भर मभर सिद
तो वाही वाम सों विष मवैर बांधो है ॥ सठ मत र ठ यरि द या उर वर ह री
आठे जाम रह तु सरो सस र साधौ है ॥ कौ जै धौ कहा उपाय छाडु तन
अौर ता ता के हन वे को दउ लो भ्यो रह बांधो है ॥ हरप्रकास ॥ वि
रह मै सखी वचन नायक सो काम जो है वा वाम को वा नायका को वे
ततम अपन ठानन अब ना मन को अपर्व जो वात कहू वे लायक नहीं ता
को नही तज तजत है छाडु तौ अबला को दुख दैन अब जो भयो हू उप
रेता या ही मैं सठ मत है ॥ काव्य लिंग अलंकार सठ मति कहि कै दु
ख समर्थ्यो

औरनायकासौं आसक्त नायक मयो है जबँ नायकाकी सखी
सखीसो कहत है नायका वह जो है वा मुख नायकात्ताको बाम
अवस्था रहत है काम वे काम कामकाज होय तो भी उहार
रै॥ वे काम नही भी कामकाज होय गातौ भी आठो पहर उआ
रु रहत है॥ दोहा॥ लई सौंह सी सुनन की तजि मुरली धुनि आन॥
किये रहत रत रात दिन कानन लागे कान॥१५२ यामै मुरली सु
नी है तब ते कछु और सुनत नाही सो सखी सखी वैन॥ कवित्त॥ मोह
न की मुरली की आलि जब ते मधुरी धुन कान परी है॥ बाल भई
तब ही ते सब ही आज समाज सबै बिसरी है॥ कानन मै कानन
और की ते रहे काम सरीक सकान करी है॥ बात सुहात न आन
कछु सुनबे की मनो मन आन करी है॥ रसप्रकास॥ सखी की
उक्ति नायका सौ है मुरली धुनि सौ प्रान जो के उबात ता के
सुनबे की सौंह लई है मानो कानन मै श्री वृंदावन जहा श्री
कृष्णचंद्र गाय न बराय तगात है ताहि कानन बन सो तेरे
कान लगे है बन की ओर कान दिये है रात दिन मै बंसी धुन
मै रत प्रीत की ये रहत है॥ लई है मानो त्रिया के आगे सी मानो
की अन्याय है अरु होत सदा बसुत्री दा॥ मूल॥ भ्रकुटी
मटकन पीत पट चटक लटकती चाल॥ चल चख चितवन चो
र चित लीयो बिहारी लाल॥१५३॥ ह नायका दो हा है नायक
की सोभा देख मोहत भई है सो आपने चित्त की वृत्त सखी सो
कहत है॥ कवित्त॥ कहूवे की हाई ताके हारी एक बात कालि
न निठ निवान कसो कानु रहत है गयो॥ सामरो सलौनो तन
सुंदर बिसाल सोभा बदन बिलोकत मदन मद है गयो॥

य

चलन की लटकन पीतपट की फहरन ग्रीवा की मटकन चेटक सो
कै गयो ॥ बपलाच बैन बिहसि हसि चितवन चाह अली लै घिरत लाल
चोर चित लै गयो ॥ इहां प्रकास । नायका बैन सखी सों भृकुटी की स
टक पीतपट की चटक चमत्कार लटक तीनी चाल अरु चलन बिबु
चलन ने इन की चित मनि बिहारी लाल ने रतन की बीथिन सों ह
मारो मनचोर लीयो ॥ समुच्चय अलंकार ॥ दोय समुच्चय भाव बहु
करि इक उपजत संग ॥ एक काज जहां करत हैं बहु अनेक रसरंग
बहुत अनेकन को चितचोर लीयो किंवा ॥ एक जो बिहारी लाल
तिन चित चोर्यो सो भृकुटी की मटकनि है जाके अंग हो है बहुत हा
जाति ॥ मूल ॥ दृग उरझत टूटत कुटम जुरत चतुर चित प्रीत ॥ पर
त गांठ दुरजन हिये दई नई यह रीत ॥ टीका पाठ अर्थ प्रसंग तरह ॥ दृष्टि
उरझन नायक अथवा नायका को कोई बैन सखी सों ॥ कवित्त ॥
लागि रहे मन मैं दिब साध दई इह रीति नई कछु घातो ॥ लो
चन प्रीतम की छबि सो उरझै सब हूं छोड़ कुटंब को नातौ
कोउ मिलिके अति चोप सों चार ज्यों उरझे यह कौतुक है चतुरन तौ
वैरन के उर मैं परै गांठि अनौखो तिहारो रस नेह को नातो
इहां प्रकास ॥ दृग उरझत हैं कुटम सो छूटत है ओ उरझत हैं ॥
चतुर जो नायक नायका तिन के चित मैं प्रीत जुरत है अरु बैरी
दुर्जन के हिये गांठ परत है विरोध बढ़ै है यह अब प्रीत की नई रीत
है किंवा विधाता ने नई रीत दीनी है ॥ प्रसंगत अलंकार
जो उरझत है सोई छूटत है जोई छूटत है सोई जुरत जो उरझत
है ताहि मैं गांठ परत है ॥ तीन प्रसंगत का जग प्रत कारन अला
रे कारज ॥ मूल ॥ चलत घेरि घर घर तऊ घरी न घर ठहराय ॥

दोहा

75A

समझ उन्ही घर कों चले समझ सब ही घर जाय ॥ २५७ ॥ यह नाव
का प्रौढा परकीया है जहां चित लाग्यो है तहां जात है सो बीस
बी वैन ॥ सवैया ॥ बाल विधी रस के बस के बस कै मन सकै म
न को समुझावै ॥ ह्यां न घरै घर छोरत ऊघर हे कबरी रस को
नहि भावै ॥ रैन दिना कुल कान फिरै नाक रह कुल का
स बे विन पावै ॥ जानि बसै तो वही घर आवै समझ सपरे
तो वही घर आवै ॥ रसप्रकास ॥ सबी सबी सो पर की या ना
यका की बात कहत है ॥ घर घर मे घेरु चवाव चलै है उह पर पुर
स सो आसक्त है ॥ जो एक घरी घर न हीं ठहरत है सो मरै है
हमारी लोग निंदा करत है तो भी वाही के घर कों चलै है ना
यक सों अनुराग है ॥ ता सो निंदा सहै है तो भी वाही के
घर को जात है अपने घर को चलै है अनुराग सो या वा
त को सहै तब वाही के घर ने र जात है ॥ रस लाउ हनटेरे नि
दन तरे ह रैन का स विपाक ॥ छिन्न छा कै उ छ वै न विरन
रो विबमध्य विदग्धा क ॥ २५८ ॥ रहनै चलगन है नाव का बा
मा या क सबी सो क है ॥ विदग्धा कहा ब रो विबम है
सो विवतासो वर्णन ॥ कवित्त ॥ स्वाधीन कै न धरै नींद

मतनाको

निस कौन परै सहायय तेन उरै मृ बानि करै न बात है ॥ कौ
कवि कृष्ण कोरह ऐक बार छकै छ तो उछ कै नैनै कौन
सा में का परवा कौ है ॥ सी रैलो जै बरै निस दिन ता रकारै पस
कन लागि तिहरै धरै कोर कौन धाकु है ॥ और मतवारे
ते तो मेरे मतवारे इह सब ही नै विकट विबमध्य विदग्धा के है ॥

१६

76

रसप्रकास।। सखीनायकसों विरह कहै है किंवा नायका वेन
मदराकी छाकनतें छवकी छाकनि सों मस्ती सों अतिवि
स है।। अत्युक्ति सों है मदरा की मस्ती वा मन नायका पै रे उर सों टरै है
रस उरसों न टरै है।। यामें नींद नहीं परै है। प्रकास जो
यातिपन सरूप तापि।। जाको विपाक सम्पूर्ण तासों मन याके
मानि हरै है नहीं दूर करै है एक छिन मी याको छाक चढे
पै रुपी है उछ कै नहीं उतरै नहीं मदरा की छाक में यातें
क[illegible] है जात है।। परस्पर दोय पदारथ वाकी अधिकाई पीछे
उतर जात है विषम उर सों छाक बरो अधिकाई सो मी
कोई कहत है।। किंवा जो कोई विषम उसाह है तासों छ वि
छाक बरो है हठ है।। यहां मदरा की छाक उपमान उप
र सों अधिक वर्णन व्यतिरेक अलंकार है।। व्यतिरेक उपमा
न तें उपमेय अधिक को देखा।। मूल।। प्रसंग चउत उतरत
अरा में कनष्टा कहत है।। अईर जानत कों वरप्रपट को
नागर ने है।। टीका नायका प्रौढ नायक की सोभा देखना
मा ते भई सो देखवे को प्राप्त तो भई [illegible]
[illegible] देखवे को चढि ते उतरत है।। सो ता की विवस्था स
[illegible] थी सखी सों कहै।। कवि तू।। का अर को वदन विलो
कके तिकामी वा ला त्यादि नैन देखवे के जतन करत है।।
सरभीच रायबूज प्राय वे की वार जान रसवस हो ति
सा व कोज विसरत है।। संकप्र जन की नि लंक कू नठ
डीर हे छिन इतां छिन उत पाविधाउर तहै। जाट केवट जो तान

वनागरिके नैन ह्व पगी ऊंचे अटा समक चढ उत्तरत है ॥ स्वप्रका
स ॥ सखी वैन नायक सों है नागर प्रवीन तुम्हारे नैन हैं सो अटकी
लगी जो है नायका सों तुमें देखवे कों लिये [illegible] तक के अ
टा पै चढत नाहीं देखत है तब उसक के उत्तरत है नैन का भी दे
ह नहीं पता कत है नट को व्यवसाय ई रहत्त है विसे बोहि स्व
लंकार चढ वो उत्तर वो कारन ताते [illegible] वो कार जान ही
म तो ॥ वत नायका सों रूप वक्ता [illegible] ॥ लोभ लगे हरि रूप के
कलि साहू ऊर जाई ॥ हैं इनने वे बीच ही लोइन वडी वसार
१५८ ॥ पहुने व लगन नायका वैन सखी सों सवै या नंदकि
सोर की मोहनी मूरत देखत ही अधि सो मन आई ॥ तो लग
लोभ जगे हग अभागे ही जाय मिलै मिस सौं विमिसाई ॥ ग्राप
नो हार [illegible] धोस वैं विध हों इन बीच [illegible] वे बीती माई ॥ कैसी
करो नन कछु वन आवत मो मन के मत मे तो ठगाई ॥
स्वप्रकास ॥ नायक को रूप देख के विवस भई नायका की
उक्ति सखी सों हरि के रूप के लोभ सों लगे ऊर वे मिल के
सांई वांटि करी सम इनने वेची है [illegible] सो वचन सारि
को अर्थ मेरे इनकी वेची विक गई या ते नै [illegible] वडी वता
ह है ॥ हम अंगी प्रधान ने [illegible] प्रधान ने हमै वेचीर
हे अर्थ [illegible] सालको रूप के [illegible] ॥ नई लगन कुलकी
स कुच विकल भई [illegible] ॥ [illegible] प्रेम [illegible] रैं [illegible]
की [illegible] ॥ १५९ ॥ [illegible] है लाज का मस [illegible]
परकीया है कहिए नई लगन कुल सकुच या पद ते ॥ कवित्त

लागी नई लगन रस कहत मन मोहन सों उर प्रभु [illegible] नाथन की उम
गभरत है ॥ कुल की सह भार की लरत गई ऐसी री होती । प्रततीति
कल जीत लोक मध धरत है ॥ देखवे को रहत उरत मन ही मन में
मरत उसास पै प्रकासन करत है । वाह कुल कान वी वपिर
की जैत काल वधू रहत उत पैं वी पैंची फिरवो करत है ॥ इहप्रका-
स सषी सों कि वा नायक सों सषी वैन ॥ नई लगन प्रीत है ॥
और कुल को संकोच है याते विकल भई प्रकुलात है उहरी
लगन और संकोच की दोर षें वी षेंची फिरत है ॥ फिर की
की तरह ताको दिन [illegible] त है ॥ इहा लाज [illegible] लालसा वव [illegible] ता
उदवेग संचारी प्रतिपक्ष रागलेष ॥ उपमा अलंकार ॥
मूल ॥ उत तै इत इत तै उत छिन न कहूं ठहराय ॥ जक
न परत चकरी भई फिर आवत फिर जाय ॥ २०० ॥ टी० नायका
मद्धा परकीया है सो याकी विवसता सषी सषी सों कहत है
जो सषी नायक को कहै ताउव नै ॥ सवैया ॥ जवतें ऊपर की
नव नागर सों तव तें न कहूं मन लागत है । ठहराति
नहीं छिन एक कहूं निसवासर जोरव रावत है ॥ कव
हूं इतसों उत धावत है कव हूं उत तें इत आवत है ॥ चकरी ज्यों
म आवत जात वधू पल कौं न कहूं कल पावत है । इहप्रकास
सषी नायक सों विरह निवेदन करत है उहां तें इहां इहां तें उहां
त हमारे आयवे जायवे को मेल रहत है छिन एक कहूं नहीं ठ
हरे है जक वल नहीं परत चकरी चकरई आई है [illegible] आवत
है फेर जात है इहां उपमेय नायका नहीं उपमान ही ता [illegible]

रा

नीजात है।। रूपक तासयो तै।। उपमेय उपमान ते जान सेत
जहं ठौर।। अतिसयो तें रूपक रहै भाषत कवि सिरमौर।। मूल
तजी संक सकुच बीचि तें बोलत वाक कुवाक।। छिन छिन दिन
छाकी रहै छुटत न छिन न छवि छाक।। २०१ या नायका को
छवि को गर्व है सखी सखी बैन।। नायका तें सखी बैन।।
मद हाव जो नायका की छवि को छाक सखी कहै तो तें
छकनहार उ।। सवैया।। कहूं बूच तावात है उतरै तौं मलाई
टकी प्रेमबतते।। और कान करैं न अली है की लाज उ
रो बनी है उरवै।। सब संक तजी सकुचैन ति दै मबअ आवे सखा
कु भावा कहै।। रहै रैन दिना बुब मत्त रु ताछ व छाक छ
की न छिनौ उछकै।। इति प्रकास।। नायका को प्रलाप उन्माद जा
नि सखी नायका सो विरह करत जो है संका को तज चित वैस कुचै नही
सजा नहीं।। वाकु वचन बोलत है दिन में छिन दारात में छाकी
मत्त रहत है छवि को छाक मसाल छिन न मीन ही छुटत है।।
मद को छाक छुटे है सद नाही मत्त रहै है यातें छवि छाक
उपमेय अधिक।। व्यतिरेक अलंकार।। जान परत उपमान तें
जहां अधिक उपमेय।। तहां भाषे व्यतिरेक है कवि पंडित मनरेह।।
मूल।। ठौर ठौर तें ईठ रत [illegible] जे ठौर ठौरैं न।। कोटि हूं आनन आन
सों [illegible] आलागत नैन।। २०२ यह नायक अपने मित्र की आस
त कहत है।। या नायका को मन है कि नायक और सों आस
त है सो नायका को मन दूर करत है।। जो नायका नायक सों
कहै तो उत्तर मो सम वै।। सवैया।। और जे चाहि प सीस उपसी नर
रै उहां कैर उपाय कियें है।। कृष्ण कहै जितराज रहे जो तें न लै

नेता

छिन दा

न

प

ने

ले

७८

78

छे

रु कहूं लखवै हूं ॥ त्यौं ही ढरै इह ढार ढुरे नहीं दूसरी ढारै सपने हूं ॥ प्रा
न कियें कहूं ॥ प्रानन प्रान सों एह गनै कुन सारौं तको हूं ॥ इह प्र
कास ॥ सिंगार दृत्त है सखी नायकासों नायका वैन ॥ जाहि ढार ढरत हैं सो
ई चले या हा चले प्रानी ते ॥ नीर न्यार नी चढ के उहरक हो है दूजे
ढार दूसरी तरह चलै नहीं कोहूं कोई तरह ॥ प्रानन प्रान होय
नेकु प्रानन कु बलाने न नेकु लगत है लागत है नहीं नैंना ला
गत नै नव हैत दोष्टि मैं प्रेम सो पाठ है ॥ तहा बंउ ताकी उक्ति ना
यक होय ॥ सौधी कोवद है प्र द्वै कोहूं कहै तन प्रान नायका के
के प्रानन सो हन नेन न लागनैं न दौं दैवद है नैना ही रोगी त
सोन ही है सब सो प्रासन होत है ॥ छेकानु प्रास ॥ प्राबृ
त वनें प्रनेक की दोइ दोइ जब होइ ॥ है छेकानु प्रास रस
सो मता बिन हू सोय ॥ किंवा सी बदेत सखी नायका सो कहत
है ॥ नैन तेरे जाहि ढार ढरै है प्रोर ढार ढरै नहीं नायका वही
उत्तर देति ॥ जाही ढार ढरे ताहि ढार ढरे प्रोर ढार नहीं ढरे ॥ प्रेसे
कोतहूं इत्यादि उत्तर दै वे मै प्रश्नोत्तर लखाय ॥ प्रश्नोत्तर को रोदरु
द्र प्रथम कहत कवि राय ॥ चित्र भी कहत है ॥ रसला चकी ज
की सी है रही वृजै बोलत नीठ ॥ कहूं डीठ लागी लगी कै का
हू की डीठ १०३ ॥ यह नायका लक्ष ता है सखी नायका सो क
हत है ॥ सवैया ॥ प्राज चकी सी जकी सी कहा कहूं प्रंग संभार
हराई सी हेरी ॥ वृजै हूं नीठ कहै उबटेन लोहे नव लेस मनो चित्र के
री ॥ रोरी लखीय हू तेरी नई गति सो मति सो बस हूं न घेरी
डीठ लगी कि धोकाहू की तो है कि डीठ लगी कि धो काहू सो
तेरी ॥ ररप्रकास ॥ सखी सखी वैन चकी चकारण ही जकी जहा

तहार है जैसी हुई रही है बूझै सौं पूछै नीठ के सरु करि बोलत है कहूं डी
ठ लागी याके डीठ कहू कोई सौं लागी है॥ वै कै वालगी है काहू की
डीठ नजर संदेह अलंकार॥ स्मरण प्रथम संदेह उत्प्रेक्षा ए नाम प्रका
स॥ मूल॥ पीय के ध्यान गहि गहि रही वही है नार॥ आप आप
ही आरसी लखति रिझति रिझवार॥२०४॥ यह नायका की सखी ता
सखी सखी वे ना॥ सवैया॥ नेह लग्यो मनभावन हो उनतो उ
गई है ताजा नई है॥ ध्यान ही ध्यान में आजकल्हु वह भान
सुता मई कहू भई है॥ आरसी मै लखि आरसी सूरत आपु ही
रीझ ने हाल भई है॥ प्रथम प्रेम की जोति जगै उर आनस वै
कछि मु लगई है॥ रूप का संज्ञा है नायका नायक हवे है कि
वा नायक नायका के तदाकार के मान लेय तत्काल सको
त्यागत करत जानी है॥ पिय को ध्यान गहि रहि॥ पिय को ध्यान
बार बार गहि कहि नायक हे पर ही है नार सो है सो आप आप
ही के आरसी में देख के रीझत है। किंवा पीय के ध्यान में सौ ग
ही अपर्ना है कि पिय के ध्यान मैं चितवकै [illegible] ऐसी नारने
आरसी गहि ता में अपर्नी वै ही॥ [illegible] लंका
र॥ तद्गुन तजगुन आपने संग तको गुन लेय॥ मूल॥ [illegible]
[illegible] त्यों ते [illegible] तेरे मैं को धरत न धीर॥ निसदिन डा
ही सी तिरत याही गाडी पीर॥२०५॥ यह नायका के चित मैं लग
न लगी है सो ताको मन कल पावत नहि सो याकी दसा सखी स
खी सो कहै॥ कवित॥ सोभा मन मोहन की परस्पर सालवि
तै बुधि वृजवाल के [illegible] लौं न छिपै कहू। पर सन जल तरसत
हृग दबवे को कहे ऐसी तन लगाय हेरे कहू॥ हारने

यौ

[illegible]

१८

नैंकोच्यौरी भी धीर न हीं धरत
नितसदिन डाढीसी जरीसी फीरत हैं

७१

[illegible]व गर आवै वगरते घर धावै फिरै यो विकल सब सकल नलगे
कहै॥ बाढी मन मध्य पीर नै सकै धरैं न धीर डाढीसी फिरत गाढी
छिन न करै है कहै॥ रस प्रकास॥ सखी सोकिं वानायका सों सखी वै
न रहां जे उहां उहां तेरहां फिरत है गाढी दृढ पीर बाढी है॥ सीवा
स्वकी ढीठ या के आगे है तासों अनुभाव स्पदा वस्तु प्रेक्षा॥ और

करि

वस्तु [illegible] वस्तु की संभावन जहां होइ॥ उत्तानु तास्पदा जहां व
स्तु प्रेक्षा दोइ॥ मूल॥ समरस मरस को चंचल विवसंन ठिकु ठह
राय॥ फिरत फिरत [illegible] रकत पीर उरत पीर फिर [illegible] उरकत आय॥ २०४

२३

परमद्धता है लाज काम समहै सखी सखी वैन॥ कवित्त॥ आनन
मां उवसी पियमूरत नैन नमांर सं को चविसे सखी॥ संक अरु बादु
रा फिर रसांक दरैं वु हरे ठहरात न ही कैं॥ तास उत्ते उरसो गन को उ
त्सालचमों है नेक सबवे कं॥ लाज औ कामनेकु वालदपी चपरी
यों चलाबल हार हीये को॥ रस प्रकास॥ वृजभाषा में सवअ प्रका
रांत सम उकारांत है सखी सखी वैन। समर काम औ सं को वदे
उ समग्र अरु को अर्थ मरु है॥ काम औ सं को बवरनत है॥ जौन
के वस में होइ वै ति वसमई॥ है न ही ठीक ठहरत है॥ एक ठौर
नहीं ठहरत है॥ नायक कौं देखवे को फेर फेर उरकत है॥ ऊपर
उठत है नायका देखै है तब फेर उरत है फिर पत्त है॥ उर उरके
उरकत [illegible] जाती है॥ विवस ताते न ही ठीक ठहर को हइ
कि ये या ते काल्ह लिंग॥ पद की आवृत समर समर असम
अमक सब्द को फिर आवर्ण अर्थ उठो के जानि॥ फिर
फिर रत्ता दमैं लाटानुप्रास॥ वहि अर्थ इन पद परैं भिन्न
भाव कहे होइ॥ सो लाटानुप्रास है कहत सब यानै सोइ॥

काव्यलिंग लाटानुप्रास जमक की संसृष्टि है इहां अलंकार ए
क अलंकार की अपेक्षा नहीं करै है ॥ फिर फिर इत्यादि विसे
आवृत्ति दीपक को भी संदेह होत है ॥ पद अरु अर्थ दुहूंनकी
आवृत्ति जैसे लखि । तो संदेह है ॥ उपकार कहै एक को
जहां संदेह न लखाय ॥ यद्यपि मैं अनवकास तो संकर का
नाम ॥ जहां एक अलंकार एक अलंकार को पुष्ट करै
अरु जहां संदेह होय ए इहां अलंकार के इहां अलंकार है
औ एक पद मैं दै तीन अलंकार होय तो या तरह सो
तीन प्रकार संकर जानीए ॥ आक्षेप का दीपक भी है ॥ रु
उरझ्यो चित चोर सों अरु गुरजन की लाज ॥ चढी रहै हरे
सोहियै किये बनै न गृह काज ॥ २०७ मध्या [illegible] सखी सखी सों बच
नावै पा ॥ नंदकिसोर के रूप लख्यो चित तो उरझ्यो [illegible] रु
रहै न हि मोरै ॥ संकहि तो अरु लोगन की गृह काज करै
अति लाज जानि हारै ॥ जैन मपरैन नसो अरु सात कछून
बस्यात पसीवि व ओरै ॥ वाम ग लोचनी को दिनौ है
ते च दो चित चोर विचार हि डोरे ॥ इहां प्रकास ॥ सखी सखी
बैन ॥ उरझो मनसो चित चोर सों है नायक तासों अरु आ रु
यो अरु बडी गुरजन की लाज है हि यो मन हि डोरा पेंच्यौ
है या तें तासो गृह काज कियो बनै है ॥ किं वा गृह का
ज बनै है नहिं ऐसे सो जानीए उर कहि कहि औं उकीया का ।
मध्या है ॥ लज्जा औत्सुक्य की संधि अरु जन लाजमा सो
यक हो ॥ औत्सुक्य भिन्न कारन तें भिन्न भाव ॥ हे कै
उ के भिन्न तें भाव भिन्न उक्त है ॥ भिन्न सहाय तताद को

८०

४०

उदाहरन रस्यो रूपा ॥ तिया को प्रगट सी वाचक है याते प्रन
सा स्पद वाचुत्प्रेक्षा ॥ लसबी सेवावति नाना विध सैनन
वर जी वाल ॥ ह रैक ह मोहि य मैं वसत बिहारी लाल ॥ २०८
यह दोहा कृष्ण चंद्र को मैन ही ताको सबै पाय वी नायि
का धीरा नायका है काम करि चार है सुन वेकी सज्ञा करि
है लैकर कहत है सोन कि मनरोवरि मते सखीन दीवे
न सवैया ॥ प्यारी महलमें यक ओरु कुमार विराजत जा
को प्रन पमगात है ॥ बैठी ही वाल रकंतर मौन गिरास
नी ज्यो तेसने छुद्धा त है ॥ मान की रीति सिखावे सखी वर
जीति वसैनन मैंन लगावत है ॥ वाताह रैक हि रीस नि सों है
विहारि ससा मैं मोहि ये मैं बसात है ॥ स्वप्रकास ॥ सखी
सखीन वेन क्रीडा मैं कलह उपजै सो प्रनय मान ॥ सखी सो
है सो मान की विध क्रिय सखावत है ॥ तमान नी सी हो य
कै वै ठी सैन सों रु सारा सो वरजात है वाला हरै उयासो क
है मेरे हिय मैं बिहारी लाल बसै है ह रैक सो या बा
त को हिय मैं विहारी लाल वसत है ॥ तासो सामधि की
टीका ॥ लिंग प्रलंकार ॥ दोहा ॥ सावपोद्दी मैं न सी
लसी उरसीनेज प्राति वटपटी रु न मुरली धुनि धार ॥ ह्यौनि
कसी रस लसी सु तो गयो हुलास सुसी लाइ ॥ २०९ यह मुरली
धुनि हो डि हुलसी नि कसी ॥ उ हे वे ध्यो जान कधुनि विवस्था म
ई सो सखी सखी वैन ॥ सवैया ॥ मौन के कौन में वैठी हुती सो
कह हूँ रह काज के साज पगी सी ॥ वाके कानन री तवही मुरली
धुनि प्रान न प्रामब जी री ॥ होलबवे कीउ छाह म री नि करी

ब

हुब
सवकाम

न

80A

वहु कौं उ पर्यो नंद जी सो ॥ नैंन न कों अरु कानन कों मनके
[illegible] तब तें ता लाबेली लगी री ॥ रसप्रकास ॥ नायक सों मिलि लेए
चाहत नायका ताके बैन सखी सों उर मैं अति चिरपरी चाकुरता
लौंप उर लीं धुन सुनके संग लसी रजी भई धारके निहीं सो
जो नायक तिन तें मारे तन में हुलसी लगा के तरवार बरछी
सों बौचा मारयो ॥ ताके नाम हू न यो ॥ हुलसी ॥ हुलसी नेम
क उर लीं धुन सुनके सब कों उद्दम की वह हू लाल गाय
गयो विषम अलंकार ॥ और भले उद्दम की ये होत बुरे फ
ल आइ ॥ हुलस लगाय गयो अन्त हास्य दा व सु प्रेम नि
रधेहु है बाहे संसद ॥ जहाँ रहे अलंकार व हू मिर ये तलसं
सच सल ॥ जेतव है जिदि बादि सी भई अमि रुक अंक ॥ दगे
तिरिछी डीठ अब है विछी कौ डंक ॥ २८० ॥ ह ॥ वीन राग जे सं
जोग में सब दहि तें वियोग में छिदि आ ते साल तसों नायक
अब का नायक सखी सों कहै ॥ तिरहु कौं अब सम न मैं कारन
कहिये ॥ सवैया ॥ रंगर ली मैं यसी विध सों वहुसात नके छ
बढ़े तें हैं जोई ॥ तेई निकुंज मए अति कूल ति लोक हि ये दुख
लसलोई ॥ नेहके आद उरसी लीध तै तनि हू तिरछे अपाक अमी
समसोई ॥ वीस [illegible] पक हू उर सालत वाकी विसे तक न होई
रसप्रकास ॥ सखी सों नायका वैन जेतन हू वीन राग में देखा देखी
होती नहत जो दृष्ट आवती है अपांक मिष्ट सो अब दृनसी भई अब दृतक
ला भई पी ॥ तिरछोहीं डीठ है जो अब व मिल के विछुरे पर दगत है
दगत है उर लघु लघु उर होत है निज रूछा अन्त सार ॥ कहू
लगत तिरिछी डीठ अबे सो पाठ है ॥ विछी डंक का होत उवै

विखे विषमा

क

दसा

का

डीठ अमृत औ विष दीठि के उक्ति तें जु नाक्ते आश्रय॥ पर्याय
अलंकार॥ द्वै पर्याय अनेक मैं क्रम तें आश्रय होइ कहि
अति रिस दीठि वीठि उक्ति होय दर्सात है परनाम यौं॥ लक्षन अ
य श्रेम वर्ननन॥ लालति हारे रूप की कहो रीत यह कौन
जासौं लागत पलक हग लागे त पलक पलै न॥
१११ यह नायका की अवस्था सखी नायक सौं कहत है
कि जा नैनन में रूप बसे है तिनके वा हे लाक हू नहि
लागत नायका हू नायक सौं कहै है तासैं अवे॥ स
वैया॥ बार कहै बैन रुध्यौ न रहै दिन साध लगै कोल
कान्ह आगे॥ मोहन नीरी तक है मन मोहन ना रावरे
प हिये उमगै॥ कौन ठगोरी लै रूप तिन को हूर मैन व
सीपं व वगे॥ जा की कहूं पलक सब के लगैं पल ता की क
हू पलकै न लगै॥ तिरअक्षरा सखी की उक्ति नायक
सौं नायका को विरह कहत है॥ हे लाल तिहारे रूप
की कौन रीत है॥ तुमसौं जाके अंक पलक भी नैनन
सौं लगत है तुम ताको एक पल भी रखत हो ताको ए
क पलक भी नैन रात मैं नहीं लगै नींद न ही आवै॥
पलक लगत पलक न लगत विरोधाभास अलंकार है
माहे जहाँ विरोध सो वहै विरोधाभास॥ लक्षन अपनी
गरज न वा दिवतक हा गि हा रै ताहि॥ तू प्यारे मो जी
व को मो जी प्यारो मारि॥ ११२ अप्रौढ़ा है सो नायक सौं
अपने जीय की विवस्था कहत है कि तेरे बिना देह मैं
रे जीव न रहत तन ही या तें जी उ अपने रा खि वे को तो सौं
वो लत है॥

वे

व

कवित्त॥ अपने प्रानमें प्यारे सो तजात भांत राखवो सवनचा
हियत है॥ ऐसी कछू वानि प्रानपति मेरे प्रानन कू जो लोकमें
देषो तौ सो चैन ना लहियत है॥ करत उपावमें तो जिन हि केरा
खवे को कृष्ण प्राणप्यारे कित न्यारे रहियत है॥ ताते लाल
बोलियत अपनी ते गरज न ताको कहु तुम सोतो हेरोक
रियत है॥ रसप्रकास॥ रोष भाव सौ तमयो॥ औरस कछु यावोद
यमटेक लाजर जाकी उक्ति॥ नायक सो॥ अपनी गरज सो अ
पनी चाह सो बोलियत है॥ तुमे नाता तो कछु नाहि है राम॥
तुम हमारे जीव के प्यारे है॥ हमारो जीव मोहि प्यारो है॥
बोलवेको समर्थ्य नाहि जो हमारो जीव हमारो प्यारो है॥ यासो
काव्यलिंग अलंकार॥ काव्यलिंग जब उक्ति सो अर्थस
मरथन होई॥ औ लाटानुप्रास है वहि अर्थ पद फेरिफे
रे भिन्न भावक छु होय॥ सो लाटानुप्रास है, कहत सयाने
लोग॥ आवृत्त दीपक॥ मूल अंश वसोकी तीसवन निसा मन
सो षेल रकसाप्प॥ मूल का मेल जेहि उद्दिन सापन दे
देहा ष्प॥ २२३॥ यह पर स्वाविक कवि की उक्ति॥ रस कभेद में
परकीया को हास्य समर्स को उजवा न्या बोलते वे
स हिवी ती॥ सखी सखी दोन॥ सवैया॥ रैन वतीत भई लग
हि अतिचाय चढे चित दैन अरु है॥ दोउनके मन मोद ढ
है अभिलाषन के दृढ बंधन छूटे॥ सो ते मनो मिल केर
सा पलहि दौवहु भांति हिये कछु खूटे॥ मूल का में मेलग
हे एक बार हि हा पते साष छिन्नो नही छूटे॥ रसप्रका
स॥ सपनकी सखी वचन नायक सखी सो कहत है॥ किंवास

कि प

बीनै देषी ताको वचन॥ वा नायका की उक्ति॥ पूर्वाध श्रैब सरका
भीति की छिद्र ता मैं सौ पग मैं सखी गैर कहा पग है तो कछि न
मीन हि छेद के कं वा छिद्र न ना मह है बंको ता को न है छिद्र हु सा
पगित सो व भृग्यो॥ उक्त तोसव दाबसु छै ता॥ सबैया॥ द्वे
बोक ठौर सिटो सांकर लगी कपाट॥ कितहूं आवत न आ
जाति भजि वे जो नेक रह्यो वाट॥१२८॥ यह सावनदर सन ना
यका सखी सो कहत है॥ सवैया॥ रैवे कनी देवरै जब हितव
हि छिगनश्रानि रिवे बखीकै॥ हेरर सैरस को बरसै व ततराती
महा हि तल्तो पगि कै॥ पिर जागे तो ही उवरैनव हूं रहस्यो
हि कपाट रहे लगि कै॥ द्रह जाने को आवत है कि तहूं है पुन
जाति कि तै कवहूं भगि कै॥ १२९॥ प्रकास॥ परकीया नायका की
उक्ति॥ दि तर्क मोह स्वप्न चपल तासंचारी भेद दिये॥ जो सीमै
लगा रहि तै सीटो सांकर अरु कपाट लगी है कौन जाने कहा
है आवत है को न वाट है भाजन जाति कपाट आव वे जावे
को प्रतिबंधक है॥ तो भी आवन जानै भये विभाव नातीस
री प्रतिबंधक के है तो ताही कारन पूरन भावनि॥ सजे कि वार तउ
रहि आवन जानि विभानि॥ सला॥ उठी उठी लख सखा ल की अं
गन औंगन माहि॥ वारी सो दारी फिरै हेरु तनि वी तीछि ह
१२५॥ यह नायका परकीया पोढा है सो नायक की गवी
ढोहि छवि ते नायक कि लेहि के सुख मानत है॥ सो सहीस
खी देनै॥ सवैया॥ नंदलला नव नागरी सो मिजरूप दिवा
पठगो री सी नाई॥ वा हर जाति व नैनन तेन वि लोक वे को
अति ही अकुलाई॥ प्यारे की अंग गृहे ते उठी लगि मोद भरी नि

अंगुरा नाई

82A

होती गुडी की जितै जित छांह तितै तित तिहि वे को डोलत धाई॥
रसप्रकास॥ अति प्रेम सो गुडी की छांह या हुलेसो अपने मिलन
मानत है प्रेम सो अपै सो भी सब वंधमालत है॥ आम है नसुन
है सखी सखि उ ज्यो॥ आकास॥ मो मै नायक पीय के मिलनै ना
यप्रकास॥ सखी सो सखी लाल की गुडी च गुडी देखि अंगना
नायक अंग लमै बावरी सी दौरी फिरत॥ छबीली जो नाय
का है सो छांह छुवत चपलाई संचारी उन्माद दसा अंगनायक
गना मक॥ नायक उपमेय बावरी उपमान सी [illegible] वैक॥ दो
र को [illegible] धर्म॥ उपमान उपमेय जहां वाचक धर्म उच्चा
र॥ पूर्ण उपमा हीन जहां लुप्तोपमा विचार॥ लक्षण॥ उनको हित
उनही बनै कोउ [illegible] करै अनेक॥ फिरत काक गोलक ज्यौ
दोय है देह ज्यो एक॥ उदा॥ दोउ नके हित की अधिकाई
सखी सखी हो कहत है॥ सवैया॥ आजु लो पै हो न दै ओक
हूं उनही तै जिमै उनके हित कौ पन॥ और अनेक उपाय वि
धै पर [illegible] न पै से सने हल बेमन॥ कोऊ न जानत दोउ है तिक
ही श्रीवृष[illegible] उ सुता मन मोहन॥ वायस गोलक ज्यो सजनी
फिरवोई करै इक जीव दुदेह [illegible] तन॥ रसप्रकास॥ सखी सखी उ जि॥ ना
यका नायक हित की प्रसंसा॥ उनको दूसरी ही को हित दूसरे सो हित
बनै कोउ और अनेक जतन करै तो भी न है तिन मै॥ उनके देह
एक ज्यो ज्यो प्राण सो काक गोलक गोलक को वाको नैन गो
लक मै तो फिरै है जैसे इनके प्राण दिहुन और फिरै है जैसे एक जी
वत एक पिंड दृष्टांत॥ लक्षण॥ करन आति जे तीक [illegible] वरि रस
सरता होत॥ आलंबन उर प्रेम तर जो जो जितै दृढ होत रा

रहस्य सो है, सो रंग मैं रहै, ता नायक की अथवा नायका की मान
क केलि मैं सब बीसरो सखी को बैन नायका सो सखी बैन दंपति प्रति
संभवै ॥ कवित्त ॥ प्रात जात उठ मैं जमाये मन तो मैं नेह वीजनता
ते अवलो प्राली प्रेम प्रेम कर उदेत है ॥ रहत सत्त सखी को जाहि
तेउ मगउर फूल लघ लप्र गटै नित रहत पोत पोत है ॥ कहै कवि वृ
स्मि जेतो जेतो उमग प्रवल परे करत का मिर सम सार ता को सोत है ट
ने कन छिगत वाकी जोति जोत मगति मरसाल रत बरोई दुहे सो
तै ॥ रस प्रकास ॥ नायक किं वा नायका कोउ है रस जलरस
सिंगार ताकी सरिता नदी सोत ताके प्रवाह सो वउ के जितन क
रनि कराव तट को अर्थ लजा के करत जात है अलवाल कि
सोहै तारी उर हृदय ता मैं प्रेम तरु प्रेम वृक्ष तिन मैं तिन मौरे दुहत है ॥
रुपक अलंकार ॥ रस लूट नन वेवत द्विन नकवसी नेह नगर
वाह चाल ॥ मारे फिर फिर मारे तेऊ नी तिरै बुसतल ॥ र र ट य
ह लगन को वर्नन जावे लगन है ताके उ बहै ॥ जाकी लगन है
ताकी कछु मन है मैन है आवत सो नायक अथवा नायक
सखी सो कहत है कवित ॥ ढिं वसै ढूरी थेन विन वसै चटपटी न
मोह नगरी मैं रहत अट पटी रीत है ॥ लोजन लूटाय मन रतन
जतन न लाई अतन महीप तहा अधक अनीत है ॥ मारे ई को
मारी वत बूनी अटोवू मी तिरै जीत हीकी हार अरु हारे ही
की जीत है, सरव सुदे जे तउपर पसपरोस न गाह का कछु लोक प
रलोक की नभीत है ॥ रस प्रकास ॥ नायका की कि नायक
की उक्ति आस संचारी ॥ नेह प्रीत सो नगर तहां ते कहि न भीव
सि के ॥ लूटने नहि पाइयत है ॥ थोरहा की पहचान होत है ॥

83A

जै

॥ प्रा॰ ॥ प्रासङ्गिक [illegible] तत्तासों मारयो है ताही कों फिर फिर मारीत है बू
झी जो है मारन वारो मारन कु सो बुस्तान [illegible] जीति रहै है नेहन गारह ता
पकु ॥ प्रतिग्रसंगत अलंकार ॥ तोन प्रसंगत को लक्षण कारनन्ता
रे ठाम ॥ और ठौर हति जो है और ठौर को काम ॥ कनी मारबे जोग
है मारे को मारयो है ॥ मूल ॥ बिरद वने हनयो नैं [illegible] भयो जग रवि
त भयमीत ॥ यह अवलो न कहू सुनी मार मारी ये मीत ॥ २२८
उ हासा मान बिरह सखी को बैन नायका सो ता नायक के वदनकी सखी
है जो परकीया कहै तो कहति है ॥ सवैया ॥ ऐसो अधीन भयो म
न मोहन तो बिन मैं कुलअंग सम्हार है ॥ तादि इ तोन रसा बनना
वसी को न करै मिलको न बहार है ॥ तेरो नयो निरदै हि है रि
उ सौ जग मैं सु[illegible]शी भय भार है ॥ आज लै ऐसी सुनी न क
हू गति आपु मरै ॥ परमित्र को मार है ॥ हरप्रकाश ॥ नायक मनाय
वे को आयो है न हासा मान नी सो सखी बैन ॥ हे निरदई नायक
कौ नयो नेह कौ और निरख देख या नायक की दशा देखिके म
गत संसार भय सो भीत भयो [illegible] है ॥ किंवा सारी राति जगत जाग
त रहत है तरे भय सो भीत भयो है यह बात अवलो अवताई क
हू नहि सुनी मार मारी ये मीत ॥ आपु मरि के दुखी ह्वै या के मी
त कौ मारिये दुखी करिये ॥ मरयो मारि ये मीत यह भी पाठ है ॥
किंवा मानी नायका सो सखी बैन ॥ नेह मैं प्रीतम मै हू नयो नि
रदै है तो ह निरखके जगत भय भीत भयो उतराई वैसे ही ॥ आ
पु मरि के मीत को मारिए यासो निरदय ता को समर्थन की
यो ॥ काव्यलिंग ॥ मूल ॥ कौ वसी ये कौन वसी बैंनी तन नो ह

प्रस्तार ॥

लगालगी लोयन करै नाहक मन वध जाय २२० यह लगन है नेनन मै लागे मन वधतु है॥ २२०॥ प्रथम अनीत है॥ सो नायका नायक सखी सो कहत है॥ कवित॥ नायक प्रवे उतरत मा जोर नछू टीपत वारिपत ज्यो ज्यो उपचार की जियत है॥ प्रव लेक जा कनये मगन चलन वेवे चेत विन ही जैतरू हितमी जिवत है॥ ऐसे प्रेम पर के सवसी ऐन वहि ये कोहि मीठै॥ अनीत दिन दिन नैन छी जियत है॥ लग न करतधाय नेन मैन मत कारे नाहक विचार मन का चालि जियत है॥ रस प्रकास॥ परकीया की किं वा नायक की उक्ति कोउ करि के वसी ये कोउ करि के निवाहि ये नेह जो सायु रहै तातानीत न है॥ लोयन लगालगी करत है॥ नाहक वेत कसीर मन बाध जात है॥ नायक की उक्ति मे नेह पर नाही नाहि जो है॥ निवेध सुरत रंभ सो नीत है॥ लोयन लागे सो नहि वधै मन वंधि जात है॥ असंगत॥ और ठौर हि की जीत प्रौर ठौर को काम॥ रस॥ दे लग्यो छिग रहि पति तउ नेह निरवाह॥ छीलीय विपन ते उते गई वनवि तन चाह॥ २२१॥ परकीया की सखी नायक सो कहै॥ लवे मै जब ते निरखी तव ते उरमे नवे लायकु मदि गई है॥ मास अति दे लगो तरसत मनो की पार गई है॥ नीची ये भारी न्हारू प्रोर कि मो की दीनो नाने हार गई है॥ रस प्रकास सखी सो नायक वेन॥ दे॥ सो लग्यो यात रहु सो छिग न गीव गो पत नायक है॥

सी

ताऊ तौ भी नेह को निरवाह न वारि गई है ॥ अथ आलंबन सो यातें ह
मारी । और कुनवियनकु नविवनने नेकौ न सोदेषनो सोक
न बीचार्यहै के नेह निवाह । लोक लाज गेह को प्रतिबंधक विभा
वन ॥ प्रतिबंधक के हेत हैं कारज परी मानि ॥ अस्याउ
दिपरस्ति [illegible] नई उगत [illegible] जोई ॥ । आलंबन । आलंबस्या
रै है देह र वरी हरि ॥ २२२ ॥ यह नायका के नेत्र नायक कौ देष
सजे है । अरु देह बरी होति है सु नायका वा नायक सखी
सोक करत है ॥ सखी सखी सोक है तउ संभवे । अद्भुत रूहे
सवैया ॥ देषत देषत ही न सहै कुल देमन मेरउठे । आतिभास
देवति ना न सुहाय कछू उन हाय करें । प्रति होय बहु भारी ॥ वा
कुल है । अकुलाय मही उरझाय परे हैं मिस नींद विसारी ॥ नै
न लगे तन देह वरो है । अब तौ बीस नेक की रीत निहारी ॥ २२४
का स ॥ ए कीन राग मे नायक की किंवा नायका की उक्ति ॥ सिव
मे रहै । आश्रय [illegible] छाइ रहत है ॥ जगत मे नई उक्ति लछना
सो तार जानीए ॥ जो वर्जना को । अवर्ण संभवे न ही ॥ ज
गत मे नायक के देष के हि तिनकी । आलंबन सो । आवि साने देह
जो है सो बरी । प्रति रूवरी होत है । आलंबस में है । आस न होत
त है सो नही । देह रूबरसी होत है । अ संगत । अलंकार
मूल ॥ प्रेम अडोल दुलै नही उस वोलै । अन आई ॥ चित्त
न की मूरति बसी चितमन मांस लखाय ॥ २२५ ॥ यह नाय
का सनेह लक्षता है सखी को बैन ह्वात रातसों ॥ सवैया
ओ लै तू कौन दिहै । अन वाप के होत कहू । अधसाधे ह
साई ॥ तेरे हू ते फिर प्रेम की कानि सु जात परी री दुरै न दुराई

८५

85

सूरत के हिय मांझ रही बुधि तेरी नाम रटै सुखदाई॥ प्यारे की
मूरति जो चित मांझ बसी सुचि तो न मिटै दिन राति दुहाई॥ सा प्रकास॥
कोउ राग नायक मैं देख के सखी नायका सो कहति है॥ प्रेम
तेरो नायक मैं प्रकास है॥ अब लाल है दोउ एक से सो छोड़ै नहीं॥
हू ताप छूटै नहीं॥ दोउ बार बाँधी बात प्रगट होत है॥
इस रीति है मन रस तैं न ही॥ प्रीति दृढ़ता दिखाई होत है॥ सुख सो
अन बाब कै रिसाय के बोलत है॥ सुबस सुनि रेह धनिय
ई मनमोहन राजी है॥ तेरे चित में इस नायक की मूरति बसी है
सो छोड़ै नहीं है दृढ़ के बसी है॥ और वैसे ही॥ चित्त चित्त सो
जमनू किंवा पाति को आतो रखि कै बंद ता को वैन सखी नो
वा नायका को प्रेम रस न विषै प्रकट है॥ अचल है पाति चोड़ो
लेकर ॥ और ठौर जात नहीं है मारे सो सुख सो अपन नायक
बोले है॥ मन सो वा सो प्यार नहीं और वैसे ही॥ सा
बढ़ई बल कर पावे करैन कुमत कुठार॥ आल बाल उर
सालती बटी प्रेम तरु डार॥ २२६॥ यह नेह की दृढ़ता पया
नायक तप्या नायका को कहै है॥ कवित्त॥ देखत ही मूरत मन
ता है॥ ताहि दूर कर वे को चित में घन न घन कुमत कु
ठार गहि कौन उखदात है॥ कहै वा वि तृष्णा मंद है प्या कर प्र
ति बल करि मैं वन घट तैं तो तो दृढ़ होत जात है॥ सा प्र
कास॥ सखी सखी बैन॥ यह दृढ़ सोई भई बढ़ई बाती
कुमति जो कुबुद्धि सोई कुठार ता सो बल करि कै पावे
तो भी कहै नहीं॥ ऐसो जो प्रेम रस की वृद्धि ताकी डार है सो आ

धामरै उर तामे साल सी है पै लीहै बरी आलरी होत है यहा काट
न वारे सालरो करै न ही है तौभी वसहै विसे बोत्ति ग्रसंस्कार॥
कारन ते जस का जन ही भयो अरु रुपक भी है है रुपक
द्वै भातको मिलत पूर्व अभेद॥ यहा से करे है॥ इसो वसबढ
ई आदि रुपक है॥ मूल॥ चितत रसत मिलत नवनत वसि परोसके
वास॥ छाती फाटि जाति सुन टाटी ओट उसास॥ २२५॥ यह परकीया
अनुरागनायक को अपना नायका को वैन सखी सो॥ सवैया॥
नैन मिले जब ते तबते अतिव्याकुल देउ है दिन राती॥ पासवरो
सवैनै सतऊ अरु लोगन के मन सो बिसकाती॥ ज्योतर सो मिलते
नवनै अभिलाषन की अवली सरसाती॥ टाटी की ओट उसा
स सुने फटि कर जात है छाती॥ इह प्रकास॥ परकीया
नायका की उक्ति॥ किंवा दूती सो नायक वैन॥ परोसके बासव
रमे वसि के तौभी चितचर सत मिलतन है बनत टाटी की ओट
सो विरह मे स्वास सेत हे सो सुनके छाती फाटि जाती है ओ
र कछु विषाद संचारी पूर्वानुराग है परोस को वास मिलवे
को कारन मिलनो कार्ज नहीं होत है॥ विसे बोत्ति ग्रसंस्कार
मूल॥ जालरंध्र मग अगन को कछु उजास सो पाइ॥ पीठ दी
ठे जगमगे रहे डीठ झरोखा लाइ॥ २२६ सखी सखी वैन॥ सवैया
बालकी देह की दीपत झूरि रूपूरि अराछ विछाय रह्यो है सो सू
लमयो प्रतिलोक लाट उगमूर सी साय विकाय रह्यो है॥ जो
लपटी चीनते कहि कै व छि जोतिनको सम दाय रह्यो है॥ पीठ दी
ठे सगरे जगमगो इह डीठ झरोखा लगाइ रह्यो है॥ इह प्रकास
दूती उक्ति नायक सो झरोखा मे जो है जाल ताको जो रंध्र है

नोहै सगसंपत्तामै नायक नै ग्रंथनमै कह्यो उजास सौ चंद्रमा
को उजास सदृस पाय देषि जगत्यो जगत की ग्रैरपीठ दियैरहत
है सबसौ विरुमारहत है॥ झरोषनमे डीठ लगायकै किंवा जा
लरंध्र मग देखै पती उह्मारे ग्रंथगणको कह्यो उजास जानीए उ
जास सो यहां सो नायक उजास पाइयै सोभी जानीए जगत
ते डीठ करोरी कि कै झरोषनमे राषी॥ परसंख्या॥ परसंख्या उक
पल्लवरजदूजे पलस्ठहराय॥ मूल॥ जद्यपसुंदरसुघरपुनि
सगुनोदीपकदेह॥ तउप्रकास करै जितौ भरियै चित्त सनेह॥
२२७॥ यह सनेह बढायवे को सषी नायका सो कहै है नायक सो क
है॥ सवैया॥ जद्यप वा हग है चिकनाइ उघार दुरयो उघरो कि
ऊ॥ है यह बात प्रसिद्ध सबै जग एक ही रीति निबाहत दोऊ॥ नो
हमारे तिन दीपक देह प्रकास करै न कितौ करै कोऊ॥ स्वरू
कासा सषी नायक तिषै प्रेमराग बढावति है॥ अस्प
रूपक करत है॥ जद्यप जौभी सुंदरी है॥ सुघर सुघाट सुंदर
रहत है॥ किंवा सुघट सुंदर प्रंतर करन है॥ गुन सगुन है॥
दकसोई देह है॥ तौभी तित नो उ प्रकास करै॥ तित नो प्रकाश
संक करै है॥ उपकारक है एक को जा सो देह लषाई॥ ऐकप
दुमैं श्लेष मनवहत तैसे संकर इह भाव॥ मूल॥ उचितै चित सल
तिनवलति सतितन कुरुति विचार॥ लिषत चित्र पिय लषि चितै
रहीचित्रसीनार॥ २२८ सबसि सषी वैन॥ यह दोहा कृष्णचंद्र का

मैं नाह

तनजनछूटै छूटैहू प्रान॥ कामनआवततयेकहू
तेरैसोकसपान॥ २२९

86A

कै

तासैवेयाप्रवीनो॥ हि॰॥ सवैया॥ हरवैठेप्रकंतर अंतरमौन लियेसवर
गउमंगभिते॥ तवदीखनावनकोकियोउठमज्योजवही गईवालजिते
उतितेचितनैकहासीनवसीनहसीनउकैनरविचारहीये॥ ति
यचितनही पियकोलिखतेसखिकैरही चित्रसीनारिचिते॥ हरप्रका
स॥ सखीसबीवैन॥ नायक चित्रलिखवेकोआरंभकियोमनमैसं
देह चित्तदचितौहै संदेहसहतहै॥ हमारोचित्रलिखैहै हमारीसप
नीकोचित्रलिखैहै यातेवसैहलैनही हसैभीनही हमारोचित्र
लिखैहै जेतोहहैगीनही यातेउकतहै॥ नहीविचारकरीहै पियको
चित्रलिखतलिखवेकोजानकेग्रोचितेके उकतवदउबूनहीकरैहैस
र्थको॥ चित्रसीनाररही स्थंभसात्वक वितर्कसंचारीचित्रजैसे
रहोहोतैसेरही॥ अन्तरास्पदावस्तुवेदानिवाउपमा॥ हस
सल॥ नैनकगेनिहल॥ नायकाकोसखीसोवचन यहनायकापर
कीयाप्रौढासोसखीसिखादेतहैतासेअप्रौढताकहतहै॥ सवैया॥
नैननअंगेसोगहोहितकोपनचैनलहै जवलोहरहरै॥ प्रानछू
टैहूनवानछूटैजगकोनहसैउपहासघनेरै॥ कोतुलकाम
कैहैवकुरीगईलाजलजायनआवतनैरे॥ तेरेमहूअवसोकह
यानपरैकहूकामनआवतनैरे॥ हरप्रकास॥ सखीसिखादेतीहै
तहापरकीयाकीउक्तिसखहोनेनलगेहै नायकसोतिहल
गनसोताहिरप्रानिरववनीयलगनअन्तरागसोलगेहै॥ जौप्रान
छूटैतौभीनहीछूटै॥ हेसखीतेरेजनेसोकरापकरापसयानवनेराई
तामैएकभीहमरेकामनहीआवतहै॥ प्रीतनहीछूटै घतसैचास

प्रानछूटैं नहि छूटैं प्रति उत्ति ॥ प्रति उत्ति अलंकार ॥ अलंकार प्रति
उत्ति ॥ यह वरनन प्रति सपरत ॥ मूल ॥ साजे मोहन मोह को मोही
करत कुचैन ॥ कहा करौ उलटे परे टौने लोने नैन ॥ २३० यह ना
यका प्रौढ़ा परकीया नायक को देखबे के नैन याके अकुलात है सो
सखी सौ कहत है ॥ सवैया ॥ बूझत हो सत भाइ सखी इह सी बइनै सि
खई कहु कौने ॥ मैं सजे मोहन मोहिबे को बहु अंग जे मनसुजव ना
यत लौने ॥ देखत ही लला बावरे है अबला अपने सपने हू नानै
मोहिबो को दैन लगे उ बनै न ए त्यौ उलटे परि जात हैं टौने ॥ सुप्रकास
नायक वैन सखी सौ ॥ मैदन बाद सो साजि कै कजल देइ कै ॥
मोहन जो हैं बृजमोहन ताके मोहिबे को साजे नायक को देखि
ना मोहिबि कुचैन उ स को करत है कै वा मोहि को मेरे हीय को कु
चैन करै है ॥ कहा करौ उलटे परे टौने हो जादू से लौने सुदर नैन
जादू जो पैले वारन लगे तो अवने उपर परे ॥ विषम अलंकार ॥
औरे भाइ से उद्यम किये होत बुरो फल आइ ॥ टौने नैन को लद
रू ॥ मूल ॥ आलि इन लोयन सर ए के सरे विषम संचार ॥ लगे
लगाए एक से दुहु अन करत सुमार ॥ २३१ ॥ यह अपने नैनन की
अवस्था सखी सो कहत है ॥ अपना नायक कौ ॥ कवित्त ॥ सह
लागे जाके ताहि रुधिन रहत कछू जो है नातौ ताके उर रंच कविपा
ने है ॥ तिन मै अधिक कुसमायुध के पांचो बान जिनके लगे
ते रहे मनन के ध्यान है ॥ कहा प्रान प्यारे की उ हाई जिय जा
नी आली सब हौ ते निषम विसेष नैन नान है ॥ उहन बिक

87A

लकौ लगे नजतन अन्नु रमात साग औसें पैरू हार्मन
है॥ रस प्रकास॥ अथ लीला जो लोचन नैन सर है ताको प्रति
ष है विषमरु सरू संचार गातिहै॥ कोकहूके नैन अाप को ला
गै अपने नैन औरकों लगावे॥ एकसे समान हैं॥ उनके
कुमार करतिहैं॥ बसो विषम का ठनोत हा अबे सो जानीये॥
बरौ तीव्रणको भी कही ये हैं॥ इन लोचन सरनको बरौ ती
व्र ताजानी ये अपने तीरको और को कुमार करै है॥ आपसम
र होय पर रू विषमता वानन की समता नहीं सो चनसर सौर
वक अलंकार॥ मत्ता॥ चबर विचूरन ठार के ठग लगावानि
जहां प्यार घोरा बरू ठगै यो रुपाहू पी मनहाय॥ २२॥ व
रूहरू पकी सोभा देखमन पकयो हाथ नहीं रह्यो सो नाव
क अपने मनकी गति सही सो कहे नायका सो कहै॥ सवैया
बिंदुलसैं मह दीके रंग उहै अरु नाईके रंग रचै कै॥ रेख वसी
करि मंत्र दिखाय कै सापला गावली ये अपने कै॥ बार नब
उ ती चूरन ठार अधीनकी यो वह भाति कैरै के॥ राबै सू पैनर हो
मनहाथ रूपहू पी हाथ कैसले वें॥ रस प्रकास॥ परकीया
वै नायकहीं सो॥ कारू परकोई है नाकरे है तवचू रिके बिमति
रत्यादि संत्रकार ठारे है॥ ठग जो है नायका अपने सपिमैला
पावे रूठिके रुपताह पी रूवमै हाथ ठेवी का तोहै मन
रू मरि लोग दोग अरु उहाई राखिर रहो है रूमारे रहा मनको नहीं
आरवे दे है है ठगे सो अकारंत पाठ है उतो मारो जो रूठ सो
मनको राखिर रह्यो तो भी च बारु चचूरन उत्यादि वेसे ही जानीये चबरू

चचूरणतवक

जौ लौं लखें नकुलसकपट्ट ढिग तौ लौं ठहराय ॥ देखें आवत दूं
षिवौ कौ तहूं रह्यौ न जाय ॥ ३३ ॥ यह नायका प्रौढा अपनी
दृढता सखी सौं कहति है ॥ अरु नायक कौ सरूप जैसौ सुंदर है ॥
सु देखें तें कोतहूं रह्यौ न जात ॥ नायका कौ वैन सखी सौं कवित्त
जौ लौं नहीं उनें परै मनमोहन है ॥ नव दोस खी तौ लौं सयान है ॥
सीक जु डारि पतिव्रत कौ करि लै कुलकानि कपाट के बखानहि ॥ लो
चन वैयाई न रोकि रहे जब देखत वा उरमूरत कौ लहि ॥ देखे बिना
नर हौ परै वैसें हू मेरो कह्यौ कि नसांख कै मानहु ॥ इस प्रकास
सखी सीख देत है तासौं नायका वचन जौ लौं जव जाइ लखौ न ना
यक कौं देखौ नहीं कुलसकपटा कुलधर्म की बात तब ताई भीत निश्च
ल ठहरात है नायक कौं देखें देखें जौ इ आवत है सु रह्यो तहैं कोइ तरह का भीनहीं
जात हीजात है सखी नायक सौं प्रीत छुडावति है ॥ याते विरोधी तासौं
कारज सधै ॥ व्याघात अलंकार ॥ दोहा ॥ तजै कहूं और तें कीजै का
रज और ॥ बहुर विरोधी ते जबै कारज त्याघात ठौर ॥ म. स ॥ वन
तन कौं निकसत लसत हसत हसत इत आइ ॥ दृग खंजन गह
लै गयो चितमनि चै उरझाय ॥ ३४ ॥ यह नायका प्रौढा है ॥ जाकी
वि सौ कृष्ण देखे है ॥ तैसेही अपने नैननि की लगन सखी सौं कह
ति है ॥ सवैया ॥ आजु कछो वन कै इत है बनि बानक सौं ज स
धा कौं कन्हाई ॥ मोर किरीट लसे मुरली लकुटी अरु पीत पटी छ
वि छाइ ॥ मो ढिग आय अचौर सभाय हरै मुसकाइ मु स्येत हु बद
ई ॥ वौ पकी मा [illegible] नि चै [illegible] गयो नैन मैं मोलन माइ
रस प्रकास ॥ परकीया कौ उत्तम सखी सौं वन तनन कौं वन की और

वनकी ओर अनेक सतन के लसत तवे सोभत हैं सतन है सत इत ओर इवे॥
हमारे जे दृग से तै हैं वजन तिनको गहू लेगये अबनै आसक्त है बि
ये श्री कृष्ण की चितमनि जो हैं तेषु लालमात ताको लगावबे रूप
को अलंकार॥ उपमान है उपमेय मैं ये द परे न लखाय॥ तासो लघ
कहत है जो कवि है सुखदाय॥ मूल॥ चितवित वचत न हरत
हठि लालन दृग वर जोर॥ सावधान के बटपरा ए जागत के चोर॥ २२४
यह नायका नायक के नैनन पै आसक्त है सु नायक के नैन याके म
न को जोरावरी हरलेत सो नायका सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ रा
खत सल्ल के मिलमद नम हीपतको हत तन सरकि जाति कानन
की ओर है॥ चपर हरित वृजवासन के मन धन मारत मरोर भरे जो
वन मरोर है। जागत हमु से सावधान को विवस करे चपल चि
तौन सर वेधत सजोर है॥ सोसा कृष्ण आली वृज साउसे केसो
लहू गह ठग है के जाके है ठुके तहै क चोर है॥ हरप्रकास॥ परकीया की
उक्ति सखी सों चितौन जो है चितहू व्य सो नहीं बचत है हठ के हरे
है लालन के दृग नेत्र सो बरजोर अप्रे जोरावर है सावधान के
बटपरा है जगत के चोर है। लालन सं बोधन है के हैं तो नाय
का नायक सों कहत है॥ व्यतिरेका अलंकार है॥ व्यतिरेक
उपमान ते उपमेय अधिक देख॥ विभावनाभी भासै है॥ प्र
तिबंधक के होत ही कारज पूर्न मानि संदेह तेसं कर उपका
र कहै एक का जह हसं देह लखाय रकवद में हबनव हत है
संकर इह पाई॥ मूल॥ हरत तिन ता लखतान की उठो नहर
ठहराय॥ ए री रागविगार जो वेस वो लखनाय॥ २२६ यह नाय

काकोवेन सषीसो जो सषीको वेन नायकासो होय तो लक्षिता
सषी सषाहू सो संभवे ॥ परकीया ॥ सवैया ॥ लै करि वीन प्रवीन
तीया सुर साजको जानके अठठ लो है ॥ द्वारपै आय कै ताहीस
मै मनमोहन कान्हको नाम लयो है ॥ तानकहू प्रत तालकहू सु
र तौ कछु और तें और भयो है ॥ वैरी अचानक बोलसु नाय
कै नंदको राग बिगार गयो है ॥ इहां प्रकास परकीयाकी उक्ति स
षी प्रति ॥ ताल सुर तानकी या दरहीनी उठे आग्रला प्या सुरन
ती ठहरात है ॥ एती सषी नायक राग को बिगार गयो स्वरयं
गहात बकभयो वेरी बोलवाको ताको बोलराग को वेसी ॥ स्वं
म कूं वहसुर यंग वाको बोलसुने याते वेरी कह्यो किं नावे कहीए
दे को दोवातसु नायके प्रत नु नायक ही है ॥ याते वेरी जो रमा
री सव जाताको बोलसु नायसुर नही ठहरातु है ॥ राग विगास्यो है ॥
किंवा राजप्रेमको भी नाम है इहां लो उनसो जो प्रेम पात ताको बिगा
रगयो राज विगार वो सामर्थ्य न कीयो काव्यलिंग ॥ दूसरा ॥ या
कांटे मो पाय लगि लीनी भरत जिवाइ ॥ प्रीत जनावति मीत सो
मीतन कौ सो आइ ॥ अथ नायकाको परकीय उदास सषीसो वैन
सवैया ॥ जादिनते मिली मैनकी मूरत डार गयो वह ह्वै ल सुहाये
तादिनते अकुलात है सो तन देषवे कुं कहू दायन पायो ॥
मो पगमै मगमै लगिकै इन कांटै नै आज ज्यु द्रुमीव रसायो ॥
प्रीत जनावत है भवमीत सों हू न मीत सु बाढन आयो ॥ इहां प्र
कास ॥ परकीयाकी उक्ति प्रियसषीसो इहां उसं ठौर सो इह
जो कांटो है सो मो पगमे रपात में लगि लागिके गड़ि लागिके
मरती एकी जवाइ लीनी प्रीत को जनावत प्रकासत मीत भवसो

काटेबहुतसाग्योदेषौपकैनहीग्रातजोहै ताजैनकोटेग्रानके
निकासेता किवाइहू कोटेमोपायमैलगैकै जियावलीनी
हेमीतदेषके उनकोसपर्सविनारतीषौइहीर्ती॥उत
राईवैसेही॥ यहक्रबतासिकाटैतेजौना विभावनग्रलंका
र॥जबैग्रकारनवसुतेकारजपरघटहोत॥ मूल॥जातसयान
ग्रजैनहूहैवेठगकाहूठगैन॥ कोसलचावनलालकेलष
लचौहैनैन॥२२८ यहग्रोढाहै सषीसिषादेतिहै ताकोउ
तरकहततहैकैवेनेत्रदेषके कौनललचातनहीहैसनेहको
ग्रादिकनायकाकोवेनसषीसों॥ सवैया॥ कौनरहैठग
मूरसीषायकैमूरतकौन विवेककलै॥ काहिनवेविस
रामैसवैसुधिमोहनमैकहकोग्रवलौ होतैयानग्रजान
सबैवतुराईग्रनेककितेकचलैं॥मोहनलालकेलोलवि
लोचनग्रासीसीदेषतकौनछलै॥ सप्रकास॥नायकाकी
उक्तिसषीसोकिंवासषीसोनायकाकोवैन॥ सज्ञानहूसोग्र
सानहोयजातिहै॥वेनायककिवानेत्र ठेहै॥ काहूकौनको
नहीठगे॥ काकुकरसवैठगे॥ कोनहीललचायतहै॥
लालकेललचौहे लालचभरेनेत्र लषिकेठगकहेंमिंदा
धुनीमें॥ सोईदर्साकीउक्ति॥ वाजसुग्रलंकार॥ व्याज
स्तुतिनिंदाविषेजबैवडाईहोत॥ मूल॥ जासग्रपजसदे
षतनहींदेषतसामलगात॥ कहाकरैलालचभरेचपल
नैनचलजात॥२२९ यहनायकाकोसषीसिषादेतिहै
तासोंग्रपनेनेत्रकोग्रासकरकहततहै॥ सवैया॥ सासुरि

९०

सातसु कै नन दी सषी तृसि सषवै सषी सीष कै वैना ॥ दे
वृज वास ववा उमईवंसू अराच ले उपहास के सैंना ॥ देषत
दरसामरी मूरत नोक अप्रलोक की सी कसवैं ना ॥ के
सी कहूं है के नर हे चलि जाति तऊ सषिलाल की नैना ॥
सरप्रकास ॥ अधीरा देहा मे सषी को प्रश्न नायका सो अ
धा देहा मे नायका को उत्तर स्याम सलगात श्री कृष्न ति
न को देषत के हू जसअपजस कौ देषत विचारत नाही हैं ॥
कुलवधू को उर हू जस है कि अपजस है नायका वैम ॥ मोकू
हा करो लाल चभरे हद के लाल चभरे च पल से चल मे हमा
रे नैन सो चलि जाति है उनसो लगत है ॥ विंवा सषी प्रश्न
करे है ॥ स्याम सलगात स्याम तुम वा नायका कुलवधू ताको
देषत हूं जसअपजस को नहि देषत नायक को उत्तर मे कहा
करौ लाल चभरे चपल जे है नैन चलि जाति है ॥ नैन को अ
र्थ जो को मीत कहि एन हि है नैना विसेष्य है ॥ सो साभिप्रा
य है ताते परिकरांकुर अलंकार है ॥ साभिप्राय विसेष्य ज
हं परिकरांकुर नाम ॥ किंवा अउ ताको वैन है चपल नैन
स्याम सलगात को रंग अंग है जाके ताकू देषत के तुम जस अपज
स को नहि देषत हो मै कहा करो मै तो तुम्हे बहुत रासि ता रीमी
कहा जानो कौन लाल चभरे वाही के पास चलि जाति है ॥
मूल ॥ नूबसिषरूप अरबरे तऊ मागत सकान ॥ त जात मनसो
[illegible]वॅ सो लाची एल लसे हिवाना ॥ २४० ॥ या नायका अप्रवानां
ता के मस कान देषो चाहत है ॥ सो अप्रवनैं नन की अभिलाषा
ता है ॥

१०A

सवैया॥ देषत ही ऽब्रन मेंभरे है उमडे से परै न विचारत गौस॥ राव
रे रूप ऽब्रनूपम सो धरे रहे है तउ न घातें सिषलौं सु॥ मांगत है उनने
परतौं मधुरी रूसकान अघानन त्यौंहू॥ नैनन में ऽअलि लैरै वी
ए रूसकान की बानन छाडत क्यौं हू॥ रसप्रकास॥ नायक हू सा यों बा
हु जहै तहा नायका की उक्ति॥ नषतें सिषा पर यतत वरे ऽप्रतिरुप
सो भरे है तौ भी रूसकान जाचत है॥ किंवा नषसिष के ऽअव
लोकना सो सरुनैनें चषरे रूप सो भरे है तौ भी रूसकान मांगत
है तुम्हारे लोचन सोलची है सलचौंहि बानन हू भाव को न हि
तजत है छाडत है रूप भरे है ऽप्रघाची नहीं होत॥ विसेषोक्ति
किंवा घेडतावेन॥ षरे त्तीवन जो ता नायका के नषतेंन की जो
सिषा ऽअग्रभाग [illegible] ता सो तुम रूप भरे हो। तुम्हारे ऽअंगन में न घट
त है॥ यातें उमरूप वान हो। धीरा वो ले वचन विध तौ भी तुम मम
सो रूसकान मांगत हो। तजत तन को तजत न नाय के रसिक जन
के संबंध तें वा को तजत तुम्हारे तन में लागत है लोचन के हीं
बाहु सो तुम में हु मारी नही है॥ अथवा लोचन लोचि व हा के
रोहत है॥ ता लालची ललचौंहि सो सवलिये तुम्हारी बा
नी वचन है॥ लघु उर उर लघु होत है निज इच्छा ऽअनुसार॥
किंवा तुम्हारे जो लोचन लालची है ललचौंहि बानको न तज
त है॥ मूल॥ नैना नैकु न मानही कितौ कह्यो समुझाइ॥
तन मन हारे हू हसे तासो कहा वसाइ॥ २५२ यह नायका ऽअ
पने नैनन की ऽअसमर्थता [illegible] सषी सो कहत है॥ सवैया॥ सषि
ये जग के उपहासन ते रहि ते उर लोगन मांझ गसे॥ उर ऽआनि
रहै ऽअब ने उर को समझायर है न नैन कहे से॥ ऽअनुरंच वह मो रोक

छौनकरैतनहू मनहारैताउ हुलसैइननैमृगछौसजनी मननै
मनुदैहरहेरिहूसैइहहसै॥ हरप्रकास॥पूर्वानुरागमैसखीसि
खादेतीहै॥तासौनायकाकी किवानायककी उक्ति हमारे
नैननैंककेपारेमीनहीमानत्तहै कितनोकिसमुझायकैक
ह्यो तनमनप्रियके किवाप्रियाके हाथहरेहू हुलसतहै॥ति
करनहीवारैतिनसौहमारोकहावसायहै॥तिनसौक्यो
जोरचलैकिवाबंहितोकीउक्ति॥ढंगसौकोपकोप्रकासहै
धीराहै॥एसखीइनकेनैनानैनभाइनकीवात्तकौनहीमा
नत्तहैइनकोकितनोसमुझायकैकह्यो॥औरबहीअदती
किंवाउनैनैनीतनाकोअर्थनहीहै नैकचेतारोभीमान
वडाईहृदैमैनहीहै मानकीअनुनासकहीहै॥हृदयवा
चीसौमिरमनासिकहै॥ वहतोसचरकोधर्महै यातैनही
विगरै॥हृदैवाविविषैअनुनाकहीकोप्रयोगकिनहूनहीकि
योहै अप्रयुक्त दोषसगै काव्यप्रकासमेकह्योहै सो ब[illegible]
आदिविषै नीतार्थ अप्रयुक्त गुणहै॥ कितौकहैोसमुझा
य हमतुमैकितनौसमुझायकैकहो उमगअवनोतनमन
वानायकाकोहाथ्योहै फेरहुलसतहै मिरलज्जहै॥ तिनपुर
बसौहमारोकहावसायसमझायवेहूतसौमानिकोका
रजानहीमयो॥विसेषोक्ति॥ मूल॥ लटकसटक लटकत्त
वलतउरत्तमुकटकीछांह॥ चटकभयौनटमिलगयोअ
टकमटकवनमाह॥ २४२॥इहसातातदरसनजैसीध
विसोदेखतहै नायकातैहीसखीसौकहतहै॥पूर्वानु
रागहोई॥ कवित्त॥ लटकलटकचलि मिरखतवारवार

91A

फेरफेर ग्रीवा छ्वाहू मंडल मुकट की ॥ केसरकी खौरवर कति
तहू चरभाल कुंडल ललित सोहै बनमाल तट की ॥ है गई बिनन
सगा अटक भटक मेटि तब ही ते नैनन में ऐसी सोभा नटकी
अलीसु धघटकी री लोक लाजसरकी री टकी हौ ये मैं कहा
तपी रेपट की ॥ रसप्रकास ॥ नायका वेन सखी सौं लट बिलसट कि
लट कटाच ललित सा मुकुट की छवि वाकैं उर तो है अटकत है ॥
निहारत है ॥ यहां अपर्व्वबटक मह्यौ छ विसेष वमत कारसोय
हौ है ऐसो जो नटवर भेस बिचै कृष्ण सो हमसों मिल
के गये ॥ अटक भटक मेरा करि बारमा ह राह माहू बच
न ताहू अनुभाव है ता सौं अनुराग जान्यो जाति है ॥
अनुभाव संचारी ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ जाको जैसो
रूप गुन वरनन ताही रीत ॥ तासो जाति स्वभाव कहि भावत
है करि प्रीत ॥ मूल ॥ प्रौढ़ उबेहासी भरी दृग मोहन की चा
ल ॥ मो मन कहा न पी लियो पियत तमाखू लाल ॥ २४२
नायका को बैन सखी सौं ॥ सवैया ॥ मैं निरखो जब तें ताव तें
जिय की गति जानत कौन बिचारी ॥ जौ कहु रूप की रीत
तुमी चित जानत हौ तौ कि मेरो ही चोरी ॥ पीवत लाल तत
माखू के घूंट कहा उन मो मन पीना सिकोरी ॥ रसप्रकास
सखी सों नायका की उक्ति ॥ प्रौढ़ के उच्चो करि कै अपहासी भ
री जो दृग मोहन की चलन है या तरह सो मेरो मन कहा न
ही पीय लियो तमाखू पीवत में लालनै ॥ किंवा हे लालना
यक को नायका कहत है मेरो मन कहा पी लीयो ॥ स्वरभेद

सावकौत्ति ॥

मूल॥ फिर फिर बूझत ति कहि कहत कहा सांवरे गात॥ कहा क
रौ देखत कहा अली चली की बात॥ २४४ रहा पूर्वानुराग स
खी सो नायक कौ बैन तथा नायका कौ कहा॥ कवित्त॥ मदन गु
पाल की विलोकनि छवि छलि बाल पगी प्रेम रस रन सम्हार वि
सराई री॥ वेई बातें बूझि फेर बूझि फेर और बूझि फेर फेर बूझबे
की रट सी लगाई री॥ कहा कहूं सांवरे कुमार तौ सौ कहा कालि
के होत है समाज ताके संग रूप दाई री॥ कौरत कहा है कहु
ठौर कौन बाम कहां केसी केसी भांति मेरी चख्यो चलाई री॥
टीका प्रकास॥ परकीया बैन रति प्रति॥ सो सखी सों सखी कह
ति है फेर फेर बूझत है कहत है हे सखी हम कहि सांवरे गात नौ
यक ने कहा कहा कहतो कहा कौन ठौर मे कहा करत देखे है
आली हम मारी बात को कहि चली है मारी चख्यो के सी भई
आबूझत दीनक॥ कि वा अन्या संभोग दुखिता को वचन सखी
सो सखी कहत है और वही अर्थ है॥ अली तें ही चलत लिच
ली वात को सामसरि आई॥ टीका नहीं बोले॥ मूल॥ दुख सुख
न बस्वा नहि आनन आमन आनन लगी रहत ढका दिये
कान कानन कान॥ २४५ परनायका प्रौढा नायका कौ
वचन सखी सों॥ परकीया हेत है॥ कवित्त॥ लाल मनभावन
सो मिल करि आपुस के लखे मनोरथ विविध मन मान
ती॥ कहम आगाप्यारे नेक मेरी औढस्यो ताको बैर चौर मो
ई व बातन के ठान ही॥ कूजि बनी पछी मरक हिर की किवार वी
द्वार लागी रहै निस दिन ढका दिये कान ही॥ देखो माई इन

92A

उदाहरापनके उसरहन ॥ आनननन ॥ आन प्रति ॥ आन वरखानहीं ॥
रसप्रकास ॥ नायकावैन सषीसे ॥ उदाहरन उदाहरे मोहे ॥
ताके ॥ आनन ॥ आन मनविषे ॥ आनकी ॥ और की वरखान हीहै
कैवांउदाहरनके आननमउसमे ॥ आन की ॥ और की नहीं है
॥ आन है हैं ॥ है सपनकरिकहत है ॥ मेरीवरखाकरति है ॥ का
ननकाननविषे हमारे विहारके वनवन तिवे काननदिये हमा
रीवात सुनवेको ॥ ठकालागी फिरत है छविके लागी फिरत
है ॥ आनन ॥ आनन काननकानन ॥ जमकाउप्र संकारः ॥
मृत्ला वहके सवजीकी कहत ठोर कुठोर गनेनं ॥ छिन ॥ और
छिन ॥ और से ए छविछोवै नैन ॥ २४६ ॥ वहलछिता नाय
का सोसषीकहत है ॥ अर मोनायकानायकसोकहे तोवडि
ता ॥ सवैया ॥ देषतनाहीने ठोरकुठोर रहे जितहीति तचाय
वके वके है ॥ औरघरीवल औरहि दीसत गमत ए रसमें विच
के है ॥ लाजगहो सिषसाईगहे ॥ अपने वसनाहीने योव
सके है देहक है जीयकीस ववातविलोचन ए छवि छोकछ
के है ॥ रसप्रकास ॥ नायकावैनसषीसो ए छवि छाके नैन
ए हमारे नैन नायककीछविछाके है ॥ याहितेवाके वसना
हीजीयकी वातसवकहदेतहै ठोरकुठोर कछु गनदे नही
उर्जनहि तकारीरनेसवसमानहे एकछिन में ॥ और दूस
रीछिनमे ॥ और ॥ किवा वंडिताती उक्ति नायकसो ॥ एतुम्हा
रेनैन वानायकाकी छवि सोछाके है ॥ तुमको नहीकरत
है ॥ औरवही ॥ अर्थ छविछाकियो है तउवहु ॥ हेतमानहे तुउप्र

हेतु अलंकृत होत जब कारन कारज संग ॥ मूल ॥ कहत सबै कव
कमल से मो मति नैन पषान ॥ नतरक कत इन बिय लगत
उपजत बिरह कृसान ॥ ४८७ ॥ इहां नैनन की लगनि है ॥
नायक कहै है तो व नैनायका सू कोविद न कहै है तो सोभवै ॥ को
बरन बरन हग कहत है सकल कवि कमल कुरंग मीन खंजन स
मान है ॥ कहै कवि कृष्ण रवि पवित्र तरा नैनन लोनना
पाहन बनाए मेरे जान है ॥ कमल सो कमल लागाई देखो
कै उ बार एकाग्र ताकि कोऊ सू उपजत न कृसान है ॥ लागत ही
बिय नैन तब ही उपजत है लगन अग्नि जाते प्रगट प्रमान है
सरस प्रकास ॥ उक्ति नायक की कि वा दरकी याकी ति वितर्क सं
चारि हू दीन्हे एण है है सबै है सखी कवि कमल से कहत है
मो मति मेरी बुद्धि में इ है आवत है नैन कमल न ही है पाषान
है नतर कत यो के दाउ अर्थ न ना ही तर्क है २ और की बात नही
है सांच है ॥ कि वा नातरक है इहि ठौर देस की भाषा है एका
र्थ छंद के लीये लो च्यो ॥ अर्थ नाही तो इन नैनन को बि
का ही ए दूसरे के नैनन को लागत है कहत क्यो ॥ बिरह कृ
सानु अग्नि उपजत है कि वा सबै कवि सब कवि ऐसे
मी जानी ए सो मति को अर्थ मेरे जान संभावना है नैन
विषै पाषान की संभावना उत्प्रेक्षा दोष वस्तु प्रेक्षा ॥ मूल
लाज लगाम न मानही नैना मो वसि ना हि ॥ ए मुह जोर
तुरंग लौ ऐंचत हू चलि जाहि ॥ ४८८ ॥ यह अर्थ नैने

93A

नन की आस न्हा सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ मतवा नट नागर की
छवि फाय परे अटके न रहा हीं ॥ लोचन लोल कछरी अरु जोर सों ला
ज लगाम को मानत नाहीं ॥ कैसी करों न हीं मो बस एक लाल
कान की चाबुक तें न डरा हीं ॥ अब चलत हैं अपने रंग को वा लिए व
हि कै उत ही चल जाहीं ॥ टरप्रकास ॥ सखी सिद्धांत हि है ता स
नायक के अनुराग भरी नायका कावै न ॥ लाज सो है सगा
म ताको न हि माने हैं ॥ अैना मो बस नाहीं ॥ [illegible] ए नैन अरु
ओर तुरंग घोडा की तरह अब चलत बैचत भी चले जाति हैं ॥ नैन उप
मेय तुरंग उपमान हैं वा विकु अब चवे साधारण धर्म प्रगटिव
माला जल गाम रूपक उपमा को उपकार करे है याते संकर ॥ सं
रूप अविध्यादु विकान को सु बासिर ज्यो ही नाहि ॥ देखबे नै नदे
ख तें अन देखे अकुलां ही ॥ २८४ परहने त्रोवालेबना उको अप
वा नायक सखी सो कहे है कवित्त लागत नयन लक ल लक रूप स
बवे की वाहूँ ध्यानपगति जगत दिनरात है ॥ ज्यों ज्यो निरख
त त्यो त्यो उपत तासु बीके य ह हो त न अह बी बरीबरील लचात है
अब ओट भरे चारे त विषम विरह लागन मैं मीन जल ही न की सी गत दरसा
त हैं ॥ सिर ज्यो न सु बर न दुबी या ही अधिय न को देखे न अघात
अन देखे न अघात हैं ॥ टरप्रकास ॥ परकीया को उक्ति सखी सों ह
जो [illegible] सी या अधिया है उत्कंठा को ताको विध्या ता नै सु बसि
र ज्यों उपज्यो इनाहि देखै नैन न देखते लोगन के देखे दखत न
हो वनत हैं ॥ किं वा ॥ देखे बिना न हि वनत है ॥ या बात तें [illegible] देख बिना
रै अन देखे अकुलात है ॥ बिना नायक के देखे अकुलाय व्या
कुल ह्वोत है ॥ जो नायक के देखत ते देखें न हि वनै लज्जा सो तो

मध्या है व निरवेद विषाद संचारी विवक्षीय रस न लखव को ले कहे
सुखद पक्षार जन ही उपजत है॥ विसेषोल्लिखित लक्षण॥ विसेषो
क्ति जिहि हेतु सो कारज उपजै नाहि॥ पूर्व॥ लरका लैवे के मि
स न लंगर मोहि गमाय॥ गयो प्रवान करि प्रांउरी छाती ह्वैल
हु जाय॥ २५०॥ ह्यां धवनाथक की बेनिता सबै सो नाय
का कहै॥ सवैया॥ गोरस के मिस री फिरहे वन गैलन छाउ
ती छैल वचाई॥ मौन भरे मै कहा कहौ जैसी करी जसुधा के
ललन नाई॥ ओढि गमागर है ईंसुरे कछु की नीलन नेह
नी बतराई॥ छाड़ रे लैवे को उठ न प्रान प्रवान करि प्रांउरी
छाती हू वाई॥ २५१॥ परकीया की उक्ति॥ परकीय सखी सो
कहै कै लरहु का नायका विसावे है लरका लैवे के मिस वह
नाकुरि कै लंगर नायक प्रवीन जो वह नायक सो मोहि
गमरे नजीक आये प्रानके प्रांउरी प्रवान करि छाती सो छु
वायके छैल गयो छल सकरि हु वायो॥ परकीयोक्ति॥
सकर कारज साधीये जो कछु वित हरु हाय॥ पूर्व॥ तोहि
निरमोहि लग्यो मोहि यहै स्वभाव॥ अनआए आवत नहीं
आए आवत आव॥ २५२॥ इहां नायका प्रौढा है नायक
की निठुरता अपने हिये की आसहि उर आनि दिढ करि प्रग
ट करत है नायका को मैन नायक सों॥ कवित्त॥ नेह भरे नै
नन कै जब तै नजर मिली तब ही तै चित को लगायो प्रतिवा
व है॥ मिलत न मिलत मन हि लाखिल [illegible] कु आयो दरसो प्रेम
पंथ पै उनो बोउर स्वाव है॥ को न सकत तोरो हितो निरमो
हो प्रति मेरे ही वै [illegible] सो कछु ऐसोई स्वभाव है॥ तोरो प्र

94A

आय

नआए अन आवैं हैं रहतत्तयह तें आए जात प्यारे तन आवहै
रसप्रकाश ॥ मानवती नायका सो नायक को वेन ॥ कोऊ परदेस
उपपति को नायका की पची तोह तेरे ही क हीए रहे दय मन
सो निरमोही है सो ह प्रेम ही नहें ता सो मो ही मेरे ह दय ला
गो यहै सुभाव यह निरमोही को सुभाव भयो संगत को
उन लगो ह मेरो मो ह छिद्रि यो ॥ अन आए आवै नहीं
उन्हारे आए बिन रह मारे मन रह मारे रहा न दें आवै है ॥ उन्हा
रे आए सो आवै है ॥ आगे भी हम यह परी जा की नी है यो तो
आव इह आव कि बात है उन्हारे आए सो ह मारे आय आवत
आवत है और न के मन को और सुभाव मेरे मन को इही सु
भाव प तनी करे सो ॥ भेद का तिसयोविति ॥ अति [illegible] योविति भेद
क व है और रे वर नन जात ॥ और रे ह न वो दूषी ये और पा की
वातें मो ही मोही भ्रमक ॥ मूल ॥ तिलक चिक नाई चटक से
लपति सटक लौं आइ ॥ नार सलोनी सामरी नागन सो
डसि जाय ॥ २७२ ॥ टीका नायका की सामरी छवि देखि नायक
आसक्त भयो सो वात सखी सो कहत है ॥ कवित्त ॥ तिलक को
रचिक नाई की चटक भरी चलत लाल तजे हेलते लचकत है
सामरी सलोनी अति लोनी उबगो हू नीके सभो भासनी सी
सेहत लसत है ॥ कुटे [illegible] माया चितवन प्रेम विष भरी नाग
नी ज्यों ही वृज नागरी वसत है ॥ मन को डसत अह तन को
ले हरे आवे लागत नन मंत्र मंत्र अदम न गीति है ॥ रसप्रकाश ॥ ना
यक सखी सो तिलक चमक है औ चिकनाई की चटक चसत तकार

त

सोभाई जाकी बटवे तें सी लिप जाति है । ऐसी नार सलौंनी सी
वृन्दभरी सो नागनी की तरह उतजात है । नागनी के उस
सो जो कछु व्याकुलता है सी हमें है ता सों मिलायबौ इह
धुनी नार उपमेय नागनी उपमान सो वाचक उसे बोध
र्म उपमा अलंकार । उपमेय अरु उपमान जहु वाचक
धर्म सु चार ॥ ह.स.॥ रहो मोहि मिलि मोर ज्यों यों कहि ग
ई [illegible] रोर । उत वे सखि हि उराहि नो इत चितई सु हमोर ॥२५३
यह नायक पर की या वचन विदग्धा सु क्रिया करि गई है सो
नायक सबी सोच है ॥ सवैया ॥ जा दिन तें बरु बाल गली मैं
मिली है तौ कालि गई चित चोर के ॥ एक ही ठौर करी इह नैर
मां मो विधरु पकी रास्ति वटोरि के । ईंह डरे मया करिबौ उप
रौस निसो के हो मोह मरोर के । ठौस जनी को उराहनो देय
सो तन हेर गई अब मोरि के ॥ इस प्रकास ॥ परकी या सखी
सों कहि वे के छल करि वचन हि रच्या सो नायक को स
मु[illegible]राहै है नायक के वचन सखी पीठ भई सो मोहु प्यार
है ॥ मिलवो भी प्रवर हो यो यातर ह सो कहि वे मरोर गई
प्रगट कीया है सो गही उत बा सखी को उराहनो दीनौ है ॥
वत यातर, मोर्ग और ने ही और चितई दे सी कहु [illegible] र चितई ए
[illegible] पाठ है ग को दीप अलंकार ॥ ग को दीप मिस और के
कि जै पर उपदेस ॥ सखी हो न ही कहतु है ॥ [illegible] मलो करतो है
ह ला ॥ नहि न बाय चित्त मलिन दृगनि नहि बोलति [illegible] स काय
ज्यों ज्यों रूबरु बीकरती त्यों त्यों चित चिकनाय ॥२५४॥

म

बिसरै

95A

यह नायका की चेष्टा सखी सौं नायक कहत है। कि वा की तरुनाई मो
रे चित्त कौं चिकनावति है॥ सवैया॥ जोरति न लोचन नन चाय
भरे नाय भरे मदु॥ ऋसकानि कैन नाव दरसावत है॥ बोलत न क
छु मन मोहन मधुर बैन मोर तिन भकुटी मैं ठैरि हि न गात है
कहै कवि कृष्ण की गरवी लीलानि कछू सरूज बसीकार कै मेत्र
जान्यो जाति है॥ ज्यौं ही ज्यौं रहत प्यारी राधा रूप तमो करि
त्यौं ही त्यौं घरोई घरै चित्त चिकुनात है॥ हरद्राकाल॥ लक्षन
मैं संयोग कौ कारन तासैं नायका ताही नायक वैन॥ दगमा
कौं न नायक नहीं चितवति है॥ ऋसकाय कैं नहीं बोल
त रतीवा नहीं नाहीं बोलत है॥ ज्यौं ज्यौं जैसे जैसे सब तो
रता कौं रबरबकरै है त्यौं त्यौं तैसे तैसे मोरे चित्त चिकनारै
चितत ऋगारौ रस छिन है। हात चित्त मिलावो चाहत है॥ रस्डा
दीरघाई तै चिकनाय हात॥ अवै प्रकार नव सुमेकारम
परगट हात॥ विभावना प्रलंकार॥ कारन कारन बेम
बैकारज होय वितध॥ मूल॥ सहज रस को चसमो रस
सुदेह दक पऋसकानि॥ प्रानि पानि करि प्राव नैपानि
दीसे सो पानि॥ २५५ या नायका कै वानै पान देत ना
यका कौं नायक भयो प्रर नायक कै प्रान बाव रौंन
कौं देवबस भयो रुसखी सौं नायक कहत है स्मरन
जानीए॥ सवैया॥ वा मृगलोचनी के सब अंग प्रनंग
विलास बसीकर है रे॥ छोद सकोच सनेक कवि कृष्ण सने
रस नेरुक कुंजन मैं रे॥ रूप तरगनि कै छू बढाय कै मौ

ह विलोकनि पैरे॥ मोकर पानदिये हू तसो उनआन लिये अ
पने कर मेरे॥ इह प्रकास॥ नायक कहू कीकहूं तन अपने व्यारकी
सखी सो कहत है॥ किंवा स्वाधीनपति है तासो नायक कहत
है॥ सूह संकोच अंसु अ प्रस्वेद अकंप अरु सकान
नन सह तजो हु मोरे आता है सो आपने पानहाथ
मै करिके अपने बसि करि यह अर्थ अपने पानह मा
रे हाथ मे धरे है तत विवाह सो है अथ स्वाई संकोच संचारी
सोदवाच है अैसी ठौर दोहान सी आगलीते हापदीये
लि नमय अलंकार॥ जहां देखे कछु ली जीए कमिवुह
विनमय जान॥ मूल चितामनि मोरे आय की गोरेमु
खरु कानि॥ लगत लटकि आ लीगई चित बटकन लि
तआनि॥ २९६ यह नायका की चेष्टा नायक सखी सो
कहै। परवीन राग हाउ अहदस अबस्थान मै स्मरन जा
नीये॥ कवित्त॥ मूल लै नहु पोहू मोहि वाकी रूपदानी
वानी वह अंगरानी अंगुरी नचाइ कर काइवे॥ अह गोरे
वटारौ वदन की मुखकानि अरु बहु चहि चितमनि मो
रे आवके॥ घट घट कर न करि कमल उसार अरु लटकि
मिलन सजनी रे लिपटाय के॥ अैसी भांति जब हि
तो निरखी है जब ते तब ते पलपल समाज बटकति चित आय
कै॥ इह प्रकास॥ परकीया की चेष्टा नायक सखी सो
कहै है चितमनि मोरे आय की मोलापन की चितमनि
गोरे मुख मेरे सो आलीसखी के और सो लटकि कैला

गि[illegible] चित मे बटके है सा लेहे है निंत ॥ प्राय ॥ प्रानि कै
किंवा मेरे चित मे बटकति है ताके ति ॥ प्रानि स्याल्य
भावो ति ॥ प्रलंकार ॥ मूल ॥ छिन छिन मे बटकत ह
ही बरी सीर मे जात ॥ कहि उ चलि ॥ अन हीं चित ही
ठन ही मे बात ॥ २५९ ॥ यह नायका परकीया है कहै
सीर मे नायक न देखी है सो वाने चेष्टा कीनी सो उन
हे ही बातन सूनी सो सखी सो कहति है ॥ कवित्त ॥ प्राज
सीली ब्रजवाल ॥ प्रचानक आमति वाके समेह गही है
जाते सातौ ॥ प्रत सीर मे सुदर आनत मे हर हियो उमही है
लाज ते नैन बिलोक सकी उन की नीति उर सलतीत सही
है ॥ हरि उन ही मे गरे जु कछू कहि ये न सूनी पछिताय
रही है ॥ सरप्रकास ॥ नायक चैन सखी सौ छिन छिन मे
वह नायक हमारे हीये मे बटकति है जो बरी सीर मे
जात है नायक को कौतक हीये तो जातिन हीं है यम
ति है उ ॥ प्रागे लेक नात है ॥ अन ही चितो बिन देखे ही
॥ प्रोठन हि बिच बातक हि चला कहि ये सब बात सुनि
ही कहि चली ॥ प्रोठ बीच कहि ता ते न ही सुनि वै मे
॥ प्राई किंवा उमने लोक छू कहति पछि उमसीर मे जा
तिहि मचार सकार को ॥ प्रोठ ॥ प्रसप्ता स्वी है ॥ अनहीं
चित को ॥ प्रदर्प ॥ प्रानन ही सखी को ॥ प्रोर चित के ॥ प्रसे
भीजानी ॥ स्मृति ॥ प्रलंकार है ॥ मूल ॥ कुमारी स्पा
मासि तार न सू उबसे सकी उन हार ॥ नेह देवावत नीद

लौ निरबानि सासी नारि ॥ २९८ ॥ यह सातो तदरसन जो
सी नायका दूबी है ते सेई नायक सबी सो कहत है ॥ सवै
उन्नत पीन उरोजन कूं उगकोकन की छवि पावत है ॥
सुष सो भजत सो मउनै प्यारू सीउ पीदीप कुमारि वढैवत
है ॥ कवि वृक्ष विराजत चूनरी स्याम सतार कव्योमल भावत है
उरू [illegible] मिन सी गजगामन देषत नीद ज्यो नेह दकावत है ॥ दर
प्रकास ॥ उपपति वचन किंवा सबी वैन नायका सो स्याम जो
चूनरी सितारन मंतारी न सहित प्रकास है सुष जो है सो
सरिचंद्र की उनहार है तर है नेह सो दवावत है नींद लों निंद
की तरह वस करत है ॥ निरबी है स्मरातत सी नारि ॥ किंवा निर
बानि सा की नारि ॥ स्वकन उपमा को [illegible] उपका
र कीयो यातें संकर ॥ मूल ॥ प्रहरे दे है डी जिन घर जिन तर
से इउतार ॥ नी कोई छवि कैं [illegible] प्रसे तिरहि नारि ॥ २९९
वरदहा कहि चंद्र का मैं न है ताकी सवैया प्रवीना तिं ॥ ना
यक वैन नायका सो ॥ सवैया ॥ सुंदर वास विलोमनि के
दधा भाजन लेत महासुकमारी ॥ प्रात तहा नंदलाल रहे
लषि प्राप उरोजन की उचकारी ॥ यो कहि नारद रे हंडी धरे
जिन प्रैप प्रहरे जिन लेउउतारी ॥ नीके तो [illegible]
[illegible] प्रे सोहति छवि कै गहहरि प्यारी ॥ [illegible] ॥ उन
सवैया ॥ वारि विलोमन की दधि भाजन छवि के ते लेत उचेकी
नारी ॥ भाल बिसिर बु ले है वकी मिस है करि छवि कै [illegible] प्रसे
विहारी ॥ यो कहि नारिय दे हंडी धरे जिन प्रै पै प्रहरे जिन लेउउतारी ॥

नीके ही छिन न बाधक हो तिहें अरु सो ही छि को गहैं॥ प्यारी॥
नायका के अंग देख नायक वचन अरु है संबोधन अरु नार
दहै डीठ को जिन धरे जिन तरु उतार लेइ॥ तू नीके ही छि को छ
दछी के को पूर्व में सिक हूर करत है॥ अैसे ही र हो॥ किंवा
तो छि कता मैं दछ यों है ताहू अरु सीर हो॥ छि कत मैं कज
जो प्रारंभी हो तो है सो ही राखि ए॥ स्वभावोक्ति॥ मस॥ ये
सैदये लखो सकरि देखु वत छिन नक जो नीर। लाल तिहा
रो अरगजा उरहु लखो अबीर॥ २६० यह प्रोषितपतिका सखी
को वैन नायक सौं॥ कवित्त॥ कूंदम प्राण प्यारे लाल विछ
रे तिहारे अब हियो बृजबाल को अनंग दव दाग्यो है॥
देवरी निवर कुम्हलाय गई फूल सम देह अब उनकूल मै
स सरल स कन भाग्यो है॥ रुमजुवठा यो सो मै दियो जाहि नारि
उन सो अप्रतीति ताकरि चित्त अब रा न्यो है॥ करवर सत ही
छिन क गयो नीर अरगजा वाके उरमें अबीर है के लाग्यो है
टर्द्वकाल॥ पूर्वानुराग मै नायका को विरह दशा सखी
नायक सौं कहत है॥ जो लै वो देखो सुरार करमै नायका नै
लखो लिलो कर के देखु वत ही छिन क जो नीर॥ छिन छिन
तके वाको नीर गो जात ओर हा विरह के ताप सो हे लाल ति
हारे दीठे अरगजा जो अब बने सु गंध डारवे व नायो सो
उर मै अबीर होय के लाग्यो॥ अत्युक्ति॥ अलंकार॥ अलंका
र अप्रति उक्ति देह वर्न ए अतिसय रूप॥ परिनाम॥ है अबीर
तिका अरगजा लाग्यो

हल ॥ तोपर वारो उरवसी सु नराधिके सुजान ॥ तू मन मोहन
उरवसी है उरवसी समान ॥ २६१ ॥ नायका स्वाधीनपतिका सो स
खी वैन ॥ सवैया ॥ रूपकी उज्यारी वृषभानकी दुलारी राधे तेरी तानि
का इहर सौंत सब हारी है ॥ तेरे गुन गायवे कों अधिक उछाह वाक
तेरी प्रीति ही पेपन गह्यो गिरधारी है तेरो नाम रटै ध्यान तेरोई हि
ये मै धरै तेरे रस वस उठि गायहू विसारी है ॥ तू ही उरवसी उरव
सी है मोहन के तेरी छवि पर कोटि उरवसी वारी है ॥ टीका ॥
सखी वचन मान मै नायका सो तोपर तेरे उपर उरवसी जो अपस
रा है ताको वारो न्योछावरि करो है राधिका हे सुजान परवीन
तुम सुनो तू मोहन के हृदै मै वसी है उरवसी वो की समान तू
ल्यहा इवे सदा रहती है ॥ उत्पर्दा ॥ किंवा तुम सो कि नहू कहीं है ॥
नाइक के उरमै अरु नायका वसी है सो तोपर वारैं अप्राछि
के पैं कद्यो सुनि राधिका हे सुजान तू मोहन के उर मै वसी
है उरवसी लक्ष्मी की समान होयवे को वहू जु दोवगी नही
लक्ष्मीजा नारायन के उर मै लक्ष्मी तैसे तू मोहन के उर मै ॥ किंवा ॥ तू
मोहन के उर मै वसी है सदा उर मै वसन हारी है उरवसी का
सम्रा है एवारो वरिन को अर्थ ॥ नही है सबै जमक है ॥ उर
वसी को समान अर्थ उपमा ॥ रसा ॥ हसि उतार दिये दई त
ज्यु ताहि दिन लाल ॥ राधा तप्रागा क पूर लो वह चुहर नीमा
सा ॥ २६२ ॥ यार अब राग निवेदन सखी को वेन नायक सो ॥
सवैया ॥ दूवरी ऐसी भई विछुरे तिय सेज हू पे न सखी प
रै सो है ॥

98A

आली बिलोकि कै भौंउन हूं पगायो इक सा पसबे रूपजोप
वीस बिसेष उठि जाती करूर सौं प्यारी के प्रानन राखत ता कैं॥
जौं उरू लाल तिहारो दयो छु घ वी कैं हराउ रमांझ न है तो॥ रसप्रका
स सखी बैन बिरह निवेदन रू सबै कौ कारन नायका नै अनुराग सौं
नायक कै गरे की उ जा की सौं मांग माजी तब नायक नै क
हो कहा बडी बसु मांगी इह रू सबै कौ कारन रू सबै उरछा
नी तै उतारकैं तुम दीनी है लाल कहतां दिन जाहि दिन मांगी अ
ब जो बिरह मैं बह जो चुहत रनी उ जा की सौं वाके प्रान कौ वहर
की सीत रहरा खत है॥ करूर सौं उ जा डारै उडै न हो प्रान रखी क
रूर कै राखैत जौं कौं अपीर हु मानो हुपक अनु हा स्वदप
स्तुप्रेता॥ रूल रहील हूं दूं लाल हैं सखि बह वाल अब रूप॥ कैतो
मिठास दटाद ई उतैं सखी लानै रूप॥ २६३ प रू नायका को सरूप
सखी नायक सौं निवेदन करत है॥ सखी लाने रूप मैं छिठाई अंद
भुत है॥ कबित्त॥ जैसी जह वाही पत तै सीतहा वनी बिध रूदै
धुनि आखर के नाम बानि आई हैं रूपद रूहू इकावै वरनि बिताई
जाति रति रूके जा की तिल समता न आई है॥ बाल छवि छाई ता
मै और अधिका ई दई दई आले नाई मा उकि तानी मिठाई है रूंद
र कटू ई हैं तैं निरखवि काई पहरू पकी निकाई मानो रूप धर
आई है॥ रसप्रकास॥ इती नायक सौं नायका की अस्त
ति करत है॥ ई लाल बरअन न प आश्चर्य बात देखि कैं लहूं मैं
आसन तै रहाय रही स दूं लाकरी कै नचावबे को बालक रावै
र सो अपर्प रा हुन हि संभवै॥ कै उतनो सलोनो हरा लाव
न्य मद्यो॥ ह पमैं दैव जो रे बिधा ता तानै मिठास माधुर्य दयो
है॥

विरोधाभास अलंकार सलैोना मै मिठास विरोध॥ ललि
त ललाम मह। विरोध सो लगत है हो तान संच विरोध॥
नरै। ता विरोधाभास जहै बुद्धि जन बुद्धि विबोध॥ कवि
त पानी कौ सबी है सो नाव का की निंदा छल सौ करत
है॥ हे लाल अन वहन सरी कौ केउ नायक न है॥ दू
सरो वहै अभ्यास प्यारी वाल है विवेक हो मैं लहूं हैं वस
ह्यवर ही॥ वह बात कहत है॥ कि बाल तू जउ मै जउ हू र
ही॥ सलोनो रूप मै विधाता ने कितनो मिठास डार्यो
है। लोनकी वस्तु मै मिठाई डारे तो विगर जाय विधाता
को विगास्यो रूप तासो अभ्यारी आसन तेरे धुनी॥ सू
सा है ताधोती सेत मै कनक वरन तान तान्ते॥ सारद वा
रदवी जुरी भारदकी जतलाल॥ २६४॥ नायका की उ
राई सबी नायक सौ कहत है॥ कवित्त॥ कंचन वरन तन
कनक अनूप मानो रूपकी अवध मन मध की
रसाल है॥ तेक धोती सेत मै आने कहि देति वाल
मानो सयंदु ली मै च पक की माल है॥ सरद घटा
न मध दामनी सलता मानो छीर सिंध माखवउका
गन की ज्याल है॥ सरहार सो तामै सधा निधकी चलो
कि छोर शकरवे अंक लसै पारवती वाल है॥ सरद का ह
उती वैन नायक सौ पूर्वोक्त स्पष्ट है॥ लाल सारद सरद
रितु कारता। निकता को जो वारद मेघ सेत ता। तामै जो है

99A

वीजुरीताकीजोहै भाकहै वेदीप्ति ताकौरदकी जिय
तीहै। यह कछु नहीं। निकसमौ सोत धोतीसौ सँदकौमे
घ बीजुरी नायकप्रतीपा अलंकार॥ अनआदर उ
पमेय तै जब ताते उपमान॥ नायक तें बीजुरी उप
मानको अनादर॥ वृत्ता अन्य प्रास॥ मूल॥ वारोब
लितो दृगनतर अलि बंजन मगमी न॥ अधीदू ब्रिचि
तौनि जिनकी रीलाल अधीन॥ २६५ टी० नायकाके
नैननके अधघघुली चितौनमिदे बिनायक अधीनभ
ये सो सखी नायकसौ कहै॥ कवित्त॥ कारे रतकारे
रतनारे अमि आरे सौहै सहज ठरारे मन मथमतवारे
लाजभरे भारभारे चपलालि तारेतारे सांचेके सेकरेक
रेरूप के उजारे हैं॥ अधी चितवनि हीये लालनके ऐ
से बालिटौने से बसीकर से टौने एतनि हारे हैं॥ कमल
कमलको रंगमी नबंजन भमर वृषभानकी कुमारी तेरे
नैन ये वारे हैं॥ हर अकास॥ सखी बेननायकासौ बति
भाउ तेरे दृग नसौ है तैन उपमान बारे अधिनजरकी
चितौन हौ जिनने लाल वस कहे उपमे यनै ...उ
पमानको अनादर॥ प्रतीपा अलंकार॥ अन आ
दर उपमेयते जब ताते उपमान॥ मूल॥ देषत नहुरैक
री छि नछि न वीतीरात॥ २६६ टी० नायकाकौ अन
रागनिवेदन सखी कावैननायकसें विरहनिवेदन कहत
है॥

100

२

कवित्त॥ बिछुरे तिहारे लाल विलसी विकसलास परी बिलला
ती को हू धीर न धरत है। जातें भानि कृष्ण भई परेवर जाक
पर नीठ नीठ मिं छौ परत वाको गात है॥ कहूं रीसख्या
ज नाहि प्रगट होस प्रवनाहि नाते पर जनन नकौ जी
उत्प्र कुलात है॥ ग्रैसी छिन छिन जन विलाप विनजा
टा काल जो कूर दानीलै कूर उद्दि जात है॥ सखी
सखी विरह निवेदन करत है देवता वै देवत के प्रैसे नज
र आवै है॥ पकूर को कूर सो उदेन नायका प्रदेवन होइ छ
वीली बाल सुंदर वाल छिन छिन में घटी प्रति छीन
परी जाति है। यहां नायका सो नायक को विरह सखी नि
वेदन करत है॥ ऐसी नृपराग में रूप छवीली बाल कूर
को कूर सो लास उवे जिनि॥ देह छिन छिन में परी छि
न परी जाति है॥ नायका उवमे य कूर उवमान उदे
वो साधारण धर्म जो वाचिक॥ लुप्तोपमा॥ लच्छि
न कछु छबीली बाल बहु न व लगन नहि बनत राय॥ उठाम द
कपद सकी तिय बलन गर ह न जाय॥ २६१ पहु नायका
की बानी की मधुरताई सखी नायक सो कहत है॥
सवैया॥ जाकी सखै वैधुनि वीन कहा गनि लाज जे पि
कीव नि पागत है॥ जोरु ननिके कवि कृष्ण कहै उनकी य
नसा प्रनुरागत है। जौ तोहि छबीली लला जो नहै तान रसाल
न गात न लागति है॥ तो लौ परबस मन कै सब की उ स कुं हर
मन के सरस भागति है॥ २२ प्रकरण॥ पूर्वानुराग में जो
प्रकृत करत है॥

८८

हे छबीले सुंदर लाल छिन एक बहू नायका जौं लगज बता
ई नहीं बतरात नहीं बात करत है ॥ उपबकी मदू बकी चंद्र किर
न कू पदू ध्रम ता कि तो लगै बताई ॥ म्हबचारू नहीं जा
य ॥ वृत्तान्त प्रास अनेकन वर्नन की आवृत है ॥ नायका
कै वैन उपमेय ता मैं अधिकाई ॥ उपमान उपमादिक ॥
सूल नागर विविध विलास तजि बसी गमारन मांह ॥ मू
ठों मैं गनिवी कित हू रूठो देखठलाय ॥ २६८ ॥ यहू दोहा कू
छम चंद्रका मैं नहीं ता की सवैया प्रवीनो ति सखी दैन ना
यका हैं ॥ कवित्त ॥ प्रीतम को चित चारू चुराय के मारहू कू मान
हीं देखे धरात है ॥ तेरे अधीन सदा रहै मोदन अौर तियां
की न बात सुहात है ॥ नागर नाना विलास छाडि के आनि
गमारन मार बहात है ॥ मूठन मैं गनिवी कि नहीं तो रिसा
वरी हू कोई दैइ ठलात है ॥ ह्रस्व प्रकास ॥ नायका नायक
सौं रूठ के अौर गाम की उतरी सखीन मैं बैठी हृती मनावे
है ॥ हे नागर चतुर तें विविध प्रकारणते विलास तजि के ॥
गमैले गाम की बासी गमारन मैं बसी है रही है ॥ तो
ही मूठो मैं मू-ठों मै क्या गनो गी ॥ जब तू कहत है तब तूहू
ठों दैइ ठलाइ मूठी बांधि मकरंसो अैठे है ॥ किंवा नागर
जे प्रवीन इस्त्री तिनकी तरह जो है अनेक तरह को विलास
ता को तजि के छाडि के आगे बहूरि अब ॥ रखाना सौं बात
कहि ॥ पर या दोहा प्रकार है कछू रचना सौ बात ॥ मत्त्या
पीय मन रुचि है वो कठन ता तन है चढ़त सिंगार ॥ सोव करे अ्रौ

सा

बिंनवढै बढैंनदनएवार॥२८४॥ यह नायकासिंगारकरतदेखी
कै सखीनायकासेंा कहतहै ॥ अपकासौंतिकेसिंगारदेखि
वाकै ईर्षा भई सो सखी सें कहतहै, याते देमगर्वता होइ॥
सवैया॥ वेत्रो कुंजसदन विलोकतहै मगतेरे नामयो
हनरटतवारवारहै। उठचलहि लमिलमानरंगरलीग्रली
येरोकसोमनिग्रनगंतकहारहै॥ पियमनवसकर
वौई है कठन अरतनदुतिसरसत्तसा जैउ सिंगार है॥
कहै कवि कृष्ण कीजै लाबकजतनतउ सोंवननवढ
तवढा तबढैवारहै॥ २८प्रकास॥ नायकाकी प्रीयसखीना
यकाकी सौंतकासिंगारकरतदेखिके॥ सुनायकसुजांनसे
पीयके मनकी रुचि चाहहै तयवाकठनहै तनसरीर की सब
सोभासिंगारसोहतयहै॥ लाबजतनकरो अबिनहीबढै व
ढायतेवारबढै॥ अर्थांतरन्यास॥ कहोअर्थजहां थापिए
औरअर्थसें रीत॥ सोअर्थांतरन्यासहै वुधिजनकरतप्रती
त॥ मत॥ नहपरागनहमधुरमधुनहविकासइहकाल
अलीकलीही सो बध्यो आगे कोनहवाल॥२०७॥ नाय
काकतनमें अबहि जोवननहीं आयो नायकवसतप
रलहि अधकरबिसुनसखीसखीसो कहैहै॥ २८प्रन्योत्ति॥ सवै
नाहीपरागनहीमकरंद अजोघुगाटीनसुवासविकासुर
जानके आगेघौं कैसहुगातिअबैसोदमो अवहीइहसिरे
फलीघनीकुलवारीरसालयेकाहु कोनेकुनमानततासर
रीरसलीमतिकुंजनकलीदे अलीमउरानोंरहै निसवासर

101A

इरप्रकास नायक मुग्धा नायका सौं। आस नैं योहै तासौं को
ईकरत है। औरकै छलकरि नहीं यामैं परागरस सौं नहीं मधु
फूलरसकौ सो भी मधुर मनोहर नहीं यासमैं विबै विकास
भी नहीं फूलसो भी नहीं। अलि जो भौंरा सो। अदभुत जानिक
लीसौं नेह्यौ है। आजे जब यामैं परागआदिक है भोगातब या
कौ कहा रसवालदसाहू यगो।। नहीं जानै है अस्तु तभौंराकौ
कहै है। अप्रस्तुत नायकानायक कहे है तहां समासोक्ति जा
नीए।। जो नायक के सन्न तभौंरा है सो वरहै अप्रस्तुतां कूरा।। स
मासोक्ति अप्रस्तुत पुरे उप्रस्तुत गाहि।। परलोबिहारसनैं हीदो
हावनायो।। पाछै महाराज जैसिंहजीकहै सतसईवनायो
सल।। दुनिहाई सवटोलमैं रहीजसौत कहाई।। सैतौ अवैं
चौतालसेकहतें। अदेवलश्राय।।२२१।। यह नायकाक्याधी
नपतिका तैं वैन सखीसौं।। सवैया।। राति दिना कुबिरमाही
के धाम पकोर समें रहतो सुबदाई।। पास परोस सबैब
रजतिवै रसीलबिचलतिय हें दुनिहाई।। रिसवतें उनरहपकै
रासिरुसी ललहागमै गौन ... ई।। आनपतीअपनेव
सिकै तौ भली कीनी सोतिकी ... ई।। इरप्रकास।।
नवलादुलहीसो सखीवैनतैं रीजो ... सो तिहै सो सव
टोलनमै दुनिहाई कहा इरही जो तौ जानै सो दुनिहा
ई सो तैं आपके आवतें अवनी और योनमुख कै। अबे
केरवसो सों बिबेसो तिकौ अदेखिलकरीदाबिरहत
कहीदुनिहाई हाती तो नायकारे वलनहीहातो आधी
नपतिकासौं तिकै तौ नारीब चौताम उनमको से सपूदसे

गुनमै दोसहू दोसमै गुनकल्पनालेस ॥ किंवा लिपकौ अं
चिवो है जु ग्रंथ दोबिस है जे मान रेन ग्रंथलंकार किंवा उन्हि कैं
ग्रंथदोबिसविके तो ॥ तातै वा व्याख्या लिंग भी संभवै ॥ संदेह ते हौंक
रमतो ॥ उदा ॥ सखि लोयन लोयनन के कोपन है प
नो ब्रज ॥ कै कोन गरी बनिता जि बैकै ताहू टेरा सी राज ॥
२२ यह नायका परकीया कुलटा कोन गर निवा सिवो
या पद तें वह तो नायकन की प्रतीति भई सखी को वैन ना
यका सो सवैया सार सीर हू खंजन मीन कुरंग अमा
ग्रो रसचला बलके करिबै ॥ कितधो रतना पसना पन
यो वह को अनुमती जह पैठरवो ॥ नसुंदर लोचनन के
रन सो लखि को न पै ब्राजगका कर [illegible] वो ॥ २२ प्रकास
सखी बैन नायक सो तुम्हारे लोचनन ने वृत्ता के ला
नो होई ब्रज ग्रैसी [illegible] विवनी है कोन नगरी बनिता
जावो रलाकहे रसक प्रिकाम ॥ गइता सो तुम सखीव
रही । वरही को ग्रापबल ही कह तहे । प्रबहोर मैंनें
ग्रर की मैरर रह कहत है को नग रीवनिताज हगो कि
वाको न कीग ली को निताज हगे कोन की गलीकै
पहारे गे कि तक हौं तरा सन काम न ह्रै ग्रारा जो मवो
गरीब कै ग्रव ग्रगरीब करै नीरस होइ ग्रभिमानी
त्यागी तरता रै इत्यादि ॥ नायक को लखता नही लगे

संदेह अलंकार ॥ सुमरन भ्रम संदेह ए उहै लछन नाम प्र
कास ॥ सखी ॥ देखत कछू कौतक रूतै देखो नैकु निहार ॥ क
विकी उक्ति हैं कउटि रहि लौं [illegible] अश्रु डरै न पार ॥ २०३ ॥ इहां नायका के
है, है नायक को देखति है सो सखी नायक सौं बातें कहति तातें स
खी को वचन नायक सौं प्रीत करायबे को प्रयोजन कवित्त ॥ मैन
[illegible] नैन मन मोहन तिहारी छवि नैनन मैं बुभी है जवाल रि
झवार के ॥ वगर को वास [illegible] नन दलको वासत तातें निरखत है नव्या
री वदन उघार के ॥ बिन देखे [illegible] परत पातें देखबे को कस्यो है उ
पाय देखो इतधौ [illegible] निहार के ॥ कविकी निमेष [illegible] सोचन लगा
यरतें उठि रहि टाटी कर पल्लव सैं फारि कै ॥ इहां प्रकास नायका
बीनु राग सु नायक को देखत है तब दूती नायक सौं कहत है
देखत कछू के तक [illegible] कछू कौतुक [illegible] सो देखत है बातें ता
ओर चलि नैकु प्यारे निहार के देखो अबकी कितनी वरकी तक
टक होय के उठि रही अटके रक रिकै निहार रही है यहां उप
टाटी के आगे [illegible] के सुभावोक्ति अलंकार ॥ सख
मनन धरत मेरो कहौ [illegible] सयान ॥ वहै परन पारै प्रेम की
परह अपार न प्रान ॥ २०४ ॥ यहां सखी नायक सौं कहत है कि तेरी
प्रीत के पर सगन ते आलापराय है [illegible] पर तसो [illegible] मति करै तो व
हा [illegible] है सखी प्रीत करत मन कौ करत है सो मन नै नही कर
त प्रीत [illegible] आवति है ॥ [illegible] जो तो मैं अती
कहै [illegible] कै मानवती के प्रसंग मै सखी नायका सौं कहै है
तो उहां मनै कि प्रेम को परन मो तो पर अपर प्रानन है नायका
[illegible] मति पारै ॥ ॥ सवैया ॥ [illegible] मान न तमे रोक [illegible]

श्रवने मन मानि सयान प्रमारी॥ ये छवे कोल लचाव त ज्यों कछू
द्यौस न ते इहरो सनि हारी मेह केह मंद मंद न सो लगि जे है तो
फेर न हू है छुटारी॥ टेव तप्रा गानै कू पर ह्या पप से मानि ग्रं
थ कदा वूजमारी॥ इहप्रकास॥ सखी सिखावति है॥ हमारो कह्यौ
तूं मानि में नहि धरत है। नहि राखत है। हे श्रवनी सज्ञान तातें
श्रवे सखी प्रेम की पर नमे परि के वसा जाके हा पा श्रवनी मानें
मति पारे प्रेम के परे प्रान पर वस हाय जो याते प्रेम में ही मति
परे नहि धरे नहीं धरे है कहा मनमें परलि श्रवधक पदहै किं
वा पर नाम पत्न को है ताते प्रेम की जो पत्र है तिनमें मति परे
किंवारी तू जानी॥ यह है मान ताको है श्रवनौ सयान
याते है श्रलंकार॥ दोहा॥ वरनि न यह वरना पुली सवत
व वीर विनास॥ वचेन वढी सखी लह चीलह द्यौ सुखमास॥
२०७ याहू पर ता वृक सखीको वेन नायकासो कवित्त॥ श्रा
पनी जो सबको उ विचार तु मेद केछू वह पायो है तो हू। हाय गो
पाछे वरायछि तापरी पानेक होत नमरायके वेहू॥ सति
या वह नापुली के हित हित तके तन पर मिले सपने हू॥ के होहू
रावाते चीलह के द्यौस मास वहू तो वचन ही वेहू॥ इहप्रका
को इइस्त्रि को वह ता सुंदर नायका है ताहीसे संभोग करिवेको
चाहत है नायक को मैं नायक की इस्त्रि सो वह न कोना तो लगा
यो याके घर वह श्रावे है॥ ताके घर इह इस्त्रि परस जाति है। जा
को सुंदर पति है ताही सखी वेन॥ यह वरना पुली पहह वह नायका
ता सो तू वह के मति है वीर इस्त्रि को भी वीर संबोधन करत है
अवनव अवनव वहू वीर विनास है॥ श्रिंगार है लक्षना सो श्रधं

बा

103A

तेरो नायक वाके घर जाति है सो वह संभोग करैगी सखी
लखै। अथ क्रिया चतुरा लछन। नासों अन्तमनली जी ए वहौ सखील
सो वहै जतन सोचै है। उदाहरन मेघ घर में ■ मास नहीं
वबे चीस मादा सो वर की या मास सो उरझ जानी।। कि
वा कुटनी नै नायक को सो वह नायक जो सो लगायो है वा
कै घर नायक जाति है।। तहाँ सखी बैन ची है। कुटनी ना
यक मास गुप्त्यिग है।। नायक को समझ के है। इहां जतन मे दे
खन है। और गुपत नहीं।। इति गुप्त लक्षिता।। अथ लक्षिता।। सो तो
सो कै वाक है। तिहि जो नैन नै तनता है।। लगा लगी करै लोय
नन उरमें लाई लाई।। २०६ इह नायका अपना पता नाहें। अथ
वने मन मनहीं सो कहै है। सखी सो कहत है वो हु मैं वन नहीं।। कवित्त
जो सो मैं कहौं है। सम नराय के उवारौं नैनै ननके मतला
ते भाती सता नायक को।। तनहौं न दिखमानौ रमहौ की
मति नानी अवकहौ हो तन रवसवछ नायको।। लगा
लगी उनकी नी और को लगाय दीनी लगन अगन
जाने कहा मन्त्रि जाइ वो।। कीजत मैं तन सों है त्यों त्यों है
तदु बनी सों सखि दून अवतान सतानौं ते ननताय वो।। २०७ प्र
सखी की उक्ति है। यां न राग में घर की या सो मैं तो सोक
है और कहो तो जिन पन लोचन को पताइ विस्वासम
तीकरै लगालगी हमारे नैन लागे वाके नैन लागे अप
तर है सो इन नैनन उरमें लाई लगाई अब वाको परहो
नातवन हीं तबवा को लख हो तहै कोई नायक को बैन
मन सो भीक है तहै। लोयन सो लगालगी तहां ही लोचा है।
अथ संगात ...

रस ॥ सो मनसकों बीत्यो पूनौ उघो लई उधारि ॥ ग्रसे हरि ग्र
रह रिझ्यो धार जानव नारि ॥ २७ यह नायक को अनु
सराय नासंवे ताकौ ठौर जानि जान सो वकरती है ॥ ल
साधी सवाधान करत है प्रति उत्तर ॥ सवैया ॥ नवीन न
फूल सरसी के संग वली मग गला बनि गोद भरी है ॥
केसव ली उजरि प्रवि लो कि उ सा सम सीग्र लि सो स
री है ॥ बीतराग को वन को सकौ सानो ग्रह उ घ उ धार लई लग
री है ॥ दौसरह है सोम ति धीर्ध रों ग्रव हू ती हारी करि त्यारि
सरी है ॥ रस प्रकास ॥ प्रगसता नाना प्रकार सो प्रीया
सखी है न सा मनस कौ सानको बताय करा के वनरूपा
सासो भी बीतराग पो सक्यो रहे प्रथ्वि उघ को भी उधार ली
नौ प्रगट रस प्रगटो प्रवभी हरि है है रत है नारत चित
को रह धरत रव हत्ये रोक नवाने की नीक चित कौल्या
कौलम ति है न दे उ सो प्रर हर है ॥ रस कर के चित को रो
कयो ॥ किवा मान न भी हैरान सी है न ॥ सन सा निश्चर
को कों प्रगट करत सब सनस को बीत्यो प्रसाम
दासानि मसा मको सरे प्रसाम को ब नौ न बवधू
हरवनौ उधो लई उधार ॥ उधा प्रमान की धरी सानै उधार
लई नाम उधर प्राई प्रकास मई हरी हरी उहर हरि नेरी
प्रहर कों वैरह है ॥ रस प्रगटो प्रवभी ताको रहर हरकर
वहतर है सो है नायक नाम है नारचित को धरता बो
बिलो बरसा प्रथ्वी धर धर हरि चित चाहरै है भी पाठ है ।

104A

सा धारके ॥ अर्थ धारन करै सो बाग अलंकार ॥ सो अग्र
कूं तन ॥ अर्थ व सूता क स दुमे दोतन ॥ मूल ॥ फिर फिर विलकी
है लखन फिर फिर लेत उसास ॥ सांई सिर कच स्वेत लौं बी
स्यो चुनत कपास ॥ २२८ यहां नायका ॥ अन्य सखा नासं देट
कैन सी हैर बीती जानि बिलखत है ॥ सो न बीस वी सोक रत्त है ॥ का
बाल मके सिरके सिरोरह जों सन ॥ अंस लेत चुनि चुनि तैसे
रह निकुरयो जात है ॥ बीतन है ता ॥ अन्य पस लस लगत तीवे
मानि दुबस लपू लज्जी मकुम लात है ॥ बारबार कहत ॥ अनी
सों के सीम लीर्यत के लके विलस कूं पलीयावलीजात है ॥ वीर
लिवि लखिके उसास लेत बालवधू लखबन बीतो न ॥ प्रति ॥ धकुला
त है ॥ २२ प्रकास ॥ यहां ॥ अनुसयाना नायका है ॥ कपास के खे
त संके तपे ताको नास देखि नायका दुखी भई सो बात सखी
सखी सों कहत है ॥ फिर फिर बिलखायके देखत है ऐर ऐर ठौर
घास्या सुदुख सों लेति है ॥ कपास के चुनत ॥ अवे हूं दखवी त्यो
नै संकूस्थिर गये पति दूसरा ब्याह करै नायका उनती
होई वा तिकमा पद में सोत तके संग्राम ते ताको चुनत ताके उपा
र लेत तके जैसे पूवहोय तैसो दुखें भयो कहां है नायक की
मूल ॥ फिर २२ ॥ निवेदन ॥ जो वाके तन की दसा देख्या चाहे
तन्याव ॥ तो वालिने क विलोकि ॥ वलि ॥ अवच कछु पचाद ॥
२२४ ॥ प्रोषित पतिका नायका व्याधि दसा सबसि खीवेन
नायक को लैचरि सैरो प्रज्जो जन ॥ सवैया ॥ पाहन की
पुनरी ज्यों परी परी वर सें ॥ अब का सास लेत न उतापे ॥ ज्यों
ज्यों करै उपचार वरे त्यों पहो हून लोगन को ॥ प्रति पावे ॥

वाकी दसा अब कैसी भई हरि ज्यो अवलोकयो ईवा रह तब प्रानै
तो वह से सुर हैं न न लाव लो ये अब घि मो चाहि ये नु वचानै।
रसप्रकास॥ विरह मे सखी रैन नायक सो मोकह वाके
तन की दसा है सो कहत है अब दु रह देखा है तहा सवल्ही तौ अ
वकासु व वावच के विलोकी ये नही तो कहे मे अवा यसूने प्र
फुलित ताय जी संभावना अलंकार॥ मूल॥ कहा कहा वा
की दसा हरि प्रानन के ईस॥ विरह ज्वाल जरिबो लखे मरि
बो भई असीस॥ २०० प्रोषितपतिका सखी को वचन नायक
सो॥ कवित॥ प्यारे मनमोहन नाते हरे विध रे ते वृषभानु की
कुमार भई सरीक सकत न है॥ जल बिन मीन ज्यो विकल
तलफति अति कहे कवि कृष्ण असे सी हाल ति धुनवान है
ज्यो ज्यो तकरी पर उपचारन की भीर त्यो त्यो व[illegible] ह नी
पीर रहे प्रांसन सु प्रान है॥ रसप्रकास॥ हे हरि प्रान
न के ईस अब वा कु तन की दसा कहा विरह की ज्वाल तो के
जरिबो प्रकास है मो किंवा ज्वाला मे जरिबो देखि के
मरिवो पर असीस भई कम मरि रह उपदेश हे रसप्रकासी
र वाद है किंवा विरह ज्वाल जरिबो लखो है वे इह जानी
ए॥ मरिवो भी तासो असीस भई विना माप्या की भई।
तिनु कु केन ह मास्यो अवे सस बेमे नहि आवे तो य
ह उ अनुमान पर लाग अदि मे मरिबो दोस सो अनमा
न्यो॥ लेस अलंकार॥ जहा दोष मे कीजीए गुन
कल्पना लेस॥ अनु ज्यो दोष मे गुन मान लीजी
ए॥ मूल॥ नैक न जानी परत यो पस्यो विरह तन छाम॥

रि षि

उठत हि या लो ना हरि लीए तिहारो नाम ॥ २८२ ॥ प्रोषितपतिका वि
रह निवेदन सखी वैन नायका सों ॥ कवित्त ॥ लाल तिहारे
वियोग ते ताके विहात घरी विधवासर की सी ॥ छाम भये अ
तही तन वाम को काम धरे सुधि बुधि हरी सी ॥ सेज मैं नैक हू
आनी धरै न हरि देखि है कंचन बेल लिखी सी ॥ राव रे नाम सु
नै इक बार ही नाद उठे दुति दीप कली सी ॥ रसप्रकास ॥ सखी
वैन नायक सौं यों प्यारी तरह सो वाकौ तन छीन भयो सपक्षो है
रूप सवाई है नैन कपोल भी जानी न ही परत देखिवे मैं नहीं आ
वत है ॥ हरि तिहारो नाम लीए सो दीप की तरह नाद कै उ
ठि के उठे है ॥ जानिये है ता मैं प्रान नहीं प्रकास उठै है ॥ जो लि
उठे है ॥ उरदीप अजव प्रसाद है जो लगे है तव प्रकास उठै है
नायका उपमेय दीपा उपमान लौं वाचिक ॥ गारुडैध
कसाधारन ॥ मूल ॥ सुवेस लसी सचकाव है आछौ भा
त ॥ जो वे सव चाहत लखि ताको उमहि नदेर ॥ २८२
मन कौ वेगमन तसो ॥ सवैया ॥ राधिका वा को वि रहतासे
सुधि जाहि दावर हू लोहरै ॥ रंक ते राउ करे त लाए क मै जो
तेहू नैक कृपा करहे ॥ जो कछु ताहि दीनी जग दीसनै
सीस चढाय कै कौन अपारै ॥ जो वे लखि सब चाहत है
अचत ताकेइ वदेव को जिन केरै ॥ रसप्रकास ॥ नायक नै
और नायका सौं आसक्त होइ कै ॥ दुवरी पछे र पा नाय
का को मन नायाहत है ॥ तहा सखी वैन नायक सौं ॥ वा
नायका कौ उमधु वदी यो है ॥ सोई दूसाउम० प्राव ने आ
पे वे अचवकाय लौ ॥ आछी भाति सो अहार कै अंगीकार ॥

स

ध्यौ

अंक रिकै जा नायका कौ उमहु बसीवे न्याहत है । अब ताकूं दबकौ
मतिके रेदु बाधाय वै यौ । किं वासौ ति रस मे जो भगवान ने दिषायौ
ताकौ सीस बढाय कै त्यौं जिन भगवान सौ रु बसीवो चाहत है
ताके हित वे दुब कौ मतिके रो दु बपेकै रु बसै तो विचित्र अलं
कार ॥ ३ ॥ छाप लें घिरी तजह कौ जे जतन विचित्र ॥ म्रल ॥ कहा
लडैते हग करे परे लाल बेहाल ॥ कहू मुरली कहू पीतपट कहू लकु
ट वनमाल ॥ २८३ ॥ यह नायका के नेत्र देषनायक की जु दसा भई सो
सषी नायका सो कहत है । जो जननिकै तेरी चाहहै सो सो ॥ सवैया ॥ हरि
चित ईजन वहे नवते उहमात रहौ चित वे तिरस्यो है । पीतपटी लकुटी
किन हू अरु मोर करीट कहू बिसर्यो है । अरु लिग ईवनमाल कहू की
सुधि हाल लखे मनमेरो उरयौ है ॥ लाडिली नैनन सं जु ते व कहा करे
देषतै लाल बेहाल भयो है ॥ इह प्रकास ॥ सषी नायक की दसा सुना
यनायका सो मिलायो चाहत है ॥ कहा लडैते लाड ते हगन कू
किया ॥ नेत्रन के मारे लाल बेहाल भये तन परे है ॥ मुरली आदि की
सुधि नही है निंदा करि कहत है ॥ नायका की अस्तुति होत है व्याजस्तुति
अलंकार ॥ व्याजस्तुति निंदा मिसैं जबै बडाई होति ॥ म्रल ॥ व ऊ कहा
वत आपुसे पाहवे गोपीनाथ ॥ तौ बलि हो जौ राबि [illegible] हे हाय न लबि
मनहाय ॥ २८४ ॥ इह नायका कूं हाथन की सोभा सषी नायक सो क
हत है ॥ सवैया ॥ चारहु फेरन की छबि पैर पहे तिरत्यो पलहू की
रजाई ॥ केर पारीन हू कते रुपरी अपउरीन भरी अति कौ मलता
ई ॥ रा बिहो हाथ न वै लीकै ता मल षै मन नौ वदिसौ चतुराई ॥ रूप
सयान कौ अवने मन स्याम मिसा कधरौ गरवाई ॥ इह प्रकास
सषी नायका की अस्तुति करि मिलायो चाहत है ॥ हे गोपी

वि

सो

106A

ना यह मग आपु सो चढे कसकत है। गरुवे भारी बोझ के आदमी कहा
वत है। तुमैं बदरागी मानोगी तु मवा के हाथ पन को लबिके मन
अपने हाथ राखेंगे अपने वस राखोगे ३ ॥ अर्थ ॥ परमार्थ पक्ष
पूर्वी ऊब ही तनक हम तवाक्य ॥ तो तुमैं बदोगो हमारो मन राखे
गो ॥ हमारो मनोरथ पूर्ण करोगे ॥ और हमैं हाथ मैं राखोगे हमा
रे हाथ पन को दे बिकैं ॥ हमारे हाथ मैं भलाई एक नहीं लिखी है ॥
जो राखोगे बदोगे ॥ संभावन अलंकार ॥ लक्ष ॥ स्वाधीनप
तिका ॥ हे मोहन मन गडि रही गा[illegible]ढी गढन अपालि ॥ उठे सद
न ट साल सी सों तन के उर साल ॥ २०५ यह नायका स्वाधीनपति
का कोवे न सखी सो ॥ सवैया ॥ छीन करी कटि पान सों पेट कुचै उर उ
ठे कुच कोप सवैनी ॥ कंबु सो कंठ कला धर सो मुख कोर कटाक्ष
न कछु प्रतिवैनी ॥ हे मन मोहन के मन बालि रही मन को लि
कला सब दैनी ॥ सों तन के उर माग सदा नट सासन्यो सा
लत है मृग नैनी ॥ २२ ॥ प्रकास ॥ सखी उक्ति तकरत है ॥ हे आ
लानि तु मोहन के मन में उबसे मो है ॥ ताके मन मैं गडी गड
न हीं कीन ही गडि रही है ॥ फेर तू कोहू न ही निकरै सो ति
के उरिये तू सालि उठे है ॥ नट साल सो तू तीरकी तरह अस
गति अलंकार ॥ गडे मोहन के उर मैं साले सो तिन के उर मैं
लक्ष ॥ विभ्रम हाव ॥ रही दै हूं डीठ गध री यसी मपनी यावार ॥
फेर तिक रिउ लटी रई नई विलोमानि हार ॥ २०६ ॥ ई नायका
के विभ्रम हाव है ॥ सखी नायका नाय कसौ कहत है ॥ स
खी सखी सौ कहै ॥ सवैया ॥ पास दै हैं डी धरी पेर सी जल सों
ज्जरी सो मपानी लई है ॥ कंप सो नेती लपेट दई उलटी क

१ (२०७)

107

रि येरजततामेरई है॥ मोहि तो लागति नीकी महा उरधरन प्रीतकी
रीतठई है॥ सामरी सूरति की रिझवार भई तहू वि सो मनि हारन
ई है॥ इरप्रकास॥ नायक कै मन नायका मगी कहै॥ तामें प्रा
सन्न है॥ वाकी नीयाये देखि सखी सखी सो कहै॥ दहे डी छि गनजी
कहे टीरही मपनी पांजामै दही डारकै मथै तामैं दही डारै॥
विना पानी सो भरी॥ रई की भाषा पूर्व मै उही ताको उलटी क
रि कै येरत है॥ नई नवी नवि लोम निहार है॥ आगे कवही
कृष्ण के देख्यो नही॥ दई मथनी याम डार्यो पानी डार्यो
रई उलटी करयो ता अलंकार॥ दहे डी के भ्रम वारमै उलटी
रई डारै॥ मत्त॥ कोरजतन की जेतउ नागरि नेसरु बैन
कहे देति चितचीकनै नईरु बाई नैन॥ २८॥ लछि ताके नै
ने देखि सखी कहै॥ सवैया॥ ते मन मोहन सो पिलये मन मैं
तव ही लखि नीकै कै पाई॥ बूझि ततो हि ही ये हित माननि कै मो
सो चलाव तिते चतुराई॥ कोरउपाय करै किन नागर नेह की
डीठ दुरैन दुराई॥ मैन न मानि रुवाई उहै दे निकहै चित की
चिकनाई॥ इरप्रकास॥ नायका सखी सो नायक की प्रीत
कै नैन रुखक रिछौ तै है, ताहा सखी वैन॥ कोरजतन करो ए
तो भी नागरि प्रवीनमा नायक तिहारे नेह दुरै नही॥ नेह
सों चीकनौ जो चित है सो कहै देत है या को चित नायक वि
षै चीकनो है॥ नेह भयो नई रुखाई कहि तिय मनरुखाई
रुछ ता नही॥ ॥ किंवा संउ ताको बैन॥ कोटि जतन करी तो
भउ हजो नागरी है॥ हमेव सिकाईवे मै प्रवीन है॥ ताको ने
ह दुरैन ही मैन न मैं नई रुखाई हमारे प्रगट दिखावत है॥

चित्त

ताके जहत्ता रोचीक नो जो चित्त है सो कहत देती है॥ किंवा नैनन
मे नहीं रहाई जो ताके नो चितको कहे देती है॥ इह नैनसो वीक
नैं को कहे॥ चित्त कारज उतपति॥ वि भावना अलंकार॥
सम॥ पद है को कहो परित्त साग बगिर ही सनेह॥ मन मोह
न छवि तारकन कहे कटाक्षनी देहें॥ २०८ यह नायक की उक्ति ता
है रहाई करिके सखी सो उदाहरति है॥ सवैया॥ पद है ते कैसे बहुरा
वति पातकहा ते प्रेम नो चीत घरि है ठानी॥ प्यारे के प्रेम मैं पा
गि रही प्रव हेतारी कहा समुझावे समजानी॥ कैसे उप्रजतर है परे
प्रीत सनेह की रीत रहे नहीं छानी॥ मन मोहन की छवि तैं
हकटी हकहे रहे देह कटाक्षनी॥ २२ प्रकाश॥ सखी वैन नहु
तासो हमारे पद है सो कैसे ते कैसे परित्त है॥ नायक हो
सनेह करिके॥ सगबगि रही है॥ प्रति मिलि रही है॥ प्रति मि
लिर ही है मन मोहन की छवि पुरत कटाक्षन के है उरही॥
है॥ प्रति प्रासन्न होइ रही है॥ ऐसो प्रेम मैं है॥ प्राप्त दूक दूक
मइ गागरछू रीकमई॥ किंवा॥ मोहन की छवि तेरे मन तारक
टी है प्रगट भई है॥ जो तेरी जो कटाक्षनी देह सो कहत है॥ कं
टक है रोम उठि आए है॥ ऐहे पुलकित देह॥ किंवा मन मो
हन की छवि को प्रगट करी है॥ कटाक्षनी देह नैन कहे है॥
कोनहीं प्रन संयोग उतपात्ता भी है॥ स्नेह देह द्वि के॥
रो भाव सात्विक सो काव्य लिंग अलंकार॥ सखी॥ मन
मति माने गुकताई कि ऐक पटवत कोटि॥ जो गनत ही तो
राखी ये प्रांबन भा दिग्ध जोर॥ २०९ यह परसात्विक राजनी

बोलती

कवित्त

तियै सखी के वैन नायक सौं कि तरह या ही छोड़ै यत्ति आबन मै
राखि॥ ॥ गुकताई मैं नीये न दइ जौ कपट विरह कौ टिक
रौ तउ द्योडौ यैन अभिलाखि रो॥ कीजीये हमारो कसौ
दीजी यैन जानकुं हूं वार वार वात्त समयराय यह माखिये॥
कहै कवि कृष्णा यही कैहूं तसयाने सव देखो राजि नी तकु
रप्यन मैं संषिये॥ जानी जो गुनी ही तौ आनि यैन और
उरनी के इअगोट करि आबिन मे राखिये॥ २२ प्रकास॥ नाय
का नायक सो मानकी योवा ॥ तो है॥ तहा नायक के पत्त की
सखी को वैन॥ ॥ तू नायक सो मुकताई उदाय दी मत्ति माने॥
कपट वत्त कोटियह पाठ है॥ कपट की कोटि वात्त किये सो ना
यक कपटी है॥ ऐसी तरह लोगन की वात्त कीये सो ॰ ते
रौ मां ॰ को जो हैं रुप त्ताके ॰ ॰ दे बवेके ली वे दद हैं॥ पह
ले तो देखो माइ मानिनी की सोभा लाल ताहुं तौ मनाव
लीजौ प्यारे हो जो विंयन मैं वालम सोरुठी वे ऐसो भी
है जौ जह विस्वास नाही है तो॥ जैसे गुन ही गुनगारत्ता की
तरह आछि नि ही मै अगोट राखीये॥ सो कराखियैन जरिव
यकरि राखीयै॥ परयायोक्ति अलंकार॥ परयायोक्ति प्रका
र है कछु रचना सो वात॥ किंवा आत्त समै नायक आयो है
नायका कौ रोसि देखि सखी कहत्त है॥ ए तो अब और वा ना
यका पास नहि जाति है॥ तहा ना ॰ यका वचन॥ हे सखी र
वा नायक का सो रन सौ उदाय गी मत्ति मानै॥ कपट की
कोटि वात्त किये सो ए सखी तेहि कहि ज्यो गुन ही जैसने

त्रमै ॥ डोरन सो राखिये है कछु हि विसेषन हि है यतौ बानाय
का कै नै त्रमै ग्रजोटि राखिये ॥ नेत्रनमै लाल डोरा वरे हैं ॥
सिता सित लो चनमै लोरि जालि की रचि कै लोना घेउ गमी
न लाल लरे समन कू जाल मै ॥ किं वा गउर वैन सि खहो ॥ कपट
की कोर वात कि ये ते ग्राप वि वे भकताई भवतप न्यमाती
यानै सिख भगवानको उनइ गारकी तरह ग्राखिन मै ग्र
गोटि राखी है नेत्र भगवान को रुप विसेस लगाय यह पालि
तार्थ जान कछ नी सौं सिद्ध न हि ॥ स्तः ॥ बाल वेलि सु
खी सु खदाय हरि मीर सघाम ॥ पेर उ रु ठ ही कीजिये सुरस
सी चघनस्याम ॥ २२० ॥ यह ग्रनुराग निवेदन सखी कौ
है नायक सो उर समान हू के प्रसंग मै संभवै ॥ कवित्त
हित कर जाको हरि लीजै चित चाल इह कित हूं उचित ताय
तो दुख दीजिये ॥ जानत है नीके प्रीत रीत कौ प्रवीन पन
की जैन गहर सुबदै के सुबलीजिये ॥ रावरे दुसर इ रह
सुखधाम है सो बाल वेलि सुखी जाय निरसत छिजिये
प्यारे घनस्याम जग जरनि निवारत है से चिवे कै सुरस दे हि
उरु ठ हि कीजीये ॥ इहग्रकास ॥ मानी नायक सो सखी की
उक्ति ॥ एसु बढ ग्रागे सदा त्रम सु बदेतो सखी सब सें कहू
त है ॥ तातें तुम सो कह वे मै ग्रावत है ॥ किं तासु बकौ बंदै सु
३२ बकौं करे ॥ तो [illegible] नाम भी सुबद कहिए यह बाल सो वे
ल लता है ॥ यह तु हारे रखोत ब सु छता सो रसा धाम ध्य
है पेर बाको उरु ठ ही कीजीए ॥ एह्वा वितु कीजीए सामं दकी
जीए रसमामज लकै भी है ॥ घनस्यां मे बाद त मे संदरं गो रस

सिंगार ताको सीव है। घनस्याम घनस्याम पद से उपमा॥ उ
पमान स्याम सो धारन धर्म वाचक उपमेय को लोप है वाल
वे लरूप कृ घनस्याम है ताको जोति सो बरनि कीजिये तो परिकर
उपर सो कृष्ण को विसेषन कीजिये॥ जो परिकरांकुर॥ उप
र सो कृष्ण को विसेषन कीजीये॥ तो परिकरांकुर॥ हे परि
करिअंकुर सो लीये जहां विसेषन होय॥ अभिप्राय जहां विसेषन में परि
करांकुर सोई॥ यथा॥ तरहरि सी हाँ हीं लखे बीच ढीअटा बृज
वास॥ कोई धो बेलि हे परी हे॥ प्रत्यक्ष अकाल॥ २५१॥ [illegible]
[illegible] कोवन नायक के सो उरबमान रूप के प्रसंग मे
लाल [illegible]
[illegible] जाने [illegible] ते तैसे
प्र [illegible] जनगरन [illegible] जीये [illegible]
सरूप [illegible] लिसरू [illegible]
[illegible] जीये॥ ३ नायका के मुखकी सोभा अधिकाई है सो
सखी सो कहत है॥ कवित्त॥ ही हो अटा चडु हो ससि देखन लस
जनी रहै आंगन हो तिन॥ और कित्तीक वृत्तीक वृत्ती वनिता
सब देखत चंद उदै दिन दिन॥ तो मुख देखि उछाहहि मरी सु दे हि जी अ
धीं य वेष उदै दिन॥ और नके वृत्ति मंग करे मानि सांच जो पाति कू
मानै कहेको किन॥ २२ प्रकास॥ सखी नायका को अस्तुत व्यं
ग सो कहत है॥ याको सच तो जीको वृत है है सखी तुम ति रहि जउ
सो हि में सखी नाथि जां हू है वाल अटारी वे मति चढै॥ सब ही स
व कोई ससि के उदै विना है॥ तेरे मुख को ससि जान कै॥ प्रस
मय में॥ अघीदे है सारी सो मुख कहू छू [illegible] है॥ ताको चढि

ज्ञा

के वंदकी समता परयायोक्ति अलंकार॥ परयायोक्ति प्रकार
देकछू रचना सो बात मूल॥ दिये अरघनी चैन लो संकट भा
मै [illegible]य॥ सुचत्ती के और सबै ससह विलोक है आय॥ स्वैर
यह नायका के मुखकी सोभा सखी लोक कहत है। सवैया॥ पाजि
निसाकर अर्घ दीये अवनी वोव लेव लि संकट माने॥ और
नकी दुचिताइ मिटे जिनसाधि मनोरथ ठाने॥ चंद इते उत सोम
सचंद कितेक किने चित सो विसमाने॥ वे अवतने वृत पूरे
करै सुर है चाहि अंतर दे उर आने॥ स्वप्रकास इहां रूपगेस
की लीये नायका की अस्तुति करत है॥ चंद्र के अर्घ दीये आ
रती पै चढि के आप नीचे बलो कै कटचठ धी के माने कहुं मे
जनकरि चढि ताकै जावकै॥ सु चित्त होय कै फिरचित्त होय कै॥
और सब नायका सखि कहा विलोकि कै॥ आइके इक ही बेर दोउ
चंद्रमा देखे है उत्पातकी संका माने॥ परियायोक्ति अलंकार
मूल॥ वेठाके उमदा है उत जल नवकु ने नउवाग॥ जाहि सो ला
ग्यो है याताहि ये उरलाग॥ २९३॥ यह नायका को देखि के ना
यका सखी सौं आलिंगन करत सो सखी प्रगट करत है॥ ना
यका है कवित्त॥ अंग मेरो रस जा भरि भेटत मो सो कहै उ
ठलाति ठाली॥ पानी की आगि सिरायन पानी सो री तबको
कवत इह चाली॥ जाति उतै उमदा हम सी विधना सो है दे बि
म सोवन मासी॥ जाहि सो ते रो लग्यो है यह कोहि तत्ता के
ही ये किम सो गत आसी॥ स्वप्रकास॥ नायका कोइ बिना

यकास्वेष्टा करैहै॥ तहांसखीवैन॥ वेष्याउ बेनायक ठाढे है
अरुउनकी ओर उमदाह उनमत्त कीसीचेष्टा करै कोई उमदाह
कोअर्थ तेरी उमेद ते ठाढे है करत है॥ हमारे गलेसो कयो
लपटात है॥ जलसोवआग सखु दुर्कै आगनहीबुझै है॥ जा
नायकसो तेरोही कोमनलाग्योहै कि वाम्या केहीसो त हृदय
सोतेरोमनलाग्योहै॥ आगे जिन ताहि छातीसोलगाई है॥
ताहीकहीसोलागे॥ अर्थान्तरन्यास॥ कहेंअर्थजहां वे
सीष ओर अर्थ सो मीत॥ तहां अर्थान्तरन्यास है बुद्धिजन
करत प्रतीत॥ यथा॥ अहहकै हैं न कहां क [illegible] तोसो ने दि
किसोर॥ वडबोलीकहातहोतहै पडे हगनके जोर॥ २८४॥ इहैं नो
दोवे सखी को वैन नायकासो॥ सवैया॥ साचीकहि मोसे अहे
कहांतेकहत नाहि तोसो कहा कहोमनमोहनकढाइ री॥ क्यो
हू वडोबोल अबै सोबोलत उमानभरी एतीरिसराहितेकहांते
गाहि लाइरी॥ कृष्ण प्राणप्यारे अतीहि ताके मनावतिहू करि मन
हार बहु आनके मनाई री॥ मानिक हौ मेरो वलि हौं लरि भिकरि
जोते तोहि भई वडी आज आपि द्विविद्वाइ री॥ ह्य प्रकास॥ माननी
सोसखी कीउक्ति॥ अहे नायका तिनकेहेहै निषेधको कहेहै॥
यह तोसोमैंदि किसोर ने कहा कहो कोन वचन कहेता है वलि
तैवडवोलीक्योहोतहै॥ वडबोलकछ कहत है॥ जो ताहि क
होन हीचाहीहो सो कहै है तो॥ वडेजोरे हगताके जोरसो वलमे
सुंदरतासराहराजीकरतहै॥ यामेवडीवातकाढनी॥ किका

के

म

तू तोहि मनावत है सु नाहि करत है इह नेडी वात तेरे मुख मा
फ वन नहीं है स मनावै है सु नही करै है ॥ किंवा प्रश्नोत्तर अ हेक
है न अरै क रै कौन है ॥ कहा कहौ तो सो नंदकिसोर ॥ क
हा सखी को प्रश्न तहा नायका को उत्त ॥ तो सो नंदकिशोर नं
दकिसोर तो सो है ॥ तो सौं रखास तो है ॥ इह बोलनि है फला
ना सो फलाना है ॥ तव सखी क्रोध सो करत है ॥ वउ बोली
है कौ हा ति वउ दृगन के जोर सो ॥ किंवा ॥ अरु है सु नही कर
त है ॥ नंदकिसोर उदास स्व वक उत्तर नो कहौ ॥ कहा ठसा
रे ई हुं आवो ॥ किंवा कहा ठसारो प्यार कहा हम हमारी
बराबरि है प्रीत करोगी अरे सो जा ... वउ लोगन के दृग
ण सो जहा जोर होइ मिलावही ई तहा बोली कहा प रिहा
स बोली ठोली का करत है तहा वडी वात तो कि त नीन
ही हो ति है ॥ वउ बोली प ह ला अर्थ मे लो का ति अलंका
र कहनावति है लोकवी लोकोति है सो इ ॥ जहां प्रश्न मे
उत्तर ॥ किंवा अलंकार ॥ दोहा ॥ मैं वह तो ही मैं सखी म ति अ
नुपम बाल ॥ लहि प्रसाद गीलाजु मौ तन कदंब की माल ॥
२२५ यह साचक भाव सखी को वैन नायका सो परकीया
लछिता ॥ सवैया ॥ को रिखवार न प्रेम पगी रंग लालन के
रंग लाल भई है ॥ कोन हैं क्री छवि देख उपाल की कोव
नितान विहाल भई है ॥ मो निरखी यह त्ता तेन अजु अपर
ख भई रिस लाल भई है ॥ माल प्रसाद को पावत ही सव दे
ह कदंब की माल भई है ॥ हरिप्रकाश ३ परीस खी न मै नायक
परकीया वैठी है ॥ नायक नें माला पठाई है ॥ सखी छंद माला

कोनामुलेवेदजीदे ॥ अोरवकेउ जाननसकै याकेसीये ॥ उपरीस
षीजेनिगईपरिहासकरिवेकंहहै तहे नायकालखिहत्ता हैना
लमेअपूर्वदह लेकनखूबे सीदे बिवमेन हो गइ ई ॥ भत्त
कोअर्थ ॥ वन्नागरिहासकरनवालीउपरीसषी ताकेप्रभा
वतेप्रीतजानी ॥ भेत्ताहिमेइहस्अपूर्वप्रीतदेषी लगन
अपूरवबालइह भीपाठहै ॥ लोहपायकेप्रसादमाला
तेरतन कंदवकी मालभा नायक वेगले वे संबंधतेना
यकाके रोमांचभये ॥ ताते कदंवकी मालाको समता कदं
वकी मालासी जानी ॥ ठाकुरके पंडासे नायकाकी
प्रीतहै ॥ योभीलगामेहै ॥ उपमानधर्मवाचकलुप्ता ॥ सै
डोरीलागी नैननसी कहूगोरी मुसकानि ॥ थोरी थोरी सा
कुचसे भोरी भोरी बात ॥ २५६ ॥ इहनायकाप्रेमनाय
कीकी जो चेष्टा देषीहै सो सषीसो कहतुहै ॥ कवित्त ॥ जादि
नते वह सांवरेने मुकसेननमे मुसिकाइगयोहै ॥ जादि
नते कविंकृष्ण कहे मन वाही के साथ विकाय गयोहै ॥
थोरीसी लाजगहेरहे तबीबनी भोरीसी बातसु नाय
गयोहै ॥ काननके अववालिय कोसुनिवे की डोरी
लगायगयोहै ॥ इह प्रकास ॥ सषीको उक्ति सषीसो मु
ग्धा नायका नायकने सुनिवे की डोरी वानी लगाई है
थोरी थोरी सकुचते लाजते भोरी भोरी बातकहै है कोअ
र्थ कहै है जानी ॥ गोरी कहै है नायक मुसिकानते ॥ किं
वा भोरी जो गोरी सो भोरी बातकहतीहै ॥ स्वभावोक्ति ॥ छेको
प्रासडोरी गोरी ॥ जहांतीनपद हे परे [illegible] समता प्रस ।

अर्थ॥ चितहै देखि चकोर ज्योंती जैसे भजैन मुख॥ चिनगी चुगै अंगार
की चुगैही चंद्र मयूख॥२४७॥ प्रवीनोक्ति सखी वैन नायका तें सने
मान कीयो स्तनाइक नैसुनलाल सनकी सब लीतें अमूर्ष है॥
के विरहानलतें रास है के सहे॥ अभितासल सेही को पथ नहै॥ दे
चित दै हो चकोर की ओर मजैन ही तीसरी बात सें मुख है॥ के
चुनगी चुगै अंगार की वै चुगे अमा ह मयंक मयूख है॥ ही
प्रकास॥ नायकाने नायक के ओर नायका सें आस है॥ सखि
कै मान कीयो है ता सासही वैन॥ चितदै चकोर की ओर दे खो
तीसरी बातसें मुख वाको नही॥ भजै इह दोइ वाकी वृत्ति है॥
के अंगार की चिनगी चुगै है के चंद्रमा की मयूख किरन चुगे
है॥ के इह विरहागिन को भोगि करेगो॥ के तिहारे मुखचंद
को भोग करेगो॥ अन्योक्ति मैं भी लगै है॥ केवि की रीते
इगो के राज्यस्तु मकरीयो॥ यह ला अर्थ में इ ख्यात॥ अर्थ॥
कवकी ध्यान लगी लखो पर घर लगि है काहि॥ डरियत अं
गी कीट लौं मति उहही ह्वै जाहि॥२४८॥ यह नायका नायक
के ध्यान मैं लीन ह्वै रही है सो सखी सखी सों कहत है॥ सवैया
[illegible]ति लोक तरें कवकी पर पुरन प्रेम हि पाय ढरिवो॥ पाहुन की
वतरी ह्वै रही विसरयो उर अंचल को धरिवो॥ ध्यान ही ध्यान
मैं जो कवहूँ है सो उहही तो कहा करिवो॥ याको घेरो अवल
गि है कोहि कहा गति है है इहै उरिवो॥ २२ प्रकास॥ साखी के
वैन पूर्वानुराग है॥ कव की चितनी वैरनी रह नायका ना
यक के ध्यान मैं लागी है॥ मेलखो होदे खो हा इह जो याको
घर है सो कही सा कोन सालगि है॥ वधि है॥ कोन याके घर
कोस लकके रेगा करस केगो उरियत है॥ भृंगी अरु कीटकु

मकी तरह जिनि वरहि नायक रुप ही है जाय॥ अंगी को ना
संसकृत मै डीखा॥ दर्पन मै पिरनी सो की रुप करि कै॥ आपनो
सरुप करि लेत है॥ गम्य उत प्रेक्षा॥ मूल॥ रही॥ अचलसी ह्वै मनो
लिखी चित्र सी॥ आहि॥ तजे सा जउर लोग को कहा बिलोकत ने का
हि॥२९५॥ यह दोहा कृष्णचंद्र का मैन है ताकी सखे वाचवीनो
ति॥ सखी बैन नायका सो॥ लखे या॥ बैठी है वा लखि सालाच बी
वर ध्यान मे देखत लाल लगो नै॥ सात्विक भाव भयो पर लोकु
लै लोचन ता सो सखी बचलो नै॥ ह्वै रही तरसी है मनो लि
खी चित्र की सी उतरी ग रहि मो नै॥ लोक को ह उर न लाज तजे अ
मि बवे हो॥ अब विलोकित कोने॥ इह प्रकास॥ सखी बैन नाय
का सो॥ अचल जउ तर सना ता हि तरी बी होय रही हो॥ मानो
चित्र को लिखी आहि को॥ अर्थ है लोक की लाज उर को छ
डे कहा ठ मका हि विलोकित॥ उत्प्रेक्षा॥ मूल॥ छाडी मंदर पौल
खे मोहन उति सुकुमार॥ तनप्याके हु नायके चितवत चाहर
निहार॥३०० यह दोहा कृष्णचंद का मैन है ताकी सखे पाप्र
वीनो ति॥ सखी सखी बैन॥ कवित्त॥ वृजमै प्रगट्यो हरि अवा
र महाजस धाम नंद के धाम हरी॥ परे मोहन नामि की नि
हारि॥ त्रिया न सँवारति है परउरवान परी॥ ही मोहन देखरी आ
जे लखे उति मंदर पे सुकुमार करी॥ तन प्याके रु नाहि पवै
चित मैव निहारवे नागरता बसी॥ इह प्रकास॥ सखी सखी वै
मंदर घर मे ठाढी मोहन को देखे प्रेम सु पगाइये॥ न ही तो मो
रु न को देखे उत नाई वहे उती॥ आप जाती परउती॥ अधिक
पद होतो॥ किं वा मन मोहन की उति को सुकुमार सो देखे है
ता करि सखी तनप्या के मीन हि पवे चख मे न॥ अंबत सी न निहार

देखो। किंवा संदरवर सुकमार नायक कौ ठाडौ है ताकी उत्ति मै हित
देखै है ग्रीवां वेस है ही पाछि है तउ नैन मन न की प[?]वै है॥ वि
ते बोत्ति। मूल॥ पलन चलै जब सी रही पाछि सी रही उसास॥
ग्रवही तन रितव्या कहा मन पठयो वह पास॥ ३०१॥ यह विरल
गन है सखी नायक सौ कहत है॥ कवित्त॥ सासन उसास तहै नास
क संभार है नग्रवे सी [?] है वे कौन धोवौ है ति तमै है, तैर ही॥ वि
त है सीतो है मनरी तौ मोल गहै मन ग्रवही है सुधि बुधि कहि
क्यो बिनुते रही॥ विवसी सी थी डरी जा कित पाकि तन ईव
लक नगति [?] सी चकित चित तेर ही॥ कहै है रहे रीम ति विसरी म
वे सरति है जाते री यस्गा ति ता सि पछि तेर ही॥ हरि प्रकास॥ स
खी कि उत्ति। परिहास कर तपर कीया नायक सो पलाव नही
वलै है॥ जक सी जउ सी है रही है॥ उसासिन स्वास सो भीग
किसी रहे है॥ मंद मंद चलतो है ३२ २ ग्रर्थ॥ ग्रव ही राति नही
भई दिन ही मे तन सरीर कौ रित ठयो खाली कीयो॥ मन कौ कह
पास कौ न के पास पठायो॥ पर नायक के पास॥ किंवा पति के
पास उपरी है २ ग्रर्थ॥ जक्की सी पक्की सी ३ है सीमा नौ के
ग्रर्थ मे है॥ ग्रकुन्नास्पदा वसुलोचना॥ मूल॥ नाक चढै सीवी
करै जिते छबीले छैल॥ फिर फिर भूलि वहै गहै पियकक
री ली गैल॥ ३०२ जाती सखी कौ वैन सखी सो॥ सवैया॥ स
खी जत चले दो अंतीर पवं पउराइ नै पायन रंग ढरे॥ उहु प्या
रे करी रीझ रि साम नि प्यारी की मोद नै कयो हूवे बाम दरै॥ ग्रं
ति नाऊ चढे सर्व छबीली तीया जितनाक सकोर चढ़े सीवी करे
कविकृष्ण कहै या रस्चाय पवग्यो जिति माननके प्रीतम पाय धरै॥ ह
रिप्रकास॥

सषीसषीसोंउक्ति॥नायकअटारीपरवैठोहै एकराहघरकोजा
तहै॥एकराहनायककीओरजातहै॥नायकाघरकोजातिहैना
यककोदेषिकैअपनेघरकीयादकैलीकांकरपांवमेंगडे
तवनायकाकीनाकचढे सीवीसीतकारकरैहै जितैंआ
ओरकोछुवीलोछैलाहै पैरि पैरिनहलिवहजोहैपीयकीव
करीलीगैल॥कांकरजामेंकहूनाहै॥ऐसीराहकोगहै है
किंवानायकाअटारीपरवैठीहै॥नायकअपनेघरकोजा
तिहै॥औरअर्थवैसेही॥नायकाकोनाकचढायवोसी
वीकरिवोत्तासोनायककोमनहरलयोपैरपैरनहलिकै॥
ऐसोजोनायकसोनायकाकीककरीलीगैलकोगहैहै॥
ताकोकारजनायकमैंनहीहै सीवीकरिवोनायकामैं॥अ
संगितअलंकार॥ऐसा॥हितकरितुमपठयोलगेवाविज
नाकीवाय॥टरीतपततनकीतऊचलीपसीनान्हाय॥३०३
यहनायकाकैविजनाकीवाइलगेनायकाकैसात्वकभाव
भयो॥सोसषीसषीवेन॥कवित्त॥मोरपषावनिकोरविकेहि
तकैतुमव्याहमप्यारेविहारी॥ताहिवितोकितही तियकूतानतो
पनुहरीउमगोमनमारी॥हेतौविलोकिऐवेभेरहीअवलो
नकहूगतिऐसीनिहारी॥वाविजनाकीवयारलगेवहन्हाई
पसीनाकेरंगमैनारी॥ऐसप्रकास॥दूतीकीउक्ति॥नायकसे
वैलेवाकोहितकरितुमनठायोवाविजनामैंतुमलिपेपे
ताकीवायतेंनलगेसोतनकीतपतगरमीटलीतऊतोभी
सोताकोप्रहेदसात्वकसंवंधप्रतततेलहिकहूरेककविवंधान

विरुद्ध तें कारज होइ विभावना॥ कारु कारन तें न बैं काज होइ
य विरुद्ध॥ मूल॥ हरि हरि विरि नरि उठत है करि करि ये की उपाय
वाको उर नलिनै ज्यौं तेरिसे जाय तो जाय॥ ३०४ प्रोषितपति
का व्याधि दसा विरह निवेदन॥ सखी सखी नैन नायक सों क
हरि हरि रटत विरहानल व्याप सब लवरि वरि उठै नेर जात जरस ये
करि करि ये की है उपाय सब व्रासी ग्रव वक छन सहाय उर सो
व गार भरीये॥ एहा न लिवे दग्र नरा वरे लू जे सहि तो वर्वे वाहा
लै वा सि वा की पीर हरीये॥ ताको नाव टारीये जह धर्म उधारि
ये जह निवारि ये गहत कहन ताके ष्वार ढरीये॥ रस प्रकास॥ स
खी की उक्ति नायक सों हरि हरि क विषै सो य हाय जमीये॥
किंवा है हरि विरह की अगन सों परिवरि उठत है॥ ताको हर
रि विरह की अगन को तू हरि॥ रूर करे रुग तो उपाय सीतल
करिवे पकी वा नायक को ज्वर है वल्ले नायक विसेस वे
धनं॥ वल जाउ तिहारी वैद्य जो वैद्य की तरह॥ वैद्य जे सेर
सजो औषधि आनदमेर का प्राद दे के बचावे है॥ जो है तेरे रह
सो उहार सके अर्ध प्यार॥ तेरे प्यार सों जीय तो जाय औ
र सों न है जाय॥ किंवा जो तू उहां जाय तो तेरे रस सहं जाय पर
सामै औषध॥ संभावना अलंकार॥ जो यों हूं तो यों करतै सं
भावन विचार॥ मूल॥ नाम सुनत ही हूं गये तन लाग औरे मन
एऔर॥ दवैन ही चित चउर [illegible] अब चढाये त्यौर॥ ३०५
यह नायक को सखी सो रिस कै उकर के सनेह दुरावति है॥ वे
नाउ सुनें ते चित की वृत्ति और त्रिया और ही भांत भई या ते

वाके

सखी नैं नीकैं भांतनकैं जानी नायकाकौ सत्ता सौ सखी बैंन॥ क
वित्त नेह की रीति यहै नित नागरि नैंक लगी निचरैन ... बौरे
नामकहु नेंग भयो मन औरहै औरभयो तन वैतन नैं रैं॥
कोऊ कहै सांसत राव बिलोचनि हा तनक ता अवत्यौ पत रैरैं॥
अैसो की यो कहु कैसे दुरे हरि ष्यारे कौ प्रेम चढ्यो चित तेरैं॥
६२ प्रकास नायका कौ सनेह नायक विषै सखी लषिताकरि क
हत है॥ किं वा धु मान मैं सखी बैंन॥ नायक कौ नाम सुन
तही तेरो तनमन औरैं है गयो॥ तनु सुलक तमयो मनरा
जी भयो अवतपोस्च ढाये ह प चढाव सो चित मैं चढ रह्यौ है
नायक॥ किं वा नायक के सनेह सो दवै है॥ नहीं है है नहीं
मै जानी गई लखि ता सू हु जानी यो॥ औरहि नतनम
न और तरह॥ अेद कावित सवोहै॥ अरै वद जग हाकी जी
यो अधिकाई बूढत॥ स ला॥ नैकु उहि न ऊदी करि हरष
ऊदे नव माल॥ उर ते वास छुट्यो नही वास छुटे हू लाल॥
३०६॥ यह छवा नैराग है नायका की प्रीति सखी नायक सौ कै
है हमारी माला ह्लो अैसो हित मानत तोहु मनो कछु लाल
सवैया॥ जोहि न वा रहि अली नवेद बतारी रहि ये हितमा
नकै भारी॥ अपने हीय ते जु उतार दई तुम फूल की माल
र साल बिहारी॥ ताहिन तेव हू वारि रवार ... के प्रानन हूते
लगी अतप्यारी॥ वास गई कुम्हलाय गई तै करी नित उर
ते अतिप्यारी॥ ६२ प्रकास इती बैन नायक सो हरि

जोहमभामासादिनीउद्वहूनायकानेनैकोप्यारोकालकीज
कीनकरीपहरेहीरहेउरतमालाकेबासरहनोछूटोनही
बासजंधछूटेहू [illegible]दीजेदीवा सुबासपदपिरंप्राप्यायतेज
मकु बासछूटै बासनहींछुटै विरोधाभास॥ भासै जहां विरो
धसोवहै विरोधाभास मूल॥ परसत यौंछुटत लखिरहत जसखि
कपोलकेध्यान॥ करसेपीयपाटसविमलप्यारीपठयेपा
न॥३०७ टीका॥ कृष्णचंद्रकामैनहीं ताकीसवैयाप्रबी
नोद्वि॥ सखीसखीबेनप्यारीनैपानमैजेहै॥ सवैया॥ रप्रीति
रप्रानंदमानमहाछवि सोजहांबैठेहै सोससिंगारकीये
तियपेपठयेरंगतारलपानप्रवीनतहांसखीप्राईलीये॥
हरिकेकरमेंउनप्रनदयेलीयेप्रादनसोहितमानजीये॥
पारसेतनपोछरहे सखिनीउकोलानिकोकरिध्याननीये
हरिप्रकास॥ सखीसखीबेन॥ पाटसप्यारीसलाईजामेगुथे
सेविमलानिरमलहि प्यारीनेपानपठावतीहीपानकोना
यककरिमेलेकेपरसतहैरप्रनुरागसहूतहोतहै॥ यौंछू
वहूनायककपोलकेध्यानसोलमिकेपानकोलखि
रहतहै॥ ग्रैसेहीवाकेगोरेकपोलहैस्मृतिप्रलंकार
स्मरनग्रमसंदेहता लछननामप्रकास॥ मूल॥ दू
तीवर्नन॥ कालवृत्त दूतीविनाजैरैनग्रौरउपाय॥ फि
रवाकेॐ[illegible]रेवनेपावेप्रेमसहाय॥३०८ टीका॥ विक
नीतप्रेमकेपरियकाकरिवेकोउपायकविउक्ति॥ कवित्त॥ मंद
रलदाउकाबनायाचाहेकोउसोतो विनाकालवृत्तको
हूवनततनवानहै॥ त्योंहीप्रेममंदरकोकालवृत्तदूतीतोह
नीवदीयेविनकहाकेसेठिकुठानीहै॥ वहैकविकृष्ण

घरवजू हे पदै उतवसकु सप्रवीन वहवा तह उर प्रानि है॥ बात
हू तर ह त्ती वीच राखि एक प्रांकु दुइ ये न जो लौ तौ लै सुमहि
की हानी है॥ इरप्रकास॥ लह तार त्ता नायका मन में विचार
करत है नायक के मनाप वेका मिटी के कानाके उ ज
सो वनाव त है ताको नाम कला सवू ता ता मे उ मम न नुनत है
कालवू तसो इहै रुत्ती ताहि विना प्रोर उपाय सो उ मम न
नहि होट॥ प्रोर सुझा है जो नायक तासो सनेह वी नहि
होट॥ पेर त्ताहि कालवू त प्रोहू त्ती रारे व ने हूर कीवे वने
प्रेम है हो सदाव त्ताके पाके पकुम वे वर प्रयोद हप का उ
लेकार॥ हे रुपक है मानको मिलत द्रुप प्रमेदा॥ प्रछिक
न्नू नसम नुइ नके त्ती नत्ती नइह मेद॥ मूल॥ प्र
थिमारका॥ मन मोह न सो मोहु कै रहे घन स्याम सम्भार
कुंजविहारी सो वहरि गिरधारी उरधार॥ ३०५॥ यह मत्ते
को वेन॥ मन सो प्रहमान नत्ती नायका हे सखी वे नाक वि
शेषो कू सो मान मन मोह न सो मोहि करि सुघर वचन घन
स्याम को संभार लै॥ कुंज ने न कुंज के विहारी सो विहार करि
गिरवरधारी सम्भकारी उरधार लै॥ यह ति हू के चित्त वृषा वाद
के रचावे मति कहै कवि कृष्ण इस मत्ता विचार लै॥ पियरनर हू
तो न व जो वन यवन तान जानि वृजी वन हे सांचो प्रानि पौं ले
इरप्रकास॥ सखी वेन मानिनी सो॥ नायका वास है॥ इरप्र
म के धूत रके सगा नमे॥ तेरे मन में कछू मोह नही प्यार
सो का प्रपंच सदाय॥ सो रहे मे सप चकरि कहत हा रघनक
ठेर ता सर ता है॥ स्याम श्री कृष्ण बड़े हैं तिने निहार हृदे षि

115A

कुंजविहारी जो पर नायक है तेरे संगमें कुंजमें बहुत वि
हार कियो है तासों तू बहिर विहार करो ऐसे सखी कहत है॥ गिर
जो है दूसरी वानी ताको तू धार धारन करो मानो तो उर
मे नायक को धार धारन करि राखे छाती सो लावो रह स्पर्श
किंवा स्याम जो है कुंजविहारी तासि निहार के विहरि विहार करो॥
तोहि सो सपावे है॥ गिरसब्द सो साधव संना लछना करि श्रव ते
वर्णन है॥ कुच गिर रूप प्रतिपन्न है॥ गिरधारी जो है उर तातें तू
धार धारन करे॥ रोप्य मान जु दूर हत है रोप्य विषय न है है व॥ रोप्य
विषय जाने ता परे साध्यवसान सोइ॥ कुच विषे गिर को आरोप्य कि
यो॥ गिर आरोप्यमान कुच आरोप्य विषय॥ जाको राखीये सो आरो
प्यमान जामे राखीए आरोप्य विषय ठिकानो॥ उपमेय की प्र
तीत जहाँ उपमान ते होय तहाँ रूपकातिसयोक्ति॥ अप्रतसयोक्ति॥
रूपक जहाँ केवल ही उपमान॥ कनक लताप स्तंभ आधारे ध
नुष देवान॥ गुरु सिष को उपदेस करत है॥ मनमोहन सो मोहि
कहि के प्यार करि मन को मोहित करे है ऐसी उनमे सक्ति है॥ सुं
दर देखे वा है तो वह घन स्याम है बहुत सुंदर है॥ आनंद दा
यक है॥ जो विहार करिवे को चाहत है तो सब भाव करि कुंज
विहारी सह तव हर वन मे॥ अनेक तरह की क्रीडा गोचारण
आदि करि गिरधारी कहे है इंद्र के जीतन वाले है ताको हू
उर धारि हृदय मे धारिबो न करि॥ तोहि को हू सो भय न है
गो॥ किंवा वारनाम सो नायक को संत गाजनादि॥ मनमोह
न सो सुंदर अरस्य वनितो गजता तामो सुंदर सो पगो सो
भय हापगो सो मन के मोहे॥ गोधन स्याम सो दाताज
ताको जे सेधन जस के वरसे है ऐसे ईह संपत को देत है॥

कुंजविहारी मैं केलिकला मैं प्रवीन जितायो। अरु विहारी मैं।
सम्पति को अर्थ कुल वस्त्र चाहिये। धनी बिना विहार नहीं सं
भवै है॥ अरु सु बिरुद्धि धीजन तायो सु चित्र सिंगार मैं ताको सु वि
चार होत है सोई वहत है॥ सो नर नारी होत है विहारी को अ
र्थ॥ सुचि को अर्थ पवित्रता लीजिये॥ जो मनमोहन नंद के सो
ढोथ॥ सो पवित्र होगो सो मनन को मोहेगो मन को आछो लिग
गो उहि अर्थ॥ अपवित्र सो गत लानि उपजै है॥ उथ्रा कुलीन है॥
याते मन को आछो लगै ... गिरधारी को अर्थ गिर को धा
रन करि। व्रज की रक्षा करि॥ इंद्र को मास्यान हो वाते धिमा तजा
नीए॥ अरु इंद्र को खातिर मै नहीं लायो याते इंद्र की पूजा उठाय
दीनी इंद्र क्या करेगो याते अभिमानी जानीए॥ ऐसे नायक
सो विहार उरधारी॥ अभिमानी त्यागी तरुण केलिकला नप्र
वीन॥ भव्य क्षमी सुंदर धनी सुचि रुचि सदा कुलीन॥ परिकर
अंकुर॥ साभिप्राय विसेष्य जहं परिकर अंकुर नाम॥ मूल
मोहि मरो सोरी है ३२ कि ज्यों कि इक बार॥ रुप रिझाय निहार
है। ता मैं नाहि रुवार॥ ३१० यह नायक को काहू पसखी नायक
सो निवेदन करत है॥ सखी को प्रयोजन प्रीत करायबो। सबै
सुंदर जो बहोत है तो तिहूं पुर मैं रहु नंददुसारो ई है॥ अरु या मै
कहा करन आवत है कछू प्रेम को पंथ नियारो ई है। नैकु रसोसा
हूं ज्यों कि न लाय लो मोहि मरो सो जिहारो ई है। रिरुवार है तो
ह गरी रहे गे वह तब रि सामन वारो ई है॥ रुप्रकास॥ सखी नैन
पर कीया सो॥ मोहि मरो सो है॥ तोरे नैन दै षिके॥ रीजैं गेर
रोसा मै उठि के ॥ क वार रह ज्या को वह नायक रुप करिके रिझ
मन हारे है॥ ताते रैने नेरि रामन हार है॥ रैरि रामन हारा॥

स

116A

परिरवारजप्याजोगकोसंगहै तमप्रलंकार ॥ अलंकारस
मतीमाविधजप्याजोगकोसंग ॥ मूल ॥ गोपअयावनतेउवै
गोरजछाईजै [illegible] ॥ चलिवलिअलिअभिसारकेंमलीसजो
वीहेता ॥ ३१ ॥ नायकाहेतसखीवेन ॥ सवैया छोडिअयावन
गोरसलईकोउठीसवगोपनकीअवलीहै ॥ छीनमईछबदसीर
वकीछविगोरजपूरतगैलगलीहै ॥ चंद्रकलाप्रगटीनअजो
वलिकौनकरैअभिसारसलीहै ॥ मानिसुहागनमेरोकहोअभि
सारकीसैलसजोभलीहै ॥ इहप्रकास ॥ सखीवेननायकासो
दरवाजापरलकराडरेदेतिहै किवातवतपोसटेहेहै ताणैसो
गवेठहे ॥ सोअपाई ॥ गोपअयावनतेउठेहै गोरजगेलतारह
मेछाईहै तजातिकै देहिमहीपरेजीअभिसारकेहप्रलि
हसखीवलिजाउं मेतेतेहनायकतासहचलिहजोवीसेछ्यास
मेकिसेलागिरवोमलीहै ॥ गोरजसोगोपनसोउठिवेकोसे
तकोसमर्थिनकियेकोचलिगअलंकार ॥ मूल ॥ सघनकुं
जघनघनतिमरअ[illegible]कअंधेरीरात ॥ तऊनडरहेस्यामउह
दीपतिसासीजात ॥ ३२ ॥ टी० नायकनायकानिकुंजकुंजयेबे
ठेहै ॥ सुउरसखीनायकसोकहततेहै ॥ किवानायकअंतरंग
सखीसोकहैहे ॥ किवाकोकुंजमेरहेचलिमहासखीकोव
दूति हवोसंगहै ॥ सवैया ॥ रेनअंधेरीमहरोपस्यातहेकलीकुंजस
वेतहपुंजनछाई [illegible] घनेछमकेघनवृंदअमंदमहेनमैस
रसाईं ॥ सोविकसाजितिगारकेजयपआईसमंकहीयेव[illegible]रा
ई ॥ दीपतिबासमदीपततासेतऊइहवातसदेरैनदुराई ॥ इह
प्रकास ॥ नायकअपनेसंगनायकाके [illegible] सारकरतमेहै ॥

तहांसखीवैनसघनकुंजनैहेघननिबडघनमेघकीतिमरअंध
कारहे याते अधिकअंधेरीरातहैहे स्यामयहजोदीपसिखा
सीनायकाहे॥सोतुम्हारेसंगजातहे जोभीतिअसस्यामहे तौ
भीनहिंदुरिहै नहींछपैतौजौदुरिबेकोकारनसघनकुंजअ
धिजो भीहे॥तोभीनहींदुरेगी॥विभावनातिसकीहै॥द्दीति
नमालंकारयाहृयदेतेनायकाजानीयेनायकाउपमे
यदीपसिखाउपमानसोवाचिकनहींदुरेहैधर्मी॥पूर्णोपमा
उपमेयलुप्ताहोतहै॥उपमेयलुप्तालंकारप्रथममैनहींयहपद
सोनायकालीजिये॥मूल॥फूलीफालीफूलसीफिरत
जुविमलविलास॥भोरतरैयाहोहिंगेचलततिहारेपास
३१३॥यहमानवतीसखीनायकासोंकहतहै॥कवित्त॥निरखि
निकाईतेरीहोंतोरीवकाईबलितहूंअलावेसकुचमे
रोकलोकरैगी॥तेरीतनदुतिआगेवतीनरतीकलागेसां
बीकहूंकोलोगऐसोहठउरधरेगी॥फूलीफालीफिरतसिंगा
रसाजैमातहेरीतेनवेउमानकहितरधोकवहरैगी॥तोर
कीतरैयासमरहियेहैपियारीसबहितकरिजवरहूलियारेहरै
गी॥इत्यप्रकास॥सखीवैननायकासों॥फूलीफालीफूलस
सीकींअप्रोविमलनिरमल॥प्रकासजावेतोनायकातेरेआ
गेओरप्रातसमयकीतारासीहोयजप्रकासहीनहोय
गी॥तोकौनायकेपासचलततहैसोतिनकेसोदर्यकहै॥
नायकाकेरूपकीअतिअधिकाई॥व्यंगिउपमालंका
र॥मूल॥उजासरददराकूसखीकैमानकरतवितवेत॥
मानुसमदनछिनातालकेछहुंगीरछबिदैत॥३१४

117A

यह मानवती सों सखी को बैन॥ नायका को मान छुडायवे प्र
जोजन॥ सवैया॥ बलि प्रातु हू मनी राकु की रैन ति हार
सों मोहन बस जात हैं॥ तेह दे सिरीजू पु उदोत भये अब नाइग
है छवि छीजत है। अवि लोकि तज हरि सैं लि ति पानिकों
मानिक सूं उर भाजत है॥ उह मानों मनोज महा छवि तपास को
मानिक छवि त्र विराजत है॥ इति प्रकास॥ अभिसार कराव
ति है॥ किंवा मान छुडावत सखी ताको बैन॥ सरद कुआर
का तिक ताकी रात हरन आसी ताको ससउ स्यो है चित में
चेतु ज्ञान को न करै जो तो हि कर तज्यो है ता को पायि करि
कै हे जानी ए॥ मानों मदन राजा को छार गौर छत्र हे
छ विदति है॥ सासि में छत्र की संभावना॥ उत्प्रेक्षा अदा व
सु तो जा॥ मूल॥ निसा द्युति प्यारी नी ला की तरह स्वसी पति
गो है॥ कहो दुराई को दुरै दीप लिखा सी देह॥ ३०४॥ यह
नायका कृष्णाभिसार कासखी सिखावत अंग की दीप्त को अब दे
का॥ सवैया॥ कारी निसा की अंध्यारी महा अब तैसी ए स्या
म घटा सों छाई॥ प्यारी तू कुंज विहारी पे जाति सजी तन मे
चक सारी सुहाई॥ घूंघट मैं मुख चंद दुराय कहे कवि कृष्ण
पहे चन राई॥ देह की दीपति दीप सिखा सी कहो उह कैसे दुरै
गी दुराई॥ इति प्रकास॥ चलि की ठौर वसी प को है॥ गर ल
छ ल छ उरहोत है॥ निज रछ अनुसार॥ अभी सक है
अप्राध्या देहा मे स्व गर्वि ता को उत्तर सा ति अब धे री है॥ तुम नी
लवस्त्र वाहरि कै तिय के घर विलि॥ चलो जानि ये का हा नाय
का वैन॥ हे सक है ता दीप सिखा सी दे है है॥ इमा री स्यो छवि
पाता सो को करि कै सछि पलकै॥ यह सी सखी बचन॥

ततव नायकाव चन सखीनायकासौंपद है ॥ ऐसे समैमै नायक के घर चली हैं रूपछपाय कै ॥ यह दीव सिबासीदेह कौं कहिदूरेंगी न यक हौं नाही उरि वौ साधारण धर्म पूर्णोपमा दूसवे कों है तहै उरि वौ कार्य नहीं हेयं जो ॥ विसेषोक्ति अलंकार ॥ विसेषोक्ति जहां है तसें कारन उवजे नाही ॥ कयों करि दूरै नहीं ॥ उरैगी कारन सेपावके जोक्ति ॥ वचोक्ति स्वरश्लेषासो अर्थ ती जब होय ॥ रूप छिपे छपाकरि छि तहछि येतम सखि हरनसंभार ॥ हसत हसत चल सखि मुखी मुखते घूंघट टार ॥ ३१८ यह नायका कौ मिसार का है ॥ याह मै बंध मान्यसतभये है सखीत तवसखी सवधान करत है ॥ सवैया ॥ तेरे कहै सज सुन्दर सिंगार सिंगार चली अली होग जेमंद है ॥ अवके सौ मन अलि अधघकी बही दे बिछवा छितते तम वृंद है ॥ घूंघट कौ पट टार के प्यारी उघार दे तु अवत ने मुखचंद है ॥ सौ वह सी मति जो हूं हसी करिये बलि कैमि लरी नंदनंद ॥ रसप्रकास ॥ सखी की उत्ति अर्थ अभिसार कासोछपाकरि वेदमाहि ये दै ॥ छपाइ हनी पाठ है ॥ छितत मह भितता मे अंधकार छावे है ॥ छायो है भी पाठ है ॥ तसखि हरन डेरे मत संभार चे ति करि उनरा क स्वप ॥ सखि मुखी ससि सो सुंदर मुख वाचिक धर्म लुप्ता उपमा अलंकार ॥ सला ॥ अरी बरीसट पट परी बिंद्य गावत्य गहैर ॥ संग लजे मछपन भई आगन गली अंधेर ॥ ३१९ ॥ यह नायका कृष्णाभिसार का अवनी रात की वात सखी सो कहत है ॥ चंद्रो दय भई सुसौरन की गली छिव लई यापद ते रूपगर्विता सुभई ॥ सवैया ॥ स्याम निसा लखि तें सोई साजि सिंगार कै सौ पति तौ सवली री ॥ त्यो अधिगै सउदो तम भयो ससि देखत मैं मत सोच रली री ॥ पंक जछाडे सु गंध के सौ भलगी संग भौरन की अवली री ॥ ताहि समै म

मभा तिन आयके छाय लई जन्ह कुं जगलीरी॥ हरप्रकास॥ अभिसा
र ओदिन कियो चेता ताकी रकीक तसखी सो नायका कहत है अ
रीसखी षरी अत सटपट व्याकुल ताषरी तादिन॥ आधेपंथ
मै विधु चंद्रमा ताकों देषिके॥ एक तो हनमा रामु षको प्रकास दूस
रो चंद्रमा उज्या॥ येते परी सटपट॥ औरु आधो पंथ कहत षवेकी ठौ
र नहै याते प्रकास भयो॥ अंगको सुगंध वाय फूलन को छोडि
संग मै लै जे मधुप भौरा तिन मै भागिन सो गसी॥ किंवा कुंज
गली ताके अंधेरी करि लीनी॥ मधुपनि गली अंधेरी करी॥
याते प्रहर षन अलंकार॥ तीन प्रहरखन जान न दिन तांहि त
पाल जोहेय॥ किंवा मानन्नी सों सखी वेन॥ रे मानन्नी तू बरी
अति अरी है॥ हठ कररही है॥ याते मोहि सटपट व्याकुलताप
री॥ विधु श्रीवत्स लांछन कृष्ण कों है॥ विधु तोहि आधे मगमे
लात हुवे ठेतो हि हेरि रहे है॥ देषिरहे है॥ किंवा विधु को हरआ
धे मग हेरदेषि आयो जानो पहर अर्ध॥ आधे मग को नठो
र सखी ठिकाना॥ वताये है॥ जादिन तें अभिसार कीये जाय
पी॥ वदमनी सों भौर रहत है॥ किंवा उडिके फूलन के संग॥
लगे जे मधुप तेरे अंगको सुवास तिन नै भागिन याको अर्ध
मा कहि एप्र भात के उनसे बूह ताहि सहत गली को अंधेरी
लीनी॥ अंधकार करिलीनी॥ येर लेको गली नहीं नेनर आ
वेषह अर्ध॥ मूल॥ उवति जो हुमै मिलगई ने कुं नपर
लखाय॥ सोंधे के डोरें लगी अलीचली संग जाय॥ ३१८ व
नायकाभुलाभिसारका सखी सखी वेन॥ कवित्त॥ तन की
उराई तरुनाई की निकाई छाई जाकी उजराई तें उज्यारी हूँ न

२२९

119

सोभति है ॥ सारद नि सामै प्रकासे विसद सिंगार साजै जामे भगनी
की नीकी सोभा सरसाति है ॥ चली अनुरागी मनमोहन के मिल
वेको चांदिनी मे मिल गई क्यो हू न लखाति है ॥ लपट सुगंधकी
अरु देह [illegible] उपजत अंग ताहि की तरंग लागी अली संग जा
ति है ॥ इति रूपप्रकास ॥ सखी सखी वैन ॥ वह अभिसारका जो उवती
है ॥ सो जोन्ह चांदनी मे मिल गई ॥ नेकु पोरी भी आगु को लखा
टा के कोई तरह सो जतावे प्रगट नही होति है ॥ किंवा ॥ लखा
पद कै ओर कै कहै तो जाहिर नही होति है ॥ ऐसे भी जानीये ॥ सो
भासु गंधि ताकी और सो ताके आश्रय सो अली सखी संग चल जा
ति है ॥ किंवा ॥ अंग अंग वस्त्र तासु को सो जोन्ह मे मिलवे स
कल संकल सायै मिलै ॥ अंग मे सो धौ अगर जो लगाये ॥ ता
को रंग काहू सो न मिले ॥ ताकी रसी सो लागी अली संग चली
जाति है ॥ उनमीलित अलंकार ॥ उनमीलत सादृस्य तो
भेद फुरे तब मानि ॥ दीप उत सादृ वर्नन ॥ मूल ॥ बाल छबी वा
तो बतीसु न तसखिन के टोल ॥ गोरी लोचन हू सतके सम बि
जाति कपोल ॥ २४४ ॥ गंधव नायका सखी सखी वैन ॥ सवैया
सोहै सखीन समाज मे से पर जाहि लखै रति रूप लजायो ॥ एव
ही वेस सवेगन अगर चोपरि खेलत हाव निकायो वा लखै कीव
ते बली जब ही सु निकै मुख अंचर री नोकु रायो ॥ नैनन ला
ज के पासन हांसी जु हू मिलके प्रति रंग दिखायो ॥ इति प्रकास
सखी सखी वैन ॥ सो हरे जान की वाहे च ली सखीन के टो
ल संबूह मे ॥ सुमतके ॥ लोचन को जो पढ़ पाय भी हू सहै
तो भी कपोल विकसत जाति है ॥ हसी सो किंवा उदित तानाय

कान्हीहकीकति सखीसखीसोकहतहै॥ चालेकीवात्तसासरेजा
नेकीवात्तसोचलीचलविक सयईहै॥ नाहीठहरी यहवात्तसखि
नकेटोलमेसुनतहैं औरोखैसेही॥ स्वभावोक्ति अलंकार॥
मूल॥ ज्योज्योआवत्त निकट निसत्योत्योबरीउत्ताल॥ झम
कि झमकि टहलैकरतिलगीरहचवटेवाल॥ ३२० यहनाय
काप्रौढ सखी सखीसोकहतहै॥ सवैया॥ जौनेगएदिनके उमग
हियमैपीयप्रेमकीजोतिसीजागी॥ वासरकी वहरावत्तिनीठ
विधीजसकेरसमैअनुरागी॥ आवत्तिज्योज्योनजीकनि
साति त्योत्योउछाहउमंगनपागी॥ सवरकाजकरैअहकेर
मनीरतिकेलिकेलाहकलागी॥ १८ प्रकास॥ सखीसखी वैन॥
ज्योज्योजैसेजैसेनिकटनजीकनिसाआवतहै त्योत्योते
सेहीहतरीअति जलद झमकि झमकि टहलाको करैहै॥ ना
यकको वेगिमिलौ यामनोरथ सोवाल रहच टेलालचल
जीयाह अर्थ॥ प्रौढानायकानायकपरदेसतेआयो॥ सल
ज्ञकज्ञकसनकोहेपलनतिरफिरअरजमहूहई॥ वाहतियाग
मनीदनिस बीसनसखीउहाई॥ ३२१॥ वहनायकापरकीया
वासकसेज्यासखीसखीवैन॥ क्रियाविदग्धा सवैया॥ जा
निसवेपीयआगमकेचतुराईकरी चितविहके चायके॥ सेक
रिआधिकमंदिकेआखिकीसीकरिचलावैंरचकायके॥ जो
रमुजातननारितियाअगरानीकरीअरसैपजलाययके॥ वैठी
हुतीहिगआयअलीउदईसबउठमहीसेंउठायके॥ १९ प्रका
सखीसोसखी॥ नीदकोसुकिसुकिकैपलककरै॥ सबकोहेकरि
कै निदासोविवसकरिकै फिरफिरपेरिउसादलगी॥ तीको
हूसचपडोरीसखीजसमातिहै॥ नीकरेंआमनीतेजानिकेमा

दकेछलसोसखिनकोउठायदीयोछलकरिइखसोद्वैसोपर
यातोत्तिश्रसंकार॥ सलँग्रउरनिउविभ॥ रमीतदेसै
नाचितैचबलोल॥ रविसौंदुहूं हूंनकेरूमेचारुकपोल॥
३२२ जातिदुहूनके हितकी सरसाई सखी सखी वैन परकीया
सवैया॥ भ्रौंजे भटू वृजनागरि नागर कीकोविलास महाम
रसानो॥ नारकी चोपसों चाहि दुहूं यों वियोग न वकोउ चितो
तन जान्यौ॥ देसहरंभ्रतरमीतदुवौ उनमै भ्रंउरीउचितै चित
कठान्यौ॥ चारुकपोलदुहूनके दोउन चुंमन मिसकै प्रति हित स
मान्यो ८२ प्रकास॥ सखीसखी वैना॥ पावकी भ्रांउरनसों
उचीदोउ भीतवीतभेमहवोरभार मीतपैदकरिउसमिलाटक
केलोलवसनेत्रैकै रचिसोचितचाह दुहूनदेपतिनदुहूनकेप
रसारचूमे चारुकपोल॥ कौ॥ स्वभावोक्ति प्रसंकार॥ रत
मिसहीमिस आतपदुसहदई औरबहकाई॥ वसेलालसन
देमैसंगवैसखीकोवैन सखीसों॥ ३२३ यह जेछाकनेछाक
केमादोकदुइरसरीतिकेभेदकरेनहीं जाहीं॥ आतपके मि
सुकेवहरायदईसग और जितानी वनितनि ताही॥ छैलगहैउह
लसभटू जमुनातटके तिनिकुंजनहाई॥ राधिकाप्यारीकी
सेवतिसंगवि रेभ्रतनेतनकीपरछाही॥ ८२ प्रकास॥ सखी
वैनसखीसों॥ मिसहू छलकरिके आतपदुसहदे॥ पह
वातकहके औरउतरीसखीकोवहकायदीनी रमसवींघर
लालनमनभावती तनकीछाहछिपाय॥
तनकीछाया छपावके॥ दोयवहरमे छायापाव॥

120A

हीके नगीचहोतिहै॥ तहांऐसेजानी॥ ललनमन आ
गतीकपवलोसखीपूछेहै तासोसखीकहै तनकीछाया
तबधपगाई दोपहर मेहरस्प्रवर्ष॥ किंवा ललनन लेमन
आगतीके तनजोहै छाह छायाकांतिकेभीछायागम
रमेकहोहै॥ तासो छप्पायके उपरवस्त्र डारके॥ परकीकाहे
पातेछतनकरिइत्र साध्यो॥ परता दोन्हि प्रलंकार॥ मूल
हत्तीवनो॥ लाईलालविलोकिये जिय कीजीवनमूरि॥ रही
भौनवकैकौनमैसोनजुहीसीफूलई२४॥ यह नायकाकोवे स
खीलिवालाई है सोसखी वेनायककसो॥ सवैया॥ जाहि वि
लोकिवेकोपारेविरहरीसमारहमेसबसलिरहीहे॥ प्राई
सजीवनमूरविलोकियै तोहितजोअनकू सरहीहे॥
वैठीदुकूलसमेगप्रगदुरावतउतनकीदुतीउ सिरहीहै॥ वोधि
ततेलेवन भौनवकौनमैसोनजुहीमनदूलरहीहै॥
सरप्रकास॥ हे लाल मेरहू नायकाकोलाईविलोकियेकै
हीहै॥ जीवकोजीवकेकारणणावियेहै॥ किंवा पकारत
कोतवसीयेहु जीवकेजीवनकेमूरसहै॥ प्रमरजोहीत
सोभीताहि देखे विनामरे॥ सरीरकीप्रातातहघरकेकौन
मे पीतचवसेलसीफूलरही है॥ जीवनमूर नायकाउप
मेय सोनजुहीउपमान सीवाचक फूलिवोधर्म॥ उप
माप्रलंकार॥ कोउ वडिताको वेनकहै है॥ ऐसेजानी
प्रातनायककोदेखि केकहतहै॥ लाईलालहेलालहमे हजी
लाईहै॥ हमनहीनुलायेहै॥ जीवनीजीवनिमूरहै नायका
तकोकेविलोकिये॥ जायके जोतिहरै भौनवकौनमै
सोनजुहीसीफूलिरहीहै॥ मूल॥ नीहरिलाहिवराधरे

नरहर सों अरधंग॥ एकत्तही करि राखिहै। अंग अंग प्रति अंग
३२५॥ पद नायक अनुकूल है सो नायक के मन को विचार
जानि के सवैया राखिये जो हरि सो हि पर धारि और सबै अंग
हरि तन प्यारी॥ जो धरी एहर सों अरधंग जो गा कसो और नवे ठ स
बनारसी॥ ता तें इहे उर आन ति है करी वैन वा है हि नीम
रिन्यारी॥ अंग सें अंग मिलाय के राखिये एकत्त से करि प्राण
पियारी॥ हरप्रकास॥ कृत्ती वेन॥ नरहर हरि सोहि पर धरो॥
ताको अर्थ जैसे सतनमें जी को हृदे में धरी है॥ ऐसे हम
हृदै में मति राखो एकत्त ही करि राखीये वाके अंग अंग प्रति
अंग अपने॥ किंवा संदेह ताको उत्तर॥ हरि चंद्र माता में सब
अंग को लगाये॥ पर अर्ध महादेव की तरह आधे अंग में
मति धरो कलंक हृदै में राख्यो है ऐसे मति राखो हर जो
है सिव जैसे आधे कंठ में विष राख्यो कंठ अंग है ताको आ
धो लीयो॥ तैसे मति राखो अपने अंग अंग में ना को
एक ठोर राखिए॥ मिलाय राखिये॥ नेत्र श्रवण इत्यादि में
प्रति अंग प्रति की तरह है॥ जैसे हेत कपोथी की पसप्रति
होय पेट सो दो वी में सदा रहि ठोर जाय॥ अंग तरह को
भीक ही वे॥ पर सापो त्रिपुर दमयोद॥ नरहर धरो का कुकरि घ
रे ऐसे जानी ए सर्व देस हा॥ मल॥ रहीये जब नीके मे
दीनी ठमें मिलाइ॥ राखो तपकु मालासी वा लगरे सवटाय
३२६ टर सखी नायका को सों आई है सो नायक सों कहै
सवैया॥ जाकी प्रमान के ७ जन सो समि जो तिरही सब कुंअ
गलार॥ मे उकही ठुअही सब पे एक मिलो र सके लिखरो
सको सी है॥ कोर उपाय न दायन सो मिलाई ठमके तब

ह

प

मानुसखीहै॥ वेणकसासज्योलालसलगायकैराखोहीयै
वहहृदयरखीहै॥ इहप्रकास॥ इतीवाक्य॥ हे लालजोदैंज
प्रतिज्ञाकीनीनायकावेमिलायवेकी सोरहीमै [illegible] मिला
यदीनी॥ २ प्रागेस्वभूरप्रछिप्रनायका३ वर्नयंतेताकीप्र
लउपमानसीवाचिकलवटायबोधमै॥ उपमानाग्रलंकार
मरूला॥ रही तेरि मुहदे रव [illegible] तसम [illegible] है चितनार॥ डीठ
परतउछिवीठकीपुलककहतउप्रकार॥ ३२७ वहनायका
रिकीप्यारे सहसीवेदेछिनवीठ दै बैठी उरावेवेको तेरेमा
वषीठवेयातेरेछिसखी [illegible] कहतहै॥ सवैया॥ हितकोनि
रखछलिनेहरसैहितकोपताहमनाथ [illegible] सोहेनलप्रेमकीप्र
तीतकी॥ जिनेहूउरावति है नातिवहरावति हे काहुकोउ
रावहि नवेलीनेहनीतकी॥ भावेइहेरेभावे मुहफेर
तेरे चितसनमुखवीसविस्वैरसरीतको॥ डीठकेपरसहीतै
उठीवीठवैताहलीकहे देतिउलककुकारैतेरीप्रीतको।
इहप्रकास॥ नायकाकीप्रीतसखीलखिनाकरिकहतहै॥
नायकानायककोरहिवेदेखिके मुहपतयागोरकोप
ररहीहै हेनारतेरोचित हितप्रीतमवेसमुहै सोमनेहै
मुहफेरकहूमवेनायकाकोदेखकेपरतहीउठीहै जो
वीठकी उलक सोईउकारवे॥ वहीतै॥ प्रतप्रीतको
जान॥ अनुमानाग्रलंकार॥ मूल: मिलनवनैना॥
दोऊचाहभरेकछू चाहतकह्योकहैनै॥ नहजाविकछ
निसमसो काहिरे मिकसतवेना॥ ३२८ वहप्रथमसदरस
नमै॥ लाजकेग्राधिकातेदोउकछू कहसकतनाही॥
सखीसवीसोकहतहै॥

सवैया॥ आजु दुहू मिलवै सजनी मन मोहन सों कुरी बारमि
साके॥ ठाढे ठजे मोरहे टक साथ नेह [illegible] गेह ताही व रस्सायो॥
बाहू भरे दउ चाहे कटाक छबोलेन ये ा उस आसन पायो
स्हमजेत आवे नभौन [illegible] बाहर दार सुनै जब जाचिक आयो
रसप्रकास॥ दोउ दंपत बाहू भरे हे मनोरथ भरे है॥ कछु कसो
चाहत है॥ ते भवस लजा सो नही कहत है॥ जो सेज्या चिकर आ
यो सुनिकै सवाहिर नहि निकरत है॥ स भउपमान॥ वे
ने उपमेव॥ सो बाहिर वाहिर न हि निकसत [illegible] धर्म॥ उपमा अ
लंकार॥ मत॥ लहिहर नेग्रह करग लोहि वादि बीवे ईठ॥ ग
डी मुचित नाहि करत करि ललवो हि डीठ॥ ३२९ यह रता
रंभ समै नायका की बेख रही है॥ सो नायक की सखी सोक
हत है परकीया॥ सवैया॥ देखत ही देखी कोई ठग बानरह
डीठ पसीह करसी ग्रह माही॥ साहस के अपने उरमै अप्रति मोहीजा
य लई गहवाही॥ लै सिसकी रह राव करे उह जी छब नैन कीवे
वहू धाही॥ के लचा मनी डीठ करी उह नाहि हिये पे टरै
अब नाही॥ रसप्रकास॥ सही सखी यै ने नायक ने सनै
ग्रह मे लहि के नायका को पा [illegible] ककरि तकरयै॥ विसेष
प्रीत नही भई॥ देखादेखी की ईठ इद्र जो मे श्री धी अ तला
लब भरी हब [illegible] कारि के नाही करत है॥ सो नायक के चित्त मे
गडी है॥ नायक ने कही सो मन मे भाई है॥ परि नाही उ
परकी झूठी कहत है॥ सो मन मे भाई है॥ परि नाही उपरकी
झूठी करत है॥ स्वभावोक्ति अलंकार॥ मत॥ गली अंधे
री सांकरी भोभट भेरो आन॥ परे पिछाने परस्पर दोउ

यह गली अंधेरी साकरी मै जा भांति भेट भई सु सखी सखी सौं क
हत है॥ परस के परस्यानवे दोउ नको आगे मिलाप चंगिनायका
परकीया रस की पूर्ति नाहि होति है॥ सवैया॥ रेन अंधेरी घन उमडे
घनघुमर महा तम कुंजघटा ओ ऐसीय सांकरी सांवी गली
भटक्यो रा अवान कटा उआ टेहै॥ गात सो गात हू लागत ही जि
यजानहि ते लपटाय गए है॥ राधिका माधो है माधो जे
राधिका आप ही ते पहचान लीनो है॥ रसप्रकास॥ सखी सखी
वेन॥ अंधेरी गली मै भटि भेरा आनन भेद परस रस पहचाने
परे दंपत्ति परस के पहचानि के अवैस स्पर्स उनहीके अंग
को है देवत के स्पर्स सो भेद जानन भयो उनमै लक्त अलंक
र॥ उनमै लक्षतासाद स्य ते भेद पूरे न भमानं॥ सु परस कौ स
वसो वरो वरि ताको या को ठिन्ह है॥ मूल॥ हरषनवालील
ब ललन निरषि प्रमिलत संगसाथ॥ आषिन ही मै हसि धसौ
सीस ही वे धरि हाथ॥ ३३१ पह वोधक हाव नायका प्रौढ पर
कीया नायक को देषि औ वेषाती नीसा सखी सखी सो कहै
सवैया॥ उबिल साथ मै देखि उपाल हि गोपकुमार करी चतुराई
वैन कह्यन कहे उबरे लषपू ली भमो निधनी घन पाई॥ हाथ
धस्यौ हि बिषेपर है तउनि सीसहि के यो रस रीत बढाई॥ आ
खिनहि मै कछू बहसी तीय के जीय की सब बात बताई॥
हरिप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ ललन के लषि कै हरष के
नहीं बाली कपा अमिल जो सखी है॥ तासो मन मि
ल्यो न हि पे ताके साथ मै निरख कै देखि के अमिलसं
ग साथ वाह भी काठ है॥ अमिल के कोस गसं तूह साथ मै
वह भी काठ है॥ किंवा स्याटे अमिल सखी को साथ है नाय

ककौ अमिल सखा कौ साप है ॥ सौ पैहै वेते हाव धर्‍यौ आ
विन हीमै है सौ आवनौ नि ष्टौ राजीपनौ जताबौ उबकी
हासी सूठी भी है नेत्र की त्यौं या सब हाव ॥ सूठे मानिन से
ग रहे मनु मुख निकसे वैन ॥ सौ हाते हाव धर्‍यौ कैसस्या
म है जब अंधेरे हाव गो तब मिल्यो गी ॥ दूरव हाव धर्‍यौ
भाव संयुक्त रहतो है ॥ महादेव सूयके कहते हैं ॥ किवासी
सापर हाव दीनौ मनमथ सीस पू सि दियो तो है ॥ सूर्य
समय मिलौगी ॥ यह बात हमारे हृदे मैं बसत है ॥ मस्तौ
गौन है यातें हाव धर्‍यौ ॥ किवासी सबे हाव धर्‍यौ प्रना
मकीयो हम जात है ॥ हौ ये हाव धर्‍यौ नम हमारे हृदय मैं बसतो है ॥
नायका कै प्रनाम वरन्यो ॥ हाय दोहिर पट ३१४ कीया वे दीमि
सापरनाम ॥ सीसदे हाव धर्‍यौ सीस कौ उलटो पढै स मीत न
है ताकौ हाव सुद्धि पाओ सिर प्रसतभ ये मिलौगी ॥ सौ हे हा
व धर्‍यौ या दहे आव बता पौ नायक कौ निना दे ॥ स्था
लि है जप्रलकार ॥ [illegible] पीपर बातकौ जानवतावै मा
रत ॥ ऐ टतवन तन भामतौ वितनरसते प्रतिप्यार ॥ धरि त
लगाय लगाय उर ऐसे बनव सन हू प्यार ॥ ३३२ ॥ यह मध्या
है ज्ञाजन का मनराव रहि है ॥ सखी सखी सौं कहतु है ॥ सवैया
प्यारी कौ नेह सख्यौ ती यप्यारे सौ ध्यान मैं प्रात है दिनरा
ती ॥ ऐ छिवे कौ न उपायवनै उर लोगनके उपहास सकाती ॥
जानिवे प्रीतम वेतनके तिनके मिलवे कौ हिये प्रकुलाती
ऐ छन वास ग्रुवास के कौनमे वार ही वार लगावति छाती
हरप्रकास ॥ नायक परदेस मैं आयो है ॥ प्रीयजन सो बाहिर
मिले है ॥ आंगन मैं सर आपहौ यो है ॥ जोहास भी सखी सो

मोटत बनतन भामतें प्रियतम ताको मिलन के नहीं ब
नत है अति प्यारो चित तरसत है केवल मिलै जे ॥ नायक के
मसमवसन है पियार को उरसो लगावके धरत है यह ग्रा
वृत्तदीपक ॥ मूल ॥ कोरि जतन के उकरे तन कीतपतन जाइ
जोसो भीजे चीर सो लेर है नयी लपटाइ ॥ ३३३ यहां प्रौढा है काम के
अधिकार है ॥ नायका के वैन सखी सो ॥ सवैया कोनेकोरि
जतन नतन की तपत जाय अवतन की पीर अप्रति उरसाति है ॥ ह
रि सो वियोग के तितबो गुनो उमंगे न्याउ है अग्नि आय मोटबे के अप्रति
अकुलाति है ॥ लीजी वे उजोनभरि कीजीये नन्यारो कहै
जीवन स्वरूप लतो लो पोर है नराति है ॥ आलेपरकी सी भां
ति प्राण पतिआप ठौ जाम लहै लपटानी छाती लोहि लपटाति है
हरप्रकास ॥ विरह व्याकुल नायका सो देखि सखी सखी सो कह
त है ॥ कोर कोरि जतन कउ सखी करो या के तन की तपत यो
है विरह अग्नि सो न है जावन है छुटै ॥ जब तांई भी जे चीर की त
रह चीय लपटाउ अग्गन सोर है ॥ नायक उपमेय चीर उपमान
सो वाचिक लपटाय वो धर्म प्रतीप ना अप्र संकार ॥ मूल
अरनांत वर्नन ॥ तनक [illegible] निसवाद ली कौन बात पर जाउ ॥
ति यक्रमरत आरंभ कीनहि रूठ यौ बिठाय ॥ ३३४ यह दोह
वृहस्य चंद्र का ऐन ही ताकी सवैया प्रवी भांति ॥ सखी वे न नाय
का सो सवैया वैठ है तजी की प्रसन्नता का जब बान्यो स्त्रा
वैसखी तियकौ ॥ कोर कार है नैको [illegible] प्रश्न कीया उन उत है सो
नो सखी रचि कै ॥ तनक ठ निस्वाद है कौन बसंग ते जाय कल
रुनीआ विय कौ ॥ तैयबे रूसबे लिग प्रेम की रूठी नाही मिला
ति बरी पीय कू ॥ हरप्रकास ॥ कोइ सो कउ दुहेले है ॥ तन कथा

तोभीछूटनिसवादसीनिस्वादवेमरजा[illegible]है॥कौनबातपर
कौनप्रसंगपरवाकोनिसवादपनो॥नायछूटैतीयमु
खविबैरतिआरंभकीजोनाहीनाहीकरततहै॥सातोछूटी
हीहै॥तोभीमिठासहै॥मिठीलुगैहै।यहबातरहै।सैती
याकूपखबैरतिआरंभुसोनहीकोमीठीठहराय॥काव्य
लिंगअलंकार।दोहा॥जैरेहूपतिहरेरतबसनरतिकाज॥
रहीलपटछवकीछुटनिमेकहुछुटीनलाज॥३२५॥ यहर
रतवर्नन॥नायकाकीदेयतकेआधिकयसखीकूवेनस
खीसो॥कवित्त॥तोहोईप्रकासरतिमंदरमैदीपनको जोमो
ईसंदूरजगमगेरतनकू॥जैसीसुधामिदासोंमुखकी
किरनजोतिमोहनकैमनभाउउवज्योअतनकू॥प्रीतम
विहारीलाललेवेकूंसरतसुखनिजकरिवसनरटकर
सोतनको॥छवकीछटानहीसोरहीलपटायप्यारीनाग
नारतनकीछूटीनलाजतनको।१२प्रकास॥सखीसखी
वेनं॥दीपककेप्रकासमेरतीपतरहूपतिकोमीरतिकजरतिके
लीयैं।वसनवस्त्रहरतहीदेखिवेअतनेअंगकीजो
छविकीछटाचाकवकाताहोलपटरहीछबिनजरआ
वेअंगनहीनजरआमेसनेनेकोप्यारोभीलाजनही
छूटीकोईकरतहै।नायकदोहाजेरेहूकोउरतहैतोभी
लाजनहीछूटी॥विसेषोतिअलंकार॥मूल॥ लखि
दोरातिपियकरकटककोसदुडावनिकाज।वरुनीवनद
गगढनमेरहीगुढोकरिलाज॥३२६॥रतसमयसखी
सखीसोकहतहै॥सवैया॥रतमंदरमैनवनागरिकाकुमे

लोरमरंगहि होछरिवै॥ सखिदोरत्तिदखितहापीयकोकरि
वासछुडामनिकोअरिवै॥ कवितं॥ कह्वै ठहराय तहांन
सकोरसधीरजकोधरवै॥ गहिअौरघनेवरनीवनकोर
होनैनन लाजगुढाकरिवै॥ इहप्रकास॥ सखी सोसखी
वैन॥ पीयकोजोकरहाथ लोक रक्षेकोजहै॥ ताकोनाय
कादोरतदखिकेअवनीअौरअवतदखके॥ वासमें
दोपअर्थ॥ वासवस्त्रवासघरताकेछुडायवेकेलीयै
वरनीपतमसोहैवन मसोहै गढतामेलाजगुढै
कररहीहै॥ गूढैमवासकेजायवेरकाउ जायनसकै
नायकामध्या॥ इहप्रकार॥ मूल॥ हसीउठनवि
वकरउवे कितानिवोहै नेन॥ बरेअरेपियकेपियासगी
विरीमुखदेन॥ ३२२ जातिसखीसखीसोवैन॥ सवैया क
रूकहिअतहीहितकै जवराधकाकेहियमेरहआई॥
अौखनिवायउरायककोलकितेननतैनकछूमुसकाई
वीवैनायलईकरकैजबवैवेकैमेउमजाउकेहाई॥ येहित
कीसरसाईवि लोकिभईमनमोहनकेमनआई॥ इहप्रकास॥
सखीसखीवैन॥ अोठनवीचहसिकैहाथकोऊंचोकरिलजा
होनेहकोनीवोकीये॥ पेरअपतिअरेहठ होतीपकेमुख
मैं ब्रियावीरीतानकीदैनलागी॥ स्वभावोक्ति अलंकार॥ मूल
सकुचसरकिपियपासतेंमुलक कछुकतननतोर॥ कारआं
चरकीअोरदेजमुहानीमुखमोर ३२८ यह मुत्ततातमाव
काप्रोढासखीसखीवैन॥ कवित्त॥ केलिकलाकुसलकुरंग
नैनीपिकवैनीजाकीधविधरतवारीयैकेरारकै॥ कैमन

स पागी। अनुरागी पतसंग आगी जोनके वि सासनको ले
ति चित चोरके॥ सरवी सकुचि मनमोहन के निकट ते कछु
क उलचि। अंगरागी तन तोरिके॥ सो भाव हमें सो पै कोहू जा
नि न वमानी करि। आंचर की ओट जमुहानी मुख मोरिके॥
रस प्रकास॥ सखी सखी सों॥ सकुचवे सरक के पिय के नि
कट ते उचलि कै उसका यक छु तन तोरि कै। अंग अंगुठे करसों
आंचर की ओट करिकै जमुहाई। जमुहाई मुहु कों मोरिके
स्य भावोक्ति अलंकार॥ सवै॥ मोहन नैंनसों सनमुख न रहत
[illegible] आंखिन सों लपटाति॥ अंग विछुरावति
कर उची अंगे आवत जाति॥ रस० परसरत आरंभ के स
मय प्रोढा नायका की उक्ति या में बहार उसखी सखीसों
कहत है। आंखिन सों लपटाति जाति है॥ सखी सो [illegible]
है जो उसंभवे सवैया॥ तिय सहज आवास सरोज मुखी दु
ति कुंजन सों उमगावति सी॥ जरतारी कुसुम अनान कआनन
हीं नहि जोंन सो उरपावत सी॥ अरु आंखिन में लपटात सी
आनन ना करना वचढावत सी॥ वदर अंग विछुरावति वारि
उहि जिस आपु उची कि आवत सी॥ रस प्रकास॥ सखी सो सखी
मोहन सों उरपावति॥ उ मसो नाहीं करत है नटत है॥ आंखिन
सों लपटाति जाति है। प्रीतम को देखत है॥ अंग विथिविके कर को
छुडावति है॥ आपु उची पीची आगे आवति जाति है॥ स्वभा
वोक्ति अलंकार॥ सवैया॥ उच सरति आरंभ की विछुरी ल
ने सजाय॥ ढर विकार [illegible] गभई छीठ ठि हाई आउ॥

हरि सि

125A

यह नायक को प्रौढा की सुरति सखी सखी सों कहत है सवै-
या ॥ अति अभिराम स्याम स्याम रति मंदिर मैं विहरत उमंग सो
अनंग रंग मांहि कै ॥ नखदान रद दान मन अधर पा-
न आलिंगन करति अनेक भाव करिकै ॥ सुरति के आ-
रंभ ही लाज लजवंती सखी निपट सुजाव ति वगई कहि
करिकै ॥ ठाढ सारी टेम गहि निधरक ह्वै कै आपन
ही भई लिकट हिठाइ दे ठकरिकै ॥ इह प्रकास ॥ सखी स-
खी सों वैन ॥ सुरत के आरंभ ही विषे संकुच जो ना
कहै सो संकोच करनो कि वा सिकुर जानो अंग को समेटि
लेनो सो विधुर जाती रही ॥ मानो सो लाज सो लजाय
के लाज को मानो सज्य भई ॥ यथा जरै लजो जग
लज्या सो तो लजाइ गई लजाय वाली नी प्रगट आ-
नेह ॥ ठार सो आह्वी नेह सो ठाढि के बैसरि के के ठरि-
के राजी सो वकै हिंगन जी कै भई ॥ ढिठाई आई ॥ वा
सबै मैं जो है ढिठाई सो आई यह बस कठोर है ॥ यह
सुंदरता रहे जानिये ॥ ठौर कै राजी हा नैजा वैदीनो
ना पर है ॥ गर्भोत प्रेता ॥ नहि वा विकमानो कीयो सं-
भावन सत्त भाव ॥ गर्भोत प्रेता कहत है तर हंढि तक
विराय ॥ रस ॥ वतिरति की वतीया कहै सखी सखी
रस का भाव ॥ कहै वै सवैट स्याट ली अली वली सुव
भाव ॥ ३४१ ॥ यह नायक नायक कै सुरति आरंभ
समै जान सखी कहै मिस करि ३४ सी सखी सखी ॥
सवैया ॥ चोवरि बालि सुरी वानिता वृजराजि विलोकि
रही सलचानो ॥ सैनन मै कहु के लिकै लास की वा

ताकहीमनमैंनमुसकानै।।प्यारीअप्रवीनकीओरसखीहसावै
रसभावहीयैसरसानै।।१६ईसवैरुदत्तापदवलीअवनेअग्रह
कोक ६०३४ मठानै।।टीप्रकास।। सखीसखीवैन।।याने रति
करिकेकी बातकही किं नानायकरूपग्रीष्ठिप्रपतिकीतरह
रतिकरिवेकी बात नायकनेकहीविपरीतकीसुरतहर प्रथ
सखिनकोनायकानेकहसकायवैसखी।।किंवा।।सबसखी
हसारटलीकरिकै एकनेएककेधकदीयो एकनेएककेढ
कादीयो।।ऐसैंअलीरूसपापकेवलीरसारटसीकेधसैं
घुरहनोकरोहेवसाधैं।।परियापोनि।।हलकरिकारजसा
धिदैजोकछुवितरहरहात। टीका।।चमकंतमकंहासीसह
कंमससिंकरतंटीकोका।।सपटान।।एजहहतिसारति मक
ति औरमुकर्ता तिहान।।३४२ वहसुरतवर्नन। नायककोवे
न।।अथवाकविउक्ति।। कवित्त।।किलकनिकुलकनिहरन
चितवमकनमकरमकनिमुसकानहै।।हिलमिलवलि
लेअरररहाथरीकसकनिससकमसकरवरनलगदाम
हे।।सदकनिमटिकनिदुरनिमुरनकुसपुंजननलकनसल
कनसपटानहे।।ऐसीरीतरतिसाईउकतकहानतिहैं सोई
अतिहानिहै। टीप्रकास।।रतिमेंलज्याकरेहै नायकाता
सोनायकवैन।।नमकिवेतमकिवोकछुक्रोधकरिवो।।हसे
नोससकसीत्कारमसकिअंगमरोरवो।।औरसपटवेसवहि
मायवेउत्तनीबाततारतिमोहेसोरतिउक्तितत्यहै।।और
जोउक्तिहैउकईसप्रकारकेहूबकोनाससोउक्ति।।ऐसी
तरहकीउक्तिसोअप्रतिहानहै।।उकसामहै।।उवमानउ
क्ति।।रतिउवमेयइत्यादिरतिमेंअधिकयातेव्यतिरेकअमेंमें

126A

कतिरेक ऊ उपमान तें उपमेय अधिक देखि॥ लक्षन॥ वर्न
पना है नाहीं नहीं बदन लगी जक जाति॥ जयप्रभौं है हां
सी भरी हांसी ठेठहराति॥ ३८३ यास्तर स्तार॥ नायका प्रौ
ढ सखी सखी वैन॥ सवैया॥ बैठी सिंगार सजै वृजनारि
त्रय्यान क ओर है न ऐ आपे नतहा हाँ हीं॥ पानि गहे अविलो
क अबके ली ब्रह्म लौकिक लौकिक लावित चाहीं॥ जद्य
पवान वनागरि कै अब लागी उहै जक नान नैहीं॥ जद्य
व हांसी भरी ... मे वी साविस्च ठहराति है हाहीं॥
रसप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ जो भी जो भी वदन अब मैन
हि जक इत्यादि जक है लगी जात है॥ तद प्रभौं है हांसी
भरी ताको हांसी ते ठहराति हां हि सी जान परत है॥ बोध
उदोत कनाहि प्रतिबंधक॥ तो भी प्रीत उदोत कि हांसी भरी
तीसरी विभावना॥ प्रतिबंधक के होत नहीं कारज दूसरी भा
ना॥ लक्षन विपरीत वर मन॥ परयो और विपरीत तर तिरछी ऐ
रततर नाधीर॥ करता कुसाह है लक्षीक नी गहो मैं न जोर
३८४॥ यह विपरीत तवर्नन॥ नायका प्रौढा सखी को वैन
सखी सो सवैया॥ श्री वृषभान कुमार नजो तिजगे नि
र और तिलाजन लाजी॥ ओ है बिलास निहार नकी के री
स्म मनि के उन सालाजन लाजी॥ धीर महा रति रंग समे वि
परीत रची प्रति राजन लागी॥ मौन गहे हा विदुल्य आन तहीं
रस सार रही रस वा जन लाजी॥ रसप्रकास॥ प्रीत सखी
सो प्रीत सखी वेन॥ विपरीत और निरमान की डाताको और
परयो है उर तजो है उद ता मे धीर है य बे उ रची ठहरी है॥

न

नी
कैकै के लालैं शब्द कोकरै है मंजीरस्वर नस्रवन तानै भो
नगहोहै किंवा विपरीतरतमैरखी है सूरत्तरनमै धीरहै जो
रपस्यौ है रनको भारपस्यो है ॥ तासो विंकनीधुन्नधोहैका
कोलाहलकरतहै मंजीरस्वर भार नाही ॥ तासो मौनग
ह्यो रूपतसोरनवातरूपक स्थल ॥ विनतीरति विपरीतकी
करीपरसबीयपाव ॥ इसिप्रश्नवोलेही दयोउत्तर दीयो वत्ता
व ॥ ३४५ ॥ सबीसबीवैन ॥ सवैया ॥ कैलिककलाकुसलकुंअर
गनैनी प्रंग प्रंग प्रंग की निकाई इतिरतिकी रतीकरी ॥ वह
रति प्रंतरत बहरै विविधविध मदनमहीपकी विस्तरित वकती
करी ॥ ताहीरति मंदर मै प्यारी के परसपाय रति विपरीतकी
पियारे विनती करी ॥ प्यारी अरु सखा प्रश्न वोलेही बतायदीयो
प्रीतमके जीकी बाह्य ताहीते सही करी ॥ इसप्रकार सबीस
बी वैन ॥ पियनै नायका के पाव परसि कै छूवकै विपरीतरति
की विनती करी ॥ इसकै प्रश्न वोलेही नायकको उत्तरदीयो
दीयो बतायकै दीप बुझायकै विपरीतरतिकोर तिरची वोलि
वो कारन नही है ॥ उत्तरकारज भयो ॥ हाति दिह भांत विभा
वना बिन ही कारन काज ॥ किंवा प्रश्न बोलेही इसदी
दो ॥ वोली नही इसदीतो बामै उत्तर बतायदीयो कोई
कहै वानै दलिदिबो तां मै हांसी सो मालूम भई वातेम
नमै आई है ॥ वह बात कहि उत्तर उत्तमन मानतै जानो
जान्यो उनमानग्रलंकार ॥ स्थल ॥ ओरेहू रे बातहू के तव
हरावतिवास ॥ जगजानी विपरीतरति सखिविंदुली पियमा
ल ॥ ३४६ ॥ वह नायका प्रोढा रति विपरीत कीनी सखी सो दुरा

वर्त्ति है सो प्रवीन सखी जानि गई सु नायका सौं कहत है ॥ सवैया ॥
हौं हित कै वलि वूझति तोकौं हे ऋवहरावति वात हमेरी ॥ छन्यो को
चंद उदोत तवै रति ताव कै हौं ए देखि पियै प्रौढ अघेरी ॥ नीके ही जा
नी परी सव को दिय माल लखे विंदुली तिय तेरी ॥ ते हरि से विपरी
त रची वह क्यों दुरै है हमसों उहै हेरी ॥ रसप्रकास ॥ नायका सों स
खी वाक्य है वाल मेरे वूझत वेंदी पैचत कै वात कैंनर कहति
नो स्याम ति है ॥ वहका वर्त्ति है ॥ जगत ने विपरीत रत जैनी
पीय के भाल मे विंदुली टीकी देखी कै ॥ नायक नायका को
वेस वन्यो पै विंदुली सों विपरीत कै जानवो ग्रान्थ मान
उग लेकार ॥ मूल ॥ राधा हरि हरि राधिका वनि आए संकेत ॥
दंपति रत विपरीत सुख सहज सुरत हू लेत ॥ २५० ॥ उहि लील
हाव रत विपरीत समय सखी सखी सो कहत है ॥ कवित्त ॥ देखि
वे कौ देह धैंरो कु तन नाक प्रान रूपसी लखे सगुन चातुरी समे
त हौं ॥ जैसे दोउ सावे मणेरा वे प्रीत रंगरी हि आज सोन देवे
कहूं ग्रेस ही पहिरत है ॥ राधा माधौ माधौ राधा ग्रद सवद
ल वेल वनि वनि आए कुंज के लिके निकेत है ॥ कहै कवि
कृष्ण दास सुरत सरस वसर ति विपरीत के सरस सुख लेत है ॥
रसप्रकास ॥ सखी सखी वेन ॥ कोधिका जहरि कोर पव
नाटो ॥ हरि राधिका वनि के संकेत की मिलवे को ठौर आ
ए ॥ विपरीत रति के सुख को सहज सुरति हू मे समरति है अ
ले त्ति है ॥ सहज सुरत मे विपरीत सुख वढ़ाइवे कै पो ॥ काव्यलिं
ग ॥ मूल ॥ रमन कहै ऊठ रमनि सोर ति विपरीत विलास ॥
चितई करि लोचन सतर [illegible] साल जसरी महास

यहां नायक नें रति विपरीत की बात कही ॥ सो नायका नें चितव
न सें वे बात कहिनी ॥ सो सखी सखी सों कहत हैं ॥ कवित्त ॥ वृष
भान सुता नंद नंद लला रस के लिव लास सो बरई भरै ॥ तहं
मंदर में अति प्रेम भरे रति केलि विलास के रंग ढरै ॥ राति की वि
परीत के रमनी हु सवै जब प्यारे नें हास्य कें करे ॥ तव प्यारी
को रे सखि मैं न तिरीछे अमान हसी अरु लाज भरै ॥ इह प्रका
सखी सों सखी वेन ॥ रमन नायक हठि कें रमनी य नायका सें
यह कहो विपरीत रति को विलास करो न हठ कहो ॥ सो वन के
सतर कहि चषा वकरि तरेरि कें चितई ॥ ये रस लज लाज सह
ता स रोस क्रोध चित भस हित हासी सहत ... वक लिकिंचत
स्वभावोक्ति अलंकार ॥ मूल ॥ रंगी सुरंग पिय हिये लगी
जगी सव राति ॥ पैंड पैंड पर ठठकि कै ऐंडु भरी ऐंडाति ॥ ३६५
यहां सुरतांत सखी को वैन सखी सों ॥ सो जो सखी नायका
सों कहै जो लखि ता होय ॥ सवैया ॥ सवरे न जगी अरु वेठ
लगी रति रंग भरी अरसाति वरी है ॥ डग आवत ले पिय के वि
ता वे अरथे ऐंगि राति भरो री है ... पुरी अलवे ... लवे
श्रम वारह की पलके ... री है ॥ लागि पीक की लीं
कपोलन नीकी लसै अति सारी सरोट परी है ॥ इह प्रका
सखी सों सखी वाक्य ॥ सुरति कें रंग सुरति के रंग सो रंगी है अ
ति है ॥ पीय के हृदय सों लगी है ॥ सव राति सो जागी पैंड
पैंड पर डग डग पर ठठकि कै वहु होय कें ऐंडुयरी अमान भरी
जो ऐंडवो ता सों ऐंड ही ता सों भरी सें ऐंडाति है ॥ स्वभावोक्ति ॥ अं
मूल ॥ लहि रति सुख लागी गरें सखी लजो हीं नीठ ॥ खुलति न मो
मन विंध हार ही उरै अधखुली डीठ ॥ ३६६

रती

भ

128A

वह स्रुरतांत नायक कै वैन सखी सों॥ सवैया॥ केलि करि लैसुख
के सख प्रात लसी वर कंज पै राधिका प्यारी॥ ज्यों कुल गीत
उलाजव गीनहो नारन वाय मनहु छवि धारी॥ सोंहै चितै वै कै
मों सूंहि वै तब नैसक मोहउ चायानि हारी॥ इह प्रकास॥ नायक
स्मरण करै है हमसों रति सुख सचहि के लगि [illegible] वै गरे॥ हमारे
गल सैं लागे हैं तब ही लजौ ही लाजभरी जो है सो हमा
री ओर नीठ कै सेह करदेखिवे कुलै है नही मेरे मन वंधरहे
वह जो वाकी अधखुली आधी उघरी है छवि॥ कवि॥ नायक दूती
सों कहत है॥ सोई उठी है तब नायका है देखी है॥ एक मैं सजो
ही नायका देखी है॥ नी [illegible] कोन हू तर हहो वा सोर ति सुख
लहि पावकें॥ वाके गरे लगी पै वाके गरे खरिये एक घरी
वीवारह छोडीये नही॥ उतराई को वाही अर्थ॥ जो दृढ वों
धी है हाइ सो न ही कुसै॥ इहां अधखुली न खुली विरोधा
भास है॥ भासै जहां विरोध सो वहै विरोधाभास॥ रस॥
कर उठाय घूंघट करत उसरत पट गुजरोट॥ सुख मोट लू
टी ललन लखि ललना की लोट॥ २५१॥ यह नायका की
लोटकी सोभा नायक नै देखी है सो सखी सखी सों कहत
है॥ सवैया॥ जात ही बाल गली में अली संग ख्यात में मोहन
दे छति अमोट॥ ज्यौं कीयो घूंघट हाथ उठायके त्यों उकसी प
ट की गुजरोट॥ सो छवि मोते कही न परै कछु कोर न कोर लू
टी सुख मोट॥ लाल लख्यो अति मोद हियै नवनागर की
निरखी जबलोट॥ इहां प्रकास॥ सखी सखी वैन॥ हाथ उठाय
घूंघट करती भी॥ उसरत गुजरोट हाता गुजरोट सरक टप छुं

चलनसु ॥ तासमै ललननै लल नाकी लौट तैंव लीदेखी
के रूपकी मोट गांठ लूटी है मानौं गम्योत्त प्रेतां ॥ अ
रु तासमें वस्तु प्रेता सूला ॥ अथ प्रेमवरनन ॥ नाक मो
र नाहि करै नारि नि हेरा लेइ ॥ छुवत अोठ पिय आंगुरि
न विरी वदन प्यादेय ॥ ३५२ ॥ जानि सखी को सखी सो वेन
सवैया ॥ आजु दूहूं कौ विलास अली मैं दुरे दुरे सो कहूं तो
नाहि आवैत ॥ नंदलला अति ही हित के वृषभानु कुमार
को पान खवावति ॥ ओठन सो पिय आंगुरी छू रसका
ट के नैन सो नैन मिलावति ॥ नासिका मोर सकोर रके मो
रु कहै तिय नाहि तु त्यो सु खपावति ॥ इति प्रकास ॥ सखी स
खी वैन ॥ नाक मोरि नाही करि करि नारि हि हेरा कि ये
सौ लेत्ति है ॥ छुवत अोठ को पिय आंगुरन सो तिय के वद
न मैं वीरी देत्ति है ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ सूला सरस
मि लैरंग की करि करि अप्रमित उठान ॥ जोबन वारे जी
ति ये प्रेमखेल चौगान ॥ ३५३ ॥ इस सखी नायका के सनेह
की देह ताखतावति अरु प्रेमजन नायक सो मिलावै सो स
खी वैन नायका से ॥ कवित्त ॥ सरसत तरंग अति सुमेल विम
ल वित्त ताहि वा हि तान नैन सौ तु चलावे है ॥ लोक ला
ज वाग सांधि दृग अनुराग की अप्रमित उठाम नीन लोक के
र धावे है ॥ कहैं वि विकृच्छ अमि लाठ वरी द्वार पग है नाय
न खारे तव जीत पद पाइ है ॥ खेलिबो कठिन इह प्रेम खेल
चौगान खेलि खेलि तो बिसार मैं नन्दवह रिझायवो ॥ इ
ति प्रकास ॥ नायका सो सखी कहत है ॥ सरसा ॥ रस अनुरा

129A

श्री

गसाहि तकिं वावेसस[illegible]लसुंदरी नरहमेलैं॥ अरसच्यी
मनसौं मिल्योच लै॥ चितसौं तुरंग ताकी अमित अ
संख्य उमनि मनोरथ कौ कहिवो किंवा दोराय वोगो
यके छिवायके किंवा के परा अरसउ कौ एक वडै गेंड
वानिनामे है॥ ताकौ लक्षण रीमसौं प्याहिके जहां मनरंदो
करे तहां ताइ पहुचामे है गोपन वाहेही वनैप्रे मवे
लचौं गानको बेलरूपकु॥ सखी दृग मीचत म्रगलो
चनी मस्यो उलटि ज्जनवोपय॥ जानि गई तियनायके
हृपयरसतहौ हाथ॥३०४॥ जाति सखी को सखी सौं
वैन॥ सवैया वैठी हुती वृषभानसुता सें अचा
नक आयो तहां गिरधारी॥ प्यारी के लोचन मीच
लीए उनहीं उज्जलोटि मरयो अरु नारी॥ प्रीतम के
करके परसे उमग्यो उर आनद पुद्धि विहारी॥ याहीत
वा मनमा मन के पहचान हसीसखि विवछन प्यारी
हरप्रकास॥ सखीसखीवैन॥ नायक पीछे तें आ
य नायका कौ आंख मूंदे॥ नायक जव नायका
कैं दृग मीचत है मूंदत है॥ तासमै म्रगलोचनी नेउ
जाके उलटि कै नायका को हाथ अरु अरवार मेघ
स्यो॥ तियनायक के हाथपरस ही सो नायक को हा
थ है या वात को जान गई॥ किंवा॥ वे सखी या नर ली
ला कूं जान जानें सु नायका के पुछै॥ किंवा नायक
के दृग मोरग लोचनी मीचत है॥ नायक के अजके
उलटि वा को सरीर वाय मे अरु वार मेघ स्यो हाथ

बोलै

६

सो नायक को पर सिके ती है वो मनता को हाय क
रि अपने नसिक रिपह भावति गई कि का तिय गई छि
डाय के नायक के हाय सो भयो है नायका को पर
सता सो ही हृदय सो हाथ लगावे है ॥ धन्य ता हा
थ है ॥ जाके आसक्त होइ है ॥ सो ता के हाथ को परसे है
दे गई भ हावँ मैं हारे तरवान मों रखावे करन लवके क
रे पकरत है ॥ नैनन सो लाइ उरलाइ करे हा वहा
पवार बार भावन के पाव न परत है ॥ दृग सो लाव
न तो संभवे न हो दृग के नेत्र उपमान से है न ही ल
छि नाकरि ॥ दृग स्वरूप करि दृग के नेत्र जानी ता दृग
के नेत्र से बिलास सुंदर नेत्र है ॥ जाव से वाकि के
नही ॥ वे सालस सुंदर साधारन धर्म नाही है नेन उ
पमेय है उपमान वाचिक धर्म लुप्ता उपमा जानी ए
॥ ल॰ प्रीतम दृग मीचत प्रीया ता न वरसा सुबवाय
जान विद्धान ग्र जान लो मे कन सो ति जनाय ॥
॥२२६॥ जाति सखी को वैन सखी सो ॥ सवैया ॥ बलत
मैकरि पाछि सी घाते आवे तहा गिरधारी ॥ रू
दि के प्रांण पियारी के नैनर लोचु वहु रसरी ता संभारी
जद्यपि वा मन भामन के वह लागत ही उरजे स
ब भारी ॥ जद्यपि जानि के प्रावनी गोरि है ग्र जानय
ई वृषभानु दुलारी ॥ रस प्रकास ॥ सखी सखी वेन
प्रीतम के दृग प्रीया मीचत है पाने हाथ ता को जो

हे नरसताहेताहे सु अताके नायक है किवा परसस बसे पानि
को पायके जाने के नायको अपर्ष ज्ञान भी है ॥ यह नातणा
इनाम जानी जानि पिछानि अज्ञान की तरह नैन स्व
सी भीलसा पज्जोदहर नही होता है ॥ नायक का वक्त मे होत
नायक पत्त मे होत पठित छिपै लगाय पद बैचिके लगो है
अज्ञान तौ अज्ञान है मनो नहीं जानी है मानो ॥ अ
नुताख्य दावस्तु सुत्रे ना ॥ मूल ॥ करसुंदरी की आरसी प्रति
बिंबत घ्यो आय ॥ पीठ दीये निधरक लखै इकटक डीठ ल
गाय ॥ ३५६ ॥ यह दोहा कृष्णचंद्रिका मे नही ताकी सवैया
प्रवीनो है ॥ सखी सखी बैन ॥ सवैया ॥ सारस ज्यो ठानी
सखीन न दीन निगध्य बिराजति बाल सु हाव के अ
ऐतहाँ नंदलाल सु नै फिर हेघट ओट दि नैन सकु जायके
आरसी सुंदरी की कर तामे तस्यो प्रतिबिंब उ लाल को आइ के
पीठदीये ही निसंक लखै तिय को इकहीटक डीठ लगाय के ॥
हरप्रकास ॥ सखी सो सखी बैन ॥ करकी अंगुठी की आरसी
मोलिय को प्रतिबिंब तासमान नायके नायक की ओ
र पीठ दीये निधरक निसंक देखे है ॥ एकटक डीठ लगा
यके प्रसहरमन अलंकार ॥ जीन प्रहहर बनजात न विन
वा छलनाल जो हाय ॥ मूल ॥ मो बिसही सो दोस सु छिनु
स्यू स्तो दिगजाइ ॥ हस्तो विस्वानी गरजहिन रही गरे लप
टाय ॥ ३५७ ॥ परसात्विक नायक के चैन सखी सों ॥ कवित
कुमर कह्यूई सुनई चतुराई करि तो हि रसे बिसगू डीरि
सको मनायवे ॥ रिजा की उमग व छि आई जिय मे तो सौं बो

२३१

131

जानि मुसकाइ मुख मोरि जाय है ॥ आरसी में ढरि तिन रंचक उदा
रनैन नायकी नीचा है गरे में मद मुसकाय है ॥ कहा ठाकुर है ॥ आ
ली है तो मसी है भ्रिसाय तब और नव सायर ही ॥ गरे लपटा
य है ॥ रस प्रकास ॥ नायका वैन सखी सो ॥ मै नायक को भ्रि
सक है ते धूत ता सो ता पे समझि के मुसकाय मुख मोरि ग
न जीव जाय है ॥ नायक हस्यो तब मै भ्रिसानी ॥ तब
नायक ने गलो [illegible] गह्यो तब मै गरे सो लपटाय रही ॥ औ
ढा नायका है ॥ किंवा ॥ मै नाम मदरा को है ॥ मै मदिरा को
मिस कर है लखकर नायक सो है ॥ अ मदिरा पान कियो है
मोहि नींद आवै है उदाहरन ॥ हे सखी तू या बात को समझ
जाने ॥ किंवा ॥ काहू को प्रथम तरमे समझि के लीये ठ
ग आय के मुसकाय मुख ॥ मदिरा पान कियो हुतो गोहो तासु आ
वे गी उतर ईवे सही ॥ भ्रांति अलंकार ॥ परयाय तें मिस
करि कारज साधियै जो कहूं चित्त है सुतापा ॥ मूल ॥ मु
ख उघार देखाइबि रहै रसैनि जो मिस सैन ॥ पर के औठ
उठ कलिका ग उघारि उरैन ॥ उदाहरन पर जाति बरनन परे
हास सखी सखी वैन ॥ सवैया ॥ प्रातहि पौर आ [illegible] निरख मृग
लोचन इंदु कुल औठ रीने तो ठौर ही मिस कर के ॥ च
ढ़ो वो पचाय है है रे [illegible] आय मुख [illegible] निरखो उघारि
[illegible] रि है ये है ता मरि के ॥ कृष्ण प्रातिप्यारे को विलोकति
य वंक सखी सेन [illegible] रे है आर मन में सु आपनो ठरि के ॥ गा
त पूल कति में अधर मुसका के आप लालन ललके भ
ले आपु ही उघरि के ॥ रस प्रकास ॥ सखी सखी सो वचन ॥

त व

181A

अवहित्ताकौ सात्तिहरकोदय॥ नायका ने हसि कै कसडा डारकै
सोई है मुष कौ उघारकै प्यो नायक के देषत मिस कै छलकै
सैनन मे रस्यौ नन्द ही गोगयौ॥ औठ परकै कल कि उठ नायक के
नैन सौ जुरकै मिलकै नैन उघर गये॥ स्वभावोक्ति अलंका
र॥ रसला॥ वत्तरस लाल वलास की मुरली लई लुकाय
सौंह करै भौंहन हसै दैन कहै नट जाय॥ ३५९॥ यह ना
यका पर कीया प्रौढा जाति वर्नन॥ सबै सखी वैन॥ सवैया
आज अली वृषभान सुत्ती मनमोहन सौ रस के लिठरी
है॥ वातन के रस के मुरली मुरली हरकी दुव का यधरी है।
ज्यो ज्यौं हहा करि मांगे सलाल वहि त्यौं त्यौं कहै उलात
बरी है॥ दैन कहै नकरै हसि भौंहनि सौंह करै रस भाउ भरी है
रसप्रकास॥ सबै सखी बैन॥ वात्तर सकै लाल व सौ लाल
की मुरली लुकाय लीनी [illegible] नमंतारक मैं अनेक भाव
कारक दीपक॥ रसला॥ नैकु उतै उठि बैठिये कहा रहै गहि गे
ह॥ छूटी जाति नहदी तनक महदी सूषन देउ॥ ३६० यह ना
यका कोई बिनायका के साथ कमावन के सुसबी नायक सौ
निवेदन करति है सो नेह के अधिक्य ते नायका है नाय
कसौ कहै॥ सवैया॥ आजु लौ कैसे हू जानि परी नवलीन
वत्तेरस रीत चला॥ देषि हु मै उमयौ अत ही कर पछव छोर न
स्वेद जला॥ नेकु हूनै कउतै उठि कै उघरी उक आवति प्रै मक
ला॥ जाति छुटी अब ही नहदी मंहदी दिन सूषन देउ ल
ला॥ रसप्रकास॥ स्वाधीनपतिका कौ उदा॥ नायक सौ॥ ३ बृके

के

अनादरसों निहोरा किये कै उत्तर न पाय कै उठि बैठि बैठी है॥
नाह कौ वचन रस हूं करे पवन ते रहे सात्विक प्रस्वेद भयो है॥
तासों नाह सोनाह की मह दी धूरी जात है। छिनएक सखि
नेह उघार गहि रहे॥ लोकोक्ति॥ लक्षण॥ वामत्त मासों कहिर
है। विवसवारनीसेव॥ उक्त नहसत हासि हसि हसि उक्ति
उक्ति उक्ति हसि हसि देइ॥ ३६७ नह मद पान सम बनीय
का कै सोभा नायक सखी सों कहै सखी नायक सों कहै
है सखी सखी सों कहै। कवित्त॥ वारनी विसेष मन गोर
नहो माणिक है अति जेम गलो वनितान मासे की लसति हैं
वार तरुनाई मानें काई छवि छाई त्यों त्यों गोरे अधर अ
रुनाई परसत है॥ कनक वदन पर घूंघट के [illegible] विलसत क
वह उघार देत रंग वरसत है। उक्ति हसत हसि हसि वैके
उक्ति उक्ति के के हसत हसि हसि के उक्ति हैं॥ प्रकास
सखी सखी वैन॥ मानों तमासे करइ है है॥ विवसमई है॥
वारनी मद राको सेवन करि के वामा तमासे प्रेसोभी है
प्रागेसव॥ उत्प्रेक्षालंकार॥ लक्षण॥ हसहसे हरतन व
सति पम दके मद उमदाति॥ वलकि वालि क वोलत वचन
ललकि ललकि लपटाति॥ ३६८ मद पान सम वस बीस
बीवेन कवित्त॥ मोहन के संग मधु पान के नवेली नार
वर तत्त मासे वह छवि सो भासरसाति है। हँसि हँसि हेरति वचेर
ति पुकूल कुचन के उकपर तनकाइ तें सकत है॥ रसनी उम
गभरी जोवन के रंग भरी मदन तरंग भरी अति उमदाति है॥

132A

वलिक वलिक वेन बोलति मयंक मुखी ललकि लालिक
लाल उर लपटाति है॥ सरप्रकास॥ सखी सखी वेन॥ वाल तिय
नवोढा इछि हासि के हरषति है॥ मदिरा के मद तें उमगे है॥ व
लिक वलिक॥ फेन तें प्रगट है ललकि ललकि चाह विय सो
लपटाति है॥ किंवा है सखी॥ रति मैं नवल तिय पहिलाहि सिके
मदरा की ___ मस्ती सों मदाति है यों सुजानो सुभावो
क्ति॥ अलंकार॥ ललचालित वचन प्रथि घुलि दृगा निल
लित स्वेद कन जोति॥ प्रगन जो तिछवि मद छवि की बरी
छवीली होति॥ ३६३॥ मदपान नायका की साभास सखी
सखी सों कहै॥ सवैया॥ नैनन कुछु उघरे सुभेद प्रवेन न
मो रहि पत लाई रसीली॥ स्वेद के बुंदन सोंभ लके पसन
द्युति प्रानन मैं चटकीली॥ तैं सीये रूप उजागरि नागरि
सो रतन सो भसनी गरवीली॥ पाहजगीत न जो वनि जोति
छवे मद होति धरी इछवीली॥ सरप्रकास॥ नायका सों ना
यक वेन॥ वलविव लवचन प्रधघुले दृग॥ ललित स्वेद
कन की जोति॥ लाल वदन छवि मद सों तें छकी है॥ या
तें बरी छवीली होति है॥ पन्यसं भोग दुख ता सौं उति
यै भी लगै है॥ वक्र विधि बोलति है॥ रस मै ठगी के है बरी छ
वीली होत है॥ न ही सामे है यह अर्थ॥ सुभावोक्ति है॥
सत॥ निवट लजी ली न वलति पवाहि किवार नी से वा॥ ज्यों
ज्यों प्रति मीठी लगै त्यों त्यों ढीठो दय॥ ३६४॥ मदपान स
मत सखी को वैन नायक सो॥ सवैया॥ लाज भरी प्रति ही
नवनागरि जाकी सुघाई सुघाई के गाई॥ ता हि छवि की छवि

रविवेकैं। चिय प्यारे रस राधवे नारनी प्याई॥ ज्यौं ज्यौं अंग उठे
मद की तीय पाये त्यौं निसंक ह्वै देति छिठाई। छिठाई लागत
मीठी मन दवद मानो भरी वह मांत मिठाई॥ २२ प्रकास सखी ल
खी की उक्ति॥ अति लाज जु है नवोढा वा रसी गदराके से
वन है पान सो वहकी दै तैसे तैसे प्यारी प्रतलगे है। जैसे
जैसे छिठाई करत है सजी लीन चोढा छिठाई की उतपति। वि
भावना॥ जबे अप्रकार नव सुते कारज परगट होत॥ वन विहा
र वर्ननं॥ मूल॥ चलत ललित श्रम स्वेद कनि कलित अरुन
ख तेन॥ वन विहार थाकी तरुन बरे प्यकाम नैन॥ २६६॥ वन
विहार नायका की सोभा नायक की आस सखी सखी सो कह
है॥ कवित्त॥ उब माके लित तरु नाई की निकाई मानो अग
प्रकास अरुनाई वे हरी है॥ तैसोई ललित श्रमस्वेद कन क
लकन जगमग जोति को सरूप छवि छायो है। कहै कवि कु
लपति अनमेष ह्वै के चलत नैन कोर रूप ग्रेसे सरीर
छायो है॥ विपिन विहार रस छको की वृजवासिनि वाकी पविचित्र
मानै परे लोचन पचायो है॥ २२ प्रकास सखी सखी वैन॥
ललित श्रम स्वेदकनि याको अर्थ सुंदर जो श्रम जो प्रस्वे
द कनिका तासो कलित उक्त है। कलित वलित अनेकार्थ
है। लाल अरुन है नायक के नैन चलत है तो ही देखि रहे है॥
वन विहार में तरुन थाकी है तासो छवि विसेष भयो है। तानें
नायका ने नैन न को बरे प्रतिपकाम॥ एकाएवे को अर्थ
लदिन कर आसक्त जानी। लछिन सलछिन॥ अथ
अर्थ को वाधजोर है अथ जोग॥ अरु अर्थ जहां जानी

राखीसहेत॥ रूसखनातनबिनरुठारूप॥ सोप्रजेजनवतीजहूं अब
जैधुनिकबिभूप॥ कैवारदियौवहूदनननहींसंभवे॥ जद्धिवौजा
नितैपीठदीनीहू वा बात है॥ इत्यादिमीरहा॥ नायकाकौंग्प्रति
सौंदर्य नायककौंग्प्रतिग्प्रनुरागध्वनि॥ कोईग्प्रतुग्राम्यबयेनयह
भीपाठहै॥ यकि वौ यकायवेकौ वारननहीं॥ यातें विभावना॥
जहांग्प्रकारनबसुतें काज परगटहोत॥ मूल॥ वढतनिकासि
कुचकोररचकढतगौरभुजमूल॥ मनलुटिगौ लोटनचढत
चोटतकुचेफूल॥ २६६ यहनायकानायकने जाछवि सौ देखी
है ताकौसखीसौं कहतु है॥ सवैया॥ वनग्राउलखीवृषभान
सुताजुगज्योतिरहीचहूंकूलनकी॥ वुहुचीवितमैंउकसायभु
जाउर्ध्वोटनउन्नतफूलनकी॥ वढितैकटितैकुचकोरनकीर
चवासुभाभुजमूलनकी॥ लुटिगौमनसौछविसौकहतहीं
छविमैहूनकैसहूसलनकी॥ स्वप्रकास॥ सखीसखीवैन॥
-चौलीसौ निकसचै कुचकोरकढ़ छविबढती है॥ वस्त्रसौंगो
रउजकोमूलकढतहै॥ नायककौ लुटिगयो॥ लोटतवली
उचेफूलनचोटतत्तोरतके लोटउतरसरकगई॥ छवि विसे
षबढतइत्यादिकरी॥ मनलुटिवो दृढकीयो काव्यलिंग
मूल॥ धामघरीकनिवारीयेकलितललितग्रलिपुंज॥ जमु
नातीरतमालतरु मिलतमालतीकुंज॥ २६७ यहनायका
परकीयावाकविदग्धाहै॥ स्वयंदूतिकानायकाकौवेन
नायकसौं॥ सवैया॥ चारुतमालकलिंदीकेतीरग्प्रोसीत
समीरसुगंधरहेमन॥ मालतीमल्लीनिकुंजनमैंमिल
गुंजतमत्तमधुव्रतकेगन॥ फूलनकेभरभूमलतातरहैलि

मन

*

ल
गील्लवटावतमालसनि॥ वरि जै बिरामघरीक्रूरै रेई हिप्रातवनै
कनिहारी बेलालसनि॥ इहप्रकास॥ वाकृ विग्ध्यास्ववं दू
तिकरै है॥ धामधूवघरीकवितार्ई वे॥ जमनातीर विवे
तीरकेसोहे॥ ललितसुंदर जे प्रलिमै याताके पुंज सम्हह
तासाकलित जुहि है॥ फिर तमालतरसा मिलत जोहै माल
तीचं वेली ताकी कुंज है॥ निरजन देस है हमसों तीहरखदे
यहहुनी परयाको हि॥ परयायो त्रिप्रकार है कछुस्वनासे
वात॥ मूल॥ अवने कर गुहि आवदोहि हेवपहराई लाल॥
मौलसिरी औरै बडी मौलसिरी की माल॥३६०॥ यहु नायका
ने अवने हाथ वनाय के मौलसिरी की माला पहराई ता
हि ता पयाकी सौभाग्य अधिक भई सो सखी नायका सौं कहै
सखी सखी सो कहे॥ सवैया॥ आपने हाथन तीन के फू
ल वनाय उहीं मन लपिव हाई॥ मालस मौलसिरी
की रसाल सुगंध भरी अत ही सी पराई॥ आलिन के
गन मै लखिके हसि कै हठि प्यारे हि वे पहराई॥ औ पाय
कूपद है ताहि नौवरनी न परै अनुराग निकाई॥ इहप्रका
सखी सखी वैन॥ अपने कर सौ गुहि के लालन नै ठकै हद
यमै पहराई॥ ठिवो अवर उघरवे कू लीये न नी न श्री
सौभाग औरै वढ्यौ नायका को आस न भए सो सो भासै मौ
लसिरी की माला सो स्वाधीनपतिका जानी॥ ९॥ कौ
सी श्री औरतरह या की औरतरह की॥ ऐदिकाति सदो
ति॥ औरै पद जहा दोजी वे अधिकाई कैहता॥ अति
सको हि॥ दोद कया है करत सब विसिर जेता॥ जलविहारकौ

134A

मूल लै बुंभकी जलजात जितजित जलके सस अधीर। कीजत केसर
नीरसे जित तित केसरनीर॥ ३६९ जलकेलि सखीके [illegible] नसखीसो
सनैय॥ मोहनसो जलकेलि रवी वृषभानुसुता हितरंग मैवोरी
कृष्ण कहै कवि ताहि छवि वेरति कामकी वारो वरारन जोरी॥ बूंम
कलैगहैरे जल हूचलिके जितही तित जाति किसोरी॥ केसरके
जलके सरिके सरिनीर वहै तितही तित गोरी॥ इह प्रकास। सखी
सखी अंगकी कांति वर्नन करै है॥ नायका बुंभकी लैके गोतामा
रिकै जित जित जहूं जहूं चली जाति है जहां केस विषै अधीरव
चलै है। अंगकांति सो केसरनीर सरीकी तित तित के तहां तहां के
केसरनीर जलकी जतन करत है॥ केसरके सर जमक पीत धर्म
नहीं है॥ केसरनीर उपमान सरनीर उपमेय सो वाचिक ध
र्म लुप्तोपमा॥ मूल छिरकैं [illegible] नवोढ दृग करि पिचकी जलजो
रारोचन रंगलासी भई विय तिय लोचनकोर॥ ३७० यह जेष्ठा
कनेष्ठ है अन्यसंभोगदुःखिता है। वनै सखी [illegible] वे नते सखी
ताहू है। सवैया नंदलला ललना गन मैं जलकेलि सीर
सरी तरलाई॥ बूंमक लै उछरै वहु भांतन दुरै मरि अंक करीतरलाई
लोचन भामनी के छिरकै करकी पिचकी जलधार चलाई॥ सौति
के लोचन कोर न मैं परतही भरी लोचन रंगललाई॥ इह प्रकास
सखी सखी वैनानार। नैन नवोढ नायकाके दृगनै सौ नकौ करकी
पीचकारी के जलके जोरसो छिरकै कि ताकरि जोर पिचकी व
नाय॥ जलसो छिरकै रोचन गोरोचना ताव सरीकी लासी भ
ई॥ तियके तियकुलीय दोउ लोचनन के कोर विषै॥ किना विव
दूसरी जो तिय है सौति। जाके लोचनकोर विषै औरके नैन

छिरके औरवनै न मैला लीभई॥ असंगत अलंकार॥ तीन असंग
तिकाज अरु कारन न्यारे ठाम॥ विवान वे ढानै नादृ दृग छिरके
औरवे से हि॥ लछन॥ हिंडोरा वर्नन॥ हरि हिंडोरै [illegible] गगन ते परी
परीसी दूटि॥ धरीधाय पियवी च ही करी बरी रस लूट॥ ३७१॥ यह
नायका मुग्धा है हिंडोरे ते देखि के नायक को मंजिवे को भई स
हूट पर सखी सखी वैन॥ सवैया॥ बाल छवीली सखीन के संग
बनी ठनी झूलत तंग हिंडोरै॥ चाल के वीचू न री चार कसं भी कुं
3 धसनी दमके तन गोरे॥ नंदलला लखिवे ते दूरि परी जै वे
री अतला जानि दरे॥ प्रान पियारे ने वीच ही धाय करी रस ले
रि लई भरि कौरे॥ हेतु प्रकास॥ सखी सखी वैन॥ हिंडोरा सो है ग
गन प्रकास ते नायक के न जीक है रि विंकारे सखी ते दूरि॥
परीसी अपसरा सी दूरि परी॥ धरीधाय के पिय ने वीच ही मे
धरती मे न हि पर वे दीनी रस ल्हरिके कुच कपोलको सपरस क
रिके करी बरी तव धरी मे बडी करी॥ विंकाजो हे कहत हैं पला
ना के संग मे पलाना वो लउ ढो॥ वीच सब कहत आमे को
मी कहत हैं॥ पियकै वीच हि आगै हि उपपति ने धरी आगे वही
अछि॥ बरी को अर्थ आति ली जिये तो पति के देखि उपपति ने
धरी अंग सो लगाई या ही अतार सल्हरी विं वाबरी के अर्थ सां
चीकुच को अरु नकरि सांचीर सल्हरि करी॥ हिंडोरा गगन ल पक
परीसी उपमा परी परी जमक॥ लछन॥ नरजो दूनी हृठ चहुं ना स
कुचैन सकाय॥ हूरि ता करि झूमवी मवक ल रिक ल हि क व विजा
य ३७२॥ नखी समय हिंडोरे की सोभा सखी नायक सो कहत है॥
सखी सखी वैन॥ कवित्त॥ झूलि ने को चसके लागे है उनी [illegible]

135A

घौसन मे छाडि सब ठौर न ही ठौर ठहराति है। नरजि कज्यौ ज्यौ त्यौं

त्यौं मानत न एक आकरष्ठ के चढत सकुचत न सकत है। गात की

न सरत स मार उरग्रं वर की हार बिर सत्ता बिहुरी न ठहराति है। सबे

दुहु ओर के हि डोरे की च मक करि दूरत सी सव क सचकव चिजा

त है॥ २२ प्रकास। सखी सखी॥ वर जे सो हि ठु के दू लाव छत है। किंवा

दूनी हि ठवक त दूनी हि ठकरत है॥ नाम कुंचे न सकाय दु मचीछ

टे डार सै सचके के हैं॥ करि दूरत सी सविक सचक व चिजाति है॥ न

रजवो बाधक है तो भी दूलावडे है॥ त्रिभावनाकरि दूरै है मानो

गम्यात्प्रेक्षा॥ मूल। चोर मिहीचनी॥ दोउ चोर मिहीचनी

खेलत वेन अघात॥ दुरत ही ये लपटाय के छुवत हिये लपटात॥ २२३ सखी सखी॥ सवैया॥ एइ न ही ये वेने रितकी ग

ति अैसी कहि अैन लोनल हि है॥ दोउ बरे अति बाइ मरे निस

द्यौ सर है उमह चित ती है॥ चोर मिहीचनी के सह खेलत के

न हू मात अघात न ही है॥ ज्यौ दुरै त्यौ उर लपटाय ज्यो छु

है त्यौ लपटै उर ही है॥ २२ प्रकास। सखी सखी॥ यारी अत

स्या है नायक पर की या है॥ खेलके मिस के मिले है॥ दोउ

चपात चोर मिहीचनी॥ कोउ चोर खु का वली कहत है॥

ज्यो हि खेल विडात यो खेलिके॥ सखि न्हा सो करि ये न

हि अघात है॥ न ही तृप्त होत है दुरत है छिपत है ही ये

लपटाय के अघायवो कारन न ही॥ विसेषोक्ति॥ जि

है है तेसो कारज उपजे नाहि॥ अपसज्ञ तेउ ठवो न नैन॥

मूल॥ सखि सखि आषि यन अधखुली अगमोर अंगराय

आधिक उठि लेटति सटिक आरसभरी जम्हा य॥ यहतर

तांतनायकाप्रौढसखीसखीवैन॥ कवित्त॥ सैनसुषपागीअ
नुरागीहरिसंगजागीसोभासरसानीअरसानीजमुहातिहै॥
विथुरीअलककुटिलआवतिपलकमनमनमथकीरसक
अतिरसबरसातिहै। लसतनकपैलसैलसतनीकीपीक
लीकदाउजुगजोरसुषमोरजमुहातिहै॥ आधिषुली
अलिपनसैंआलीतनआविलोकिआधीउठसेजनह
लटकिलोटिजातिहै॥ इहप्रकास॥ सखीसखी॥ अधिषु
लीआंषिनसौंदेषिदेषिकैकिबा॥ सखीनायकासौंकह
वेहै॥ हेपियलाषिदेषोअधिषुलीअषियासौंलषिदेषि
फेरअंगमोरैहै। अंगरातिहै॥ आधीउठिकैलोटिकैलोटति
है। आरसकोअर्थसनतरहकोरसभरीहै। अनुरागभरी
हैनायकाकरकीयअनुभावहैप्रीतजानीजातिहै। हर्ष
हीजाकोजेसोरहवजमवरनततहीसीत॥ सुभावो
नीठउठिवेठहतियप्यारीवरआत॥ दोउनीदभरेभरेगरे
लागिगिरजात॥ उदे॥ बहरूरतांतनायकाप्रौढा॥ सखी
निससंगजगेपकविकुहमकहेवेलषकललकलावहुभांत
विलासहीवेउमगे। उठिवैठतसेजपैनीठतउठिचैनस
कैअतिप्रेमपगे॥ सुबनीदभरेअरसातभरेवहुसैंपगिरजा
तगरेहीलगे॥ इहप्रकास॥ सखीसखी॥ नीठनीठ॥ कैसे
हूकैकैहू॥ प्रभातप्रातसमयदोउदंपतीदसरेआरसभरेहैं
आगेसाबआलसदिद्रसंचारीसभावोहै॥

136A

मूल लाज गरब आलस उमग भरे नैंन मुसकाति ॥ राति रमी रति दे
ति कहै और प्रभा प्रभात ॥ ३७६ यह नैनन के भाव ते विसब्धी नायका सौ
कहै तौ लक्षिता नायका नायक कौ कहै तौ खंडिता ॥ कबित्त ॥ सारत
सरस लसत भरे आरस सो महा रस मग टहरि है वारि रिले ति है ॥ लाल
डोरे राजत है और और छवि जात है फूले मुसकाति है निवेरत है ॥ मैन
की उमंग भरे जोवन नेह रंग भरे लाज की तरंग भरे गरब समेत है ॥ सैन
सु बधागे निसजागे दृगत्तरे न तरा ति रमी रति के प्रभात कहे देत है ॥
॥ रस प्रकास ॥ लक्षिता सौं सखी बैन ॥ लाज गरब आलस उमग उछा
ह इ गरे जे हैं नैन ॥ ते मुसिकाति ॥ प्रीतम सौं राति करी है रमन
की जो है ॥ प्रभात विषै और जो है प्रभा कांति सो कहि देति है ॥ अन्य
संभोग दुखिता की भी उक्ति ॥ खंडिता की भी उक्ति ॥ यह नायका कहता
है संग मैं राति रमी है ताकी रति जो है प्रीति ता सौं प्रभात विषै और जो
है प्रभा सो कहे देति है ॥ किंवा रमन के रति और प्रभा कहत है ॥ ला
ज लाक की रमै ऐसी नायका मिली है ॥ याते गरब आलस राति जा
गे है ता सौं श्रम विषै है ॥ ऐसे उमग भरे तुम्हारे नैन हैं ॥ औ मुस
कात है ॥ औरै दिन और प्रभा आज और प्रभा मोहि कांति स
यो त्ति ॥ मूल ॥ कुंज भवन तजि भवन कौ चलीयै नंदकिशोर ॥ चटकत
कली गुलाब की चटक आहट ओर ॥ ३७७ यह नायका स्वकीया है
होय ॥ नायका के बैन नायक सौं ॥ कबित्त ॥ मुकुलित कलीज सजा
त की कछू कमई भौर नकी गुंज मंजु श्रवनन धारीये ॥ गुलक गुला
ब कली कानन सुगंध पौन चटका समंद मोद उर धारीये ॥
कलिधुनि कर त्तप्रलिय बगबृंद न आनंत तद्धि विलसति निहारीये

विहारीयै॥ अगम्यप्रभातकौ विलोकि वेधवीलेसालसुंदरति
कुंजतजिमनन सिधारीयै॥ रसप्रकास॥ नायकासौं सखीवाक्य॥
गुलावकी कलीफूलीहै॥ तहां सुधवरनतहै॥ मनोगुलावकुसा
मदीचटचटचुटकीदेति॥ फूलतिहै गुलावकीकली ताकौ चटपटा
हटचहू औरहै॥ किंवा गुलावकी कलीफूलतिहै अरुचटक
विरात्ताकौ आहटसवदहू औरहै॥ किंवाहरनंदकिसोरगुला
वकीहवादेवेकेलीये मानकौतजि कुंजमैं मानकौ वलीये॥ पर
कीयानायकासै कासंचारी॥ पहला अर्धमैं कोईदेवोमौमैंन
मौनवेचलवेकै समरथन करैहै॥ गुलावइत्यादि करिप्रातम
टोकाव्यलिंग॥ काव्यलिंग जवजुक्तिसौं अर्थसमर्थन होय॥
दोहा॥ नहिनसीससावितभई लुटीसुखनकीमोट॥ चुपकरिये
चारीकरत सारीपरी सलोट॥ ३२८ यह सुरतकी मरगजी सारी
देखि सखी नायकासौं कहैहै लछितताहै॥ कवित्त॥ रसकी उमंग
भरी रंगभरी सोहति है अंगकी सिथलभई अगमजलछाईहै॥ रू
मतिरुकति अंगराति जम्हाति मुसकाति अरसाति सरसति ज्यौं
निकाईहै॥ मोटी छूटी सुखकी प्रगट भई तेरे सीसकेपाह
सुकरति मनमथकी दुहाईहै॥ अववचुपकरि राधे एईतौ करत
तचोरी एतो आजसारीमैं सलोटपारि आईहै॥ रसप्रकास॥ यह
सुरतकी मरगजी सारीदेखि लछितासौं सखीवैन॥ किवास
वीसौं अन्यसंयोगदुख्यताकौ वैन॥ हे नटे माति दुराय मति
जाय तेरे सीसतैं तेरे माथे सावितभई सोच गई छरी बोसनि
है तौ सुखकी मोटगांठ छूटीहै। बहुतसुखकापायहै अर्थ॥

जाहौकहतहै॥ ताकौउदा॥ एकहुचुपकरि रूठमतिबोलैकहुनका
रीकौउदा॥ सलोक॥ सलवटवरी जो सारी है॥ मसलीगईहै॥
सोसारीचुगलीकरति॥ रूपवकौ सकै वो सारी केसरीरटसौ २६
कौ का काव्यलिंग॥ सीससमावतिमई रोको है॥ लोकोतिकछ
अर्थसोंलीनलो किप्रवाद रुल॥ मोसौमिसवतिचातुरीतन
दमानतमेव॥ कहै है तव पट प्रगट है उपज्यो दसावसेव॥ २९९
वहनायकाकेस्वेद सखिसखीसुरतीजानिकहतहैलखिताजा
नीहै॥ सवैया॥ आजुवगीसुषपुंजमें प्यारी निकुंजमें केलि
करीमनभाई॥ पीकगईढरि औठनकी सुकुटीमुखमंडलकी
अरुनाई॥ स्वेदकी वातकहे कि नयामनिमोसोंचलावतिकौन
तुराई॥ तोतनदेतकहै प्रगटेइहूदूसवेमासपसेवहैसो दूराई॥
स्वप्रकास॥ सखीवेनलखिताते॥ किंवा अन्यसंयोगदुःख
ताकेवेन॥ मोसौ तुरवाचतुरकी वातकहैंपलायेहै तनहीमा
नति मैंनकारतिहै॥ सोवनही कहतहै॥ दूसयेप्रस्वेदसात्वकप्र
गटोउपज्योहै सोप्रगटहीहै॥ जाहिर पदरदेतहै॥ पूसप्रस्वे
दकौ कारन नहीं है॥ ताही भात विभावना विनहीकारनकाज
रुल॥ औरै गति औरै वचन भयो वदन रंग और॥ द्यौसक
ते पिय चित चढी कहै चढेहै त्यौर॥ ३०० यह नायका प्रेमगवित
काहै कौ मन आनति नाही सो सखी सखी॥ नायकासौ कहै तो
उवनै सवैया॥ औरही चाल चलिनि लोकनि और ही रै ही पै आ
ननरूरंग और रह्यौ॥ बोलनि आनि है मानि उमानसो टौंनिध
नी धन पायकै बौर रह्यौ॥ तू रेरू बातनि उतुरदेति है डीठकहूठहरा
तनहौं रह्यौ॥ है कछु दिनते चढी पियके चितप्यारी चढावति सीसतयौ॥ ६

रसप्रकास॥ सखीवैननायकासौं किंवासौं तिकीसखीकीउ
क्ति॥ सौं तिकी सखी सौं॥ आजै औरस्तरहू पै रहतौ। अवऔर
गति और रवबन। औ मुखकौ रंग औरहू भयो है॥ एकदिनातें
तियके चित चढ़ी है॥ चढ़ो है त्यौर है कहत है और पदसैपे
हिकाति सखो हि॥ मूल॥ सखी रंगी [illegible] रतिजगे जागी पगी सब
वैन॥ अलसौहें सोहे कियें कहें हसौंहें नैन॥ ३८८ यहना
यकाके नैननकी सोभा देखि सखी नायका सौं कहै है॥ सखि
ता है॥ कवित्त॥ ओहु सो छवीले रसरीत कैयो छिपावती है॥
आनन तैं उमगि अरुन औपजागी है॥ अंग अंगनि सिथल
अनंग रस संगसने रंगसनी कृष्ण अनुरागी उर लागी है॥
लसत रहसौ है अलसौहे एच पलाव बसौ है कियें कहत प्रग
ट प्रेम पागी है॥ कहि न परत आली अदभुत है है छवि ईहु सहि
रंगी है रति जागे आज जागी है॥ रसप्रकास॥ सखीवैन
सखिता सौं हे रंगीली सहि सां वरहूँ रतिजगी जाग में जगी है
निकाहू [illegible] में कुलदेवता प्रीतर्थ जागरन करत है तामें तू जा
गी है॥ [illegible] तिके लिये जो जागरन तामें तू जगी है वे सब अं
गहू स्वाभाविक न कार वहू ता वाचक सब्दके चयन सौं संतूहन
सौं पगि रही है लपटा रही है॥ अलसौहे आलस भरे औ हसौ
हे जो हेर नैन है॥ सोसौं है करति है॥ सापथ करकहत है॥ किना
साहनैं कियें सौ हसौं है हात जो है नैन तो कहत है॥ आनोआ
[illegible] जो है अनुभाव ताहो जानी गई॥ आलसहु के संतासे॥
राति कै जागरन उहरायौ॥ आलस सौं है इत्यादि करि॥ का
कलिंग॥ मूल॥ पौवलिमलयत निरद ई दई कुसुमसे गात॥

142A

हू नायका पर कीयाम्रत स्रुरति ग्रु प्राकौ वैन नायका कै
सखी नायका सौ कहै ॥
सखी सौ ॥ जौ नायका कू प्रतद्र सखी नायका कै अंग प्रबकी अैसे
तोसु ड्रिता ॥ सवैया ॥ तोहि तौवान परी अन वैक की अैसे
हीकैपे सततराहरठानौ ॥ कीजतौ वैतौ निरधार कहू किधौ
योस्त्रडावके वौलिदवानौ ॥ केसर सौं उघटौ तन सोक
हू केसर हू कर हू लपटानौ ॥ आउरी तोहि स्वांङ्गनिगौल
हू बाहरी तै वैन सद्धत जानौ ॥ स्वप्रकास ॥ सखी वैन तै
ड्रिता सौ ॥ केसर कु सम कूल ताके के सर किं अल्लवसो
संगमे लपटाय रहे हैं ॥ तं और नायका कौ वैन बजानिये ॥
प्रन सखी पाठ मे ॥ उत्सावा ली कू पनाजानीये ॥ प्रन
सुलीयाछे हे ॥ वात सो लवे प्रकासके तै नही कहत है ॥
कत कौ बोलति है ॥ प्रन बाव स्र सौ धके सर स्रजी करै है
सो पीसीके सरकी प्रतीत होत ॥ के सरकै सम कहे है स्त्रप्र
धकपद है ॥ दोस नहि ॥ आंतायनूत ॥ स्रल ॥ पट की ठिग
कत काटियत सो बि तस्र अगस्र वेब ॥ स्वपदछ पदछ विदत
है स्रदरस्र छद की कैरब ॥ २९३ पर स्रर तौ कौ विहु दुराव
तै सखी नायका सौ कहत है ॥ सवैया ॥ आज अमटूर ति रै
गके मंदर तै मन मोहन के संगजागे ॥ कैलवि लास रु
तास पके वड वाग्नि हैरिस के अनुरागे ॥ ताव हि कैपे
पट का ठिग हौ अति सोहत वातर प्रभीन सो पागे ॥ इति म
हाछवि कीह सकी रहरे बरस्र छद की सद लागे ॥ स्वप्रकास
यह हताकै ड्रिता मे लिख्यो है ॥ अग नायक कौ संबधन
करपट सो छापि वो रस्र छद की रेख प्राहे नही वनै ॥ ल

छिन्न हो सखी की उक्ति॥ पट के छिग पट मुख पर को वस्त्र कैं
को अर्थ करि के॥ पट कौ न जीवक करि के कौ छाति यहि॥
है सु भज है सो भागवत तेरवे बहुधरतर है सो रहत है॥ भास
त है॥ रूप जित नो चाहिये तितनौ॥ रद छद नाम दांतना
को छद कहिये॥ आछादन करन वारौ॥ अधर होठ ताहि
अधरविंब॥ छवि येतमा रहत है॥ इह जो है॥ सद कहिये पटर
त को रद दंतन छद कहिये धत ताधावताकी रेखा पट को छाति
प्रतिबंधक है॥ तो मैं सो म [illegible] विभावन॥ प्रति
बंधक के होतहि कारज होइ रन मान॥ वृत्ति अनुप्रास है॥
बहुत वार अक्षर के है वरें वृत्ति को जान॥ मूल॥ मोहि सो
बातन लगे लगी जीयमित सनाव॥ सोइ लै उरसाइ ये ला
ल लागा तियपाव॥ ३५७॥ वह मध्य मान नायका सैं ना
रै करत॥ मान नायक सैं आसक्त होय नायक ताहि कै
नाम लीनौ॥ सो नायक सैं हो रहकरत है॥ कवित्त॥ केतो
रा गोगाय होय पगारहि वें के भाप जाहै रंग मगे मन रहो
अनुराग के॥ [illegible] प्री त को धरम व रूपाय
अवम रम मरम गये भागि कै॥ उघरी रसकर [illegible] री तं अवी
बीन वाकै भलै सुधवी नीमें से बातन हलागि के॥ ना
यन पर तहरेवा है उर लगिरी जाकी जाहर मनी के मास र
हो रसभा मैं पागिवे॥ हरख प्रकास॥ नायक की उक्ति ना
य क सो॥ हम सो भी नातन लागे हैं जाहर नायका कैना
म सो जिहारी मैं लगी है॥ ताके नाम मठम अनव हहै॥
सो नायका को लै के उरसो लाइवे रमे छाडिये [illegible] स्वर्ध

मी

श्री

138a

करिधरिदेषोधरधराउरक्याग्रजोनजात॥३०२ यहनायकासु
रतमैंप्रतिमर्दितभईहै॥सोग्रतिबिमलभईहै॥सषीनायक
सौकहतहै॥कवित्त॥वेसप्रलवेलीमृदुबेलीसीनवेलीबाल
मिलईगुपालतुमे कितनेउपायके॥रसिकरसालकेतमये
निरदईके हिकरोपेजोकरेसीरससीतविसरायके॥ग्रैसीदल
मलीमृदुकुसमकीपांषुरीसीपरीहैग्रचेतसावसुद्धिविस
रायके॥बतीपाकेहाहाकहै छतीपाकेधरधराग्रजहून
मिटतनिकरदेवोग्रापके॥इतिप्रकास॥ग्रथबेसरमांत
नायकसौसषीवाक्य॥जिंवासषीकेरसिसाध्याचाहतहे॥
परकीयाहै॥यौंयातरहदसमसयत्तहै॥मदालियतहे॥रसक
प्रीयामेमदनबहरतिमेकह्योहे किंवा॥दोदलपत्रकीत
रहमालियतहै॥ग्रबउनिरदईहो एदईकरतगाकरिकहत
हो जाकोकुसमसोफूलसोगातसायेरकरिहाय छती
सेधरिके देषोधरधराधाकधकीउरकोछतीकीग्रजोग्र
वतांईभीनहीजातिहे॥रतिसमयविषधरधसेयो॥हा
पहिवावेहै॥पेरिरतीकैरंगतेधरधराहोयगोग्रबतोग्र
तछहै॥भाविकग्रलंकार॥ललितललामकोदोहा॥ज
हंभयेभावीग्रर्थवरनतहैपरतक्ष॥तहंभाविकसावकेहतहै
जिनकीमतिग्रतिस्वछ॥सल॥छिनाकउधारतिछिनाबहु
वतिराषितछिनकिछिपाय॥सनदिनपिवबउत ग्रधर
दरपनदबतिजाय॥३०३ यहप्रोढाहै नायकसोसनेहग्र
धिकहै॥यातेनायककोनरतिकोनिहुकोमनलगा
वतिहै॥सोसठीसषीवैन॥कवित्त॥रातिरतिरंगपतिसंगग्रिस

२९ १३८
139

कीनी अंग अंग मनमथ की तरंग जंग सरसै ॥ मोरे मरावा
ल सजनी गन भैवे ठौ वनि सा की वाति सुमरि सुमरि जि
य तरसै ॥ प्यारे के परसे के अधर वरवि दू जारि अरसी से
वार वार देखे रस वरसै ॥ रूव हू उघारे ठ निराखे रूव हू
के अन उरज मे उमगि पान पल्लव के परसै ॥ ३२ प्रकास ॥
नायक अधर खंडन कर परसे सगयो है तव नायका की
चेष्टा सखी सखी सो कहत है ॥ प्रति अनुराग जानी ॥
छिन नाक उघारति है छिन नाक अंग उरन सो ढकति है ॥
काहू कू देखति छिन नाक छिपाय राखत है ॥ किंवा छिन
नाक उघारे है ॥ पीय याय आवे है तव छल सो उत्साह सो
ढकै है ॥ प्रेम सजानति है नायक नजीक है या ते विरह
नी मैं उत्साह ॥ प्रेम लछन संभ प्रकास मे ॥ मान तथा
वियोग मै जोग हू संग वियोग ॥ इंगत वित्त ताको कहे प्रे
म सवे कवि लोग ॥ अंगुरी दिये छत वै है जव छन छ
ढनाइ है ॥ तव छिपाय राखे है अरु स्वकू ॥ जानि अलं
कार ॥ ताकी आवृत्ति सो दीपक ॥ ३५ ॥ कैधौं उ विवु
क उठाय वे कंपत कर मे रत्तार ॥ टेढौं ये टेढौ फेरे टेढौ ति
लक ललार ॥ ३०४ यह नायका प्रेम गर्विता सखी स
खी वैन ॥ नैन तै नासकौ [illegible] क भाव मध्ये सवैया ॥ ठो
डी उठाय कह्यो चितचाव सौं नैन लला अवतारि अनुरागे ॥
भाल लगावति है अंगुरी कर कंपम को अपति प्रेम सौ पा
जो अग्रानै अग्रानै मनै तव ते न गमै कछु आवन प्रेम के
आगे ॥ टेढी पटेढी फिरै रूज लोचन तिरछे ई टीकौ लिलार कै लागै

रसप्रकास॥सखीसखी॥ चिवुक के ठौढी उठायवै भरतार जो नायक
नायके रूपसे भावे जो अरूपसा अवक ताकौ। कपोलि कर ताने नैन ना
यका के लिलार मैं देखो तिलक किये ता सौं टढे टढी वि
रत मोसी सुंदरी नहीं॥ दिमाग भरी जानी ये रूप गर्व ता जा
नीये॥ ऐसे तिलक सो लाज रा ही पै हो गई भये या पे
दंत्र मैं विभावन॥ काहू कारन ते जु वो कारज होय विरुद्ध
रस॥ और रै और पकनीन कू नगनी घनी सिरताज॥ मनी
धनी के नेह की बनी ठनी पट साज॥ ३०८ यह नायका
सखि ता सौं वै न सखी के॥ नायका सोहै तया को अपुध
क है॥ इन नैनन की सोभा और भई या पद ते प्रेम गर्व ता
सूं हय॥ सखी सखी प्रति है॥ कवित॥ केलि के सोल मैं रंग
कै सुंदर प्रीतम संग रमी रजनी है॥ नेह सनी द्रसा छिपटू
अरसाति प्रभा सरसात घनी है॥ और है सोभ हगतन आ
प अनंतन की सिरमौर गनी है॥ काहू के प्रेम सो सोहै
मनी पट साज गे वार छनी सी बनी है॥ रसप्रकास॥ अ
न्यसंभोग दुख ता है है न सखी सौं॥ कनीनि को जे ते
ऐ प्रास की एन री ता मैं आजु अधाप वसान कार कि वा औ
र प्रकास है॥ और दिन की तरह नही के सो है करनी नि
को और नायका न की घनी बहुत जे कनीनि को ता
सिरताजि है॥ सिरताज को अर्थ यह स छनौ सोसद
र लीजिये॥ पेरवे सी है मनी धनी के नेह की॥ धनी
जे नायक ता के नेह की मनी है मानन वाली है॥ नाय

किवाल
छनताली
सखीवै
न

हसूक्ष्म लाजतो बनीहै बडीलाज तो जाती रही है

कैकौ नेह तो हम सो ही है ॥ और सौं नाहीं ॥ किंवा नायक के नेह
की मनी है ॥ प्रकास है छबाय के मिली है ॥ नेत्रन ने प्रगट की
यौ ॥ अवभीकनी नकन में पटछनी लाजवनी है ॥ बडी ला
जतें जाती रही सो वस्तु कपरछन कि जिये सो सूक्ष्म है
त है ॥ पटछनी कपरछनी किंवा ॥ मानी रवउ नगर बीजो
तै ॥ तैरैयधनी नायक ताको जो नेह ताकी कनी निकावनी
है ॥ नवदुलहनसों नेह उमु सौं लप्यार है ॥ दुसहादुलही
कौ बनावनी कहत है याही ते लाज सो है पट तामै छ
नी है ॥ छवी है ॥ और वद सो ओदकाति सयोन्हि ॥ मूल अ
पवंड्डितावर्नन ॥ बेई गड्डि गाढे वरीउ बट्रो हार हीये न ॥ आ
आन्यो मार मतंग मन मार गुलेल निमैन ॥ [illegible] बस्ना
यक सठ है विनऊन हार के विहू कै मीठी बात कहि दुरावती
है नायक को बैन नायक सौ हाय तौ बंड्डिता हाय ॥ कवित
आऊ मन मोह नमपावै मेरे आवलाल सोइ तसि गारबार
मेरे मन मान्यो है ॥ आल सन लित हगमूमति लालित गति
सिपलकालित रूप मोहनी सो सान्यो है ॥ कोहम पाए
प्यारे रसो ओउ अचे उमड्डि बद मिर ऊन हार अस्वट जात जा
न्यो है ॥ वेई गड्डि गाडै परी जो मति गमदन ने ऊरेरन सौ
आनि मोहि मनमद आन्यो है ॥ रस प्रकास ॥ नायक प्रात
आय है ॥ तहा नायक सो किं वास बी सो अभीरा की
उक्ति ॥ प्रगट्यो हार हीये न ॥ उनके रूप में पराई इस्त्रि के
गल के हार नहीं प्रगट्यो है ॥ ए नायक सो मति गहाय ती ॥

२०६

है ताको मैनका मगलेल नसो मारिवे मानौ मार कै पर स्रा
न्या है ॥ वैई गडि गाडे परी ॥ वेई गुलेला की गाली गडी है
ताकी गाडे गडे लाप रे ॥ मन के मतंग कहै गुलेला को उवि
ढैवो न सैस भवे ॥ हार को उविढ वो ढि पावे ॥ गुनेला की
गाढ को ढह रावे ॥ सद्धापह्नुति ॥ धर्म दुरै आरोप तैसु धा
पह्नुति जान ॥ क्रिया के आगे वाचिक है याते अनुत्तास्पद
वस्तु प्रेक्षा ॥ उत्प्रेक्षा संभावना वस्तु है रूपक लक्षण ॥ गज उपमा
न नायक उपमेय नहीं है सो जानियो परत है ॥ साध्यवसा
ना लक्षना सो ॥ रूपकातिसयोक्ति ॥ अतिसयोक्ति रूपक जु
हा है अवरन को ज्ञान ॥ सारोपा लक्षना सभापका सम्मै ॥
रोप्यमान जहां कहत है रोप्य विषय न कहत ॥ रोप्य विष
य जान्यो परै साध्यवसाना सोय ॥ आरोप्यमान मतंग ॥
नायका आरोप्य विषय ॥ मूल ॥ पलन पीक अंजन अधर
धरे महावर भाल ॥ आज मिले सु भली करी भले बने हो
लाल ॥ ३० सवैया ॥ पीक पगी पलकें छलके छवि नैन
मैं अरुनाई धरी है ॥ अंजन वार फल्यो अधरान ललार
मैं लाल महावर छाप परी है ॥ लाल बिना गुन माल हिये उस
कान अनेक प्रमान भरी है ॥ नीके बने इह कानन द्वार
जु आप आके मिले सु भली पै करी है ॥ यह नायका प्रौढा अ
धीर नायका सो ॥ रसप्रकास ॥ धीरा की उक्ति नायक सो
पनीसवार आज मिले सु भली करी ने सानी से नौरी जाहर
भई है लाल महावर ने हो पलक में पीक इत्यादि सो बहु
तां करत लागत है ॥ तापी कै भीरजो है ॥ करी तापी भले

वनै है। कि नालाल मलेवनौ है सहहै। तहा नायका वोधक्य सा
पराध नायक। ताके प्रभाव ते विपरीतार्थ है लछन लछना होत
है। तासो अलीक रीयाको अर्थ बुरी करी। मलेवनै है याको
अर्थ बुरे वनै है। समाप्रकास। तेते सब्द निज अर्थ को परअ
न्वय सिध देत। जे निपरै जहा अर्थ अनिसद्धि न लछि विजे
त। राज अवदनो अर्थ छाडै परकहै वै औरपद ताको जो अ
न्वय संबंध ताकी सिध वेली पेतहा और अर्थ जाहिर जानी परै
तसु लछना लछन अरु उकगहै तासो मध्यम काव्य अ
संगति अलंकार। और ठौर ही कि जीये और ठौर को काम। अ
गाह कि गास और गहैं वधवि रे रेन। देखिबिसो है विवन
यन कि येरि सो है। नैन ३८८ नायका खंडिता नायक सुरति के
चिह्न दुराव वे याके अपने आपै आयहै सोतत करन लागी वतिरा
नये नायक के नैन लजौहै है। देख नायका नैन न कैसो है की
नै। सखी सखी सो वेन। सवैया। आवति प्रान पती है। विलो
कि उघा सम नेह नीडी ठसो है रे। धाय कै आगे है आवली वे
ही यमै अवजे सुख पुंज घने रे। आधे से वैन कहै ई रहे अब जा
सजहै उरका पवकेरे। तोलके नैन विसाति विलोकि रिसाय
केराधे तही छपेरे। स्वप्रकास। सखी सखी वैन। गहिक कोला
हल करि है। गास और है अभिप्राय गहै। नायक और गहै।
नायका और समझि। के रवचन अथवकहै सौंधे नहीं पिव
के नैन विसे है। कछु लाज कछु आसालीये। देखिके नाय
का नैरि सो है रिस भरे नैन करे। उनकी आस ह्वाकाहू प्रेम
र सो है या ते खिसे है। नैनकीये आो अनुमान कर जान्यो।

८६

औरै वद सैम हि काति सवै प्रिय॥ दूहा॥ तेहु तरेरे त्यौर करि कत
करियत दृग सोला॥ लीक न हि इहु पीक की श्रुति मन रलक क
पोल॥ ३८९॥ यह नायक सापराध जान नायका के वचन को न
करत है। सु नायक की सखी नायका के चित्त भ्रम को निवारन
करत है। सखी बैन नायका सो। जो नायका की सखी कहै
तेरी
तो भ्रम निरवृति उपाय रूप दोस॥ सवैया॥ आजु ललि लखत
कछु औरै भांत जगति आनन पे उ[illegible] आलिस लाई [illegible]त है। [illegible]
टीकुट लिख[illegible]ति तेह सो तरेरे भई नैनन मे रिस की तरंग छल
कत है। करे क विकृत[illegible] वह पो[illegible] है। वह तो करि पीक लीक
जान तू उनको लवत्स कत्त है। ललित व चोल वर नै [illegible] वि
लोक श्रुतिन मन की मन की [illegible] रलक [illegible] लाव कत है। [illegible] रूपक।
नायका सो सखी बैन॥ तेहु गुस्सा ता सो तरेरे त्यौर उरकाम
नी सुरति करि कत का है कै दृग को लाल रंच सब करत है। सी
क लक की रपीक न है है॥ और नायक को येबूं न निसो न है। लगी
है। कान मे जो है[illegible] नैनन की रलक कपोल वे है॥ सखी बैन
न सो नायका को भ्रम[illegible]॥ आर्ता पहुति। आतापहुत्तन
पन सो भ्रम पर को जब जाय। दूहा॥ बोल कहा लाली गही
लोयनकोयन माह॥ लाल तिहारे दृगन की परी दृगन मे छहि
है। ३९० नायक सठ नायका खंडिता को प्रति उत्तर। सवैया
बातनि का ईलखै जिनु की रद लागत रूपौ पर तो पलक की है॥
अंजन की छवि मंद करी निदरी दुति विद्रुम के दल की है॥ प्रान
न
पियारी कहा इन नैन नौं आजु लला ईरती लल की है॥ लो
चन लाल त न्यारे सबै तितकी रति पान प्रमा न लल की है॥

२२ प्रकास॥ अधीरादाहृत मै नायक कवच अधीर मै नायक को
दे बाल तेरे लोचनन के का वा मै कैसे लाली भई है॥ हे लाल
तिहारे नैननकी हमारे नैननके छाह प्रतिबिंब परयो है॥
तुम्हारे नैन रात और पास जागे ता सो लाल है॥ चित्रा लेक
र॥ दोहा॥ तरुन कोकनद बरन बर भये अरुन निस जाग॥ बा
हीके अनुराग सो रहे मनो अनुराग॥ ३५१ यह नायक
प्रौढा अधीरा खंडिता कैवैन नायक सो॥ कवित्त॥ कृष्ण
प्राणप्यारे प्रातप्रीतके पधारे मेरे द्वि[illegible] सरत विरह
गयो भागि कै॥ सरग जै वागे रस पागे लट पटे पागे आरस
मगन अंग रहे अंग लागि कै॥ रावरे लसत अति लोचन
ललित भये कोकनद बरन अरुन निस जागि कै॥ मेरे जा
न प्राणपत वाही प्राणप्यारी के परम अनुराग भरे हैं
अनुराग के॥ २३ प्रकास॥ अधीरा को उ॰ नायक सो
तरुन नवीन जो कोकनद लाल कमल ता को बरन
न बर अरुण लाल रंग॥ निसा राति मै जागिबे भये हैं॥ तु
म्हारे कृपा बात म्हारी प्रिया के हग अनुराग सो मानो रंग रहे
है॥ अनुराग रूप जागरन की लालिमा सिद्ध॥ सिद्धास्पद
हेतूप्रेक्षा॥ किंवा है तरुन कोकनद लाल कमल है ताबर अ
रुन है॥ बात तैबर अरुण ए तुम्हारे हग को जागिबे भये हैं
कमल को तो रात्रि मै सपन तुम्हारे नैनके जागरन॥
याते अधिक रूप तरे है किंवा॥ अनुक्तास्पदा वस्तूत्प्रे
क्षा॥ दोहा॥ केसरि केसरि कुसुम के रहे अंग लपटाय॥ ला
गे जानन नख अनबली कत बोलत हि अन बाय॥ ॥३५२॥

ऐलालत्ति सारे पावल गत है॥ सो ईलै अरु साईत॥ विध अब कबहू वा
के पास मत्ति जा बोध नि भै नि[illegible] धा॥ आछेप अलंकार॥ दुरै निषे
ध जे विधवचन लछन त्ती नो लेख॥ विधमे निषेध दुरयो है॥ अर
सदन सदन के फिरन की सदन छूटै हरि राय॥ रचे जित्ते विहरत्त
फिरो करत्त विहरत्त उर आय॥ ३५५ यह प्रोढा को उराहनौ॥ साजप्रीत
कवित्त॥ ढोसत्त लालच ने घरसंकत प्रेम को अंक कहू न उघारयो

जानि परे अब तोव कसो उर ही के रहै रस मे ध्यान ति हारो॥ कान्हें हू
टैकव हूर विमानत है मन मान पधारो॥ भामत्ती साज विहारी
हि ये कित्त पै कि त्तै इत्त आन पधारो॥ रसप्रकास॥ नायक सो धी
रा कहै त्त बैन॥ हरि राय सदन सदन घर घर मे फिरव के स
द स्वभाव तुमारो नही छूटै॥ रचे जहा विहार करत्त जो फिरो करत्त क्यो
रमारे उर मे आई वै स्व प्रभै विहार करत्त हा वहरत्त के अर्थ वी रत्त
मी क रत्ते है कोई॥ अब वे रमारे उर को वसरत्त है॥ वी रत्ते है॥ जहा
रचै जहा विहार करे॥ उह विध धुनी मे निषेध॥ और कै ईहा मत्ति
जाउ॥ रमारे उहा आइये॥ नायक बोध क नायका के प्रभाव ते
नि कये॥ आछेपा अलंकार॥ दुरे निषेध उ विध वचन लछन त्ती
नो लेखि॥ रसा छुउ छिउ नी पुरुवे गिलत्त प्रति दीनत्ता दिखाय॥
वलि वामन के कौत्त सु नि कै वलि त्तुमे पत्ताय॥ ३५६ यह नाय
क के वित्त की तृप्ति त्तलचो ही देष वडि ताह कहे तो उ संभवे॥ सवैया
जानत्त हे सनके उसबे उ ताउ आगर हो तुम जैसे विहारी॥ दीन हूं
आवत्त है सब से लो मनुहार करे अत्ति हू मनुहारी॥ के सहू के ताहे
छिउ नी पुनवा हू गहे उहरी त्त निहारी॥ कौत्त सु नै वलि वामन के

[illegible]

१६२
२८८
१५५

बलिकैनकरेपरतीतरहआरी॥२८प्रकास॥परकीयानायकासो
नायकप्रीतकौबेचारूतहै॥कहैहैबलोकुंजदेखोफूलतोरो
कोरीबातकहुवदूतावकछुवादृतहै॥यहबातजानलनायका
कोबेनमायकसों॥तुमहिंउनीकनिकंगरीतकेहुयके॥प
हचासीलतहै॥ग्रांगुरीपकरवहूवायकरतहे॥यहरअर्थ
ग्रवनीग्रतदीनताहिबावदीनतकौग्रर्थ॥लछनासों॥गरवा
ई॥वलिवामनकोछलतनतानसूनकैतीन३गधरतीमागि
नीमोलोकलये॥हवलिकेकौनवधायकतमेहमारीकेन
प्रतीतकरे॥गिलतिछोतसौवकीकहूनावतहे॥सोबोति
ग्रलंकार॥सोकहनिकछुग्रर्थहैसौसीनलोकुपदवाय
मूलः लालनसहिबातदुरेचोरीसोहकरैन॥सीसचढेप
निहप्रगटकहेपुकारैमैन॥३८६यचनायककेविनकी
वृत्तिलखवोहीहैबनायकप्रीतवढावबेकोकहतहै॥ग्र
हसापराधहेषियंहहताभिसंभवे॥प्रोढाग्रधीराबहितासोवै
कुंकुम
ननायकसे॥सवैया॥प्रायेउनीदेजमहातलसाकछुको
यनजान्योहीयेकीमैंरोरी॥बाकुचेतेहिकेविकुमिसा
सावहीतेयमबेजरसोरी॥लालसहीग्रनतेसवबात
दुरेनहीसोहकरैकिनकोरी॥सीसचढेपनिहमदेमैनपुका
रकहैरतिरंगकीचोरी॥२९प्रकास॥रतिकेचोरपासनायकजा
गेतहै॥नेत्रश्रुतनयेचिन्हताकहतहै॥लालनलसवात
जानतीहैजैसेनपतीकमरहे॥सौहसपथकरेंचोरीनदुरै
नहींकच्चे॥कहारेसीसलतेचडै॥पनिहलकसैराचोरीकोठह

144A

राय सैं पानिद्रां कहावै ॥ पनिह जे नैनहैं प्रगट जाहरे पुकारे कु
हत हैं। नैन लाल सो जान्यो जात है ॥ नैनन की अरुनता सो चो
री कौ समर्पिनो। नैनन सो पनिहारू पकजीनी है ॥ काव्यलिंग अ
लंकार है। सै अर्थ समर्पन होय सल दुरत स्फुरत है के स्फुरता अ
रत नैनन अरुनी ठ। डीठि चेन राव रेक रहता कनो डीठ। ३२८ व
ह नायका प्रौढ अधीरा खंडिता कौ वचन नायक सै ॥ अर्थ सखी
नायक सौं कहै है तो लखित ता सय ॥ सवैया ॥ बिंदु अंग अंग के द
यारा कराई नीचे अधर सम गगन गात फुरिये नात हैं ॥ प्रेम सुधा पा
न के हलाहल कृतमन मैं नकु बहमे [illegible] नवे मन ठन रात है ॥ ठर
त हरत नक हिंवे सवैं दुरत लालनी ठउ रस्फुरतान खन जालजतिहै
के छप्रा प्राण प्यारे रहे है डीठि दैक नौ डीठ प्रगट कर रहा र। तिर निवारि
वात है रूप्रकास ॥ नायक सो अधीरा खंडिता की उक्ति ॥ मेरे तक कौ सु
रत मैं पन हो वे सदुरत है ॥ छिपत है तुम्हारे नैन हमारे नै
न मैं जरे ॥ मिल के सामात होय है। नीठ कहूँ इत रह सो जो
रावरी से चरला जसो फुरत है ॥ तिर जात है रावरे लिसारे ॥
उनके ॥ डीठि देके नगारे दै वे ठंडोरा दैवे कनौ डीठि अप
घ सौ सिर सिंदूर डीठि करत है ॥ अपने नायक की अपासत्तु ॥ ठ
रहा करत ॥ इती अनुप्रास ॥ डीठि दै लौ को हि ॥ लोक हि। कुछ
अर्थ सो लीनलो कपरवाद रस। नरक तमाजन में सोलि लग
तांई ढकला के रोब ॥ तीन रजा मैं जलमसी स्याम गात नबरे
स ॥ ३२९ ॥ यह नायका प्रौढा अधीरा खंडिता कौ वेन नाय
कसौ ॥ सवैया ॥ आये हो मेरे मया करि मोहन मोहि तामरस
रंग भरी है ॥ पंकज नैननि पावन के हिय में न अरे बबरी उघरी है

४५

145

रीने रगा मै विराजत योंधु विद्या जत मो मति दरहरी है। मरकतमे
नीलमनि कैा सिंसा ताने ईंद्र कमसा मनो ताके धरी है। दरप्रका
नायका की उ॰ नायक सों मरकत नीलमनि ताके भाजन पा
त्र जामे जो समलल जल ॥ तामे प्रतिविंव करहै ॥ प्रापु भई सोई
कुवला ताके पे गातर है। पिही रगा जामे ताके रस मसात
है ॥ वे मरकत है स्यामहं ते धन किंवा ॥ स्याम गात मैं नवकी
रेषा ॥ मरकत मो गुंग समलल सो जामाई कुवलानवरेष
प्रतिविंव तमी हर भा है मानो जसमे है। याते समसगात
के हे ॥ विवके प्रपंसर्ह स्यापते उपमान के प्रध्याहार की
यो गम्ये त्प्रेक्षावसु ॥ स्व॰ वे सो है जानी परत रगा उज
रमा हा। मृगनैनी सबटीस सी पवैनी उपटी बांह ॥ 400 व
हनायका प्रोढा अधीरा षंडि ताके वैन नायक सों ॥ नायक
के विद्यमान सबी है हो हरषै ॥ सवैया कोहे वो करत पकह
राई वेचहि चला ले सो चमरी सरति प्रगट वे षियत है ॥ हो
है जैन केरे नैन नोकि निकि सो है करे हो सनी सीसो मारुप्र
गंग हो षियत है। नृपम प्रापारे कुचमुके नसोइरवर
हीक्का जीवे उघारि यस्प्रवरे षियत है। मृगनैनी लपटत
उपटी सी सो वैनी उजरे रगा मे परचट है षियत है ॥ हरप्रका
नायक सो षंडिता की उ॰ ॥ ऐसी उनात निष्ठु जानी परत
उजरे जामा मे ॥ मृगनैनी सपटीस सीय ॥ मृगनैनी उमके सीय
सो सपटी है ॥ ताकी वैनी [illegible] चोटी बांह सो उपटी उपरी है ॥
जानो है उत्प्रेक्षा विंजक वैनी उपटी है मानो वसुधे [illegible] ॥ स्वलप
ही की वित्त वटपटी धरता प्रटपरे ताय ॥ सवट बुरा तन विरह की कव

के

वर्ह प्रौढा अधीरा कौ नवन नायक सौं। सवैया। आन तन से
कौ हौ तौ निस गुन मान ति है। सब सब र सब सा कि वै सौ हैव
रु नायक है ताकि भागि जागे जा के संग निस जागे मो
रमण आयो है तहीं पै जनाय है॥ जैनी पतवा ही की लगी
है चित तव ट पटी अट पटे चरनन पर तउ गुलाय है। लपट तुरा
वत है। विरह दु मासनकी कपट भरे रु प्रानप्यारे रत अयदे
रस प्रकास। उत्तिमा ठंढि ताकी उत्ति नायक सौं॥ वा नाय
का की रुखारे मन मै सट पटी आ हरत्तारे व वनाय है मिसे
नै॥ विरउ हा है तातें अटपटे अस्ता विअस्त पाव धरत्ते है॥ वि
रहा गिनि की लपट ज्यासा ता कौं बु रावत कपट भरे ही आ
यहे। किंवा॥ कपट भरे भी आय है तौ मी वा नायका के
विरोगा गिनि की लपट तासौं [illegible] बुरावति है। सम झाव
ति है। अटपटे पाव धरि है कपट भरे आवे वा कारन तासौं
विरह की लपट कुई विरुधेत कारज॥ विभावना॥ कारह कार
न तें जवे कारज हेय विरुध॥ रस कत वेना जव साइ यत
चतुराई की चाल। कहै देत रहसाल रे सब गुन बिर गुन माल॥
४०२ यह नायका प्रौढा अधीरा ठंढि ताकौ वैन नायक सौं
सवैया॥ सौंहि के धाम विरा मैहे आये प्रभात इतै वग धारस
सौ जव। मैन छ की छवि छ्रेनि दि बाय अनय हीये उ व जान
त है नव। कौ विनेना जव लाव ति है सब चतुराई की बाल ल
ला द मनैसो अव। मास विनागुन की उर मैं उपटी गुन रावरे
है धिक रहै सव। रस प्रकास। नायक सौं ठंढि ता वैन। कत
कौ वेकाज वलाव त है प्रसंग करत्त है। चतुराई की नि पोर्ते
यस प्रकाज जनाव ति है। विनागुन की छाती सौं उपटी जो

है माला औरकी सो राखे रू ह्मारे सब उनको कवटू ठ
इत्यादि बोलकर देताहै॥ किंवा सब नाम राजको है फारसी मे
रातिब उनके जो कछु रति करि तासो ताबोल कहे देतहै॥ वि
ना गुनकी जो है माला ताको कर मोन ही सम है॥ विरोधा
भास॥ आसै जहां विरोध सो वहै विरोधाभास॥ दू०॥ पा
वकसो नैनन लग्यो आवक लाग्यो भाल॥ कछुरहे उगे
तन बमे ह्यकर बिलसो के लाल॥ ४०३॥ यह नायका प्रौढा अधी
रा खंडिता है नायकसो॥ कवित्त॥ नीबे रसनी के बसहु के
रसके लिके नीवाहि की सुगंध ध्रुव गवहस बिरहीर साल॥ हि
तकहू ह्य करे रा डुरे नडु रायेबिहू रुकं जनन्यधर दीये है ये वि
न गुन माल॥ पावक सो लागत प्रगट मन मैं ननको कृहम
प्रा ताप्य रे लग्यो जावक तिलक भाल॥ कैसी अप्राजरा
जितिहै सारस रेसरस रा अप्रारसमजनग्या बिअ्प्रारसी है दे
सौ लाल हरप्रकास॥ अधीरा खंडिता की उक्ति नायक सो
ठ ह्मारे भाल मैं लिलार मै महावर जावक सयो है सो मारे
तानकसे सदा वरलग्यो॥ नैक सो रीही गर मे भ्रकर हे हुउ मे
नहीं जांउ अेद भेरु ठांउ गे जाते औ दैदर पनके ये बार लाल
सो वैप्रवर्ण माने अप्राहै लगे है॥ या तेउ त्तावा॥ सवैया
त्य अप्रवर्णली जीये हसौ ये मरे जमवू टांउ की संहिब
रूल रहीन करनाटी सरिस मरे मोर चितमैन॥ लखि सपने
तिय आनरति जगत हु लगत हिये न॥ ४०४॥ यह नायका नै
स्वप्न मै नायकका अन्य स्त्रीहु देख्या तत जागत हु सो मन नहीं
छोडत॥ अन्य हरे मे गुडछिपतासकी के वेन सहसै सो॥ सवैया
रपति वे त्रिक लोलन गे उर लागे ई सो ई जयेपली का हौ॥

146A

ऐसे मे प्यारी लख्यो सपनो ताहि आनंद सो कि पेगलबांही
पाटी सों लागी रही मृग नैनी ॥ भरी रस मोहन नैनन माही ॥
चौंप पदै चित लागी महा तिय जागी तऊ हिय लागत नाही ॥
टीकाप्रकास ॥ खंडिता सौ लगाय मनो ॥ नायक प्रात आयो है तब
नायक सखी सो कहत है । सपने तिय आन रति हमारे नाय
क सो सपने मे कोई तिय आन आयवे रति भई है रमन करे
है । रही पकर पाटी कुरिस ताहि पाटी मे चोटी मे कुरिस को
दीठी पावै पकर रही नेत्र धसे सो वा नायक ने अपनी मोहवि
त अपने नैनन को भरे ॥ किंवा भरे साखि जागत है ॥ लगत हिये नक
मारे ॥ किंवा मे भरे लखि जागत हू लगि तहिये न ॥ लखिके अल
मर लखि है । मै जानत तहू जागत हौ ॥ वे भीत हिये नाही न लखबेको
रस चमके लखि है । घरके सगन जीक सजे दिन मे यह अप
च पूरण सो रास मचटो खंडिता हुमु क्लाथ ॥ मध्यम मान सखी
सखी वैन ॥ बाटकी पाट पकर रहे कुरिस सहत ॥ टीस सैाप
रे मोह चित नैन ॥ सपना मे आनतिया सो रति देखि के जागे हू
गरे नन ही लागति ॥ आंतिम अलंकार यप्रेर भय ॥ रस ॥ रसो
चकित बहु घाचि तो चितमे रोमांति भरत ॥ सुरउदै आप रही हृग म
नि सांसरसी फूल ॥ ४०९ ॥ यह नायका प्रौढा अधीरा खंडिता के
वैन नायक सो ॥ सखी हैं सो संभवे ॥ कवित्त ॥ देखत रावरी मोहनी
मूरति दीठ सवे सुधमरसा रही है । आजु महा छवि छाजत मे
रनकाई सवे अनकूल रही है । चाहि रहौ बहु घाव विसे सो बि
रा अविर जैम तिथु सरही है । प्रात ही सुर उदोत मपावीव
नैनन सांसरसी फूल रही है । टीकाप्रकास ॥ वक्रोक्ति है याते श्री
धीरा की उक्ति ॥ नायक सो हमारो चितचटि तहीं पवै आश्चर्यभारी

वरनुं घाम्बहूं ग्रौरसों दिते विचार रह्यो मतिमन्त्ताकी तरहं
श्रांदिसैा ॥ कि केमैरैम तिम्न लसमतिस्नमहे ॥ किंवा हेम
तिम्न ल श्रांतहमसों ठर तग्रावपवे की कारन गयेहुा छम
सुर्दा के उदै भये श्राएठ स्मारे दृगाा सैा संध्या सी फूल
रही ॥ राति जागे हैाने वलाला है ॥ कैंधा कोई सोहु हमा
रे दृगन मैं रवि उदे संध्या फूलवे को बाधक ॥ प्रतिबंधकके
हैातहीं कार्ज हू र नमान ॥ सीके ग्रर्थ मैं मानो ग्रा
छेववनो है ॥ संध्या फूली है मानो उत्प्रेक्षा ॥ लक्ष्य ग्र
मत्तवसे निसक्री रिसनअरु वरि रही विसेख ॥ तोऊ लाजला
गी कुकत वरेलजो है देष ॥ ४०६ सवैया ॥ रात कहूं ग्र
नै हैं बितई मन मोहन के सिवलास भये हें ॥ तातें ही
देखत ही रिस छायरहे ग्रनखाय वढायवेमो हें ॥ भोर ही ग्रा
वत देषत ऊ कहि वे को गई कुक वेन रिसो हें ॥ ग्राईत्तता ग्र
त लाज हिये निरषत वलाल सपरई लजो है ॥ हस प्रकास
उत्तमा बड़िता सही सखी वेन ॥ ग्रनतग्रोर ठौर वसे रहे ॥
निसक्री रिसन ॥ राति के क्रोध सों उरमें ग्रा गि विहे
लक रि वे वर रही ॥ सारी राति रहै या तें विसेष तोभी लाज उ
भिक वे ग्राई ॥ ग्रवलोकन परसों रश्वी पी ॥ वरे ग्रतिलजो
है देषिके कैवा ॥ लजो है वरेष उदेषि ॥ सरेल जो है दे
ठ लाज ग्रावे नोकी र्जे ॥ हेतो प्रलंकार ॥ लक्ष्य रूपगा
न हा वर सोति वगा निरखरहि ग्रनखाय ॥ पीय ग्रंग ग्रन
लाली लखी सटी वढी लगि लाय ॥ ४०७ वरनायका
ग्रंगसंग सगदु खिता सही सखी वेन ॥ सवैया ॥ नाहि सुरं
ग महावर सों तिके पावनवालरही ग्रनखानी ॥ पाहि

विलोकि कै विकाय गो मोहन बात इहै ॥प्र यहै उनमानी॥
एते मे प्रीतम की ॥प्र उठी न लजाई वि लोक बरी वि लसानी॥
तानकु ज्वाल लगी उर मे उर तें मुहरि सबै ॥प्र कुलानी॥ ८८
प्रकास॥ सखी सखी वैन॥ कुंवर है रंग जाकौ ॥प्र सो जो मन
हावर सो सो तिहिके पाव मे निरखबे ॥प्र न बाय॥ कौ हाकुरकहै
कि गाढ़ौ रंग लाल जो है सो तिहि कै पाव ता मे महावरि निरख
निरखी या कौ ॥प्र उरन मे लाली देखि जान्यो नायक नैंन
लागे है॥ याते बरी प्रति लायल गाई है॥ कुरंग महावर
है ॥प्र न पायवे का रज॥ पिय ॥प्र उर न मे लाली है ते ला
ल उपी है जमान॥ है ॥प्र अलंकार॥ है ॥प्र फल कृत लोतत
वकारन कार जसंग॥ सुल कत सकुच तनिधर सुर लोरति
ते सो रिति मैन॥ कहा करे जो जाय दे लगे लगो है नैन॥
४०८ यह नायका प्रौढ धीरा बांकै ता कहे तैन ना यक सो
सवैया॥ कृष्ण प्रात प्यारे ॥प्रा ज प्रीतम के पधारे हौ तो तन
मन वारो कै रे ॥प्र धिर वधाये ये॥ नैन निरखत लगि जाहि
तो लगी है नैन ता कै तुम कहा करो जीवन न वारु यो॥ का
है को हाकुल की जै रवे हि तेरे बदे जे ॥प्र लीहुं नि संग
रहली जे तहा या इयो॥ ररप्रकास॥ नायक है नायका
वैन॥ कैसे सकुच करत हो॥ निधर कुनि संक फिरै रति ॥प्र
कर तीमर तुम को बार निवह न नाही॥ प्यारी भी तुम मै उनम
न तानही॥ तुम कहा करो हमारे वस न है॥ ए हमारे नैन लु
गो है॥ लगवे कौ है सुभाव ताके साथ रसै जाय लगो॥ ॥प्रा
सक्त होय॥ निधरक फिरवे की व्याति विधहै॥ यति का हुं जाये उहा
उहा निबधहि ये है॥ तुम लागे है नेनन कौ रे कै तुम का हु

२४८
148

तिजैसै॥ अथ छेपा अलंकार॥ दूरै निमेष जु बिधु बदन ल
छन तीनौ लोक॥ मूल॥ प्रानप्रीया हीय मैं बसै नखरे
का संसि भाल॥ मनसौ दिखायै गुमान पद हरि हरि सिर पर माल
४०९ यह नायका प्रौढा अधीरा खंडिता कौ बचन नायक
सौं॥ सवैया॥ प्रानप्रिया प्रेम कै प्रान पियारे बसायो हिये हुल
सौं हुलसायो॥ आसन ईन खरे ब बिराजत सोई मयंक हु
सौं छबि छायो॥ लोचन राग रजो गुन राजत घूमत नै
न तमो गुन पायो॥ प्रीतम प्रात ही आनि मिलै हरि जू हर
को धरि रूप दिखायो॥ अथ प्रकास॥ नायका की उक्ति नायक
सौं अधीरा है॥ प्रान की प्रीया नायका तुम्हारै हीय मै
बसै है॥ जैसै बिधु मै सोई भीव है है॥ नखछत सौ स
सि भाल मै है॥ यातें सिव को रूप मोसौं [illegible] दिखायो॥ अथ
वा॥ हरि को हर को रूप रसी लोचन जायो रे बस सिरूपक
उपमान हरि उपमेय मैं भेद नाही ईन सुभाव॥ मूल॥ आन च
लै बलि रावरी चतुराई की चाल॥ सन बहि रै बिन बिन न
रा अनख बढावति लाल॥ ४१० यह नायका प्रौढा अधी
रा खंडिता नैन नायक सौ॥ सवैया॥ आनन चलै बलि रा
वरी चाल बलावति हो चतुराई की चाल हू॥ छती नखछ
त पीक कपोल धरै प्रति अंग मनो बरि माल हू॥ बात तरेत प
र सो रुरु गुन लाल की राउ मगावति को रिस जाल हू॥ आनि
बडे उर आमिन भाल ही दै उपरी जरि मेटत मालहू॥ अथ प्रका॥
नायका की उक्ति नायक सौ॥ एव लिये लाल तुम्हारी चतु
राई की रीया कि बात बात नहीं चलै॥ सन बहि तुम्हारो हद
य सन बहै॥ औरहु स्त्री कै नखछत लाग्यो है ते माबि

न बिन मैं नरत है॥ हमैं उठावति है॥ हे लाल अनख को व
बढावति है॥ किंवा॥ छिन छिन नटत है॥ हमैं उमवति है
उठावति है हरकरत है सो क्यों करि है यह सके॥ सदमै
विरुद्धाभास है॥ सो सन बस सो अनख नाही॥ जहं पद शब्द
विरुद्ध है अर्थ मांहि न विरोध॥ शब्द विरोधाभास तहं सा
बत जान विरोध॥ किंवा सनख हृदय हेत अनख बढैवो हे
त मान हेत अलंकार॥ हलन कहन उरस व जग कहत
व तन चैक जस जात॥ सो है की जैन नित साची सो है बातें॥
यह नायका प्रौढा अधीरा को वैन नायक सो॥ सवैया॥ मोहि
तो लागत नीकी महा तम प्रात प्रमात प्रभात है सो है॥ जो करि
के तो हो पे उरी पैं नैनन की [illegible] करि तौ री पै उर सो है॥ क्यों बिन
काजन को खभरो उरको है केसौ की जात नेनन सौ हौ है॥ और
मजा-वीपे सोर कैसे हरि तो उता कै पानु करो अब सो है॥ हरि
प्रकास॥ नायक सो नायका वैन॥ नकरै न ठरै उहबात सब
जग तक हत है॥ तुम कैसो वैकज निरर्थक लाजत हो॥ सा
ची सो है बात जो तुम सत्य सपथ करत हो॥ तौ हमारे सो
हैं सम नैनैन को करि जि दै॥ जैसम है लाल जिन गरन की
है॥ और लाज उर नहीं है यह जो नकरै न डरै लोकेति॥
हल कनक हि पतु ठहैन कोर विरचव वचन अलीक॥
सवैक हा वरहै निरख लालन महावर लीक॥ ४२२॥
यह नायका प्रौढा अधीरा खंडिता वैन नायक सो॥ सवै॥
आज मया करि मेरे पधारे लसी छवि रैन विहार विहारे॥
क्यों कहि दैहु ढाढैन को वे नव नायक नाय सनेह [illegible] रे
घमत लोचन नींद भरे उघरे उरमें नख बेहू तिहारे॥

४२२

औरु कहाउ रहौ सब लाल लिलार महावर सी कु निहारे॥
रसप्रकास॥ नायका वाक्य नायक सो कहत का देखौ कहि य
ते है। इहां देनो को वनाये वनाये वैवचन अलीक॥ झूठी र
लासनु हमारे उर मैं है महावर की सी कु तारि लखे दे बैस वे
कहावर है जो तुम कहत हो सो कछू नहीं है झूठ॥ कोई
या तरह कहत है॥ हे लाल महावर सी कु लखे तुम्हारे
कहै सब कहाउ रहै तो वसी पहे महावर लीकर बनत है॥
प्रत्यक्षालंकार॥ ई प्रत्यक्ष ज्ञान जहां तहां प्रत्य
क्षालंकार॥ रस ललन सलोने अति रहे अति स
ने है रहे लागि॥ तनक कचाई देत दुख सूरन लौ मुह लागि
४२३॥ यहु नायका मध्या नायक के ग्रंथ तह करन ये कछु
कटाट जानि उराह नो विगट करत है नायक को वैन ना
यक हे सो॥ सवैया॥ ने कवि ते चित चोरत है उर जोरत है
अनुराग बचाई॥ रावटो प्रेम प्रबंधन की जातही हित ही
२ निपट चढाई॥ रसिक लोन सनेह भजे दरि प्रीत वे रस मै
बुद्धि रचाई॥ सूरन सो मुह लागत उदुबद ते ललाइ दुनो कु
कचाई॥ रसप्रकास॥ प्रेम गर्विता की उक्ति सखी सो॥ लाल
सलोने हे लावन्य भरे हे॥ औ सनेह प्रेम सो आति प
गरहे हे॥ अति कहू सो नेत्रादि सो अंग के गुन मै प्रेम सब
होय रहे वजा विच कहत है॥ तनक पेरो जो है कचाई
विवहार की सो इन सो दुख देत है विपरीत लछन कहि
रुक्ष देत हे जानिये॥ उह लागी रब हो रब लागा
चरहत है रमारो वियोग जा कचरी भी नहीं सहो जा
ता है॥ सूरन जी मी कंद दुर्लभ मो आलंकत है॥ ताको

सलोनो सलोन सहुंत है सोनेह मा बनसौ परि रह्यो है ॥ जैसे क्वा
ई है तो उब मे लगै कि वा कुहू लागइ नारे उब हो लागि उठे है ॥ ह
मारि वात नहि सहत है ॥ यह अन्यकरि विब्बोक हाव ॥ है वि
ब्बोक जहं गर्वकि उद्भव अनादर होय ॥ लाल उपमेय सुरता उ
पमान ज्यौं नाहि कछु लागि वे साधारण धर्म ॥ प्रतीपमा
अलंकार ॥ जिह विध मनसम न ताहि लेइ रन उपमा जानि ॥
खंडिता मे और नसौ नायका मे अंतर कहत जू नी है ॥ औरन से
अंतरन की सयननि नही लगी है । उहू लागि है उबसो लगै
है ॥ अंतरन से प्रीत है नहि यह नो दी हमे दुखदेत है हरि
रनभी दुबको नही लगै है । उबसो लगै है ॥ उबसागि स
रलाहूं करि कहै ॥ उपा खंडिता के उदाहरन नहीं ॥ हल ॥
नबेरह्यो है नई अबलसो है सबगात ॥ ह्यो है तौ तन तैन
एक महो हैं सब तगात ॥ ४१४ यह नायक प्रौढा अधीराखं
डिता के वैन नायक सो ॥ सवैया हरिजन निवरी हम हो पै मया
पगधारे इते रतिके लिकि पै ॥ तमहौ सब के सुखदायक हो स
नही कै बनै सु बवुं जदीपै ॥ उकरोजिन एप्रगट सखि पै उ
लगी टटकी नखरेख नही यै ॥ हगसौ है नहो तमक उनि तो अ
वका है केसौ हरी करी यै ॥ रसप्रकास ॥ नायक हो नाय
का का ॥ नवीन नखछी रेख सौ भित है आलसभरे हा
वभंग है ॥ नैनन सारे नेन हमारे साथ नेन सीसतो है ॥
लाजहो तमसव प प को करत हे ॥ लप वकरवे के नि बे
धा उत्तहि कर रही है ॥ काव्यलिंग सो है उनमक ॥ रस पल
सो है पगी पीक गहेल सो है सब देने ॥ बलसो है ताकी
भीप ता ए अलसो है नैन ॥ ४१५ यह प्रौढा अधीरा बैन ना ॥

सवैया॥ सोहत है पल गात कांर सब मैंपा गेंजा गे ताते ग्रारस
केठे रछरिय तहै॥ है न छ तरा तग्पं गरा त भर वार वार ह पे रो
रहे रहे रहे न दरिय तहै॥ है नसु मेछ ल सौ है पीक पजे
पाल है सो है॥ दे बिछु ति छगन प्रनंद भरिप तहै॥ कृष्णा प्रा
ण प्यारे प्रभकाहे के कर ताते ग्र विसो है नैन व लिहो
है क हिय तहै॥ रसप्रकाश॥ नायकाके नैन॥ पीक वेरंग सो
पगिके मैं लोचे पल पलव सा दतहै॥ छल व पट सोव
चनसो भतहै॥ कैवा छलसो है सवप सवै तमैरा छलसु
रताहै॥ ऐसो दक उतहै॥ व लिसो जोरावरी सो कुतके सो
सोसे सतप की जिपत है॥ रा सरोरे नैन प्रास हमारे
सोसाखिहै॥ जो मैप गसो उतम जामे प्यारी कों भि सो मध्य
मजामे कों भिन है सोय हुग्प्रथ मन है कों भिन है॥ सोहकर
वे को निबंधको समर्पिन करे॥ दोहलिंग॥ सो खलिंग ज
हजुहै सो प्रर्पसमर्पन होय॥ मूल॥ कतलपटैपतमो
गरे सोन जुहै निसहैन॥ जहचंतक बरनी कीयेउला
ग्रनारहे मैन॥ ४२६ प्रोढा प्रधीरा फूलनके नाम शब्द
मे चमताकार॥ सवैया॥ मोगरे लिन सागीये लाल नि
सोन जुहो निसहै नू मैप्यारी॥ जाके लहो तन चंपक
हो रस नाव हि कु कसी है विधारी॥ लोचन सालग
लाल सरंग करे के नरैनि जिगाय विहारी॥ निंदा है ग्रर
विंद नहीं है विपीत पराग भरे भरभारी॥ रसप्रकास॥
नायकाना का उल्ला लाररगटा सभी पाठ है॥ कतके मो
गरे मेरेगरे सो लपटात हो सोन सो मै नहै॥ जुहीनि
सहैन॥ जुही को ग्रपै॥ रहो निसरात मे हमारे सापहै

जौ बंधकनरनी नैन उन्नोरउ ल अनार से रंग नैन कि वेदै ॥ फू
ल बंध मोगरा सो न जुही चंपा उ ल अनार ॥ मोगरा सो न
जुही मे पेस बा ॥ और मै थे घन है निकास्यो ॥ अब अलंका
र औउपमा अलंकार इहां उछाउ द्राप्रस्तुती ॥ उद्राप्रस्तुती प
द विषे और अर्थ प्रकास ॥ लक्षण मध्य वटाउ नेह तजि बा
द बकति वेकाज ॥ जब अलि ये ति उराहनो उर उपजत अति
लाज ॥ ४२७ परस्त्रोछा परकीया नायका उराहनो नायक कै
मिस मान सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैन न सों तुम हो
सन सों रहतेई मिले रहते उपसाजन ॥ रूस गई सब बे
वती परे तब जन की बहु भांत बिराजन ॥ एत जिनेह बटा
उ मधे अब बादि बके सजनी तिन काजन ॥ देत उराहनो अ
सेन को अब पंन उर ही चवी ये अति लाजन ॥ इहां प्रकास ॥ ना
यक प्रात आयो है तब सखी उराहनो देति है ॥ तहां सखी सो ना
यका वेन ॥ हमसो नेह को तजि के एक वटाउ बटोही मधे औ
र हे रार लगे ॥ विंताइन सो नेह तजो एक वटाउ मधे ॥ बादि
के रइन सो न कहत हो अनार हू बकबकत हो सो वे काज बृथा
है अलि ये अब इन्ने उराहनो देति है ॥ तासों इनके उर मे ऐंचा
हमारे उर मे अति लाज उपजै ॥ नायक तो उने चाहत
नाहि नायका इतने चाहत है ॥ किंता ॥ उद्धव सान के उप
देस करे है ॥ तहां मधुकर सो बूजे दबिन की उहि ॥ हे अलि
उद्धवजी सो उन कुब्जा को उराहनो देति उर मे अति लाज
उपजाति है ॥ और वही अर्थ ॥ उने उराहनो दे है तब का
म की कहत बात है ॥ और ठौर मति जाउ इह निबंधध मिसे

निकरै है ॥ आछेपा अलंकार ॥ दुरै निषेध उ विधन बनती
नौ लछन देखि ॥ स्लो० ॥ सुमर मस्यो मरुन कताम्प
वयो कुवन कचात ॥ कैयो धायो दासुयो लीहियो दरसन को हि
न लाल ॥ ४२८ ॥ अथ प्रौढा नायका धुनि नायक सो उराहनो
सवैया ॥ मो उर मै अनुराग के पूरत ते टीपरती तक सी प्रग
टी ज्यो ॥ रावरे औ गुन बेवन नि कढि कि वे व कुलाय गरू
हि यरे ज्यो ॥ वंचकताई की बात निसो बकि वेकू हमकहे परवह
या ज्यो ॥ आलत मो हि करे बोइहै अब दाडि मज्यो दरके न
हिये ज्यो ॥ रस प्रकास ॥ अधीरा की उक्ति ॥ उलहारे में जो उ
न सोसब है ॥ बनदा ने तिनसे ॥ सुमर संदर तर रसोम
स्यो भरति है ॥ उलहारे कपट औ कुचाल कुच[illegible] लनता से
पचयो पका यो है ॥ हे लाल समोरो हियो कैसे कहि धो दा
यो लो ॥ अनाय की तरह दरकत कार तनाही है ॥ उन वक
नि हर वक दास्यो उपमान ॥ हीय उपमेय लोवा चिक ॥
दरकन धर्म ॥ उपमा दरक वे को कारन है ॥ ते दरके नही
विसेसोक्ति ॥ जरहे हसौ कारज उपजे नाह ॥ स्लो० आजुक
हू और ने भटे ना पेछ्ये छिक ठेन ॥ चित कहि तके बुगहि
एनित के होउ नमैन ॥ ४२९ ॥ पर नायका वे नेना दे खि सखी
कहै जो लछिता ॥ अह जो नायक नायक सो कहे तो व
डिता ॥ सवैया ॥ आलस के रस के विय केरे मिलाल बरे अ
रुरंग भये है ॥ देति कहे चित के हि तकी चुगली छिक ठेन नाए उठए
है ॥ निंदत है अरविंद प्रभा अनुराग पराग मै पागि भये है ॥ सोहि
नाए नितके सजनी हग आजु अपूरब औ पछरा है ॥ रसप्रका

नायकाकी उक्ति नायकसों ते तो बढि ता॥ सखी की उक्ति जो स
खि तां नायकाकी सखी सो त्यो अन्य संभोग दुःखिता॥ लिंतं व
हाय जनै न॥ एत हमारे तिनके सदा के नैन नहीं हैं॥ आज क
छू और ही भये हैं॥ नाना ठीक ठाकुन सों ठाढ़े बने हैं॥ चित्त में
जो हित कीये है॥ ताके बुगल हैं और पद के भेद का तिसपों ति
और दिन और आज और॥ सल॰ चित्त गुप्त टकत करति
५) बिन रसै सकै रसान बिकास॥ अनत अनत चित्त चित्त है तन
कत सकुचात ललाल॥ ४२०३ प्रौढ़ा नायका उराहनो
नायक हे ता बैन॥ कवित्त॥ कृष्णप्रिया ता प्यारे जगजानत हिहा
रे गुन रूछन उघार औ सी ठरन ठरत हो॥ सब ही को भा
वत है रस रूक रूखावत है रसन रसी ले लालचान सों करत
हो॥ अटकत चित्त लगनि बिन ठोर ठोर प्रेमपन सांबे पेक
रू न उधरत हो॥ अनत अनत चित्त की जात न बस मेरे रंचक
रू॥ जियमें न सकुच धरत हो॥ रुरव काल॥ नायक वाक्य
हे रसिक रसिक बैं अपि॥ अस सभी निंद सभी जा को रसरा
गरहै सार सेव॥ तम करै नि बिना कपिनि बै अर्थ अति
आसक्त बिना उदास लक्ष्ण ता जानीये जो कोई कहै है तात है
ई रहत है करन चूर चूर श्रृंगार में करत है॥ चूर चूर भये बिन रंग
न चढ़त है॥ अटकत इत्ति न सों उरझत चित्त हो या पद रूउरस
है श्रृंगार रस है॥ ख्याल नहीं है चित्त रसदान एना हित सो
नहीन हित करत चित्त है ताको कतकै यास कुचात ता हो स
जावत हो और इस्त्री के हेत जी इनकी प्रिया हितान सी करतौ
किंवा॥ सुंदरी नहीं है तासों ताचित्त फिरै है॥ ख्याल नहीं है
या ते ताको हि[illegible]ख अर्थ सों लीन लोक प्रकाद॥ कवित

[illegible] कारन प्रगट के कौन हौ है ॥ प्रगट कैं कारज है ॥ विभा
वना अलंकार ॥ दोहा ॥ इहि भांति विभावना विन हौ कारन काज
[illegible] इह प्रतीति सो अलंकार ॥ व्याख्या ॥ हमारी प्रवीन
ता है सिंगार ऐ नहीं ॥ मूल ॥ जो तिय तव मन भावती राखी
है वैव साख ॥ मोहि खिजावति इग न ह्वै वहि वे उरवजत आई
४२१ इह मान [illegible] नायक नायक की आंषिन मै अपनो प्रतिवि
व देषि और इस्त्री जानि कै कहत है ॥ सवैया ॥ नैक मनैक
रै पाय परे हरि का हूकै मान दुरावति है ॥ राजक रै नि
त याहि लिये रहा या मैं कहा कहनो [illegible] है ॥ जो हमरा बीवि
साय है विलिय प्यारी तिहारी कहावति है ॥ या कत रावरी आंषि
न आन वरै तिय मोहि तु कावति है ॥ इह प्रकास नायक सौ
नायक का वाक्य ॥ जो इस्त्री तुमारी मन भावती है ॥ सो सारे तो
वासो उपाधि नहीं करत है ॥ इह यम वसाय वे राखी है ॥
हमारे इग न मै सो य वे आय वे मोहि खिजावति है वहि आं
षिन मै आन के उरिकति है सो मानो ॥ वा नायक कौ मैय सो पर है
है ॥ गम्योत्प्रेक्षा ॥ मानो उपर सों आनि परत है ॥ मूल [illegible]
[illegible] ॥ मोहि करत कत बाव
री करै दुराव दुरै न ॥ कहै देत रंग राति के रंग निचुरत सैन ॥ ४२२
या [illegible] नायक कौ वैन है ॥ सषी देषकै तौ लषि [illegible] जो नायक के
विद्यमान नायका की सषी सो कहै तौ [illegible] ता ॥ सवैया ॥ [illegible]
त के वि [illegible] सो [illegible] नायक सजै [illegible]
रत है ॥ [illegible] प्रान प्रारे के [illegible] सारे
र [illegible] है ॥ का है कै सयानी मोहि बावरी करत [illegible]
[illegible] कहा [illegible] है ॥ प्रगट कै रंग राति के [illegible] है तो

टरप्रकास ॥ बेडि तालछि तारुन्य संभोगदुख्यताभै लगे है ॥ प्र
हेकु ताके पोना बरी करो तो हि पा[illegible] बरे हि वे नहीं ॥ राति के रंग सो
लोछि ना सो विलास जानिये कहि दैति दै रंग चुव तासे ऐनेन
दे तेरा ति जगे ॥ प्रति लाल भए है मानो रंग बूमे है ॥ इतो है मनो
को अधिक होत है जीया के आगे है ॥ प्रकु तास्वदावस्तु तपेवा
रसल ॥ पटि सो तोछि परी करो बरी भयावने बा नागिन है लाग
त हृगता नागवेल की रेख ॥ ४२३ राह प्रौढा अधीरा वेडिता वै
न नायक सो ॥ सवैया ॥ आज भयाकर मेरे पधारे बुसे
न उ भामिन की संग[illegible]सी है ॥ प्रीतम पाट पीत सों तोहि
परी करै मो मति है रहती है ॥ लागत मम नैनन को अस्मा
मनी सी भ पर रही है ॥ केलसमे अहलल के रंग की
रेख निमेष मा मै उघरी है ॥ टर प्रकास ॥ नायक सो नायका
वाकर पटक पराहे सो तोहि वे परी करो दुरकरो ॥ प्रतिब
री भयानक मे खि है ॥ नायका वेरु बकी जो नागवेल पान
ता की रेखा नागिन होय वे दृगन मे लागित है ॥ जउ रेखा
मे सात्विनिसेष याते [illegible] बरी भयानक है ॥ नागवेलि
की रेखा उपमेय सो उपमान नागिन होय वेके दागित है
उसित है ॥ याहि नाम ॥ अलंकार ॥ करे ज्ञी याउपमान
है वरननी यताहि नाम ॥ कहू नागिनी सी दरसी ताठ
है ॥ पूर्णोपमा तहा ॥ रसल ॥ सासिवदनी मे सो कहत है
सामरी निजवातो नैनन नलिन विपरा तरे न्याय निरखी
जात ॥ ४२४ यह दोहा कृस्नचंद्र का मे नहीं ताकी
सवैया प्रवीनो है ॥ नायक केप्री वे न नायका से प्रौढा

।अधीरा षंडिता नायका॥ सवैया॥ मरहभनमोहनसूषणअनूप
वने विरवान कि सौ सवि गात॥ मनाकरि आवत हौ इहरु और
नहि तुव मोहू गहै अघात॥ कहू तेम मोसे मयंक
मुषी सुहावै हौ षसो समुझै निजवात॥ मतौन सुषो ति
पराव रैनैन सरै जए न्यावन हौ नपजात॥ इह प्रकास
नायकसो नायका वाक्य॥ तेम रसमको ससिवदनी
चंद मुषी कहत हो सम मरै निजवात॥ प्रपनीवात॥ किं
वा निजसार जो है वात समझी है॥ कौ नायकतेमारै नै
नकु मत्ता है न्याय है जु नतो है॥ जो हमारो मुषदे बिकै नै
जात है॥ तेमसापराध हो लाज सोनी चो मुष करत है॥
यरु ध्वनि॥ ससि सो है वदन ताको उपमानै नन लिन
रुपक॥ ससिवदनी विसेषनसाभिप्राय है॥ है परिकरआ
सै लीचे जहा विसेषन होय॥ दोहा॥ उरत्ति नानि घर घरो
दिये रावरी कुचाल॥ विरसी लागत है तुरीससी कि
सी की लाल॥ ४२५ यह नायका प्रौढा अधीरा षंडि
ता को वैन नायक सो॥ सवैया॥ जानत हौ हिय के हि
त की उनही के वसे रु षसो निसनासी॥ ॥रकरू है
गमुलिकै लालन धारै उतै कछु कीनी मवासी॥ कौ मो
से तै कहो कै सेउरे इहरु और हीते सकुचाल प्रकासी॥
लागि तिहारी सविसेति रुसी रुष साम निये अवधात
तहैं षी॥ इह प्रकास॥ नायक सो नायका वाक्य
है सोत इइ रावरी कुचाल इहरु जो तेमारी कुचल
न सापराध हो यह आय रू॥ निघरघ टोदीये उरैषि

153A

निचरघटपुल छिवे ॥ पूर्व मेघ घोठ कै है ॥ उपमेइ है कामको वेहै
रु मन्का ॥ अंग्रे सोता मकरै पातर हैं है ॥ निवसरी सी बुरी सा
गत है ॥ इसी छिसीक धु सा जक धु क्रोध सोछि सी है ॥ वि
षउपमान है सी उपमेय सी वाचिक ॥ बुरी लागवो धर्म १
रूपमा ॥ अथ संकर ॥ मूल ॥ तिलवील बेबरी बरी मरी अन
ब वे राग ॥ मृग नैनीसै न नभ जे लखिवे नीके दाग ॥ ४२६
यह नायका अन्य सरते गदु छिता सखी सखीसे न ॥ कवि
सा जि विसिंगार है लास सो ॥ आई हिलो ता करती चकि हरि ते
रके है ॥ सो तिकी चीक नी चोटी को दाग लख्यो है रके
पातिके पर जंक है ॥ ठाडी जकी सीक वोलधरे कर सो सपरी
मृगउटी करवंक है ॥ सो चस नी ति लखे मृग लोचन लोति
उसास न आवत अंक है ॥ इष्प्रकास ॥ सखी सखी वाक्य ॥
तिलखी अंगसु डार ती बरी बडी लखे है है दब ती है ॥ बरी
अति नायक सो अनख क्रोध वेराग के अर्थ वे राजी
पनो जहा ॥ अरु वजानी ये तासो मरी है ॥ मृगनैनी
है न से ज्याता को न ही भजे सेवे है ॥ आवे है वे नीप
राई नायका की चोटी को दाग नि सानी है हिके ॥
नैनै न
मृग है है नैन है ॥ जाके मृग उपमान न है मृग के नैन
उपमान सो जानीये है ॥ जाहा है नही ॥ वाचिक है
नही धर्म नही है ॥ व उक जार है उच्या दि के न लनै न उ
पमेय है ॥ उपमान वाचिक धर्म लुप्ता ॥ नीके दाग
सो वे नी के दाग सो सेज वे नही आय बो हृढ की पे ॥
काव्य लिंग ॥ बरी मरी जमक ॥ छेकानुप्रास ॥ जहा

वीववद्दैवरै अधरसमताआय॥ जहांधै काअनु
प्रासहै। करत तसुकवसमुदाय॥ सूत्र॥ जहँसा मि
नसुसनरसाव रमाम सावरभास॥ तहीमनो प्रवी
णांगी प्रोढनकेरंगलास॥ ४२७ परनायका प्रौढा अ
धीरा वैननायकसो अहिता॥ कवित्त॥ वाहीकैनैनदेक
जर प्रोढकोनी कोवन्यो जिनाये धै को बाऊ॥ वाही
केदावकै जावकरंग लिलार महा छवि देति है सोऊ
प्रैसे वनाय सिंगार करो जस है वहवा सुवि चद्धिन कौऊ
जानित लाल रंगीऊन हे प्रवि या अधरा नैं रंगभेदे
रस प्रकास॥ मान मैं वाके पाव परै सो जो आहिन कोधवा
लीनै आवनै अवनेवरा के महावर सो लिलार पा
लके लिलार मैं सु वन जो सोभार ची है॥ वरनन करे तो जो
के वलसमहावर आवतो पाववर नोन है॥ निकरतो॥
है लाल वाहि नायका ने प्रौढ नवे रंगन से आंबे
रजी॥ मानौ जागे हो राति जासे स्याली है॥ मानो
कौ अचपकी पेसा॥ प्रभुजा दाव सुत्रेता॥ सं
चितसमनिर बहूगन की विनहासी कसकान॥ मानज
नायेप्रमाननीजान लीयो विय जान॥ ४२८ परनाय
का मानवती मानि के लछन प्रगटनाही करता पेप्र
वीन नायक जान गये सब सबी वैन॥ नायकसो ह
यवे॥ कवित्त॥ वे सोही वितान जे हे आगे वित वत्त
हीये नेह विकनाई की दृगन मे मिसानी है॥ मधुरवचन
तो ही वोलति विद सये सार सौं कानि कीन बात पर वानी है

154A

ऐसी भांति या बिन जनायक उ मानरीत जानि मन करे खेद
र सत तै जानी है ॥ साधिके रुषाई रिस ठानी तैस मानी सोप्र
वीन नकी डीठ तेर हत्ति के छैछानी है ॥ इरथ प्रकास ॥ सखी सोस
षीर छ नेत्रन से चितमन सो चितमनो ॥ हसी की नानवि
न मुसकानो ॥ एदो उवा त्ति नसो मानमनी नै मानजनायो
प्रकासित कियो ॥ जान ली पे तित नै पिय के सो जान प्रवीन है
किंवा है सखी तें जानि इ रनात सम सो परोछ मे कहत है पर
स के प्रांप के जानन वा सो नायक सो सोइन चेष्टा मान की
करी ॥ नायक ने जान्यो तातें इहतम प्रलंकार ॥ इहतमप
र प्रासाल बे सैनन मे कछु भाव ॥ मान को कारन विदु
पर स्त्री को सो नहीं देख्यो ॥ मान की ये ॥ विभावना ॥ बिन
ही कारन काज ॥ म ल रिस की सी रुष सा ससिमुखी हसि ह
सि बोलति बैन ॥ म उ मान एक यो रहै भातू ढरंग मे न ॥ इद
यह नायका धीरा को मानु है सखी नायक की नायका सै
कहत है ॥ कवित्त ॥ उ पर को रस के सोस भावसरूप हि वे हित
के सरसाए ॥ हधे वित्ते हसि बोलति भायनि वेन कहै सब
री छसधि ॥ नेह वे विदु जताए सबै प्रहत्तास दवायके
ते रहे ताते ॥ मान ही पे को उरै करि कैयो जु मनी ठके रंग भाए
रंगरा ते ॥ हरि प्रेस ॥ नायका की उक्ति ॥ कि वा सखी की उक्ति ॥
मानमनी से ॥ है ससिमुखी ॥ रिस क्रोध की सी रुष सतौर चेष्टा
है तेरी ॥ प्रौर हसि हसि तैं बैन बोलति है ॥ म उ य प्रमन विषे
मान को कर रहे है ॥ तेरे मे न तू उ के रंग भए ॥ तू ठ को साम
न की डाक री कहत है ॥ बीरवहु [illegible] टी कहत है ॥ ईद्र न धनु
संसकृत नाम ॥ नैन तू उरंग भये पर तें मान प्रगट भयो को

५

बूढे के संग नैन मये वा विरुद्ध धर्मत्व प्राय मा॥ मूल· पत्ति रति
औगुन गुन बरनत मन मैं मान है कै सीत॥ जत्ति कहिन हे अप्रति
मद है तरुनी मन नवनीत॥ ४३० पर त्ताविरुद्ध कवि की उक्ति॥
नायक में दस सखी के वैन नायका की सखी सौ॥ कि नायक के
औगुन ते नायका को मन कठिन होत है॥ सवैया॥
औरे से पत्ति औगुन जे बढत है मान जे से रित गुन सिस
र कै सीत अधिकात है॥ मान बढमये ते तिय मान कठि
नात्ति त्यौ ही सीत बढत ते नवनीत कठिनात्ति है॥ दोउन
को जोर प्रत्तिमद है स माउ ताउ औरनत्ति प्रकृत्ति सौ भा
व दरसात है॥ के है के विरुद्ध मरीत जानत प्रवीन यो है विन
पत्ता ताई ते तर त्तिय सा ति है॥ हेस्व्र काय्य॥ मा सामे रित
उ स्त्री लिंग है॥ पत्ति सौं तरुवर जो गन है॥ छै से सकृत में पर
थ है॥ उ हरी तली नी है पत्ति सौं रित है औगुन औरना
यक के संग से मा नवढत है॥ रित के उ ए सो बाघ
तौ सी त बढत है॥ प्रत्तिमद के मलो हरतनी नायका ता
को मन औ नवनीत मा बन सा कठोर होय जात है॥ कवि
की उक्ति॥ पत्ति सौ रित उसो तरुवर॥ बढिवो एक विपाल
गे है॥ या ते दो पक भी जानीये॥ मूल· ५२८ विठास
दृग बीक है यो है सरल सभाय॥ तउ करे आदर बरोहि
न सिन हीते सकाय॥ ४३१॥ यह साद राधीरा नाय
का कै वेन नायक सौ॥ सवैया वदन कमल ते अधि
क हित साने वेन मधुर करत ति अमी भिन मैं चात है॥
२२३ सुभाय सो सरल लखि परत है रस के नरव
क वि लास दरसात है॥ नेरु की निसानी रसमानी

155A

चितमनि त्यो हि कै सो हून मोते इह चपल हो जात है
जैसो जैसो प्रीति बढ़े बढ़े और कै रत प्यारी त्यो त्यो मेरो
ही दोस बढ़ो बढ़ो ई सा काज है॥ रसप्रकास॥ सखी की
वो नायक की उक्ति नायका सो॥ तुम्हारे मन मे मि
लन है कै उचवन न ही करत हो॥ पूगची कने है रुचि
नही है॥ और है सरलसुधी है वक्र नही भावे है॥ स्वभा
व पर मीपाठ है॥ भाव ही सुदर है॥ जो उती भी बढ़े
आदर सो प्रति प्रति आदर सो बढ़े प्रति॥ छिन छि
न मे रूप सरूप रहे है उरे है॥ सखी की उक्ति मे तो बढ़े
बड़े है॥ आदर बढ़ै आदर तो चरु बढ़ो सो विकरत है॥
तो सो डरत है॥ और अपने सोहो॥ आदर ते सो कवि विरुद्ध
संका कारज भयो॥ काहू कारन ते जवे कारज होय
विरुद्ध॥ लः केवट सतर भोहे कुरी मुख सतरो है वे
न॥ सहज हसौंहे जानि करि सौहे करत न नैन॥४३२
यह नायक को प्रोढ के मान परिहास है सखी सखी वे
न॥ सवैया॥ प्रीतम की प्रीत की प्रतीत लखि वे कै प्रान
प्यारी कछू कीनो परिहास हूं ठै मानि ठानि॥ कहै क
वि कुलपत उर उपरस बाई सखि दनि नि दोर वे ठी घर के
केलि ल पानि॥ आपनी अलीन सो जोर तिन ह
ब मुख वैन अपनापवनकी ज्यो ज्यो करि रग ही वानि॥
सगुरीस तरकीनी कवट सो तिन अवध सो है नकर
ति है गसहजा हसो ही जानि॥ रसप्रकास॥ सखी सखी वा
क्य॥ कवट सो सतर तरेरी भोह करी मुख सो सतरो है को

घसस्तवै नवबनके है ॥ सद जेस भावती जे सखे है ॥ द
सिनका ले जानिके सौंहे सींग ते नायकके नहि कस्त
है जो मनायबे ताई नहि ठरे ॥ ता से योगसो चातीमा
न सरस जहै सो है ॥ सो नैननको नहि साम्हने वे के
ता सो समर्पिन भयो ॥ काव्यलिंग ॥ ऐसे है सत ते है
है सौं है ॥ ६ कान प्रास है ॥ सत्य ॥ सो वतलखि मनमा
न धरि छिग सों पे तिय जाय ॥ रही सूतन की मिलानि
मिलति वही पर्यौ सवता प ॥ ४३३ सरनायकस्यनय
हे सो मिदुषितातसखी सखी बेन ॥ सवैया ॥ आवनी
प्यारी भली के पठे ति पप्यारे के आस है तो लिषठा
येसा तर प्रोढमान वती है ताइ है सो नायक छिग
आय सोटे सो सपने की मिलन को पिसकरि लपट
तगई मान रहो सो सखी सखी वेन ॥ सवैया ॥ मान
कियो तिंमाने नको रहे प्रो भ्राली रही नहु भांति मना
यके ॥ सोइ गई रिस ही जिय मैं धरि सो परे लाल छिग मै ह
न आय के ॥ ता समै सर सा पीर है के हहु के नवने
औरही ६० विधि आय के ॥ बालवधू सपने के सुभा
परही तिनके हि टासो लपटाय के ॥ रूपप्रकास ॥ सखी
सखीवेन ॥ मनमे मानि धर के सोवत्ते ही याबा तो को
लखिके जानि के प्यानायक छिग नजी के आय बे
होत ॥ सतने की मिलन सो मिलार ही नींद मे लप
ट गई है ॥ तिनके हि यसो लपटाय के स्वप्न के मिलन
सौं आवनो ३ ष साधे ॥ जिस करि कारज साधी पे जो कु

मूल दोऊ अधिकाई भरे एकै गौं गहराय॥ कौन मनावै
कौ मनै मानै मत ठहराय॥ ४३४ यह परस्पर मान है॥ दो
ऊ अधिकाई भरे हैं॥ कहूं नायका मानवती नायक रूप
मानी॥ अपनो नायक के मान देखवे की गौं है॥ स
वै न सखी सों॥ अरु दोऊ अन्योन्य लखे॥ ह्वां दोऊ कहै
वो समझै॥ सवैया॥ आजु चली रस ही रस में रसवा
त दुहून की कौतुक है आवै॥ ले अपनी अपने रस
में उपाव सी कोउ पवको उपावे॥ दोऊ भरे अधिका
ई भरे गहरा कहै सी आवे दोउ मेंहू न कावे॥ कौन मना
वै मने कहि कै पुन माने दुहून को मान ही भावे॥
रसप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ जौं डावत लहत सो उपजै
सो प्रनय मान कहावे॥ रूप [illegible] न कुल सं संपत्ति को अ
धिकाई है॥ ख्याल हठ ठहरे हैं॥ हमारे दोऊ रहे तो
ब लैन है तौ कौन कै [illegible] दोऊ रपति अधिकाई भरे
एक ही गौ हों डोर सौं गहराति है॥ हमारे कौन मनो
प वे जाय पाय आप ही मानेंगे॥ ऐसे वचनों सों गहरा
नो॥ ए दमें अंगराति है॥ कौन अपन ना में आपो कौ नमा
ने॥ मान ही मत ठहराई रहत है॥ किंवा यत्ति अपसंकौ
ति वे मान मत ठहराय॥ मत्ति ठहरी कहत तो है॥
किंवा॥ नायका की आसत्ति और नायक सो है॥ ऐसे
जी लगावति है॥ मान ठहराय दोऊ ठकी पो काव्य
लिंग॥ मूल॥ गल्यौ अबोलो बोलि पीय आपहि पठै बसी
ठ॥ डीठ चुराई दुहुन की लखि सकुचौहीं डीठ॥ ४३५॥
यह नायका अन्य संभोग दुःखिता॥ सखी को वैन सखी सों

सवैया॥ आतनीप्यारे अली कौं वठे विपप्यारे कौं आपही
बोल बढ़ायो॥ आगे हूं आय लीयौ हित सों हितपर तूं तासौं
निपटै जब आयो॥ त्तै मैं कृस्न दु रू ननकै डीठ तजौ हित
सखी उ रत्नेस्त जगायो॥ बोलि कैं भारी मैं लालो मले
जिय का हीय कहै अपनौं उहू कायो॥ ३२ प्रकास॥ सखी
सखी सोवाक्य॥ तिय कूं बोलि कैं तुलायकै अबौ
लै मैं मानग लौ काई रूपदरी सखी सों आपही वसीठ सं
देस पठायकै॥ कोउ डीठ चुराई दुह नके सामने न
ही नजर करे है॥ लखिकै देखिकै ओसकु वो हीलत जि
तडीठ कूं अर्थ देखिके डीठ को चुराई॥ वो हे रस रल
ज्ञासे सभाग को निश्चय कियो॥ अन मानस्य संका
२। जहां आश्रुवे हे नहीं जानि ले यअन मान॥ स्र
अपमान नी वर्ननं॥ बरी पात्तरी कानन की कैन वहां
उवानि॥ आवकली गरली करें अ सो उसली जिय जा
न। ४३६ ३२ नायका मन मैं अन्यासंगि नायकके
मान अयम पे है सुम सखी मैं वारन करति है॥ कवित्त
बात कहै कौं हू ज्यों हू जो आयवे है मन सोई सांका
ची कै जानि है॥ मानपरी बरी कानन की पात्तरी ही
ही कितैक हू धोर ह बानि है॥ छोडि कै कैयो अदु मास
तीवलि मसीर सह वरली सुसदानि है॥ आवकली
हो अतली सुबपाय अनी कै रंग रली कब मानि है॥
३२ प्रकास॥ माननी सौ सखी वैन॥ तेक ना नकी बसे
अतिपात्तरी है॥ उ लकी है॥ जो कछू सनै सौ मा
निलेंगी है॥ विचार नहीं है ३२ वर्ष॥ कैनन तरह की

तेरी वानि प्रकृति है ताकौं वहावो न हाय वैदेउ है ॥ अथ सि
सखीर हस्तागत है जीव मे जानि निश्चय ॥ अथाक्की क
लीसें अलीयें यारली वितार न हीं करै ॥ अथ रनायका
अथाक्की कली समान है ॥ अथाक्की कली इत्यादि
सैं कहे ॥ अर्थ पुष्ट किये ॥ अर्थान्तरन्यास है ॥ कलि
अर्थ जहां तो बीये और अर्थ सो गीत ॥ सो अर्थान्त
रन्यास है वृधजन करता प्रतीत ॥ रत्न मानिक
रही वर जीतन होउ लाहि दिवावती सें ॥ कहैं सोही
जाय गो सहज रहे सो ही गोरहे ॥ ४३ ॥ रस्सानहृदाव
ति है ॥ रूपमान दुहुं भाववे के प्रजोजन ॥ सखी कौ वैन
नायका सौ ॥ सवैया ॥ रसोबक सोरस मनें न चवाय के
वैन कहै हम बरे अन न सों है ॥ मानक रूप सौ रूप लीये
री रहो न मनें क रे और दिवावती सों है ॥ मोद्द हो बूरे
न तें ऊर दे तिसके बैं जो मो हन को रूप बनो है ॥ सो उनी के है
है सो ही रहत मिल होसी यही ऊँभाव की भो है ॥ रस प्रका
सखी वाक ॥ मानिक रत्न मैं न ही वर जित ॥ सो उलटी मैं
सोहै दिवावति है सो रसकौ उलटी पट रसो व रमनिक रही
है ॥ मानि मति करो किंवा ॥ उलटी सोहै सब वरिवा
वति है तो रिस पथ है ॥ रस मानि वरी पर रत्न को उलटि पै
रहो इह मनिक रत्न है ॥ मानि मति करो ॥ रिसो ही रिस
यही करी जायगी ॥ न करी जायगी सुर मे दिहें ॥ अ
र्थ सह ज विना कारन ही रसो ही जो है भो है ॥ वक्रोक्ति
सो सवका कूं वे अर्थ की रचना और हाय ॥ वक्रो क्ति सो
जानी ए ज्यान सलिल मति धोय ॥ रत्न ॥ सबर सखी

२५ १ २५८

158

सखीसरूपकहितरबौ हैं बैन॥ रूपकै सहेतहौनेदची
कनैनैन॥४३८॥ अरु नायका परकीया लक्षिता सखा
ई कहि सखी सो दुरावति है॥ प्रीतक नैनु दखि सखीना
यका सो कहति है॥ सवैया॥ न उत्तम परसर उत्तमारी
साखि सब कहि दरस बाई साधि कहै रसबै [illegible] वन है॥ अ
तिन कहति है [illegible] प्रीत ही को धरेवनवे सहु दुरावो क
छू इन सो दुरैन है॥ रस बसन हसानी के सधोरह
गि छानी कहिते [illegible] छवी सी छवि [illegible] नहै॥ रसो
रसकहि रसीवानि ठानि बैठी तहे रसरूपकै सहेतनेदची
कनै नैन है॥ रूपकास॥ मानहु उवति सखीबा
का॥ सब तोरबी रछहे मिसधलिक रास कापडव
ये है॥ और बैन वचन कहति है॥ रसरूप कहा करते
ति है॥ नैन सो चीकनैनैन चीकनो सौ रसबोहातिहै
विरोधाभास॥ रूप सों रूप नासीनतेवकेतीघाई सो है॥
हिताको बैठी कि बेग्रंठी मैं है मोहं॥ ४३९॥ अरु नायका
मानवती सखी को बैन नायक सो॥ सवैया॥ केतीय
कहाई करिहारे नँदलाल सबू जवनि हानि हा [illegible] जा
केनै कवाहते॥ है तोह रसपामी तेने कहाउ [illegible]
तोरिसके समाज विन काज ग्रब गाहते हो सैत है हरिकै
रूपकै तीघाई सो है तउ तेरो मनललकयो नारसके
मारहते॥ कितो कहा चाहित है साई कयो न कहेरीत
ग्रंठी मैं ठौ मोहे करिबैठौ ग्रबगाहते॥ रूपकास॥
मानवती होसखी हैन॥ तैनायककै सोहै सामने
नहि बाहतो नहीं देखे॥ कितनी मै सोह सबपरिवाई

रहे बिप्रैठी जाइ उठी और कि दे कर बैठी है ॥ सो रसकारन हौ
सामने दे बिबोक जैन ही भयो ॥ बिसेषात्ति ॥ बिसेषोक्ति
जहां हेतु होइ कारज उपजै नाहि ॥ छेकानुप्रास ॥ सत
रसिक साथ उरलायें छिक दिन रसो रैन ॥ जकिं प
कि तूं है ते किर है तकी तितै लाछेन नैना ॥ ४४० वर्तमान प
रिसि नायक के विद्यमान सखी नायका सो कहति है ॥ जो
नायक कौ अपराध दुराय बे कौ कै है ताउ सम भवे ॥ सवैया
मान कियो ही उत्तो मन भावे प्यारो पाय गहि ग्रेसप रहि
साके जतन कहा कीजियै ॥ रसिक रसाल तेरे लोचनि
ति लाछे चाह चाहत है रहो ऐसे नायक न कीजियै ॥
हा हा तो हूं सो है नेक सुधी करि मोहे बर जाके कहै तेरे को
है लाल हाती लाय ली जियै ॥ ह सौ यह सौं पैरो सरस
सरसाइ पैरी रसन रसाय दुबहोति तिन को दीजियै ॥ रहि प्रका
मान नीसो सखी बैन ॥ दास तेरई है ॥ ता दिन ते ही तबै
बैन कहे ॥ अब नायक आयो है ॥ तह रस नायक को हला
व ॥ कि वा नायक कोर साय के तह रस ॥ ३०३ रसा साव
के ॥ तहां ई हाय वेरी कै ताकि रहे है ॥ तेरे ति रहे हो है तिरि
छेव नै नैन ॥ सखी सो सखी की भी उद्दि लागे है ॥ रस
है साय इत्यादि के रिस बरछे वचन नायका ने कहे ॥
और वह ही अर्थ ॥ रस बचन हैं तो जक तिपवि तहीं नौ
हे तु मान है ते अलंकार ॥ है ते अलं कृत हात तहै
कोरन कारज संग ॥ कहि जवि तप कितासहु रहेरे
री सी काठ है ॥ तहां उत्प्रेक्षा ॥ स्वल लक्षण मनहु है

२८ १

१५९

159

रूपाल्ल ऋतपरोसनिवार॥वारीवारी आपनोसीवरू
हृदत्तावाहि।४४१॥सखीवेननायकसोसिसादेतीहै
कवित्त॥वारीहेनवावरीहृदे तलउबावरीकेयामानक
रिवेकेअरुमोसरविचारीवे॥ अवहेतोनहृवेलिनव
ललगाईताहिजतनजतौरह तोबपारीवे।लग्योहै
रूमनसातोहायगोरुवरूअववकेदकविकूछरि
स आनतपनिवारीवे।सोअमानिमरीमतिसोत्तिनके
चौहौकरेप्यारीप्रीतरसहीसोसीवहितावारीवे॥ अका
सखीकीउक्तिनायकासो॥ अनेकरूपकीयाहे॥तामे
कनेमानकीयोहे॥जेसोरूमनफूललग्योहैतो
सोपलहोयगोरूदरमनलाग्योहै॥तोफूलाके अर्थ
सिद्धहोयगी॥ आनतपरूपसोहेजेधरोसेताकोनि
वाररोको॥हेवारी॥प्यारेहेनकी आपनीवारीवारी॥
जादिननायकतेरेघरआवेरूहृदताजोवारजल
हेताहोसीचोतामेविहारीकोदेहानहीवमभंग
है॥ आनतपरोसकसोतोतोवारीरूहृदतावाही
वे॥वारीवारीजमक॥ श्लेषरूमनफूल॥रूदरमन
आनतपरोसरूहृदताकारूपकहै॥ मूल विधविध
केनिकरेंपरेनहिपरेहपान॥चितेकितेतेलेधा-
येइतोइतेतनमान।४४२यहसुनायकोसखीवेन
नायकासो।सवैया॥धायधरेमनमोहनहूवुहआति
रिपैरसमायभरेतो॥प्रीतकीचोपचढायअलीनकहेस
रुसायविनेकरिकेतो।सोवनतेरेताउनचलेअन

159 A

बाधनचै प्रतिरोस रचै तो॥ नैकि चितै स्यामैं न कितै तैंघ
रो म्हारि मान रततन ए तो॥ रसप्रकास॥ मानती सो सखी
वाक्य॥ विधविधके वचनसो उपरको लोग्याइ॥ निकरैया
पदके सम पैनै तर हतर इकी वात्तक इ तो है॥ पानके भ
र्पपावनतई भी मानटरै नहीं॥ चितै र स्मा री भोर देखि कि
तै तै कहो ते लेकरी धरी तो रा छो र तन नावडो मान॥ रतनो
छरे तन मे राप कोदि नाव वू कइ त्त है॥ किंवा विधवम्ह
तिन की विधकार्क्री या॥ करि निकरै र प्राद मिसे साध्य
नहीं॥ किंवा तिघ ब्रह्मा तिन को जो विध्वनावन हार
परमेश्वर॥ ने को अर्थ परमस्वार निकारै तो निकरै॥
और अर्थ वही॥ किंवा॥ रते रहो तोसरीर तै चिनै चित को
कितै ते ले धरयो कह त्वे कटी राखो॥ तेरे मन हिका
वैन नहीं॥ रती मा बा मे इको अर्थ वहा॥ परतोत्त है॥
तो पानै है छला है॥ न मान मानन ही दे॥ मानती
तो जो कोई क है है सो तक नो हे॥ या हे सो पर्म स्वार्थ मैं
निकारै टरै कैसा॥ किवा विधाता की त्री या करि
निकरे पानपर बो मान छुडावब को कारन है॥
मान छुडावबो कार्मैन ही गयो॥ विसे सोक्ति जा
इ है जहां कारन उपजे नांह॥ सरीर आधार मा
न प्राघे पनडो॥ आदि के प्रलंकार॥ अधका
ई आधार ते जवन्प्रधेय की सोय॥ रस तो रस
रा को अमान तसक है कुटला मति कूर॥ जीअनिवो
री को लो वारी चाव अंगइ॥ ४४३ इ हनायका के
मन मे नायक प्रन्यासत्त है॥ यह निश्चय है॥ सुनावी
सखी सो कहत है अमनिला रनकरत्त है॥ सवैया॥

तेरै उद्यान धरें नंद नंदन कानन ह्व सुनें ते तेरी रीझ रह्या है॥
तो रस रंग मैं पागि रह्यो निसवासर तेरै ईं तरफ रह्यो है॥ ॥ ता दि
तें अरु सौं रांक है [illegible] कहि मै सो कह्यो मन आई कह्यो है॥ चौव
री दसि विचार हियै को उदाबन चाहि निवारै च ह्यो है॥ ११ प्रका
स सखी बैन नायक सौं॥ तेरे रससौं रागसौं जो या चौप है इके
है॥ तो सो जो अत्र कै रह्यो है॥ सो उन नायक को वस पर ह्वा
ता तो सो जिन नैक ही रस कुल्ल दबदाई है॥ कुटल भा
सा मे दुबदाई को भीच ह्वत है॥ मति क्रूर है जिन की बुद्धि मै
दया नहीं अरु सप्यार मैं को बिगार करवावे है॥ तो शिविक्ष
प्र॥ अंग रखा विवे निवारै नीवके पालहो जी मकये कारि
लगै॥ अपासफु ह्य पत्ते सोब अौर निकिबू॥ एक सामा
न्य बात कहि विसेष बात सो पिट्ट्य उब की जे रअर्थांतर
न्यास॥ सामान्य ते विसेष दृढ जब अर्थांतरन्यास।
[illegible] री वहते सेदई कोउ स्वप्रकृति न जाय॥ ने ह्यर
हिय मैरहै [illegible] विपीलखाय॥ ४४४ परम नायक को
सखी बैन नायका सौं॥ प्रौढ धीरा अप्राकृति उदा
क वित्र॥ कौन परी प्रकृति छुटाय रू नमाने कैयो ह्व ज्यो
ज्यौं की जेउ नी त्यौं त्यौं नीचे दिखवत है॥ कृष्ण प्रात प्या
रे की अहाई तेरी [illegible] गति तेरी मति सो बिसास नीति सो बि
दात है॥ जद्यपि सने ह्वरे उर मे बसाय [illegible] अरु तसरसा
ई अन लबेले बियत है॥ ताउ पिय मोह कम मैं बैन न कै बैन
नामे तेरे अंग प्रंग मै रुखाई देखियत है॥ २२ प्रकास॥ सखी
बैन॥ रूपई है देव गारी सखी तेरी उह प्रकृति सुभाव॥ कौ
उ तरर सो न ही जात है॥ नायक के नेह भरे हिय कौ
हिराबौ यें है॥ तो भी तू रबी सुधलगत है॥ जो नैह तेत

रात्रिकहू दृग अंतावसेई॥ याही ते मोहन नाहि तिवावरहे उरसोव
सको चग्र होई॥ कृष्ण कहे बिन देखे दुहून के मैन अचैन नही है
सरहोई॥ डीठ उरै न जितो सखि सो विवसे नैन मिले सो सुख पाइ हसई॥
इहप्रकाश॥ सखी सखी॥ नायका मानें बीती है॥ मान नै रोकत से
बीरे॥ मान नहीं जानें ताहे॥ नायक अपराध बिचारै॥ तोभी
चलबे गए मिलबे को॥ जब आए तब देखबे बिना उठबे को
डीठ के मिलत ही दुहून के मैन हू से नायका के रिसछोडि
के नायक के नैना बी सी सिर मिंदगी सिथेक छ्ह उत्तारा
है तजिके॥ सखी इती पठायवे को उपायन ही भटौ॥ मिलन
भयौ॥ अरबन॥ तीन प्रहर बन जतन तिन वा छल परसजे
होय॥ मूल॥ अथ विप्रलब्धा॥ नव लाली वाली तिसा चर
काली छ निकीन॥ रतिवाली आसी अनत आन वनमासी
न॥ ४६६ यह नायका परकीया उत्वे ठिता के वैन सखी सो॥
कवित्त॥ आज मनमोहन कै मंजु तिरबनते मेरे पलक नला
गे प्रीति उरझे न हासी है॥ भई नभ लाली देखि पी की पदीन
मत्त लाली रु निपत ध्वनि चकलीन निसा चाली है॥ कहा [illegible]
वि कहे आली रैन मदन [illegible] पतिघाली बाली हे ज भई से है
आली [illegible] के [illegible] ली है॥ कान्ह रमनी की देखि [illegible] गमवाली
तो हो जानिय तरीरवन माली रति पाली है॥ इहप्रकाश॥ वि
प्रलब्धा वैन सखी सो॥ नभ आकाश में लाली भई निसा
रात्रि वाली चीतो इहप्रकी॥ चरक चिरा चिरे कहत है॥ पूर्व
मे गब राका कहत है आलि मेरा ताने धुनि सदृ बिधो॥ किंवा
चरक की अली प गत्ति नै धुनि कीनी है आली॥ नायक
नै अनत अन्य रति पाली प्रीत को पालन की सो पाको
रवी तेवन माली न आ आ॥ प्रात भयो नायक न हो आवे

२। १६६

169

याते विप्रलब्धा लखें केत मैं बैठी सोच करै है॥ याते उत्कंठि
ता भी कहत है। जा सोच करै है सो है पीव न तबहि गन ह जाव॥
ताहि विप्रलब्धा कहै सो चित्त मैं अकुलाय॥ प्रीतम के नै
कारनै प्रान हीसं केत॥ चिंता जो मन मैं करै उत्का को र
हहैत॥ कोउ कहत है उत्कंठ लोत है विप्रलब्धा भाव र उत्का है
कै मत सो बृहि॥ छेकानुप्रास॥ अवर प्रति अवृत स्वृ
त कोमल मधुर समास॥ छेकानुप्रास॥ मूल॥ रवन नविय
है वाम वस विसराई ति प्रान॥ एक वासर वे विरह लाजेव
रहा विहान॥ ४६॥ यह नायका प्रोढ नायक कौ उराहनौ
देति है॥ रवन नवि यया पद ते वत्तर पीय संवाद जानी ए
रवन नायक बने। कवित्त॥ २ सिरी त अपार हैं चातुरी के
का सागर है। कोरै मक लानिध उपमान परसै॥ सब रूब र
त है। निकाई के निकेत तामें देषत ही प्रीत सब ही के उरसा रसे
रवन नसने हीं है। ऐसे मये वाम वसि विसराई अरी
यदेष्वि वे कौ तरसै॥ कहै कवि कृष्ण एक मोन वसरै हम
ध्यान लगे विरह विहान लाजै वरसै॥ रूपकास॥
ध्र कृष्ण नायक वर्नन॥ नायका के वचन सखी नाय
क के वचन सखी सौं कहत है॥ यहि सौं तो नायक र
वन पे सब सें समान प्रीत करै है। अब वाम इस्त्री
रइस्त्री के वस होय के अरु तिय नायका को विसराई॥ ए
क हो वासर के दिन के विरह सों लाग बर्ष बीतत है उ
त्कंठा सो॥ किंवा॥ रवन प्रवीन वाम इस्त्री के वस होय के
पिव ने प्रान तिय को विसराई॥ किंवा नायका की उस्ति
को इस्त्रि है॥ रवन प्रवीन जो है पीय सो वामैं के वस
होय के॥ प्रतिपद मसौं प्रान कहै यह मोह करि षीठता

सेरह सा पीव नो होय ॥ रूप कै न हो लगे का ते अप्राप्त गुन
और विरोध भास भी है ॥ रूप अप्राप्त गुन जहां संग के कछु गुन
लागत नाहि ॥ अलं गारि ली गरबन की जिये सो प्रेम सुहाग रूपाय
जीव की जीवन जो ठले [illegible] ध्यान छाहि सुहाय ॥ ५०५ यह सखी
की सिक्षा है ॥ अर्थ जो कोउ वन ते आवे अंध कै या सो नायक को सित
ह विसारत है तौ अस मर्बे रह्यो स्वारी होय ॥ सवैया ॥ प्रीति
ते समुझावति तो सिखि [illegible] तौ जिय मानि होहि सुखद उह्यौ ॥ पल
के न लहै वलि जोबन न वे [illegible] नहि सो मिल कै यो न रहै
वसि तावरी पाय सुहाग समै [illegible] तो उमान दारे जि
तमे ॥ सव हि वह जो ठमे जीवन [illegible] नहि छाहि सुहाय सु
माहस मे ॥ १२ प्रकास ॥ सखी वचन मानिनी सो ॥ हे गहेली
वा नहि गरबन की जिये ॥ सप्रेम सुहाग रूपाय ॥ जो अप्रेम सो अ
र्थ की जै तो सामय जोतन न ताम हे सोभाग्य को पाय के ॥ तौ
धनी मे निकरे सातिरस ॥ कोउ दिन मे बूडे हपगी तव ता
रि को न बूरे गो ॥ समय को अप्रपर्ष सं हेति मे लव को
स्थान न होहि ते वे ही है ॥ नायक जे रैव से हैं उहसौ भाग्य
को पाय के ॥ नायका को गर्व है तो आछे वे या समय मे मे छाया
नही जीव की जीवन जे ठहे तौ भी मांह मे छाया न होत सुहा
ते है ॥ कोउ समै गर्व आछे कोउ समै मे नहि ॥ किंवा है जी
व की जरठ मे तो जीवन है ॥ तौ भी मांह मे छाया न हो सुहा
तहै ॥ एक विपक्ष मे ॥ जी जेरी जीव की नाक दे बूने तौ सं
बाधन है जीव की अैसे जानी ये ॥ किं वा ॥ नायक ने गौ
रि गहेली पक रि ली अप्रत गर्व न कीजिये ॥ गर्व कहा ॥ २

यनउ कुलकी हमै छमजोरा सखी सो पकरि लेउं जे ॥ इत्यादिग
र्ववाक्य ताको समय सात्तिक रोमगर्व मति कैरै ॥ नायक सों
जो रूठसो सो माण्यतापवे ताको ॥ हे जीव की अग्रगेव
हे अर्थ ॥ दृष्टांत अलंकार ॥ किंवा ॥ कसा हे तारि ताके पति
सहित विहार करत जो हे ॥ और नायका ता सो वकस हे तर
ताकी सखी को वैन ॥ हे गह लीगरवन की जिये को उपाव
समय में सो मान्य को पावे ॥ वा नायका को विरह सेवा
[ने] ठ हे ॥ तामें तह जीव की जीवन भई ॥ वा सो प्यार होयगो
होय यह ॥ जाहू तह छाह की तरह न हो उ हावे ॥ औ ॥ हाहाव [हूस]
[करे] रन उघारी ॥ गरुवले सब कोय ॥ रोज सरोजन के परे हसी
सखी की होय ॥ ४४६ पद मबवर्नन हे ॥ सो सखी नायका सो
कहे हे ॥ नवोढ प्रसंग में वाने मान छूडाव वे में वहे है तो उस
मवे ॥ कवित्त ॥ लोचन लह के पलसाव लाह मारो बकरि ल्ला
री प्रान पति को सनेह सीलीन करि ॥ ते ही कोई परम निका
ई की अवधि प्रवत्त वृषभानु की कुमरि अरवी न करि ॥
टारचार छंद चरके हाहा है उघार अब निज छवि पानीत
मे पीबे नैन मीन करि ॥ केजा छवि छी न करि सह मली
न करि सो तिनको दीन करि प्यार के अधीन करि ॥ रूप
कास ॥ दिन मे सखी को को बैन मानन ही हा हाहा बातिहे
अदि निहोरा करति हो इह अर्थ ॥ नमव दन अब को उघारे
सब को उ सखी जन अवतने हग न को सफल करे ॥ लछि
ना हो ने ने के अब लो हि इह अर्थ ॥ अब ही फूले सरोजन
के रोज रोग ह्व यगो ॥ ते रो अब कमल को चंद्रमा को स

161A

त है ॥ सत्रु और मित्र सो अर इत्यादि ई हं अर्थ ॥ उपमान
के अर्थ । तक है सत्रु की सोभा देखि सत्रु के मन मै दुख
होय ॥ ताको रोज जानी ए ॥ परे कहे हे अर्थ भयो रात्रि वि
षै सखी चंद्रमा ता की सी होय ॥ अब अर्थ जैसे चंद्रमा
कहु नहीं ताप कहे ठौर लगाय ॥ दिन मै चंद्रमा प्र
भा हीन ॥ रात्रि मै कमल सोभा हीन ॥ याते वनै नही
उपउत्मेय ता सो कमल चंद्रमा को अनादर ॥ याते
प्रतीप ॥ अन आदर उपमेय ते जब पावै उपमान को
ई सरे जैसो सरोज मुखी लेत है ॥ सखी सो सखि की
उक्ति है ॥ सो अप्रस्तुत स्वाप न ही ॥ काव्य लिंग मी से जबै ॥
वदन उधार वै इन्दु ता को समर्थन जुक्ति सो करति है ॥
स्यल कहा लेउंगे बलि मै [illegible] जो अप्रतीति वाक ॥ नैक
ह्वै तो ही है मई यो है सो है सात ॥ ४४ यह नायक को
और सो अप्रस [illegible] मान नायकाने मान कियो ॥ नायक
मनावन आयो सो न हि नायका को नाम [illegible] नि
कसै सो सखी नायक सो या को मान छुडावे को प
रिहास के प्रसंग चलायो सखी वैन नायक सो ॥ सवैया
हांसी तो कीजिये तासो लाल [illegible] बतावन नारि
अप्रसी ॥ वार द्विवार ते और को नभ [illegible] ठावो इनै न जैना
न अनैसी ॥ या पति हास चले ते कहा है रिस तो इ नेक हिये
रिवसी ॥ सो है कीये मई नीठ है सो हि [illegible] कमान मनोज
की जैसी ॥ २२ प्रकास ॥ मान मै सखी वैन नायक सो ॥ हे ना
यक [illegible] और नायका के संग मै बोलत है । ए बल मै
कहा लेउंगे कहा सी है होयगी ॥ वह तो मानि करि बैठी है ॥

गम्यऔरके संगमै बैलतिहो उरअटपटी बातदै॥ अर
वकरामन बालीनीपाहोई यहा अटपटी॥ दूवीके
औरपटटोगकरतहै॥ ताको गमत जो होइ ताहि
रमारे सपथके कीये॥ ताकी मेरा चोरी सी रहोतही
माईहै॥ रसतमे जे सीहै तहै॥ सा रबानो हेत हसो
हि हानो हेतमान॥ हेतअलंकार॥ हेतअलंकृत हो
तोहै कारन कारजु संग॥ छप्प॥ साकु बिनरहीये साम
रेसु नगरवील बोल॥ देतरचो है ये तकहे नेहनि
चौहै नैन॥ ४४८ परअपयसमागम नायकापरकी
तासखीको वैन नायकहो॥ कवित्त॥ नाही ए महा
है नईरीतरै तिहारी इहरर सक मनन हको करतयूवे
नेहै॥ याही हबोतरस चिकनावति अधिकचकाई
मनमथके विलास सदेनेहै॥ साकोच नारहीये
सुजान घनश्याम सुनो कहा भयो जोते सतरी प
करेवे नहै॥ प्रीतसो सनेहे हैसरचो है से हिताकी बात
नेह होन चौहे ताके हेई देतानेन है॥ रप्रकास॥ ना
यक सो सखी वैन॥ दृष्टांत॥ नायकाको तासनत है
जो धसहतावेन सु निवे संकोच कर नहीं रहीये॥
हरि के नहीं रहीये॥ नेरहो निचो है नासत हो सवं
चलाइ रअधी॥ जो है ने न वित्तके रचो है अनरहो
तुमविबे कहेदत हे॥ रचो है चित को दृढ कीवै॥ का
बलिंग॥ छप्प॥ चलो चले छुरि जायगो हठ रावरे
सकोच॥ बरे चढत हे ताबे अपने लोचन लोच॥
४४९॥ परमान छुडावबेको सखीप्रजोजन॥

162 A

नायक लै आयवे कौ है सखी वैन नायक है॥ सवैया
मनै कौ कालति हारी पियारी कहा जिय जानि मन हारि सठ
नी॥ के तनि नातन नाई मा नायक री मन हारि वे ह्वै नमा
नी॥ कौन है वे जोन रहै दृग जो ह्वै कछू वन ई जती प्रतिमानी
ला लच लै प्रविलोक तामे धृष्ट नायक मान प्रगट जानी
ये प्रकास॥ नायक सौ सखी वैन न दे र नायक वैन॥ सखीक
है जो मच लो नायक वैन न वसे॥ धृष्ट नायक हेठ॥ केर सखी
ला वर सक ख्याल रस को चहे नायक वैन॥ ता मे वासर
मे तो नेन बरेक प्रति नहा पे॥ सखी वैन प्रति सो कतिमे
लाच या ये प्राये हेठ धृष्ट नायक मा॥ ताके दृढ़ कियो का व
लिंग॥ लक्षन प्रनर सह रूप सपाइ येर सकर सी लीपास॥
जैहै संठ की कठन गांठे मरी मिठास॥ ४५० पह मानव
ती की सोभास सखी नायक सो कहत है॥ प्रजोजन यह के
नायक चलै तौ मान छूटै॥ कवित॥ मानती ति हारी मन
मोहन विहारी कछू मो है न कहो परत सो मा को विलास है
के नासि का सके रिम खटी प्रनब बैठी लोचन नमा
र प्रस नाई प्रकास है॥ र साक रसाल वार सी सी की वि
लोक छ वि प्रनर सह है प्रे सार स वे निवास है॥ कहे
कवि कृष्ण जे से सांठ की सरसरी रति गांठ है कठिन
ताके ते पतामि ठास है॥ ये प्रकास॥ नायक सो सखी वैन
हैर हिक प्रनर सह है मान विवेक प्रनर सकी यो है॥
ता न सो पार नही है॥ ता मी वद्दू दसी सीर स्याम री जोव
रु नायक॥ ताके पास रस प्रपाइ है॥ माच की सोभा

दे खिकै मन प्रसन्न होत है ॥ जैसे स्वेत उष ताकी गांठ ॥
कठिन कठोर जो बरी है ॥ प्रति है किवा बरी होय ॥ तैसे
ही मिठास है ॥ वामें मिठाई है । बरी मिठास प्रेम गांठ
न लगाइ है ॥ बरी मिठास पै भौवो उपाठ है ॥ इ बोत
प्र लाकार ॥ पद सबूद जह जु गहा र्म जिम विं व तप्रति
विंव ॥ एक विरह ते हि बात न द जैसे मनि दरपन तेव
फूल ॥ कैसो है [illegible] दू वा तन लगे पाके उदउपाय ॥ हठ
छ गठ गठ दे सब सिली जै सरंग लगाय ॥ अपर पहल
रमानी है सखी नायक सों कहत है किं वा वा को मान न छुल
रे चले छूटै गो सखी वे न नायक सो ॥ कवित्त ॥ प्रा जे सज्यो
हठ कै गठ कारी ने देखत धीरज वो न कैधी जै ॥ कोन
हू भांति लगे सहसा तन में उपाय अके मति दीजे ॥ सो
वन दूतान को हू मिले हरि मानी है में व विलंब न कीजे ॥
रस प्रकास हू तौ उनै नायक सो ॥ कहू उका हू तरह सहन
एक बात न नहीं लागत है ॥ किवा कोउ तरह ॥ सहज गठो ॥
हमारे बातन में नहीं लागत है ॥ इह रह प्रसंग ॥ कोर वद
सह वात सीधी सी छिन नहीं लगे ॥ रसिक प्रिया मे मान छु
डायवे में साम दाम भेद उपाय ताको उपाय पावे कोरवं
ताराठ दे के तेर लेने ॥ हठ सो है गठ कू तहा गठ वे ना
यक्यो है ॥ ताको सपत्र ग्रहि जो है राग प्यार ता सो लगाय ली
जिये ॥ कोर मे सुरंग लगाये है ॥ रसिक प्रिया मे साम दाम
भेद प्रनम प्रनति उ । प्रेम स्नान मानि ॥ हठ गठर पक सुरंगमे
फूल ॥ बाही दिन ते नामि दौर मानक लोह कै फूल ॥ भले धा
रे पहने है उउहर के फूल ॥ अपर पह नायक परकीया

नौ

उपपति को विरह [illegible] राखबे वे । पति सो मान कों स्पे[illegible] जो सखी
सौ कहत है । जो नायका की सखी नायक सौ कहै है तौ खंडिता होय
कवित्त । जाही रजनी के घर तन से प्रानपिय रवसे जामै कौन
कहा मन उपटि नायो है ॥ ताही रजनी ते [illegible]
नो सो मान सखी प विहारी को हू भरम न पायो है । कहै कवि
कहा प्रेम सार सनेह न्यो नंद बध्यो तें सो उर लाहि हाइ
उर मै छिठायो है ॥ याहु ने पधारे प्राछे फूल गुडहर के हूक
है लै के मल वाघ गरव गायो है ॥ रूप्र कास ॥ गुडहर से
सकुच तसो प्रेम अरुण कहत है ॥ प्रथम गुड हुलकरत है
जो हार है तत्ह कुलरह कराव ॥ जो ऐसो [illegible] रूप्र वर्क रे
तो रसाभास होय ॥ याहु नासो नायका ने रति करी ॥ ता
सो कलह वो [illegible] लमान भयो तौ रसाभास है ॥ प्रिय
वर्णन सो तत्व रसाभास न तहा [illegible] सखी [illegible]
वक सो ॥ वाही दिन ते न है [illegible] माव [illegible]
चाल पधारे ग लै [illegible] प्राण ॥ [illegible] हू के [illegible] होय
के गुडहर के फूल भरा नायक न्यो [illegible] गये ॥ त
हा प्रेरसयो सो नायका जान गई ॥ कैवा याहु नासो
सखी वेन ॥ याहु ना प्राण ता [illegible] ने नायका के विवाह
की बात कही ॥ मान सो । [illegible] गुड
हर के फूल भरा । रतक ॥ परिनाम हू मासे है ॥ कहै चिय
उपमान है वरननी य परिनाम ॥ रूल । प्रा । प्राप मली
करी [illegible] मान ग रोर ॥ दूर करो उ हू दे बी ये [illegible] ला
मिथ्या [illegible] र ॥ ४५३ यह खंडिता नायका की सखी नाय
क सो कहत है ॥ सवैया ॥ प्राय [illegible] प्राण भली करी

आजु कौ बानिक सो मन मो है॥ देखत रावरी सौंह नीके रति
मान मरोर धरे उर को है॥ काहू छबीली को छोटो छल्ला
यह छोर छि[illegible]नी के छाजत जो है॥ देखि रिसाय गी रूरुकै सो
कछू जाम तें अनखाय लसै सो है॥ इति प्रकास॥ सखी वाक्य
नायक सौं [illegible] आज तुम सो भली कही मेरे वचन मान कौ
मरोर गर्व सो महौं और सुंदरी कोन है जाके पास ना
यक जाति है॥ इस करि उत्तर रस छल्ला अंगुठी छिन
नी। कनिक अंगुरी ताके छोर अग्र भाग मै है॥ सो देखि
गौ जो तुम्हारे अंगुठी होती तो छल्ला में कौर रहती अंगुरी
को अंगुठी को गेल नहीं॥ याते विषम अलंकार॥ विष
म अलंकार ता लौं न वे धाय जु न लायक को संग॥ इति स्म
[illegible] के कै हा पाय न पास्यो प्यौर॥ [illegible] कहा प्रज
[illegible] तेरे रस तोर॥ ४९४॥ पुनः उर मान सखी वे
न [illegible]॥ सवैया॥ [illegible] कचूर की चारु छिपाय
ह माल [illegible] बिलीस कबु दायनि॥ हा हा के हारि रही
सजनी बहु भांतिन हारि बिनै कि पै आवनि॥ जी म
न जो सागरे कै हारि प्रीतम सो उपरी आयनि
लोरि कहा ब्रजबाल न ते रहै तोर तरेर कि पै उकु
टायनि॥ इति प्रकाश॥ मान मी[illegible] सो सखी वेन॥ रूमन है
करि कै हारी॥ अरु प्यौ नायक को पाय न पास्यो
लो हूं जी कहा कहा प्रज हू अनभीत हरवो ध सो तोयो।
रहै तेरे तेरे रिसाबी है॥ उर का मनी करराबी है॥ मान
[illegible] डाय व कै हेत हा हा करिवो॥ ताय परिवो ताही सों मा
न छूटैगो नहीं॥ कार्ज नहीं भयो॥ विसोवादि जस हू तो सो

कल लखि गुरजनन विच कमल सो सीस छुवायो स्याम ॥ ह
रि सनमुख करि आरसी हिये लगाई बाम ॥ ४५४ ॥ यह नाय
का प्रोढा परकीया है ॥ सब करै सौ सखी सखी सो वैन ॥
सवैया ॥ आजु इहां मैं सेकु सजनी कछु सैनन ही स
मझायो समझायो ॥ गोरी लखी गुरुनारिन में सरसी रु
हो सिर स्याम छुवायो ॥ सो लखि कै वृषभानसुता दीयो
उर मेद सो ताको हुलसायो ॥ कृष्ण कहै हरि वे सम्मुखै के
रि दरपन हिये सो लगायो ॥ २२ प्रकास ॥ मान के प्र
विसेष है तहां सखी सखी वैन ॥ नायका को गुरजन
सास जिठानी बीच में नायक सम्मुख लखि कै कम
ल सो सीस छुवायो तब नायका नें हृदय सो लगा
या ॥ ३ ॥ यह अर्थ है ॥ रसकु प्रिया में बोध कहा न करे
त है ॥ खेह वे सिख सो धु निश्चवै सिक्हा तै बोध खवा
च अन्य संमिश्र इत्यादि वे सिषाते ध नि होति है ॥ सो धव
वसान लक्षना सो ॥ कमल स्वरन की प्रतीत कराव
ति है ॥ कमल सो सीस छुवायो ॥ प्रनाम कियो ॥ गुरु
मान को प्रविसेष है ॥ सो पाय परे विना नही छूटे ॥
तन हरि के सामने आरसी करि नायका ने हृदय सो ल
गाई ता महां मारे हृदय मो वसत है ॥ किंवा सूर्य के सां
मने आरसी करि हृदय सो लगाई ॥ सूर्य को नाम भी ह
रि है ॥ नायक के सामने आरसी करे तो वक्तरस्त्री जा
नि [illegible] ॥ आरसी सूर्य को दिखाके चहै है ॥ ३ ॥ यह ढव
नि है ॥ कवित्त ॥ हरि सनमुख आरसी कीनी ॥ तम्प्रआर
सीस है आरसी में दोय रूप होत है ॥ आगे प्रकास पी

है॥ अप्रकास सतसै कमल है॥ हमारे अंग अंग और सरीर मै और जो
मीत मे हृदय बसो लगायो॥ किंवा स्वच्छ के सनमुख आरसी
करि हीये सों लगाई॥ कुचके पहार करि बरनत है॥ कु
च गिरि चढि प्रति पक तुं है॥ सूर्य जव प्रकासत लखो जाय
जैसे तब मिलौगी॥ किंवा नायका ने नायक की और अ
रइ स्त्री सों प्रीत ठनी सो तासों मान कीयो॥ सो बात
को उठावति है॥ कमल सो सीस धुवायो॥ अब की उप
मा चंद्रमा॥ पर्याय है॥ चंद्रमा सो कमल सो जैसी प्रीत न
ही॥ चंद्रमा की प्रीत एक कुमुदिनी सो है॥ तैसे हमारी
प्रीत और नायका सों मन ही॥ एक तुम ही सो॥ किंवा॥ क
मल हो सीस धुवायो॥ सीस मे नेत्र भी है॥ सीस से धु
वायो तो नेत्रन सो कमल धुवायो गयो॥ कमल नाम ज
ल को है॥ नेत्रन को मीन की उपमा है॥ जो से जल विना
मीन व्याकुल है॥ ऐसे अलताई हमारे नेत्र मेंच देखे वि
ना व्याकुल है॥ अब तोसे देख्यो मानो मीन को जल
मिल्यो॥ किंवा॥ सीस के उलटे पछे सखी हे तहे॥ स
सी सों कमल को स्नेह नाही॥ तैसे हमारे और नायका
सो स्नेह नही है॥ तब हरि को सनक ही के उनम जो अब
सो आरसी मे प्रतिबिंब तकरि आरसी हृदय सों लगाई॥
किंवा॥ सीस कमल सो धुवायो सीस अंग है हमारो
कमल की अंग तहहै कमल जलमे रहत है॥ जल
सों स्निग्ध ही होत है॥ नायका ने आरसी दिखाई॥ आ
रसी के नाम मुकुर है॥ तुम अपराध करत हो मुकर
जात हो नहि जाति हो॥ हमन ही कि तै हृदय लगायो॥

अंगीकार कीयो ॥ औरभी जानीये ॥ सु द्यम अप्रसंकार ॥ स
द्यम पर अपालिंगत करै कीयो कछु भाव ॥ मूल मनन यन्ता
मन कौं क रै देत रुष परछाव ॥ कें तग लाग्यो प्रियतिका
हिज रु शी रत जाव ॥ ४५६ ॥ वहु नायक कों नायक कौ मान
छुडिवो प्रयोजन है ॥ सो मान छूटत जानत है ॥ त नह
रुणाय देति है ॥ सखी सखी सों कहै ॥ कवित्त ॥ रोसभरी अविका
नंद की अप्रानि लोक निमांम भयो रसभारी ॥ ताहि ते मान
कैं रु खद षिवकी नंद नंद हि ते रुख धारी ॥ सो तिमनो
है प्रिया जन सी तब से करि देति रसाई बिहारी ॥ कौ तिग
साजो रहे रिस कै त्रिजदे कै रिसात ति राधिका प्यारी ॥ हर
प्रकास ॥ सखी सों सखी नायक कौं मनायबे कौं ना ही व
रै ॥ प्यारी कौं रुखाय रुठाय देति है ॥ अप्रति रुदरी है ॥ पिय कौं
कौं तिक होसा लाग्यो है ॥ प्रिया हि जतत औभी ऐसी चवा कर
त है ॥ रिसावति जाति है ॥ षिरु ते रिरकै विरुध ॥ कारु कारन
तें जबै कारज होत विरुध ॥ मूल सकति नाहन ता तें वच
न मोर सकार सखो ॥ बिना बिन अप्रोट कीर सो बैरो सबा
ढ त हो य ॥ ४५७ ॥ बहु नायक स ठ सापराध आयो है ॥
रु नाय का औाधत कछु वव न कहति है ॥ ताको मीठी
वा ताकहि कावि निवारन करत है ॥ नायका अधीरा
जानीये ॥ ताके वैन नायक सों ॥ कवित्त ॥ काहे ते मोहे
तेनै नीमई तिपकों नवे कीजत कौं … त्ती कौं … तो
ता तेई … लठहरते ॥ यो द जहा उमगाव तजी कौ ॥
कारक रो किन भाम निवै सह हो तो न होत अप्यार सहे कौं
ज्यों ही ज्यों षीर बरो करि औटिये त्यों ही त्यों होतिस वादिन

दूर प्रकास ॥ नायक कै वैन नायका सौं ॥ हमारे जो तातें तू वचन नौं
सुधन सौं उतर कहू जानी ॥ सो हमारो जो प्रम हि वेरस
अनुराग ताकौ जो जार रस सवाद ताकौ बोय गुमावन ही
सकत हैं ॥ छिन छिन में ओर दूध की सी तरह बसे अप्रति स
वाहि ललसवाद वि हि बहुत है ॥ रस उपमेय दूध रस उपमान ॥
दूरा ते धर्म लौ वाचक ॥ पूर्णोपमा ॥ प्रसंग: बरे अभाव कै
रठला सठ उर उपजावत त्रास ॥ उसह संक बिसकी करै जैसे
सौंठि मिठास ॥ ४५८ ॥ यह अग्राकित उग्राधीर प्रोढा नायका है
नायका सौं वैन सखी कौं ॥ कवित्त ॥ जो सठ गहै उर मैं जितै
जौ कछू मैं तौ न चूक रति कक करी है ॥ वानि सजी उठला हू
उकी अब वकौ है तो सौं धोन जाति परी है ॥ जान हो वे उपजा
वे अरे अप्रति आदर सौं अभिमान भरी है ॥ सौंठि व बात मैं
मीठी सम सठ कौ उकहै तिसही की डर है ॥ दूर प्रकास ॥
नायक की सखी की उक्ति बाद उग्राधीरा सौं ॥ बरे अप्रति अ
दव सौ किंवा नायक सर खडै है ॥ है अवद सौं उठला ही
रे तराति करत है ॥ गर्व की तेषा उर उपजावत त्रास ॥ जैसे
सौंठ मैं मिठास होय तौ उसह ॥ अप्रसन्न तिनकी सकाता
कौ करै रठला हू औ अप्रवद सौंठि सौ मिठास ॥ दृष्टांत अलं
कार ॥ पद संबू हू जहं उपराधर मजिमा विनत प्रतिविंब ॥
सुकवि कहत दृष्टांत तहं ज्यों मनि दरपन विंब ॥ प्रस्तावना ति
छिन सो हैं सर हू तमा नुनठिकु ठहराय ॥ जैते अप्रोगन छ
बिहै गुनो ताप परि जाय ॥ ४५९ ॥ यह सखी या ताकौ वैन
सखि सौं ॥ नायक के योग गुन रचा हो है ॥ सवैया ॥ जौ
हैं गुनौं तौ बरै इलहू वे रेम नक सार अप्रन कर ठी अप्रन कठौ ।

औगुन हूं देखें हू दोष न आवत सो गुन की रहे सिद्धि सी दृढी
सील रूप आउ सदा मिलत है। सखी लेगो प्रीति बीच मन में हू दे
होत सही पै निस द्यौस रहे मनमोहन नहीं औगुन हू नाहि
रही ॥ इति प्रकास ॥ संजोग संचारी भाव जो बिना मना
वै छूटे ॥ नायका वैन सखी सौं ॥ राति दिन है सें ति
सखी की चाह चहे ॥ मान ठीक निश्चय नहीं उर राति है
नायका जो जितनौ गैयो गुन हू डीठ है ॥ गुन ही ना
यक को हाय मे लछिनाहीं चित्त में परे जाति है ॥ आ
वत है ॥ धीरोदात्त नायक है ॥ रूज सधि आगमे र वि
नय गरब जोर ॥ धीरोदात्त लसें बहु गुन पन धारी है ॥
बाग रकी राहि मेद सखी सकाव कर रहे है तो हाय नहीं आ
वे ॥ औगुन को जितै अभि रूगुन नाहीं हाय आवे ॥ प्रन
मित विबाध चित्त चाह [illegible] जो पल सहाय ॥ [illegible] स
तर भौ हू रस बचन न कर ता कठिन मन नीठ ॥ कहा करे
वत हू मातह रि रेर हू सो हीडीठ ॥ ४६० यह नायका प्रौढा
अति मास सखी सिखी है ॥ वि इति मान करि या मे नायक
को देखत ही मान रहत नाहीं नायका को बैन सखी सों
सवैया ॥ तो रोक है सो करि रस नौठा नित हो रहे बरु लै बै
त नाति मोहे ॥ नीठ कठोर करो मन हू गरब हू, तो न मान
ति बैन रहो है ॥ तो हैं कहा रस मेरे अलीं लचै ला
लचै जो अपनी तजि गो है ॥ वे सी करै मनमोहन
हो अस देखत तु लोचन रातन सो है ॥ इति प्रकास ॥ सखी
हो नायका बैन ॥ सात रात रे री मैं हू नेक धरो चतुराई हू
के इछ वचन मे मन को नीठ कोइ तर हू सो कठोर करति है

सोकहा करे रो हरवे रो हरवे डीठ रसो तौ हो जाति है॥ ईर्षा
की स्थान दर्श भातवे ॥ उद्धव सबै उमा न ध्यू रव्यू मे मा
नी ए॥ सात्विक साधित नेह सों डीठ के वाधक है॥ तौ भी ह
सों ही डीठ होत है॥ विभाव नायका संवाद॥ प्रतिबंध
क वे होत तहीं कारज न ही मान॥ मूल दोहा॥ निगोडे
नैन ए गहैं न वे न प्रचेत॥ हौं क सिवे रिस क्यों करौं
निरखे हैं सचेत॥ ४६१ नायका वचन सखी सों॥ सवैया
सही ये जग के उपहास न तो रही ये उर लोग न मानैगा
से॥ उर प्रानि उहै उपनै उर कै सम साव रहै॥ न ह नै क व है
प्रसरे व कमेरो क हो न कै तन हूँ मन हारे उरहै॥
टेक॥ नायका वैन ने जै सो निगोडे गोली
ति के रहे है॥ ए नि गोडे ने न रेसे देत है॥ उबदति
प्रचेत है चेत है सावधानी नहीं गहे है सबै को कहा क
रत ब्यहे॥ किं तस्व तहो गहे॥ न हो प्रचेत हो गहे॥ न हो॥
ऐक सिहो तिवे रिस के करति है॥ ए न सिखे जाको
लोक सिखा न ही लागे॥ सो न सिखे बोध न ही सीखे
रहत है॥ निरखे सिद्धति भी पाठ है॥ निरखे देखे
ते पार को रहादे तिन स्व प्रावत है॥ निगोडी बात
है॥ लाको अति करवे रिस करवे हसी को प्रतिब
धक है॥ तो भी हसी काज होत है॥ प्रतिबंधक वे ह
त ही काज दूर न माने॥ मूल॥ तो ही वेंदुर मान्यो
देखत ही व्रजराज॥ रहि घरी कलो मान सी मान करे
की लाज॥ ४६२॥ परमान मोवन सखी वे न सखी
सो॥ कवित्त॥ प्राज वे रस वकी प्रति मानक हाक

है पानकदोसधरै की।।२ प्रासिनकी तिन्तीहूं हुनै नवरी
रिसराधिकाने हियेकी।। छूटि गई हुनौ देखेंताही सुदृन
रताका[illegible] नाई मेरी।। मानहूही सौ उरमानिर ही उद
लाजाधरीक सौ मानकरे।। रसप्रकास।। समीये ननायक
सौं।। [illegible] तैक सौ कौ हृदयकौ मानछूटिगयो बूझ तरजबेद
मनहौ।।३ वरनौ लाजकी नौ नहोचटी एवं [illegible] मान [illegible] सी
[illegible] मनमैं जौ ४ कै जो मान [illegible] सी सोभावानकी सोर
है धरीक लौ मानकरि हो की लाजमान हीमन मेरही
नायकाकी प्रीत नायक सों।।२ प्रतिसौ दर्दी धुनि कृष्णकौ
रस्तन।। मानछूटिवेकौ कार्ज सो संगन हीमकौ।।वह
हो है छिमनावे तब मानछूटे।। चपलासु ति।।३ हे तेक सो
नहोत ही काज।। लक्षण हैं कहतिहै।।२ प्राप्त ही समरस।
लावै सयान।। ताहि मोहन मन जोरदै तो मनराखै मान।।
४६३ यह नायका प्रौढा सखी कहति है।। [illegible] छिकरि
नायका सखी सो कहति है।। सवैया।। मानकी येरमनी
जानसो वस प्रीतमहा त [illegible] नायह तेरौ।। है हरु ३ है २ प्र पने
सि[illegible] २ प्रानन जानि तहो करि ध्यान घ[illegible] नेरो।। तो कटोमा
नहीं मोहन को तहि जो [illegible] ही [illegible] हे मनन मेरौ।। रसिके
जिमे बिनारति हो ये कहा करे मोहन हा ता ररारौ।। रसप्रका
नायकावैन सखी सो।। रमी कहतहै।।२ प्रौरमी कहति है।।
है।।२ प्राप्तभी लावसयान समरत हो।। मोहनकौ देखिके जो
मनार हसावै तो मानकौ राखै।। मनको कार्ज मान
को है।। [illegible] है।।२ प्राप्त दोउ

वदहौ इस्टप्रबंध ॥ कोई कै सिखाए बिना आ मान करै है ॥ सयान
समझि कै अरु सखी कौ उपदेस कारन ताकै मान रहनौ तो
रजन तिहि भयो ॥ बिसेषोक्ति जहां कारन है कारज उपजै नाही ॥
जो होत दृढ संभावन ॥ मूल ॥ मोहि लजावति निलजा
हु लसि मिलि सब गात ॥ भानु उदै की अोस लौ मानु न
जान्यो जात ॥ ४२४ यह प्रौढा मानमोचन सखी वचन नाय
का सौ ॥ सवैया ॥ तू जो सिखावति मन मेरे रहनो सो मानि कै
रिझै रहूं हूं ये मो पै विचार ठहराति री ॥ निरखत कुंज गलिन पा
रकी छबि सी छबि भ्रापु ही तें हुलस मिलि लसत गात री
कहा कहौं निलजत मो ही कौ लजावति है जो देखि छ
हो सोवक रवि की अोस जात री ॥ भानु के उदै तें
ए अोस कन की सी आंति मान मन मेरे ते अोन जान न बिसा
तरी ॥ रसप्रकास ॥ यह नायका की उक्ति सखी सौ ॥ हे सखि मा
रे निलज गात अंग लजावति है नायक कौ देखि कै हुलसि
कै मिलत है ॥ भानु सूर्य के उदै तें मैं विषै अोस की तरह
मान जात न हीं जान्यो परै है ॥ जैसो उपमान मान उप
मेय लौ बाचिक जानौ धर्म ॥ उपमा अलंकार ॥ मूल ॥
सिहै मान अपराध ते चलि जे वढे अबैन ॥ उर तड्ढी ठ
ताजि रिसा खिसी रसे हू न वै नैन ॥ ४२५ यह मान मो
चन नायक का कैने तो मान ते खिवे ॥ नायक है नेत्र
अपराध सो खिवे है ॥ ये अबैन तें बिना रैस र होनतजा
तताये रिस अरु खिसी भाव तें नेह बढि के दोउन के ने
त्र है से समी सखी वेन ॥ सवैया ॥ मानु के भामिनि अबैन रहौ ग

तैत्तागकवहीनहीं करै ताकौं विसराई।।उतराई वही अर्थ
नायकु सौं अरु कूलहै सखी नायककौ चित है नहीं
वसावै।।दूतनसौं सनमंतनकै निजप्यारीनैसौं स
वके मनभावै।।वातनकै ह सबैमीठ हौ येकवदीअवरा
धहितावै।।धनि लजानत्रासकरै पति येद ऐचारव्ह
वीनवतावै।।दूतनैसाजा मकेवसाहोय।।विरोधाभास
माहैजहां विरोध सौ वैहै विरोधाभास।। मूल।।आप
ह्वैकौ मनतें रहै लागलसै रहैनीपीठ।।कैमसालरहरावरी
लालल्कावत डीठ।।४६८ यह नायकाप्रौढा उराहनौ
देति है।।नायकाकेवेननायकसौं।।सवैया।।नंदलला
मलौउरावहि हगदेखिवेकौतरसातहै।।अवतौरसवैयह जा
नीपरीउनलाजउतेतन आवति है।।तम मोहि दिपैअप
नौमनआपहिपरलौकौसिरनावतिहै।।अवतावलरै
उतैरईहरिकाहेकौडीठलकावत हौ।। हरुअकास।।नाव
काविउत्तिनायकसौं।।आपुनपमनरमेकौदिपैचो।।
हौयरुसउवैताकैगलाटवदलैपीठदीनीह्मारिओर
नहिंदेखतहो।।हेलालरहतनारीकौनवालहैतुरह
है।वृक्षकौंधलावति है।।विनमयालंकार।।जहांदेके
काहुलीजियेदारिवठि विनमयजान।।मूल।।मोहि
मेरैमटौरहतउजियमिलसाय।।सोपानवांधिनसौं
लिटेतिपसौंतिनकेसाप।।४६९ यह नायकाप्रौढा
उराहनौनायकसौं।।सवैया।।जोमनमैंमनभावैदिवे
नुमसौंजियकैमिलकैरहभीजे।।मेदरसैनसरेप

व दी८ पा गैह मति

१०७०
170

२

स्भाव मैं प्रेम प्रपंच सदा मिलि दिजै ॥ मे ऽ प्रयत्नो करि जान्यौ
वहि ऽ प्रब ऽ प्रं तर होत छिनौ छिन छिजै ॥ सो मन जो टव
रीकै हरि सो मन सों तिनके [illegible] करि बांधि न दीजै ॥
रसिकप्रकास ॥ नायका की उक्ति नायक सों ॥ मो हरि दियो
मेरो भयो हमारे जी वके साथ मिलि के रहति है ॥ ऽ वे सो
जो मन है ॥ ताको हे पीय बांधिवे सों तिनके हावन
हि हो तिरि टेवादिक है टे जोरावरी सों देत हो ॥ किंवा हे
तिय सो सपत यांति न [illegible] वे तियन को लगाई देत
को हावन ही सों दिटो ॥ ताको दृढ करि लेहु ॥ मो हरि दयो
मेरो भयो ॥ हमारे जीव के साथ रहत है ॥ वताने हो ॥
काव्यलिंग ॥ अर्थ । यासों मन हरि नयरी ऐसो
सरी मिठा [illegible] ॥ वाको ऽ प्रति ऽ प्रन बांधवो उस का हे
ट बिन नाहि ॥ ४१० पहे नायक धष्ट है ॥ नायक को वेन
ताकी सौंहे ॥ याते उनकयन मैं नीके संभवत है वा
को पायद हेत रोस की प्रतीत भई ॥ सवैया ॥ मारे तो फू
लन की छरि कासौं तउ मन हारि अनेक जतावै
गारि जो देय कहा कहि है टेम धराइ इ रोव सुधा करव
तावै ॥ वार तिहारे तिके सतरात है मोर हि टे ऽ प्रति मोर
वढावै ॥ सी लहरुआ उरुआ गिन को रस रहै रिस हो हरिसि
डी हरि सिर आवे ॥ रसप्रकास ॥ धष्ट नायक की नायका
की सखी सौ उक्ति ॥ या नायकाने लीलाकमल सौं
मारो है [illegible] तै ॥ सा तरा धिमानि है ॥ तासों हमारे मन
मैं हारि तरा जय ॥ किंवा हारि निमन ही भई ॥ किंवा उरसल

कहत सांवरे स्याम सों जो कवित्त में सरस साप॥ किंवा वाको
अनुरस रस के अनुभाव सों वाको रस भयो वाकी जो रि
स सों वाको रसीली रमन भयो॥ वाकी जो बीज सो वा
को रीस भई॥ एक दिन वामें किंवा परतीय विहार सुन
के एक बार हि जब के हमारे इहां कौन आए॥ वाते पी
छे सखी नायक सों पगुन में समुझत हे॥ फेर अनुर
स आनें नायका सों जो अपने रस ता सों नायका को
सोरस भयो न करस भयो॥ उर भयो अरु सो बोलति॥
हमारे इहां सो अति प्रीत मान कहू जाय पाते रिसरसी
रिस मैं रसो रिस को प्रभाव भई॥ रिस मिल अरु सो बो
लति है॥ किंवा॥ सौति के बार मे पर नारि विहार कि
यो॥ सखी नायका सों कहति है॥ यह रस की बात है॥
सो तो है अनुरस भयो॥ कह्यो तें अनुरस सों सौति करें
तेरे पास सो तो कबहीं जाय नहीं जो तेरी सौति रि
स मे रसी है ताकी जो बीज है ताको तें एक बार रीसें
वारे वास मने वा सनायका ने॥ अप्रे सो अप्रपंचिके
नी रस हावता ते न है लगायो॥ एक पद अनेक सें
लगे सो दीपक॥ अनुरस सो रहो सो इतता दिसो सोप
र लागत है॥ याते दीपक॥ इहां हेतु अलंकार॥ जहा
है अरु हात परनारि विहार हेतु है॥ रस अनुरस हेतु मान
हेतु अलंकार॥ हेतु अलंकृत होत है कारन कार्य सों
[illegible] सुघर सौं तिवस दीपक उनत उ नहिं निदु उनहु सास

लखीसखीतनडीठिकरिसगरबसलजसहुलास॥ ४७३
यहुनायकाउनगर्बिता॥ अपनेउनवेउमानते
सोंतिकेआगमकेंउननहीमानतप्रसन्नभई॥
सखीओरचितवतिहै॥ सखीसखीवेन॥ सवैया॥ रप
री॥ काहूकहीउघरावनकेतमसोंतिनेलीनोरि
राप बिहारी॥ योउनिकेआतहीहुलसीउनचाहरी
कीतरभावधिप्पारी॥ लाजउमानभरीउसकी
पवैरंचकडीठअलीतनडारी॥ रसिकप्रकास॥ सखी
सखीवेन॥ उघरवरसोंतिकेवसतिपकोउनतिके
उलहनकोंदुगनोहुलासआनंदसोंमेंरुपभीहै
चतुराईभीहै॥ यातेसखीकीतनओरडीठकरिदेखि॥
सगरबहमारेआगेवहकहाहै॥ सलजनईआईहै
यातेसहसमनकोमोदिसचितकियो३हवातिउनि
रुमवहतराजीभई॥ सोंतिकेवसकारनतातेहुला
समहैं॥ विभावनाकाहूकारनतेनवेकारजहोय
विरुद्ध॥ मूल॥ हरिछितनाकरिप्रीतमलियौकिहोउसों
तिसिंगार॥ अवतेकरिमोतिनउसोभवैहरसाहर
हार॥ ४७४ यहअन्यसंभोगदुखितापाकोहासनाय
कनेलेवेसोंतिकौपहिरायौसोनायकलखीहोय
है॥ सखीसखीसों॥ [illegible] सवैया॥ मोतिनलि
योहितवेहहिप्यारेनेहारउवारप्रमानसोपायौ॥

नै 172A

ताहि लै लाल की लाल गयौ करै सौति के धाम अबै
अनुराग्यौ॥ वाही बोरीस सिंगार की ओल बिकाने ही पै अ
नेक हार जाग्यौ॥ अपने हाथ बनाय गुहे लौं उर जाके हिये हर
हार सौ लाग्यौ॥ इति प्रकास॥ सखी सौं सखी वैन॥ इहि के
नायक रिवे प्रीतम मैं [illegible] नायका नै माल लीनी सौ सो
ति कौं पहराई॥ सौति कौ सिंगार जाकी माला दीनी॥
ताके अपने हाथ सौ पोति मकै गुहे जो हार सो
सौति कै [illegible] गरे मैं देखि के भयानक लागत है॥ हार जो म
हादेव तिनकौ हार सर्प ताहि तुल्य भयौ॥ यच्छ धै मैं नाय
क कौ हरि प्रसो भाति है सो ति कौ लै के दयौ॥ अवे स अप
नायका नै अपने घर मैं नायक कौ सिंगार कियो है॥ हा
र पहरायो तब नायक सौति के घर मैं गयौ॥ वाकौ हराय
हरै प्रीतम सो हठि करि कै ताकरि हार लियो वाकी सौति
नै॥ अपने सिंगार कियौ॥ जा नै पहले सिंगार करायो
ताकौ हार हार भै॥ ना विक धर्म लछ प्राउय मा अलंकार॥
सल· तिपुर सौ जा नायक सौति पग निर बसी गई गास॥
सल जहं सौ हि लखि लिपटौं धी हरसी उ हास॥ ४७९ यह
नायका अन्य संभोग दुःखिः ताहसी सखी वैन॥ सवै
वा लह ही कछू गास गहे लखि पै लौं महा वर सौति
के पायन॥ जानी तहै अपने जीय मै यह जानत ना
हि सिंगार के भावनि॥ एते मै आइ भरी अरु साकाति लजौ
हि [illegible] विलोकनि दे वीस भावनि॥ अधी हीय हां सी उ
सास भरी अकुलाति बरी बिसरी चित चावनि॥ इति प्रका

गौ

अप्रा

उ

सखी सखी वाक्य ॥ सौति के पास मै तिय सो बिबसौ ॥ ७४
सखि सखी जानक महावर ताको देखिकै गास भ्रम भ्रकावलै
के रसी पर पूछत है प्रेम जानक दिये है ॥ पहरांस ॥ नाना
यक को सलज प्रेम ह रजी सौ देखि लिये ॥ वि वानाय
का को सलज नायक सौ होइ दे खिलिये ॥ वि वा नायक
को सलज नायका के होत होइ बसि दोउ इ नायक नै दिसो
वि वानायक वा सप हो है ॥ साते प्राधी रसी मे ३ सा सनि
सौ पलिये ॥ विप्रसो नावक है ति रसी हनुमान ॥ १८
१ भ्रलंकार ॥ प्राधी र सी उ सान सारत भई ॥ पर सहोदरी
सो सहोदरी दुरस संग हे वर नेर सासर सपु ॥ ॥ स्त्रल वा
८ तातो ३२ ३२ जे मर मर तर नई विकास ॥ दोर सल सौतिन के
हीदै प्राव तरं धि उसास ॥ ७७६ पहन वै जो वनाम देखि ता है
पा को देखि के सौतिन को दुनहता है ॥ सो सखी नायक हो
कहति है ॥ सवैया ॥ तोहीहती रमनी रमनी वमयो प्रति
तो वस प्यारे विहारी ॥ वैस विलास हजा जे जव तो तव
तो रस प्रे [illegible] तान निहारी ॥ वो ७ जहे नवनागर हो उर
मे उर जातन के भर भारी ॥ ता भर है तो ति निसास उसाह
ति पीर हीय सेव भ्रता है गडु जारी ॥ इ इ प्रकार स नायका सो
सखी वाक्य ॥ तो उरव कुच प्रसप मे उरजा कुच ताके भर
करि के भार हो नाउ जा है नई जवानी भर ताको भ्राधि
क्य प्रीति सा सप्रकास ॥ कि कातर नाईके को विकास ॥
भर भारी व डे व डे जा है ॥ तारन सो सौति के हौदय पै
को दुव ताके भार है सौतिन हैप पहै ॥ हंदि उसास

रकौ सोद ची सौ निह्यास आव जिहै ॥ जाकौ भार परे ताकौ
रकौ उसास आवे ॥ ३ ॥ जाकौ भार आवै अवेस रकौ उसा
स काहे जग आवै है ॥ ॥ आदि अंगनि ॥ तीन आसंग ता कहु न पर
कारन सारै हैं ॥ अथ लल पर सत निवर्नन ॥ दोहा ॥ डीठ
परोसिन ईठ है [illegible] उसाये सखान ॥ सो वे सदेस कहि के लो
उसास कारक मे मान ॥ ४ ॥ यह परकी पाई ॥ सखी सखी वेन
सवैया ॥ नाहीं परोसिन के [illegible] कीसललना रसजि
मै हि ठई ॥ सोई परोसिन डीठ ईठ है ताहि मना वन आ
ई ॥ प्रीतम के उसाद सह तेवके हसन ही कहि के वठ राई ॥
एते मे नायक हो उसकाय रहे कहि प्यारी वरी कै रसाई ॥ दर
प्रकास ॥ सखी सखी वेन ॥ नायक को सुनावे है ॥ परोसिन
सो कहत है ॥ डीठ परोसिन ईठ है नायक को डीठ कहीये दहि
के परोसिन को ईठ कहीये [illegible] नायक परोसिन सो कहत
है ॥ जो है सखान सखान जो है नायक सो मिलावत को गहै गहन
करै नायक आदर सो कहत है ॥ परोसिन के छल कहि सवे स
देसो कहत है ॥ कहो उसाकारक मे मान ॥ प्रसमै की उस
कारक तामे मान कसोज साये ॥ जो है छल सदेस तो कहत
है ॥ सो वे उसासदेसो कहवे नायक सो कहते वह नायक मासो
आसक्त भयो सो तुम्हारी सावेउ है वचक है ये उमर सो तुम्हारी
वा की एक घरी मे रहवउनो है नहीं रस मे परेदिन को तुम्हारे
छल नहीं जानत है ॥ यह संदेसो नायक नजीक रहने है ॥
कि वा कवह नायक पा परोसिन सो [illegible] कै पै ॥ सो
देखि नायक ने मान की पै तब नायक ने वही परोसिन

जैहै

२७४
१७४

सैं। रसिकायो छै। तब नायक ने वह रे पैरी सिन [illegible] कौ सन नायवे कै
भेजी।। नायका कौ कौ मान लियो डीठ्द छिवे।। ई ठ होव कैं सयान
चतुराई गहे कहे है।। नायक कौ सब से दसौ कहि वे कहो।। रस
का हृदय मैं मान।। नायक रसकायौ घो तामै हे मान कीयो।।
रसका हृदय सो मान ग्रेसें वादीग।। तस ग्रे सी भी वो सिन है।।
ख्यालसैं राजी भयौ परकर कहे डीठ पैरी सिन तह भीपाठ है।।
नायका वैन कहती सो।। ढीठ जो है नायक सो पैरी सिन कौ ई
ठ होव कै पैरी हिन सो ग्रास करहोव कै।। जो सद देहो सब
न गहै।। चतुराई लीये कहो है।। सो तद देहो सब तरह कहो।। ताव
हे तीक कहत है।। रस का हृदय मैं मान भये तो पैरी हिन सो रसिका
यो तामैं इन मान कीयो।। किंवा।। नायक ने पैरी हिन सो मै
डीधांधि पैरी सिन सो कहे है।। नायका कौ रसनायौ।। सो रहकी
कते नायका सखी सो कहति है।। ढीठ जो है नायक सो पैरी सि
न कै ईठ होव कै त पैरी सिन रमारेव सस देहे तह नायका सो
कहे।। टारक हो सद देहो का ठ नो पाग्र द्धि मैं संदेस तेर मैं स
यान गहे।। पावे ग्रपी तेह मै काहू पास होव त नाये जो मान
करै है।। फेर कहो रसका हृदय मैं हो ही मै तमान कीयो।। प
रै हिन सो कहति है।। रसिकान चे वासो नायक सो मा
न जतावे है।। सरकार लंकार।। सवम जे प्रासे लखै तो
सो सैन नवाह।। मूल: वल तदेत ग्रामारस नि व ही प[illegible] रो
सिह नाह।। लसीत मासे कीहृ गन हाहीं ग्रंसन सोहे।। ४८
टह नायका परकीया मध्दि जा है।। चित चाहे बात जानिय
भई प्रसन्नता।। कीहू ही भई सखी कौ वैन सही है।। [illegible]

सवैया॥ देखि परोसन की चीकनी चादरि प्यारी हिये परी प्रेम की
फांसी॥ त्यों पिय जात विदेस लस्यो बिलखी बिरहा उरसास
उसासी॥ नाही परोसी सों बोलि कह्यो पति है इत तो सोरसा
री निसासी॥ त्यों लखी अंबुज नैनी के नैनन आप्रासिन तीख
तमासे की हांसी॥ इसप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ नायक परदे
स जाति है॥ वलात बैन्याइ नायक तहां जो परोसी है जासों
नायका की प्रीति पै जांके स्वामी घर को अवतपार स
निकै॥ तमासे के जे इंगदरसानी व जे इंग है तहां आप्रास मैं तो
सी ससी सो भी परोसी के घर सो पठावे राजी भई॥ तमा
सो की अप्रैसो भी पाठ है॥ तहां तमासे की हांसी अप्रासुन माहि
लसी॥ किं वा इंगन मैं जो है अप्रास तामें हांसी तमासे से
करि कै लसी॥ सो भी वहै परोसिन माहि वे सो भी पाठ है
जो परोसिन अभिसार करावे पी अप्रैसे जानीए॥ परो
सिन को जो नाह है अप्रै सो भी लगाई है॥ गद्य त्ति पत्तिका
है॥ अथ अरिता जानी वे॥ वातसुन तासन यांगती
जात न होत उहासा॥ उदित हि है सो नायका चाह तवि
टो बिलास॥ परपति सो मिलबो इछता सिद्ध विनज
तन प्रइ रवन अलंकार॥ अह ल छला परोसिन हाप
ते छल करि लपानि ध्यान॥ विप इ दिखावो लखि बिल
खि रिसा सिव कुसिकानि॥ ४७४ पर नायका अन्य
से सो उ कुर्ष्टि ता॥ सखी सखी वैन॥ सवैया॥ देखि परोसि
न के कर प्यारी करी चतुराई की चाह कला है॥ सो मिलि
यो कहूं उठिम सो वहू के मनहारि है लाहु भलाहे॥ प्री
तम सों अनका पकहि कवि वृझ्मक है रवरोसर सोहै॥

नैक उहैलखिवेमनमें॥ इन आउ हमें इहपावें छला
है॥ इहप्रकास॥ साखी सो सखी॥ नायक कहा यकी
अंगुठी परोसिन वह रै पी परोसिन के हाथ देन
पकाने छला दिखाय के इ मारे नायक को है
छला छल करि कै लियो आप लखि के देखि कै ति
नकौ विलसाय कै दिखायो॥ रिसकी सव विजाता
मनहारा॥ ऐसी अलकान सों॥ ता सखी अपस को
जाने ऐसो नायक कौ दिखाय वेखा करि तहै॥ सं
तम अलंकार॥ मूल॥ विदेस गमन वर्नन॥ रहि है वं
चल प्रान ता कहि कै नक अग्रे गो है॥ ललन चलन
की चित धरी कलन रलन की ओट॥ ४०० यह नाय
का प्रोषित पतिका नायका कै वैनस खी सौ
कवित्त॥ सेन सुखसेज गन मैं नैहकी तरंगन मैं अंग अं
ग पाभिरहेरंग मैंउमहि कै॥ कहा प्रान प्यारे तेनछि
नौ मरि न्यारे भए और जे अबसमए ऐसी भांति गइ
कै॥ पललन की ओट भा। कलन की रति को है जैसी
गति होति सो तो अब किन कहि है॥ ललन विचारी
चित चलन की बात अब कौन की आगे नाचपल
प्रान रहहै॥ इह प्रकास॥ सखी सों नायका वैन॥ ए सखी
चंचल प्रान कौन के आगे टरो सो रहेंगे॥ टरकहू
लालन ने चलन की कान चित मे धरी॥ पलक की
ओट विवधान होति है॥ नायक सों देखति कै॥ तव कल
नहीं परति है॥ अवकौ करिक लपरि है॥ कौन के आगे
टरहि है॥ नहीं रहहै का कुकरि कै॥ वक्रोक्ति अलंकार

हल॥ दू समासरु नसखिन सों साईं चलत सवार॥ गहि
करि लीन प्रवीन तिय राग्यो राग मलार॥ ४८१ ॥ अरु त्रि यानि
दगधा नायका अरु खंतीय रखीया को भेद है॥ रुकी याहू होय
सवैया॥ सीत समै परदेस को पीकोपयान सुन्यौ बहराव
न लागी॥ या रितु मैं हरि के उर सूरहै घरदेन माधू समनावन ला
गी॥ औरउपाव ता कैयो न कछू तब साजि के बीन बजावन ला
गी॥ री प्रवीन महें सुरमै धुमलार अलाप कै गावन लागी
हरिप्रकास॥ सखी सखी सों॥ सीतकाल मैं नायक कों विछे
रु प्रतदु बदाय कहै॥ दू समदी ना सखी नसों सुन्यो॥ स्वा
मी सवार आतव लत है॥ प्रवीन जो नायका सो वीना गहि क
रि मैं मलार राग गराय्यो॥ अब काल वृक्ष जा ना के निषि घ है
र सके मेह मैं जानो तो वन ही सके॥ किंवा॥ म्यरुद्राएक अ
रु दतन मै भयो है ताकौ सिव अवतार लैके मार्‌यो॥ मल्ला
रि सिव को नाम है आवा मैं मल्लरि कहत॥ राग मै मल्लारि
जो है सिव॥ ताकौ गायो॥ देसिन का मसो तमर ताकरौ
गायवे को छलिकरि नायक कौ गमन निबेध्यो॥ परवाये
ति॥ छलकरि कारज॥ प्रवसत पतिका ज्ञीया विदग्धा मौहै
रल लल न चलन सुन चुपरही बाली आपन ईस॥ रा
ख्यौ गहि गाढ़ै गरै मनो गललगली डीठ॥ ४८२ मध्या प्रवस
पतिका सखी सखी वेन॥ सवैया॥ प्यारी कै मवन अप्रतिहित
करि प्राणपति आयो विदा सों तपरदेस को उमहि है॥ लाल
न बलान सु निरही अन बोली तिय आली हू नवचन सु
नायो कछु कहि वै॥ चकत सी रही वक के वोस ट सों छयो वि

~~१७७~~
१७८
176

त

आवत्ति सलसिदोउ नैमनन्तेव दिवै॥ गलगली ईठकरि
हहिहरि सनमबमेरे जानराख्योवैई गाढेगेरे गाढ़िवै॥ रस्प्र
कास॥ सखी सखीसैं॥ आयनोउ छ नहीं वोली॥ गलगली
आंसूमरी जोहै दृष्टगनैवावे गरेके गाढौ करि गाढ़ि राख्यो
है॥ मनो यात्तै नहीं बोली॥ किंनाचुवरही अवेतरही॥ आन
वाको जात्तो सोदृष्टनै प्रनैके गाढै गरौ गहि वे राख्यो मनो
मनोउत्प्रेक्षा किंजाना ताके अन्यवराख्यो यह त्ती यसोहै॥
अन्जन्ना स्पदा वस्तुत्प्रेक्षा॥ मूल· बिलखि... पकौ है चब
न बिवलखि...गन वस्ताई॥ पियगहि वरआवे गरे राखी
हिये लगाई॥ ४८३ यह नायकामध्या प्रवस्तित्तिका याकी
यहदसा देखि नायकहुने गवनवरराये वे॥ हिंपसो लगाय
राखी सखी सखीवैन॥ सवैया॥ पत्ति आपा पीवा विदुरेनकहि
रुबसौर हैङ्के मपदूबधिये॥ हि उमान विदेसकोहौन विदाह हि
आवे वयान कै साजकि यै॥ निरखी उनकोहै हसेने न किये
बिलखी मग लोच निसास लिये॥ नवहीं च लवकी क
छूवत्तिपाहुत्तीवामरिली नील गाई हिये॥ रसप्रकास,
सखी सखीवैन॥ बिलखी उमेवारे है चबन॥ आंख्य
वेजाद जहै॥ हवे है बबन हुहै॥ तियनो नायकके गवन
दखिवरायो दाहौ आंसू मरि वन दीदीने॥ पियके गहवरम
रजद गलगहौ॥ गरे आयो तवनायकाके गलेसौं ल
गायराखी॥ गरे गरे शब्द प्रर्पिट उकै आवृत्ता॥ आवृत्त
दीपक॥ पदअपर पर्पदुरहनकौ आवृत्ति तीजी नाम॥ आ
वोग हवरि गरे पियगरे लगायो वाम॥ मूल· चलतचलत

लैलै चलै सवन ब संग लगाय॥ प्रीतम ना सरसि सुर निस
दीय सोवा सब साय॥ ३८४ प्रवसी नायका की नायवै कै॥
सवैया॥ रैन दिना रहते ई मिले रस रंग उमंग न मैं मन ढारे
ऐसो सनेह बढ़ाय वे कै दैव री वैसी करी उनका हू विचारे॥ लैग
टौहं संग लगाय सवै वदै गये सो च टरै न दै मारे॥ पूसकी
माभि नि जठ के ह्यो सुविसाय गये अब वास है मारे॥ स्पका
नायका कौ ३ द्वि समीसौ॥ चलत चालत सवाल ब दस्वन
बसन पहिरवौ सुगंधि लगायवौ सबसौ सायवौ इत्यादि ताकै
अवनै संग लगायले चले॥ लोकै अर्थ मानौ चलत सन
लनसौ लोकै अन्य वन है॥ नायक आगे कै रस ब प्रीतैमे
श्री
वमके वासर जेठ अषाढ के दिन सिसर माघ फाल्गुनकी
राति पियमेरे पास निकटै न सावकै राखिकै॥ अर्थ किनाय
क हिना दिन वडै होत राचि वडी होति॥ किंवा सिसर की नि
सा विबे ग्रीष मके दिना राखिके च ले॥ रांजरा जमै ताप
मै सिसर की निसा
होत है॥ किंवा ग्रीष मके दिन औरा खिकै चले॥ का मसो
धू जात है॥ तावक पाका मको व रनत है॥ माघ प्रवन॥
सापकरत है उरक हा ना सबी मद न संताप॥ किंवा दिन
मै ताते है रा उमै धु जात है॥ सवल ब संग चलावके लैलै
लोकै अर्थ मानौ॥ अन्न जल स्वाद व सुत्रे दा॥ सूल अ
मौन आगे साह जरंग विरह दूवरे गात॥ अब हिक हा चला
पत लाल न चलन की बात॥ ४८५ प्रवसनायक प्रवसति
पतिका सखी बैन नायक सो॥ नायका हू कै बैन नायक
सो हो य॥ सवैया॥ बेलत मैं कहूं काहू क लो मकाहू सू जै हैं चरा

177

सोस निके वर दीरघ स्वास भरे अब अंग पसीजी पराई ॥ ता
दिन ते वा महेली के अगन आजु हू सों ... मिटी दुबराई ॥
लाल रहे अनबोले कहा अब ही बस्वा चलावे की चलाई ॥
इहि प्रकार सखा केवे नायक परदेस हूँ सैं आयो है ॥ फिर बिदेस
को जानवा रहत हे तहां गमन प्रापतिका को वचन नायका सो
अरु जो अब तांई भी सहज अंगराग मैं अभाव ... और अंगराग
पै सो नहीं आवै को विरह सो दूबरे गात है ॥ हे लालन अ
ब ही फिर ते चलन की बात कहा क्यो चलाइ यत है ॥ किंवा
उत्कंठिता नायका के वैन ॥ सहज अंग जो नायका के लगना
दि विमल भावही सो है रूप ॥ जाके सो अब ही नहिं आए ॥
पलक घरी बरस के भी विरह मानै है ॥ किंवा परकीया ना
यका बहुत दिन मैं संकेत मैं आई है ॥ याते मेरे विरह सो
दूबरे गात है ॥ सखी ने जानी अब ईह जावगी सखी वैन
अब ही कहा चलावत है चलन की बात ॥ या मैं लालन
लाल कहि सार स्यम गा सो नहीं ॥ किंवा माया नायका सो
कहती है ॥ हमारे सहज के रंग में ही आते विरह सो दूब
रे गात है ॥ नहीं चलावे को समर्थ करे है या ते कों व्यालि
गा ॥ सल लालन चलन के प्रसंग मैं अब ... के प्राय
भई लगावन सबै नहीं रूठेहि जहूह उ ॥ ७०६ दाहू नायका प
ध्या पवसात पतिका सखी सखी वैन ॥ त्रि या विर्यधी परकीया
हू हेय ॥ सवैया ॥ सै वा हे सजनी गन मै बृषभान कुमा
री सरसहैं सानी ॥ का रूरका दुकरै गै ववान सुनी इसका
र हेर प्रान न मवनी ॥ आंगन मैं अस ... के यहमेंद्र की बात

177A

वीज्ञस्मोरि जन्मावबेबैोकरिउठमदोहिं तिनैनसिवानी॥
इस्प्रकास॥सखीसोसखी॥ललनकौचलनसुनिकै
पललनमेंप्रासू रलाकदिवाईदीनी॥ प्रायकेसछिन
सोलखिनहीमई॥सूठेहीजउहायकेजन्मावबे
उवासीमायकै॥मईनलहि तसखिनाहूप्रेसोपाठचा
हीवोजन्माईप्रासेहवावउक्तिस्वलंकारा॥वरेजु
नेकीनेत्रीवामर्मे हिवाबेजाव॥वीवाचलतयो
सचलतवोध्हतनेनजल्लाया॥मूलःवामाभामाका
मनीकर बोलेप्रानेस॥प्यारीकहतविसात्तौ
पावसचलतविदेस॥४९॥यहनावकाप्रोढप्रवत्स
तिपतिकाकोवेनकायकसैं॥सवैया॥प्रातहीमाग
नमेतेविदाइतपावसकेउमडेघनकारे॥कामिनी
भामिनीवामकेबोलहप्यारीकहेजिनैंदउलारे॥
ऐचक्रहूनबजातहीयैहीतवैप्रवतान्दुसदोज्ञतभारे
प्रेसमैद्वउविदेसचलेकहाप्रीवकहूगतिप्रानवि
पारे॥इस्प्रकास॥गद्यहःतपतिकाकिउक्तिनावकसो॥
हेप्रानेसकांत॥इसमैवामाभामाकामनीवकवैबोलो
वामाकोअर्थईस्॥भामाकोअर्थक्रोधीकामनीको
अर्थकानिव॥प्यारीकहतमेलजातनहीहै॥पाव
सवर्सारितमे विदेसचलतमैवामाभामाप्यारीविसे
सनजायकीविहोस॥प्रलंकारपरिकरि॥हेपरिकरियो
सेलीयेजहांविसेसनहोय॥वामाभामातिसेसहलीजि
यैतौपरिकरिअंकुर॥सामिप्रायविसेसजहपरिकरि
अंकुरनाम॥मूलःचाहमसीप्रतिरसमरीविरहसरीसववास

नहि

१८८
१२८
178

कोरससदेसेदुहूनके चलेयोरि सौजात॥ ४८८ परस्परदे
सगामन दुहूनके मनाहीत की अधिकाई सखीसोक
हतहे॥ प्रवसत्तपतिका॥ सवैया॥ कौनहू काजतेकौ दू
रकौ नौ पिवान महूरत सजमलेई॥ आतुरहातदुहूने
के ज्यो अकुलात वियोग वसून्य सालेई॥ चौरसरी
अरस प्रीतम सौर सरीतम रीवति पानि रहेई॥ वेरिलै
जातदुहूनके औरतें आलीटीको हि सरस चलेई॥
रसप्रकास॥ सखीसखीवेन॥ चाहउत्पाति मरीवात है॥
जामें अर्से सदसे कोटि नदुहूनके देपतके जातहै
पोरि दसली जाताई चले है॥ मरी सदकी आवृतिसें
आवृतदीपक॥ मूल॥ मिल [illegible] चलिं मिलि हिल
चलत अगनाअ पे भान॥ भयो महूरत यों पौ
रीप्रथम मिलान॥ ४०८ परस्परदसपयानके समय
सखीसखीवेन॥ प्रवसत्पतिका॥ सवैया॥ रमन
गमन परदेसको विचार चितसाधि हरअलबलिगने
सको मनायो है॥ साहहावे उरआनप्यारी हूकधूनकसे
मेंजलभरे ईगदबरगरे आयो है॥ मिलत चलत मिलि
चलातचलति मिलमिलत चलातयों ही वासर वितायौ
है॥ भोरको महूरत भवन तें भै सारभई पौरी में प्रि
यतम को मूहूरत सायो है॥ रसप्रकास॥ सखी सखीसो
मिलके चलत है फिरि मिलके फिरमिले है आंगनहीमें भा
कसरजअथपयो॥ प्रसाद पे वमोरप्रातको
महूरत दोपघरीको महूरत सुदिन भयो॥ पोरिमें दह
ली जामें प्रथम मिलान प्रथम प्रस्थान दहलोडेरा वह

तैकमिलिखलिकै॥ ग्रथंवांद जोरिकेखलतहै॥ आनृतदीवक॥
रूतविरहवर्नन॥ दुसह बिरह दारन दसा रहोन आन उ
पाय॥ जात जात जिय राखिये पिय की बात सुनाय॥ ४५०॥ प्रौ
छित पतिका सखी सखी वैन॥ सवैया॥ आनपी पावरदेस गये
तियअंग अनंगतरंगन ताये॥ सीरी है जात जरे कहहू उप
चार विचार जिते सब छाए॥ ईठ नचाइब वासिर हू रस
परदैन भये मन भाए॥ ऐसें कहें तो बचें तो बचे कह गाउ ते
मोहन आंउ ते आए॥ ४८ प्रकास सखी सखी॥ दुसह बिरह दे दा
रुन भयानक दसा है॥ और उपाय नही है सो॥ जात जा
तहै ज्यो प्राण के राखिये॥ पिय की बात सुनाय पीय के आगमन
की बात सुनायवे॥ बिना छिद्र वार जानायक की तरह के
लिये बाति सुनायवे॥ सुनाये॥ छल कर कर नसधे
पातेव रिवा पाति प्रसंकार॥ छल कर कार जसाधिये
जो कछू चित रस सात॥ ४९॥ चलन प्रगट बरनी न बहै
नरक तालठहराव॥ प्रसंग पंपरिघत्ति पाधि नकछिन
छिन नाय छिवजाय॥ ४५१॥ मध्यप्रौढ़ा छितपतिका सखी स
खी वैन नायक है सो संभवे॥ कवित्त॥ लालनदसा लखे
विरहमे विकल पाते जात पल पल के सेवा सर बितात है॥
विरह ततताई की बढ़न बरनी न जाति पातमान तचे वीच
वारे कुसमसेगात है॥ चलन ते प्रगट बढ़ तव वरनीन
है तेव रत कवाल येरत जाति है॥ सलिल की बूंद ता
तीछि तवेप रत प्रसैछ तीव प्रउवा छिनै बैछिजा
त है॥ ह प्रकास॥ पलक मे प्रगट सापवे बरनी नये

३२९
179

बढिकै व पोलवे नहीं ठहरात है॥ अरु छाती पर परिकै
बिरह हें। तपी है तो सो छिन छिन नाव वे छिपि जाति है॥ सखी
स्वास बी कहति है॥ किंवा सखी नायक सो विरह निवेदन
करत है॥ छाती पै छिन छिन नाव॥ छिपे है में जात है॥
अप्रतिउ विरह लेकर॥ अप्रस्तुत्त॥ अप्रस्तुत २० के बरनै
त होय प्रस्तुत जानि॥ लक्षण॥ पजस्यो प्राप्ति वियोग की बहतो वि
लोचन नीर॥ आठो जाम तिहै रहै उसोउ सास समीर॥
४५२ यह नायका त पा नायक अप्रस्तुत अवस्था सखी
होय कहति है॥ कवित्त॥ जबतें तेकछु लसनेह की लगन
परे कहि हरष पायो मन प्रेम पद छरिवे॥ जावत न लाग
त है जो नतहै मेरउ है वेद न विषम कैनसव तसो मर
वै॥ कहै कवि कृष्ण पाव अरु अप्रस्तुत गति पजस्यो वियोग
प्राप्ति वालोयो ह गवार वै॥ तऊ दवे आठो जाम उठाई रहत है पी
रे पुर उसासन की प्रबल विचार है॥ इति अप्रस्तुत॥ सखी की
उक्ति सखी सो॥ विरह में सखी की उक्ति नायक के नायका
होय तो विरह निवेदन॥ अरु सखी की उक्ति नायका
नायक सो होय तो विरह निवेदन होय॥ ताते दसा
कथन॥ हियो के सों है वियोग की प्राप्ति सो पजस्यो है
प्रज्वलत है॥ जाते विलोचन के नीर अश्रु बहतो है॥
अरु तैसे ही ताम आठो पहर निस्वास के समीर पवन
हसीर उठि जात है॥ वियोग की प्राप्ति सो बहतो॥ अप्रस्तु
त अप्रस्तुत विवा है होय जहा॥ लक्षण॥ मे सखि नारी
ग्यान कर राख्यो ... उहै ही रोग निदान ...

सैव्य ॥ ...

लगनिसखीकेवैनसखीसोहोयविंवानायकतथा
नायककोप्रतिरंगसखीकेवैनसोभवे॥सवैया॥कोहे
केधारिघनोघनसारवृषाउपचारनवेघनवारो॥
मैलखिनारीकसोनिरधारलहैउरस्वेदुनवेदुविचारो
जाकोहस्तपकुसोउरमेकिनजावहिवायविपाना-
ठाहै॥औषधिवेदवहैउपसीरउहै [illegible] निरोगनि
दाननिहारो॥ स्त्रियककसा॥विरहव्याकुलनायककोदे
खिसखीसोसखीवेन॥नारीउखिताकोमैज्ञानसो
लखिकेदेखिकेंहरनिरधारनिश्चयकरेसोवहीनाय
कसोरोगकोनिदानआदिकारनहै॥याहीवविरह
हीरोगउपज्यौहै॥वानायकमिलेतोरोगदुरहै॥
याहेवहीवैद्यहै॥वहीनायकऔषधहे॥दोहा॥
सहैसोरनलहेतरसतवैद्यप्रवीन॥नायकरोगको
निदानआदिकारनताकोएककतावविखा॥उदी
यहेतप्रवलंकार॥कारनकारजएकजवेलहेएक
तनप्रसंग॥ मरलमारिवेकोसाहसककेवढीविरहकीपीर॥
दौरितहैसरुहैसखीसरितसिजरहैरमिलसमीर॥४८४
प्रोषितपतिकासखीवैनसखीसों॥सवैया॥श्रीमन
मोहनसोजनतेविछुरेतवतेतनपातलोनत्तपावतत
नीरविनासफरीज्योंपरीतावरीतलपैरसमईदुवरी
भवि॥साहसकेमरिवेकोसखीसउघारिकेप्रान
नज्योंतनमेंआवति॥दौरतिसाऊहेसीरसमीरसरोज

८०

180

हरिप्रकास॥ सखी सखीसों॥ बढै विरह कौ पीर॥ विरह की
पीर बढै यह प्रेम कौ जोरावरी कौ राखि करि सखिन सों भनें है
जाहिरै देखु बेहालति है॥ जाके सामने हरखहरखत हावजे
सरकिज नकमल ताकी जोतिरविसे गंधसमीर दोन
ताके सामने दोरति है॥ उद्दीपन विभाव है॥ ससी कौं स
मीरहूसों उकसउतजत है॥ तासों अनुभाव होतु है॥ विज्ञो
गप्रलंकार है॥ इहां पललिख परीत जनहू कौं जै जतन हिहि
त॥ मूल॥ ध्यान गप्रान छिन ग प्रान पति उदित रहति दिन
राति॥ पलकि कंपति पलकु न पलकि पलक पसीजत गा
त॥ ४८ यह नायका तिरहूनी ध्यान करि मिलति प्यार
हौ तब हौ सात्त्विक भाव उपजत॥ सखी सखी वेन॥ ना
यक सौंहू संभवै॥ सवैया॥ वाहू रीके विछुरे गति ऐसी
भई रूच बानिक हाल गिजै॥ ध्यान हि ध्यान मैं च
मकी मिल प्रानपियार सयम में भीजे॥ नदिन रहै
जो दुमराव हूकौ है विलोगनि कै तन छीजे॥ कंपति
है कबहू ललवै कबहू पुलवै कपहूं कपसी जे॥
हरिप्रकास॥ सखी सखी वैन॥ ध्यान में प्रान पति
पक ताको प्रलनै छिगमन जीकर प्रानि के हिय तिरा
जीरहति है॥ एक पलक तौ कंपति है॥ कंपा सात्विक है॥ ए
क पलक पसीजै पलक स्वेद सी सात्विक है॥ ध्यान में मि
लन होहू न है॥ नायक कौ स्मरन करति है॥ याते स्मृति
गप्रलंकार॥ मूल॥ सबै सताय न विरह जाम निस दिन सरस

रहैन है लागी हुगन दी वसिबासी दे हा॥ ३६ ॥ वह नाथ
कनाथ का को ध्यान करति है॥ ताउ विरह घट तहींसो ना
नाथ सबी लोक रहत है॥ सो वेला बाम गेला त नीके
विछुरै जो भई गति सो न दी जात आरी॥ ऊधी रहा दे
परहर नके हनना तप ली अरु व्रत धारी॥ जद्य पैन
सि बास मनोन न लागी रहै तन की उति धारी॥ जद्यवस
रै कछु न हि है भरिहरि सो विरह तमभारी देर प्रका
नाथ के मानस विचार॥ किं वा सबी लोक रहति है
हमै विरह जो है तम अंधकार॥ सो सत्ताव इ खंदन हीम
वेरा तिरि न सर है॥ अधिक है॥ नेह प्रीत ते लगी ह्हो
ब है॥ वह जो दी वसि बासी नाथ का की देह ह्वग सो ल
गी रहै॥ जो भी विरह हो इ सी है तो भी साह सक रि कर हि है
रहो ध्रत संबारी॥ ज्ञानी॥ किं वा दी वसि बासी दरहुग
न तो लागी रहत है॥ सदा नाही के देखत हो तो भी
विरह रूप जो तम है॥ ताको सत्ताव नही सके॥ दूर
नही कर सके॥ प्रेरवदी अर्थ॥ विरह सो तम जहां
दीपर है तहां तम नहीं रहै॥ तम नेह मे श्लेष॥ किं वा सबी
वे न नाथ कहो॥ विरह रूप तम तमे न नहीं सत्ताव सकै
है ३६ ॥ अर्थ॥ जो वी दीत सिबासी देह हुग न लागी रह
त है॥ देह उव मेव दी वसि बउ वमान सर सनेह ध
मे सीवा चिकु॥ दरौ तमा॥ दूसरे अर्थ मे दीवसिबा
तम नाथ के कारन है॥ तम नासक रजनी ते हो तहै॥
विसेबा ति जहर तसो कारज उवजे नाह॥ ला विरह

ऐसें सखि जीगन नैं कहै सुवह कै ता। अरी अंखे उभौ
भीतरी वरसत आज अंगार॥ ४५७३ ॥ दोहा प्रवस्या स
खी सखी वैन॥ सवैया॥ विरह विकल सम गलाखनी
विवस भई हरविन तन मन प्रानत रसत है॥ पलप
लपयतिन धारत न तीक धीर अधवरपुने गडुबद
दरसत है॥ जीगन निहार वारवार दोत का रिक
है। आली एअने। बजत पातररसत है। अबहे सजि आ
उवे मिमित रमवन दहि रवन रहे आजु तो अंगार वरस
त है॥ हरि आकास॥ सखी तिरहनी सौ॥ ससकृत मैना
म खद्योत॥ भाषा मै जीगन उगन पटवीजना॥ आ
गि आचार नाम है। उद्दीपन तिभाव है॥ जीगननके
र हित विरह सौ जरी है॥ मैं तौ उहि वे का रिकै कहि वे
ई वार कहौ॥ काकु करि कहो॥ अरी सखी हु आ जिके
भीतर घर कै आव ए जीगन न ही है॥ मेरु मानो
आज अंगार वरसत है॥ जो हिं देखत जरै सो ज्यौं अ
रपरै तौ कहा गति होय॥ कि वा ह सखी तु जीगन य
द्योतन लखि मति जानो कै ई जीव की उष्ठि है सो वि
रह सौ जरी है। अंगार होय रही है॥ मोवइ वार तौ सौक
हौ॥ नउ हि पावै। अर्थ॥ हमति करै अरी सखी तु
मति गाजि कै भीतर घर मे आव॥ तव कौ धव कहिक
हैत है॥ न आवै तौ वरि वरौ॥ मति कहि दे अलि अ
आ जअंगार हैं। अगेक हैं गोति रनमिरै भिलि
है॥ अ-री ए निर धस अंगार॥ कि बजरी दोप तरह की

मानकै मनहै हमारै मानमास्यो अनादरकीयो तासोंहमा
रीहतिविगारनहीभयो॥ किं वा वा नायकाने आपनो मा
नमाख्यो है। हमसों मन नहीं चिवैठी है॥ तातें हमारी हरि
विगारनहीभयो॥ किं वा वा नायकाने आपनो मन माखो
है। हमसों मन नहिं चिवैठी है॥ काकु करिवहू तविगारभयो
कोजाकीगारीभीतरीप्रतिभिठासहै॥ वाको अनलाह
र अनलायवो सततहारि स्यारी तोलनिसों अनका
नेविनानहीरिसाती तोभीसकायवे माखो मनहारि
नयी अैसीभीकारउपठते है॥ मनहारके अपै अैसे
जानिये आदर॥ गारीसों मन निबे हारनभई गारीह
नकेकारनहै॥ तासों हानि नहीं भई॥ विसेषावि॥ विसे
षावि जहहेतहोकारज उपजैनाहि॥ उदा॰ वि[illegible]सोति १
नदेषतर्दै अपनेहीनै सा से॥ किरत उहउ ती सावनमै
उही सरगजी मासा॥ ४७१ यह मालानायककी पाय
प्रतिप्रसन्नभईसो सषी नायकसौं कहती है॥ प्रेमग
र्वितहाया॥ कवित॥ सौतिकै लषतमनमोहनमयावेदी
नीउरतै उतारपरगरकीनीरतिहै॥ जबहीतेहसतवहसनी
हुलसतिविलसतलसतउमानभरीप्रतिहै॥ मनमैके
पतिहू लीतनमैसमातमोदचलनिचितौन अररण
उरलतिहै॥ सरगजीमालवहीउरधरेवालवहउहउहै
आलिनके उठमैफिरतहै॥ हरषकाश॥ साही सषी येन
ला लने प्रीयाजो है नायका तासों सौतिनके देषति
अपने हृदय तमालदीनी॥ वाही सरगजी मैसी मा
लाहैं। सब सोति नमै उहउही सानंद फिरत है॥ अैसी

मासांतें उरतें ही टिरे है॥ विप्रलब्धा अलंकार॥ कोऊ कारन
तें जा बेकार जे होय विरह सु॥ लक्षण॥ वालम वारी सौंति की ह
न परत्ती परति विहार॥ और सखी पन रस रि मारसी री रंगभीर
अब वार॥ ४७२ यह नायक की बहु नायका तिन्ह कें
नायका के बहु भये॥ जब सौंति की वारी वु पाम भई॥ उतिन
समये॥ सो सखी सखी सौं कहति है॥ कवित॥ बैठी सखी न समा
जमैं प्यारी सिंगार के साजन को सरसानी॥ काहू कही गम
है तिहि के प्रीतमरे प्रानन बंधु के गारव दिदानि॥ हौं तिहि कै
क विकु छम कहे रसहे विंहीं सखी पद कुलानी॥ एक ही बा
र सखी अजलो बनि टीरगु [illegible] सिकानी रिसानी॥ टिप्पणी
सखी सखी वैना॥ वालम नायक ताको सौंति के वारके सौं
ति के संयम के दिन भे॥ जा दिन सो तिकी वारी पी परना
री हौं विहार है तिहि के॥ यह लै तो नायका को रस रचयौ
हौं तिन्हें दुख पायो तासों॥ ताके पद टिवे को प्रान रसप्रर
हिउ पजे पर नारी रैंगए पाहे॥ पेरि विचारति है वार चरीवी
छे रि सखी हाई हमारे उहां कौ न प्राए॥ पजे गोरर ली
र मनको तिक हाय प्रायो॥ बा नायका की कहा दसा है
सखी ते जायके देखि॥ प्रवाते रसी भई हमारे उहां सो॥
नायक प्रीरता सन हो जाय [illegible] बाके सा [illegible] यो नाय
क र [illegible] न मैं सजमंत है॥ पाजे टीर भई पर सिवास
आन के बान लागी तो हम पद हां सौं भी आय गोया
तै बीजु भई॥ एक वारकौ पुर्वीए कदिन मैं रसभावसा
तल पक हा बति है॥ एक भावको दवा परा कमाव उवजे
सभा प्रकास॥ दाव ति भावति भाव को उपजत पुंज नाप्राई॥

वसुधा गाव वेकीन सुवढावव की ॥ कोई तरी ऐसी है कौ जो मै
डारै तौ घटै नही ॥ हजीरान मति जान तिरह वढावव
की जरी है ॥ कहै हौ न उहि वै वार कई एक लोगन तौ होउ
हकरि ॥ कहौ हम याकौ वार रोकौ ॥ वाहि रूमति होय
वे देया रूपरी है हरवकररही है ॥ वाहि रोपव वेको भी
तर भाजन आवा ॥ किवा अपरी आवा आवक ही ये आंख
लता की ऐसी वेरन है ॥ आप नो आंसू वल गया
यो वा हति है ॥ भीतर कौ भाजि मैं हृन ति वरसे है ॥ अगा
रवरसै है ॥ वाढ तो विरह तामे मेह की बूंद अंगार
रूप है ॥ मानौ अंगार वरसे है ॥ गम्पयत्र ता ॥ नहीं वु
झैलो कसोकरु जानी ॥ ॥ सन अवरपरैन करै रि
पे वरजरे परजोरि ॥ लावन घोर उलाव सौ मिलैय
लाय घनसार ॥ ४५८ यह नायक पोषित पतिका कौ
वैन सखी सौ ॥ कवित्त ॥ काहे कौ हघनसार उलाव
है घोरि घनौ घसि चंदन लावै ॥ काहे कौ सीवरे नीर
भिगाय उसोर वषान समीर डुलावै ॥ तो हि कहा सु जनक खे
सौ परी पजरी उरआगि परी दजरावै ॥ ए उपचार परैन
करै कलजात परै किन ताहि मिलावै ॥ २२ प्रकास ॥
उपचार करती सखी सौ नायका वैन ॥ उलावन सौ
वारि कै मलय चंदन मिलाय घनसार कहा रति
है ॥ अरी सखी याकौ परैन करै है दूर नही करै है ॥
हियो दूध पबरजरति जरे सो विरह पर विरह सो जरि
रह्यो है ॥ उपचार सो पेर जारैं है ॥ किंवा अरी सखी चंदन
घनसार कौ हि यै तें परैन ही करै है ॥ हरखकरि दूध पर

षरे जरै परि के रत्ते जारत्तसी लात्ता कैउ स्याकि पैउल
ताईअई ॥ विषम अलंकार ॥ औरग लेउ हू मा कि ने
ह जबु हैप लेप्राव ॥ मूल कै हे जुव वनति पै गनो
विरह विकुल अकुसाव ॥ किनके प्रकवा सहि
स त रुवारि [illegible] लालन नाव ॥ ४९५ ॥ तहॆ नायका प्रो
२ षित पतिका सखी बचन सखी सौ ॥ सवैया ॥ प्रानप
ती विदेस तियके रस पसवै दु प्रानि पिरह है ॥ वास
र लालबिपात कवारी उसासन भरि गहरे गहरे है ॥
पेक है तैन वियोग नीनै प्रकुलाय बिपाग बिआन
भरे है ॥ वेवतिपा अब वीलल वासव है अल बा
नाहमन्ता करे है ॥ [illegible] प्रकाश सखी सौ सखी ॥ ए
कांति मैक है जाब बन वियोग [illegible] विरह है तो वि
कलहरीसपवे ॥ प्रकुलाय वै जेब वन वियोग
नी मै करे है ॥ कैनवू प्रोस सहित नकिये ॥ कीरह
अर्थ ॥ काकुस्वर है सुवानै यो लालन नायक ॥ स
वा कै वोलि कारन ॥ प्रोस कारज रे च अलंकार ॥
मूल सीरे जतन सिरुर निसस ह विरह न तन ता
प ॥ वसिवे को ग्रीषम दिन महो तरो सिजताप ॥ ५०० ॥
तहॆ नायका प्रोषितपतिका सखी को बैन नायक सो
विरह निवेदन सखी बेन सखी सौ रहे या ॥ सवैया ॥
काहू तिहारी दि पीग नैनी गतिदै सिधु मे रोह के प्र
कुलावै ॥ दो रुक मार सरीर रु ता प्रव प्रसौ विपै
गरु तासन नाये ॥ सीतम सीरेउ पायन सौ धि नसौ
तन ताप समीर हरावै ॥ ग्रीषम द्यौस तिन कै वसिवे अ

हरिप्रकास॥ सखीसखीसैं॥ सोरठा॥ तनमनसीतलउपावताक
रिविरहनीकेतनवेतापसरे॥ सिसिररितमासहूलागन
लै॥ ग्रीषमजेठअसाढदिननमैंबसिवेकोपरोसिनको
तापपर्यो॥ टुबडे वेउ हरअर्थ॥ अरतु रि॥ अरतु त्ति उअद
भतहूठवैंवरनैंतहूपरस्नानि॥ इसहूठवरन्यौहै॥ मूल
पियप्रानानकोपाहरकरति जतनअतिआव॥ जाकीदुस
हदसापरयौसोतिनदहूँघा॥ ९०१ वह प्रोषितपतिकाबि
रहनीसखीवैनसखीसों॥ सवैया॥ तापतपीविरहान
लकीबिल॰ठउहनागरिलीन बिहारी॥ आंखिन हीमै
रहेंअबआनिप्रानसबैरुधि अंनबिसारी॥ सोतिसबै
उतवारवकैरंगनिकैपियप्रानिनकोरखवारी॥ दासणावा
कीदसानिरखैउनहूकैपरयौजिवसंकटभारी॥ हरप्रकास
सखीसैंसखी॥ नायकापियकेप्राननकीपाहरुवैकोंदारहे
राखनवालीहै॥ जोयहमरैगीतोनायकजीवैगौनाही
याते॥ सोतिआपअपबेजतनकरतिहै॥ किंवानाय
काआपकोपियकेप्राननकीपाहरूजानिकैजतन
करैहै॥ नहीतोअबताईसरीरछोडिदेती॥ जाकीदुस
हदसासैंसौतिनहूकौसंतापपर्यौ॥ सोतिसंतापकेजा
गनहेतुतहांकहेंलैसंबंधातिसयोक्ति॥ संबंधातिसयो
क्तिजहांदेतअजोगहजोग॥ मूल॥ आउदैआलेबस
नजाडेहूकीराति॥ साहसककैसनेहवसखीसबैढि
गजाति॥ ९०२॥ यह विरहनिवेदननायकसौवेननाय
काको॥ कवित्त॥ लालबनमालीविछुरतिबुजवालभई

ता

निनहि विहाल विथा उर सरसाति है ॥ अतनता ताई वा के त
न की ताताई है सिंधु वके तरहता रहू की निरन सिराति है ॥ कहि
तउ वाय हाय हाय करि वार वार मोहि तन करि तिहन निरटत्र
कुल्लाति है ॥ आउ देन सन आले जाउ है की राति मोप सा
र सवै नेह नातेह सखी छिगजाति है ॥ हरिप्रकास ॥ सखी
सखी सैं ॥ आले वसन [illegible] नी तौं भी जे कपटा ता कू
आउ दैवै ॥ ताके विरह की आंच सौं [illegible] नही जाव ता सैं
ओजाउ है की पूस माघ की राति है ॥ तउ साह सबै म
नसै सर माघ रिपि धरि पीत वै वस हे स सी सव छै त
न जीव जाति है ॥ अत्रु जि ॥ सूढ़ है प[illegible] ॥ सु स इत आ
वति वलि जाति उत चली धि सातक हाथ ॥ चढी रि डोरे से
रहै लगी उसासि न साथ ॥ ५०३ ॥ दाहन ताप कपो विन
प ति का व्याधि अवस्था सखी सखी सौं ॥ सवैया ॥ मो
हन ता सति हारे दिवा निरही बृज नागरि विरह दहैसी
हेति दीनौं दिन ज्योर ही रंग अनंग की वेदनि अंग व
दहैसी ॥ वा तन आई [illegible] इती दुबराई ॥ सखी सखी सौं
चिसंबूरस रहैसी ॥ आवत जात [illegible] हाथ कहा पउ सा
सकै हाथ हिंडोरे स छैसी ॥ सरप्रकास ॥ नायक की
सहृता स्याम की प्रवलता सखी सो सखी कहै ॥ तो
है सतान कहा प स्याम कू [illegible] करवे [illegible] सखी उत आ
ने वली आवति है ॥ मानसै उ न वली जाति है ॥ हि
डोरा पर चढी रहति है मानो उसा सनि [illegible] पिवली
चढी रहति ता सों जो है मानो वे अधि में अच्यव ॥

केसा

[illegible]

सोरठा॥ बिरह सु काई देह मैं सु कियो अप्रतिउ सु उहै॥ जो है
वर सतमै सु जोर जवासा सो जोजगमै॥ २०७ याहु नाव क प्रो
षितपतिका विरह अप्रसमनै सु कीअपछि कताई॥ सखी सों
कहति है॥ अप्रहु नायक सखी सों कहै तो उ संग रावै॥ देव
देषि विलोग दै नेह सु काई करी दुवटी रहत्यो अप्रासन मासों
नेह सु तर है उलास हु परहू कटी हर रस बीन है कौं न ह्यो हासो
अप्रावत्ति है जिय मै उव मा कु विकृष्णम कहै उ हद है सितमासो
जौ वर सै घन पावन लके सवन सु वजगमै जै अप्रावक जवासो
रस प्रकास॥ दोहा॥ उलाकृ सोरठा यहु है छैद्रप्रमान॥ सत्रासा
रं प्रपम हि पीछै तेरह जान॥ सखी सों सखी॥ विरह नेह
सु काई॥ नेह कौं अप्रति उह उ है॥ कियो अप्रति नस्व चितवि पोअप्र
तिवचनो॥ जैसे मेह बेनर सें जवासा सुर्ख सूनामस हैन
कृमै है॥ पर्व मै त्रिउ अप्रकहति है॥ सोजरै है गल जाहि है
ताकों जोक ही पैनर जामति है॥ विरह मेह जवासो व
रीर जो नेह कोई कहत है॥ तारसी मै जो नौ मै न प्रसाद कौ
है॥ जो जग मै जवासा जारत है॥ तहां नेह कौ दृष्टांत नहीं प्र
लंग नहां प्रेम प्रत्यछि करीये॥ विरह ने देह कौ सु काई स
कीदह कौं अंगार स्या मही हाय पै नेह कौं अप्रतिउ
उ है॥ वि कियो॥ ताकौ दृष्टांत॥ जैसे मेह वर है तो न ष
जो जगमै है॥ वा जव ह्रौ ग्रह ताकौ नव की अप्रासमरे है॥ ता
विरहति है॥ हमारे हेत मैं जान जग है रहावी सुमन जो अप्रावे मे
वर्षे पर अप्रासा जाति है॥ जो नौ जामति है नेह जो मपोर सबै
नेह सो श्रंगार नहीं॥ रस्त॰ सोरठा॥ सोविजरी जनुमेद्रपा
न उहां विरहाधाहयो॥ प्राहै जाम प्रदेह हग अउवर सन्तरसता॥ ४०२

वर्ष मे

याहूदे ता कौ धुमवंधु कायै नहीं ताकी सवैयाप्र वीनो त्रि॥
सवैय्या॥ प्रीतम प्यारो मनहा वन मैं सु प्रति प्रति मोसौं हि
दौ जिनि नेह री॥ सो तर दे लगए विन जा वे मवोड्ड बसा हि
गयो ता हरदेह री॥ नैन हमारे न मैं मनै प्रामि घा हो विरह
विजरी उतमेरी॥ ताहि तेरक सारवरै वर स्या करै प्रा०
हू जाम प्रदेह हरे॥ स्वप्रकास॥ नायकाकी उक्ति सखीसो
रहीं न रागमें नायकाकी उक्ति दूतीसो॥ नायक की उ
क्ति प्राणी लगै नहीं॥ सोंक्यौं प्रदेसहहति विरहसहत
मेरे कै प्रानिचे॥ हमारे नैन मैं विरह ने घलो है मा
नौ मन को प्रयमानो प्रा है तहारप्रदेह देह कहौं वे
प्रेत प्रा देह प्रेत निरख धरैह प्रपिह गने नवरसत है॥ रह
वीजरी कै घर मैं प्रोरनर सतरह तहमे घर को धर मप्राल
पट ते है॥ क्रियाके प्रागे जनके उत्प्रेक्षा॥ विजन कै प्रलय
है प्रन्ज्ञा स्यदा वस्तुत्प्रेक्षा॥ सत्व॰ विरह विपत्ति दिनपरत
हि तन मेर कमन सान प्रेग॥ रहि रप्रत लो वहु सो भागसाव
ले जिवसंग॥ १०६ प्रोषित पतिका कौ वेन दासी सौं सखी
कौ वेन नायक सौं। सखी दासी सौं हं मवे॥ कवित्त॥ जो
लौं प्रात नायक सपी परेहे तो लौं प्रेग प्रगसर सानेस
सउमणि [illegible] उमणिवे॥ न्यारे हा तप्यारे वे विदा ग विप्य
वा छन हीं नातो करि हो तौ वे प्रगा उगा भागि है॥ दुखकी नि
काई कछु वरनी न जात मइ ता ते दुख सलो तकुर सो प्रेम
पागि है। तैन मयो हिनौ रीउ है लो साथ दीनै प्रवचलि
वे विना हो संग प्रान नके लगि है॥ स्वप्रकास॥ नायका

1854 ते

बिरह होत बिप तांकें दिन परत कें प्रानत ॥ सब सखी बन मैं र
मोरे संग तज मैं छोड़ें अब तौन संग बत्ताई है कै फुंबजो है
सोधीच लावहे चंचल भये जीन के संग जीन जाव गो
तबहु सभी जाव गो नायक कौ जो बिरह तरि बो है॥
हो ता बिन तिदि न परि वो है॥ तमान है नौ वा क्यापै र
ताकेत सो सरु करि ताकता कौ आराधव कियै॥ निद
र सनाथी हाय॥ कहूं पै बिध निदर हा नावा कैसन प्र पै
सम्प्रदाय॥ बिरह दिवत दिन परि बो कारन ता है स
कै सखन संग छोड़ें पर कारज॥ चंचल लाति सिय तिं
चपला जिति उरि गो के सान है तही काज॥ रूस
नए बिरह ठानी बिषम ई बिक अजिब वास॥ बिसखी
दक्षिप रोसनौ रर बिरह हो तहु काल॥ ५०७ पहरप्र
न्यहसें गउ खिता पुते नायक हित याको न है क
रत॥ कानोहि करु चतै॥ र हारे परो सिन प्रकाद बीता
हि सभै नव वरी बिलाधी नायक यासें तरे सिन हैं
रहति है होय को बिलखी दक्षिप रोसिन प्रसन्नम
ई॥ लावेपा॥ वासम कौ हि अप्रान बधू हौरहे न
वन्धराक चरी है॥ ताउ बकालम हू हि वच्या कु
ला काम बरीन लखान करी है॥ वाढै बिचा
र प्र हि बाढै सी डो लहि गाढै बि येगा की गाढ
परी है॥ ज्यो बिलखी म गनै नि बरीचे परो सि
नाहें सबि मोद भरी है॥ ररप्रकास॥ सखी की
3 हि सखीसें नए बिरह होत बढती बिषया बरी प्र

ति जीव रै विकल ह्वै बीवाल॥ परोसिन सों नायक की आ
सक्त सी ता कों विलखी देख कै ताही काल ताही समैं हर
खि कै रही ई सों हे विषादि की सांति हर्ष हरष संचारी
नायक के विरह तो उ होव उभई प्रेम की कमर्त्ती दोष
है। तहां प्रेम है। अर्थ॥ परोसिन नायक को कोन है विरह में
विलखी देखि कै॥ विकल देख हरख्हि कै रही ताहि नाय
का के अनकाल मरन रूप है॥ याकै तन नायक के हर
नोरे हू बहे सा छूटै गो॥ व हि वे को गृीष्म हि नव
पसौ परोसिन पायो॥ किं वा नायका कहे॥ पी तन
र विरह सौ मरैगी सखी तन रोदन करै पी॥ परो
सिन के भी विलखी देख कै जान्यो निश्चय स्वरूप है
ह यातें प्रतितार है सो पाके हरष रही॥ परोसिन के
विलखी देखि हरष हिरसी॥ लि भावना॥ कौ हू कारन
तें जनै व कार जे हे तु विलक्षा॥ ... स नतं प्ति कं सुहं
साधनि सं लग्ने च लतिं उच्यताम॥ तिन को से विन
सौ कहे जियत विचारी वाम॥ २०८ परनायक को प्रोषि
तपतिका विरह समै पति। कहे मुख की वात सुनि
नायकाने अटकर्यो ता की दसा जानी सखी बे
नास्त्री सौ॥ सवैया॥ सीत समें की राति मैं लखि
ते है उर हरे सखि हू ता सन सानो॥ आव समैं बसु रातिन
गाहे अवानक कान परी रहु वानी॥ ह्वा उ रहै पर स
व काज विदेस को बुधि तहां घरकै अकुलानी॥ प्रा
णपियारी के आइ गई कहिं जीवत है हिय में इह जानी॥

कहूं लहत्यौ इह भेद नजीवके जद्यावहतासवयौ नमह्योई॥

185A

रसप्रकास॥ सषी सषी वैन॥ सुनत है नायक ता पथिक कैसे कहत मा धक कीनि सा राति मैं वा गाम मे रहैवे चलै है॥ जो हम अतकर गरम यों न चलै है ताको नाम सकुचे रव मेलु निकहत है॥ पथिक हौ मह देह विना वाके कहै वि नानायका को जीवत्ती क्विारी लवे चलै है याते जी वती है यह दुष्ट पनि कै॥ अनुमान नायका लंकार॥ सं छत्तो नेह कांद हि ये भयौ लषायन टाक॥ विरह तचै उ घह्यौ सु अव सेरहु कौ सो ग्रांक॥ ४०८॥ वह पौष्ति तप तिका सषी वैन सषी सौं नायक हू को वे नसषी सौं है व॥ सवैया॥ जौ लग नेह जग हो हरि तौ लग मेरव नौ भव भायौ कहा हो इ॥ नेह छत्तो इह तौ हि वकागर वो नह गा ति मनुता नि पस्यौ इ॥ से हह उ को सो लिषाव अली विरह तचे अव तौ उघस्यौ इ॥ रसप्रकास॥ नायका की उहास षी है॥ कांदहि हृदयसो कौंदहै॥ तामैं नेह छत्तो प्रीत यौ संजोग मै टाक फारे सी लषाई न है मई॥ लछित न ह्वे मई अत विरह अगनि सो तचै तोरे उघ स्यौ॥ जैसे से रहु को ग्रांक उपमान सो वा तिक न हो लषायवो धर्म है ऐसौ तमा॥ उपमान रउपमेय जह वाचक धर्म रुसा र॥ हर्ष॥ उपमा हो न तह लुप्ताप मा विचार॥ नायका को वचन है कि वा नायक को वे न है॥ तिमावकी व्यंग्य ता नही हातहै॥ संदिग्ध हू बन है॥ मूल॥ केरवे मीढे कुसम लौं गई विरह कुम्हिलाय॥ सदा समीप न सषिनह

ख क नेह उपमेय सै उ

॥ ४२० ॥ [illegible]

प्रोषितपतिका सखी वैन नायक सौं॥ सखी सखी हू सौं
कहै॥ सवैया॥ प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरे मोंवे
कहू तननै नवाही गई जैसी गति है। आली जैर हत
निसवा सरसमीप तिनै हू देषहु वानि वहु नीठ है
परत है॥ बासदु लि ष्वास जैके धो आं पास वानिम
हूं एते मान मरन हू ताप मेवारत है॥ कोमल कुसम
मानौ मीड्यौ कुरवेर ग्रेहे जैसे कुमिलाय कर साव
गई प्रति है॥ इति प्रकास॥ सखी कीउक्ति सखी सौं॥
करवे मीडे मुं सपलें॥ रूप के मीडे फूल सौ यें
सी विरह सौं नायका कुम्हलाय गई है॥ सदन मी
करहन वाली सखी नवे॥ नीठ के तरह सौं [illegible]
सचानी जात है॥ नायक उपमेय कुसम उपमान
सौं वाचिक॥ कुमिला नौ धर्म॥ इति पंचाग पूर्णोपमालंका
र॥ सलल लाल तिहारे विरह की अगनि प्रगन्न परयौ पार
सरसे वरसै नीर हूं मिटै न मेरे हू सार॥ प्रगट प्रोषि
त पतिका सखी वैन नायक सौं॥ कवित्त॥ कुंदन प्राण
प्यारे लाल बिछुरे तिहारे बाल [illegible] तित सौं विकल पर
वे कै तरसत है॥ सीरी है पत तातै उपचार मीडे ताती छि
न छिन अपकुलाति घाती पीर सरसात है। तातो नरा
वरे तें योग की अगनि प्रेसी [illegible] गति सें अपार
दरसत है॥ महा अंगर हू ते सार सीरी नवर तिपज राति ज्यौं
ज्यौं नीर कों वरसाति है। इस प्रकास॥ नायका नै

उक्ती विके
सट

186A

पत्री मैं उहू दोहू लिख्यो॥ कि वा। एकहू गाम मैं विरह माये
है रहती नैन नायक है सो॥ हे लाल तिहारे विरह की जो
आगि है सो अनूप है आश्चर्य है अरु अपार है॥ नीर के
वर सें हू जारे सें हू अधिक होत है॥ उर अन्त गता॥ र
ह्यौ सार ज्यो लाल नहीं मिटै॥ यह ठपार तो॥ नीरवर सेहो
सर है॥ विभावना॥ कारू कारन ते जो व कारज होत वि
रुध॥ अरु मिटै न सार॥ नारि नते कारज न होय॥ जम
सबहू है॥ स्लत. याके उर और है कछू लगी विरह की ला
प॥ तजरे नीर उसाव कूं तिय की बात बुझाय॥ ५१२
प्रोषितपतिका सखी सखी वचन॥ सवैया॥ ऐसी दशा ल
(कुला) खि हो प्रीति दि तो उपचार विचार पकी री॥ आनन वो
लौन को लै वि लोचन [illegible] री है तजि नो छिन की री
याके [illegible] है कछू और अनोखी विधे गहू तास
न ज्याल लागी री॥ नीर उसाव के हू नीयरे तिय
प्यारे की बात नि होत है सीटी॥ हरि प्रकाश॥ सखी
सो सखी वचन॥ या नायका के उर मैं कछू और ही
तरहू की लाई आगि लागी है॥ उसास के नीर
सी चै अरु जरे अरु ज्वलन्त होत है॥ तिय की बात के हैसों
बुझात है सो ति होत है। उसास के नीर उहीपन
है तासौं वह सौ॥ औरन को और तरह याके उर मैं
और तरह यों का तिसयो सि॥ और पद जहां
सी जिये अधिकाई वे है तो अतिसयोक्ति मे पद
वे है कहत ताकु कविनि रन्त॥ स्लत. मनी कुसी कि

टरी बिछा कहा बरी चलबाद ॥ रही करा हि करा हि अति अबकु
स आहि न आहि ॥ ५२३ ॥ प्रोषितपतिका जउ जादसा सखी बैन
सखी सो ॥ सवैया ॥ ऐसी बोछ्यो बिंद सगबो हरि जो कब
हू बिछुरी न घरी है ॥ ताप उहै रट सापर है गति याकी लखै
मति मेरी हरी है ॥ बाल बियोग बिना जौं मरी बेक यारन निकौ अ
नहू बिसरी है ॥ तोर टरी कि मरी है मरी सखि देखि अरी कहा टू
रि हरी है ॥ हरिप्रकास ॥ सखी सों सखी ॥ प्रोषितपतिका की द
सा कहति है ॥ मरी उरी मरी परी है कै वाको बिपा टरी कहा
मरी तास खी तू कों बडी है बलि बै चाह देखि है ॥ अमन तार्ई क
राहि करा हि रही है ॥ कह रि कहरि अत्ति रही है ॥ अब न वाके अब
मे आहि स उरह पीड हो तक न आहि न ही है ॥ मरी परी है कि
बिपा टरी है ॥ संदेह अलंकार ॥ अमरन अ मसंदेह अर
सह्नौं न मप्रकास ॥ दल ॥ कैंदगरि लिखत नवमलता कहत
से देस ल लजात ॥ कहि है सब तेरो हि तो तेर हीय की बात ॥

५२४ पहलतउ नायक की अब वा परउ ज्यो नायका की ॥
कबित्त ॥ पाती मैं लिखत बेह सब निति जिती क बात सागर कै
लखि लखु हमें बैठें कीजियै ॥ कहति सदेसे उर आवत है
लाज अधिर अधिक अद है ये हे छिन दिन छिन छिन कीजियै ॥
मन अैसो मान सखि लैन को उमदि याती जासों सम
साप जी को मेउ कहि है कीजियै ॥ याते प्रीतिरी ति अब दातम
रे ही की बात आवत न है ये तेनी की बात सुनि लीजियै ॥
हरिप्रकास ॥ नायका की उ हि ॥ कागद पर लिखत न हीं ब
नत है ॥ संदेसा कहत मैं हमारे मन लजयात है ॥ तिहारे

187A

हैतो मनकौ हमारेउ बजानैगो ॥ ऽ औरके हृदयकी बात औ
रके हृदयकों करैकहै ॥ विरोधाभास ॥ भासे जहां विरोधसो
उहै विरोधाभास ॥ विंवा ॥ पानीपरसे रस लिबत है ॥ कहै तु
नहीं बनत है ॥ लाज आवेव ही ग्रंथ ॥ जहाँ [illegible] साथी हो ताकी बे
न स्तन कहा भयो जो वीछुरे मो मन [illegible] न साथ ॥ उडी [illegible] तोम
जात कि तहूं उडी तउ उडुपव हाथ ॥ ५२५ यह नायक की पत्री
नायका है ॥ सवैया ॥ जो कर तारर वीस सही विध औरती
धार अबकी पही है ॥ वे पराग परा ने कनी सब को उकहै इस्या
पही है ऽ अंतर वीच परे ते तो कहा भयो मो मन तो मन साथ ही है ॥
जा हु उडी कि तऊ डोर उडा मन ता रेवे हाथ ही है ॥ इह प्रकास ॥
नायक ने प्रोषित पतिका को पत्री लिखी है ॥ जो तुम तिछुरे
उदसते ॥ तो कहा भयो कछु हानि नहीं हमारे मन तुम्हारे
मनके साथ है ॥ हमारे मनो मय देह तुम्हारे मनके साथ है
तुम्हारे साथ परदेस को कौ जोवि ये पीछे चाहे ये तव तुम्हारे
मनको पकरि लामेगो ॥ मनव करें तम आरूह है आवोगो ॥
तहां दृष्टांत ॥ उडी चंग कि तहू कहूं उडी जात है ॥ तो भी उडाय
क उडाय मन वारे के हाथ में है ॥ हाथके [illegible] लछना सो
वहाये जानिवे ॥ तुम गुडी की ठौर तुम्हारे मन डोर की ठौर
हमारो मन उडायमन हार की ठौर ॥ गुडी नायक की दृष्टांत ॥
दीदे दास न ही [illegible] लिगवे ॥ उपमान हाथ तो दासदृष्टां
त अलंकार ॥ मानी नायक सों भी नायका की उक्ति ॥ जो तु
म विछुरे हूं ठौर वहै प्रश्न ॥ [illegible] जब जब वे सुधि की
जिये तब तब सब सुधि जाय ॥ ऽ आं बिन आ बिल गी रहै आ बैं सा

१८८

188

यह लक्षन रागिनायक अथवा नायका सबोसै बकै है॥ सवैया

याह प्रीतकी रीत अब नै॥ थोकछू अब जानी न जाति कहा गति

है॥ चित्तवाह की चौपचढी वरहे अरु प्रेम निगाउर वागति है॥

नितां अंखियां बिन है सो गई अंखियां निलगी रहे अंखियां छिन वे सह होंगति है

जबही जबवे सुधि कीजत है तवही तबही सुधि आ जाति है॥

इति प्रकास॥ मन है कि बासबिन है नायक बैन॥ बिना

नायक बैन॥ अंखियां छिन अंखियां बिलगी रहे ति पकी कि वा प्रिय

की॥ अंखियां छिन है अंखियां हमारी लगी रहति है॥ अंखियां बिला

ग तनां रहे॥ अंखियां छिन ती लगै है निपुन हो आवै है॥ जबजब

वे के अरु थै हमारे मन जानत है॥ ऐसे कोई अंखियां सि गन

विहबत्ता की सुधि पारि की जियत है॥ ताहमै मैं तो सब सु

धि सान जानतोर हे है यह सामाहै दि है॥ अंखियां छिन ही लगै

विरोधाभास॥ मूल॥ कौन सुनै कासो कहै सुरति विसारी

नाह॥ बदाबदी ज्यौ लेत है ए बदरा बदराह॥ ५२ यह प्रोषि

तपतिका चिंता वस्या मै चित्त नायका कहै वचन सखी सौं॥

कवित्त॥ कासों कहौं कौन सुनै उर अंतर की सुरति

सारी सु बकारी हरि नाह री॥ कहि प्यारे की अहाई न

कहाई कछू वरसत नैन न नेह चलत खिप्रवाह री॥ अंग हो

त विकल अनंग ततनताव हे बेदनाय हति उमद तिविन

वाहरी॥ ए तेते बरजेन मानै क्यौहू दाता लेत बदावदी

बदरा निवट वदराह री॥ इति प्रकास॥ नायक की पाती ना

यक है सो हे नाह हमारे उ बकै नाम मैं अब कौन सो कहे उ

मरमारि सुरति पाहि विसारी॥ बदावदी ए कठोर का तत्त

188A

तरत आपके ज्यो प्रान तावे लेत है ॥ सखि नासो अति दुख दे
त है ॥ ए वदराह ॥ ए अब साउ के मे छवै से दे वदराप है कुवघगा
जी है ॥ इ छिवै दु बदेन को प्रवर्त्त है ॥ वदरा वदरा जमक ॥ ज
मक शब्द को फिर श्रवन अर्थ जु दोवे जान ॥ बादर कौ वि
शेषन वदरा सह अभिप्राय ॥ परिकर अलंकार ॥ जोन दश
हू होय तामे ध्यान हो ताम रह बान है जो प्रान लेया ॥ है परि
करा आसे लिये जहा विसेषन होय ॥ दल ॥ औरै भांत भए
बौ चोरस चंदन चंद ॥ पति बिन अति पारत विपति मारत भ
रत मंद ॥ ५१८ ॥ प्रोषित पतिका उद्धिगय सा नायका सखी सो
वैन ॥ सखी सखी सो ॥ कवित्त ॥ वैसो ही है करि रुधिर ऐसी
विसराई निठुराई वा कन्हाई की नक इत तन नत है ॥ जेई है स
बद तेई भये दुखदाई अब कहा कहै माई अकुलाई अति मति
है ॥ चंदन सरोज चंद चौरस हिवार वार बंधक हू चंद्रका
को औरै भई गति है ॥ भयो निरदई मंद मारुत सु मारत है
प्रान पति बिन अति पारत विपति है ॥ ५१९ ॥ प्रकास ॥ सखी सो
नायका वैन ॥ हे सखि वक्र अर्थ ॥ अब ॥ चोरस हिवार सर की
सो तिनकी माला अरु चंदन चंद औरै भांति के औरत
रहके भए ॥ पति बिना ॥ सब अति विपत्त को पारत है ॥ औ
मंद जो है मारुत पोन सो अति मारति है ॥ किहा तिरहक्का
कुलदेखि कोई सखी सीतल जानिके चोरस मालावद
राई ॥ औ चंद्रमा सो सीतल चंदन मलयागिर लगाके
औ किवार खोलिवे तोन लागि वेदति ॥ तहा प्रवीन स
खी को वैन जानिके ॥ विरहते अति को अर्थ ॥ अधिक

विपरीत तापरत है। प्रथम आरंभ ये। आरंभ मैं आरंभ ये औ
रै पढत मैंदिक ताति सदोतिं॥ अर्थ॥ यह विनसत नगंर
हि कैं जगत बडो जस लेय॥ जरी विषम ज्वर ज्याइयें
प्रान सुदरसन देय॥ २१६ प्रोषित पतिका व्याधि दसा स
खी वैन नायक सौं॥ कवित्त॥ री है विषमज्वर जिरी है अब
तब सुधि रीसै बंधु घांव्याधि वृंद नमै बरियै॥ कंचन से तन
कै प्रतन बूपा कारत है रतन उघारिवे मनमहरि करिये॥
ऐसे सोग तिप बे हीं तो मारति वरे सौ दुख नाको अब नलेहो वा
कै नीरे जात उरी यै॥ जीजिये जगत जस कीजियै सो जिये
सुदरसन वाको ताप हरीये॥ रसप्रकास॥ नायक की सखी
वा तो प्रोषित पतिका कौ॥ यह नगसरी खी दुर रस प कवित्त॥
नगर रस को वहत है रस को रसको विनसत है ताकै राखि कै
र ताव करि कै जगत मैं बडे जस ले हि कैसो है॥ विषम ज्वर सो
जरी है वरी गस्य है॥ ताकै जनाइ दे प्रापके उहते॥ सुदरसन
देय॥ अस मै जाकौ विषम ज्वर हेत है॥ ताकौ सुदरसन चूर
न देत है॥ अनाप अलेकार॥ अर्थ॥ नितसे सोहैं सो व सताम
नोहर ३२ प्रगरमान॥ विरह अप्रमिन लपटि नि सवे अबट नमी
वहितवान॥ २२० प्रोषित पतिका सखी सखी वैन॥ जो नाय
क सौं सखी कहै तौ विरह निवेदन लेहाय॥ कवित्त॥ विछुरे
ते हैं रे मन मोहन तिया रे बलि निपटि हि सी बौंकेरी मदन सतये
कै॥ सब ही के रस तिहि कै मैं ३ हसं सो वह दूसो अवि लागि के से
रहे तो जानियत है ही उन मानि ताके बचि के के आ
मिव चित है सो अन गनत उपाय कै॥ विसमलापटि लखि विरह हत्ता

189A

हरिप्रकास॥ सखी सौं सखी की उक्ति। नित सदा संसैसो संदेह रहत है। या नायका कैं है सो प्रापति वक्त है॥ या वात को मान हू रहसि अनु मानै है॥ हे सखी तैं मानै हु रहसि वात अनुमान है निश्चय है॥ किंवा मानो रहस याकैं अनमान लखौ॥ विरह सो हे अगिन ताकी लपटन है अग्नि की लपटन वहुत ज्वाला ताको भीत मृत्यु सो है सिवान वा जिसो अपट नहीं सके॥ हेतु उत्प्रेक्षा भीत सिवा नह पक॥ मूल॥ करी विरह ऐसी तऊ गैल न छाडतु नीच दीनै हू चसमा चखन चाहै लखै न मीच॥ ४४४ यह नायका प्रोषितपतिका सखी वैन नायक सौ विरह निवेदन सखी हू सो कहै॥ कवित्त॥ का ऊक हाक है। वेदन सखी को तिहारे वियोग कौं तापतन बावत॥ रीति करी दुवरी छिनही छिन देखि दसान अलीक लपावति॥ ऐसी करी तऊ गैल न छाडत और कहा कहि येक ह नावति॥ देखत आंखिन दे चसमा तऊ है ये हू मीचु की ठिक न आवति॥ हरिप्रकास॥ सखी प्रोषितपतिका की दसा सखी सो कहति है॥ किंवा सखी नायक सो कहति है॥ विरह ने वा नायका को ऐसी करी है॥ तऊ तो भी वा को गैल न ही छाडत है॥ वा को पीछो नही छोडत है॥ नीच है निष्ट है क्रूर है अर्थ॥ मीच मृत्यु चखन ते तामें चसमा अंजन करि चाहै है देखे है॥ तौ भी न ही लखै है॥ न है पावत है ऐसी करी है॥ अत्युक्ति अलंकार॥ अत्युक्ति ठौर कै वुरन ते तरपर वानि॥ ऐसी दूवरी करी है ठखी चख समाइ दे॥ मूल॥ अंत मरैगे चलि जरैच ढि पलास की डार॥ फिर न मरै मिलि है अरी ए निरधन म आगार

अथ
अत्युक्ति

वहदेत कृष्णचंद्र का ऐसें नहीं ताकी सवैया प्रवीनो क्ति॥ सवैया
लागै उरचीर सीसीरो समीर उठावत रु लहि वै विक मार॥ वि
लोकति उ बराप्रपार खडे रितरा जिनैं वृंद की आपति मार॥ आली
लषि लाव ल बीवन मै जरि वे न लिवीर प लासकी डार॥ वि
नाचित प्रीतम रैगे मिलै जरे नैन॥ निरधूम प्रगार॥ इहाँ को
नायका प्रलाप करै है सखी सौं वैन॥ प्रीतम आलिंगन मरै गो व
लो जरै प लास ढाक ताकी डार तें चढि के॥ हे आली ते प्र
रे पार नहीं मिले गए निरधूम प्रंगार॥ वहूत तो पी मैइ
रु दोस्त नहीं॥ फूल मै प्रंगार कैं भ्रमा॥ भ्रांति प्रलंकार॥ मू
ल॥ मरन भलौ वर विरह तें उह विचार चित जोय॥ मरन मि
टै दुष एक कौ विरह दुहूं दुष होय॥ टीका॥ प्रोषितपतिका कौ
तैन सखी सौं॥ नायक है वो सखी सौं से मवै॥ सवैया॥
नैक हू वि कुविछुरे सावहीं सु उसास जियवे दुषदायक मारे
नैनन नीर भरी वर सेत र सै छतिया विन प्रान पियारे
आली वियोग विपावरि वे तैं भलो मरिवो मतमानो हे
मारे॥ एक कौ दुष मरै मिट जात वियोग मै सतहे दोउ दुषारे॥
इति प्रकास॥ नायका कौं प्रति विरह व्याकुल देषि नाके दु
ष सौ दुषी है तें सखी वैन॥ विरह ते मरन जो है सो श्रेष्ठ
है भलो है॥ उत्तम है॥ वरवचन है विश्रामभी है॥ ए वं मैव
लष कहति है॥ उह विचार करि के चित मेंते जोय देषो नाय
का कौं मति सुनावो॥ मरन सो एक कौ दुष मिटै है छूटै है
विरह सौं उहन कौ नायक नायका कौ दुष सात है॥
ताकौं उन मानो ले सप्रलंकार॥ आषाषै लेषक सतोदे

२

190A

न हुकै जिये दोष मे गुन कहु स्वना लहु लेस॥ कै गुन मे ७८ राई दे
दोष हु जानहु लेष॥ हलनै कन कुरसी विरह हु रह नेह लता कु
मिलाता॥ नित नित हरी [illegible] हरीं मालस रत जाता॥ ४२[illegible] पद
प्रोषितपतिका नायका तथा नायक कै वे जस बीसैं॥ कवित्त॥
ने देव दुलारे न्यारे भये जब है तै ताव है तव हतानी है के छाती
प्रकुलाति है॥ रुधि प्राण घरी घरी सु लहे सस जउर प्रान
परे परवस कछू न बसाति है॥ दारुना विरह दस रज घ्युव सने हस
ता उरसी तदपि नैव कहून कु मिलाति है॥ दिन दिन छिन छिन
उसमि प्रधिक होति हरी हरी बरी बरी मालरत जाति है॥ हरि प्रका:
सखी सैं सखी उक्ति॥ नायका की उक्ति सखी सैं॥ विरह की रर
न्ध लाता है पु रसी अधवरी ऐसी जो नेह लता है नेक
धीरी भोन ही कु मिलाति है॥ मलानि नहीं होत है नित नित
हरी हरी उहरु उही होत है बरी प्रति मालस्त जाति है॥ वेल
ती जाति है॥ उलिसि वा कारन कु मिलानो कारज न
होहै॥ विसे बाति जहै होत सो कारज उपजत नाहा॥ दूल
विगसत नवपल्लो कुसम निकसत परी मलपावा॥ वरि हि
पजारति विरह हिवावर सिर है की वाव॥ ४२९ पद॥ वनव
नीन विरह के प्रसंग मे नायका प्रपवा नायक सखी से
कहै॥ मानके प्रसंग मे सखी नायका सौ कहै॥ सवैया॥ म
उलता वेलनि के सघननि कुं जैते हरे हरे निकसत
हवे हेलहात्ती है॥ रूपन बदेव नबे हरबद व राग सनी
ताहि मिल मोरन की पाति कु लसाती है॥ [illegible] कलित मालि

हरीबरी

सो

श्री

काके कुसमन बीन न ते निकुसत जेसन्त दिसह ति सरसाती अवर
सिरहू की सीरी प्रानति विचारहैं जो परसि पजारति विवेगनमें छाती हैं
॥ रसिकप्रकास ॥ नायक की उक्ति किंवा नायका की उक्ति ॥ नवपल्ली
नवलता तातें कुसुमकली बिगसति है विउतहै ॥ ते रूपर
मलय मनोहर गंध को पायके निवहे हैं वलसै ॥ वरसिरहू
की वाय ॥ वहीं रहत है ता सम्मेलन सों बिरह को पर सिबें
लागिबें ॥ हियो हृदय को पजारति है बरावति है उद्दीपन है ॥
सीतल पवन जारिबे को कारन नहीं कारज भयो ॥ विभा
वना ॥ जबै अग्रकारन ते कारज पर गट होत ॥ स्फल
प्रौढा ईसी सील सखि विरह बरनि विलखात ॥ बीच ही
सूखिगा लावगी छुटै छूट्टै न गात ॥ प्रश्न यह नायका
प्रोषितपतिका सखी बैन नायक सों सखी सों कहे तो
उ बहे ॥ सवैया ॥ वालव घर मन मोहन सों बिछुरे विल
खी दुबदेह नवाई ॥ नीर विना सफरी ज्यो परी तलवेलि
माति विवेगदवाई ॥ सीतल जान सखी कहूणाकर हिंसी
सजेसी सीरालावरी नाई ॥ बीचही नीर विलाय गयो सब
छेह छुटै न अंग लों आई ॥ रसिकप्रकास ॥ सखी सों सखी ॥ ज्वला
वकी भटी सी ही सीतल जानि ॥ नायका तें प्रौढा इ
३३ लटी करी ॥ विरह सों बरति है विललाती है रोवति है
कहतु है ॥ तवका के अंग की ज्वाला सों बीच ही गुलाब सु
खि गयो ॥ पानी के छुटैं न वाके गात को न ही छूइ ॥ स्वतर्क
स्फल होहीं बोली बिरह बस कै बोरे सब गात ॥ कहा जाने

उर हू करति हैं ससहिं सीतकरि नामा॥ २२६

परनाव कोप्रोषितपतिका सखी सों वैन नाव कवे उधगदसा
है ॥ सवैया ॥ कुंभज ह्रू अब पी सु वच पैन पाहि हैं ते उ गिलिगु
यो तन रह्रू उर तिविष कूं दहै सो ॥ री बी अब लान को कलंक की
लैखकाये सौ सईसव करै जानि है तकौं नो मतिमंद सो ॥ वे
यो सवहि की मति हीन भई मेरी री आली वे घो हां ही योरीय
इ विरह के जे दंद हैं सो ॥ दिवचन पावक ते विषमावि सेषइ
सौ तक रकादे कौ कहति प्रेम सबद सों ॥ इतप्रकास ॥ ना
यका की उक्ति सखी सों ॥ विरह मैं बंध्रम गरम लागति है
मे है बोरी बावरी हों विरह वेद ससों ॥ केहूं सतिगाग
बावरी है ॥ गगा मकु लागक हा क्या जानिके कहति है सी
तक है सीतल है किरन जाकी प्रेम सो नाम सहि केव
हतहै सादहा अलोकार ॥ [illegible] सो वत जागत सपननं
सरस हिसचैन कुचैन ॥ [illegible] तिस्या मध नकी सुरति विसरै ह
विसरैन ॥ ५२९ यह नायका आपने चित्त की वृत्ति सखी
सो कहति है [illegible] ॥ कवित्त ॥ कहु न सु
हात निसद्यौ सन विहात कौ [illegible] पर
मन की ॥ सोवत हू जागत हू सपने हू [illegible] चित्तम
नि उहै वानि पीतपट की ॥ रस हू मै [illegible] चैन मैं कुचै
न हू मै को न हू वगर हू मै बाट हू मै वन की ॥ सुरति
निज तन हू की [illegible] तिस्या मध
न की ॥ इतप्रकास ॥ सखी सों सखी ॥ उत्तने [illegible] वनस्या
म श्री कृष्ण की यादि सुरति सहप सो विसराय हू विस
रैन ही । विसारवे हत है विसर जानो कारज नहीं विसेको

१९२

192

रसिकप्रिया

बिसरैहू बिसरै न बिरोधा भए॥ सुरति सुरति लाल॥ की

जल के सारन॥ कौड़ा ग्रास बूंद करसां बर्हि बर्हनी सजल॥ की

ने क्रन्दन नमूंदि दृग मलिंग सकुचै न ही॥ १९८ इहनां

यक को देखि नायका बूनेन बिबस भई है॥ आस पा

स है सखी सही सो कहति है॥ सवैया॥ जे तब तें हू सां

ङ्ग लहि हरि के दृग नैक निहार रहे हो॥ ते तब तें न हू है

ब चलोर रहे ताही बितोन की बात भरै है॥ कौड़ा कि येय

सु बानके बुंद मजी रब डी बरूनी जब रहै॥ नैक प्रबे

न की संधि सेउ मलिंग मनो दृग मूंदि रहे हैं॥ हरिप्रकास॥

दृग सो मलिंग पछी र सो को इनत कि वा मे प्राप कौड़ा रहे

त है॥ सरीर को गिराय परे रहतु है॥ जो है बिरहनी बूने

ऋंबन सरहति है॥ किंवा ग्रास बूंद है कौड़ा ताको डरै

रहति है पहरै रहति है॥ सजल बरूनी ताको सोक रक

रिके॥ चंदनको निमूंदि कियो रूपकालंकार॥ सस

नि है निदाघ रूप हरे रहे भई माह की राति॥ जारु उसीर की रा

वटी लरी अंगावटी जाति॥ १९९ इहनायका बिरह निवेद

कि प्रोषितपतिका सखी को बैनासखी हू सो होय॥ सवैया

लालति हार बियोगते वा सवि हाल भई बिललवे सदा री

सी॥ ताहि मतापवे चासन ते सखी को उन जाय वे हो नि पट ही स

के रहे जेठ की ज्यो चलि जो नहां माह की राति कहा रमरी सी

ताहि उसीर के धाम मै बाम सु जा उकी राति रही दुबरी सी॥

हरिप्रकास॥ नायका बैनासखी सै जाति उसीर बस की

रावटी मैं तंग ला मे निदाघ मीच मकी रूप हरो माघ की राति

192A

ताहि उसीर की रावटी मैं बसे ऽ प्रति ऽ रावटी जाति है ताप ऽ प्रति
रस होत है॥ किं का सखी सखी हो तहै॥ तो भी ऽ रावटी ऽ औटी
जाति है वे ठि हो परवे न सके॥ विभावना॥ कारन कारन ते
जो वे कारज होत विरुद्ध॥ मूल॥ तचो ऽ अंग ऽ प्रति विरह की
र सो प्रेम रस भीजि॥ नैन नि के मग जल बहे ही यो पसीजि पसी
ज ५३३ नायक प्रति ऽ नायका वि पै जदेर प्रकवाव हति है॥
तन को उत्प्रेक्षा करति है॥ सखी सो कहे सखी सखी सो कहे॥
सवैया॥ जा दिन ते वृजनागरी कै मनमंद कि सा कै नेहन
सो॥ जा दिन ते दिनौ रैन ऽ रे प्रसुवा तिन को पर भेद सरसो॥
अंगन त्यौ विरहानल की है तब रस मैं ऽ प्रति भी जि रह्यो॥ तो
ते पसीजि तही ज...वो वि वि नैनन वे मगनीर वह्यो॥ रीप्रका
ऽ स्वाव को तानी कहै है जं त्रवना यहै॥ जाकी हामता जाने
परै है॥ नायका की किं वा सखी की उक्ति सखी सो॥ प्रति जो वि
रह है ताकी अंग विसो तचो है तातौ है॥ किं वा ऽ प्रति तप्यो है॥
प्रेम सो है सजल तासौं भीजि रह्यो है नैनन वे मगया रह्यौ
जल बहे है॥ अंग सूचन हो है॥ ३ हरप्रथ॥ हृदय तसी जितसी ज
है यातें पसीजि राजी हो प्रेम सौं रहा हद का ऽ प्र ले कार॥ ग
सान कौ पानी वुदी यो जात है॥ ता ठौर मै नायक सो सखी क
हति है॥ दोउ ताते प्रकत है॥ प्रसु ता कुरि॥ मूल॥ स्याम सुरति
करि राधिका तकति तरनिजा तीर॥ अंसुवन करति तरोस को
छिनक खरौहै नीर॥ ५३४ पोषित पतिका सखि ऽ ध वस्या
सखी सखी वैन॥ सवैया॥ श्री मनभावन के बिछुरे वृषभानसु
ता ऽ प्रतही विलखानी॥ भोजन भौन सखीन सौं हास सुहाव वढैन
सवास सुहानी॥ सूरसुता हि निहारि रहे उनतारि कछू सरे की पहचानी॥

अंसुन के प्रवाह बहत हैं नायक बहे हैं तातें सखी को वानी ॥ हरि
प्रकास ॥ सखी सों सखी है नु । किंवा उद्धव जी को बैन कृष्ण सों
तहां हास्य मान स्मारी सुरति स्मरन करिवे ॥ राधिका जौ तकित
ताकित है ॥ तारन जात न सरूप ताकी कुल्या जमुना जी ता
के तीर वे ॥ मान मे विहार याद आवत है ॥ याते आंसू है
बहत हैं ॥ तेरे सतार ताको विना कद्ध नायक मे बरो है वारे
नीर ॥ कर आंसू वारे तातें देव सो जल तैसो सारो देख भये
उल्लास ॥ उन्मान्या नजर वावरे है घरे और उल्लास ॥ किंवा
स्याम राधिका जी की सुरति करि ॥ किंवा स्याम और राधिका
जी को स्मरन करि सखी ॥ रस गोपिन के अंसुवन भरी
सदा अरसो कर अश्रुपात ॥ उगर उगर नैं ह रही वगरि वगरि
के बार ॥ ५३२ पद विरह निवेदन प्रथम बृज को उद्धो को बैन
श्रीकृष्ण सों सखी को बैन सखी सों ॥ कवित्त ॥ श्री दुर्जाय तित
र विथोगिक दीन नदरै वृज की जु दसा है ॥ गोपिन के दृगन सों वर
सें वर सें अंसुवान के नीर प्रभा है ॥ गैल गली सब दूर के सरि
ता है वही है तिन्ह पार अपार है ॥ देखत धीरज को न धरै अब वा
हृगये विन को निरवाह है ॥ हरिप्रकास ॥ उद्धव जी को बैन कृष्ण
सों ॥ गोपिन के अंसुवान सों भरी है सदैव अरसो बक वहुत
होन है ॥ सर अप्रमार है उगर उगर रहत है ॥ नौ नदी यह ही
होहै ॥ वगर वगर जित तित बास मूह ले ॥ ताते वार ये द्वार में प्र
तिउ लि अलंकार ॥ प्रत्युक्ति जो अरुन्धती ... के वरनेत ...
चानि ॥ वसंत वर्नन ॥ फल ॥ वन वीथिन के वट वरात विवि
रहि निर्मत मैन ॥ कुहू कुहू करि करि कै करि करि रात मैंना ॥ ५३३
टाह वसंत समय नायक को बैन सखी सों बैन नायका सों होय तैं

1932

बसतौ प्रवनीअवस्था॥ सवैया
नायकाकौ वैनसकीसौ॥ हावसौ छाउ रसवै चहूं प्रोरनतें कंत
मेनपहेलकौमानिमसौ हैंमडाररवै लिकमेलतिहै कंत
वीहैविहेवनवारनमेवटवारखसे लोचनलालकुहूकुहूकू
देखतहौविरहीजनकेकारे वदाउवैरिनकैोपटक
कंत॥ प्रानपती विकेवचवविवे पवनमे लिककोकिल
कूकत॥ रसप्रकास॥ वनकेमैं विरहनीकोताकिवेमें
होवटवरा घाउवीवटवार॥ कुहै कुहै पिककी
नकपताके मत्तहोस लाहूहौ॥ कुहै कुहै मोरोसा
वीसी है॥ कुहै मारिवेकौं कहतिहै॥ कुहै कुहै मोरोसा
रोककहि उठतिं प्यारेलालनेनकरिकरि कोकिलके
लालनेनौहैं॥ लिकसोवटपारूवकाप्रलेकार॥
कल॥ दिसदिसकुसमितदेखि वसंतउपवनविपिनसम
माज॥ मनौविवेगिनकोकियौसरपिंजरमदनराजे
२३४ सखीकोवैननायकासौं नायकाकेवैनने
यकसौं तोप्रवसतिपतिका॥ कवित्त॥ आयौहै सद
नछितवालकौ हूकमवाय आयैलप्रवलियेहै सौ
प्रमलजनायौ है॥ मानगढतोरवेकौं प्रधिकप
चेउदेषेसवहौके उरप्रनरागउमगायौहै॥ वनउ
पवनजितातितात्प्रवि लोकियत दिसादिसाकुसम
संकूहध्व विछायौ है॥ वैरिवांधितिबसचियोगिनके
राकिवकौ मानौरितराजिसरपिंजरवनायौ है॥
रसप्रकास॥ नायककीउक्ति किंकानायकाकीउक्ति
दिसादिसमेंकुसमितकू देखियतहै॥ उपवनवाग

औविचनवनरनके समाजसमूहतितराजवसैत
मानौवियोगिनकौंसरविजारकीयै॥ वनउपवनावि
बसरपंजरकी संभावना॥ वस्तुत्प्रेक्षा॥ मूल॥ दिवऔ
रैसीं है गई रही अवधिके नाम॥ रजैकरिडारीबसीबौ
रीमोरै अ्राम॥ ४३५ सखीसखीसौं॥ नायकाके सखी
सौं॥ ३ ह अवस्थानायकाकीकहै॥ सवैया॥ मोहन
सौं विछुरी जबतेतबतेनलहै चकसपकधरी है॥
नननैंढरै निसवासर व्याकुलबाल अचेतपरी है॥
औसेदसाव हलेई हुती पुनि औरभई समनिरोधिरीहै
तालसौरररसालमेदेषौबसंतके पीसरकोटीकरी है॥
हरि प्रकास॥ सखी सौं सखीवाक्य॥ हेपमनविषैऔ
रसैंऔरतररहवी हैपगई है॥ मानौअतिव्याकुल
भई रहीबीती जौ औधी औरवेकौठिकानौता
केमिलनिके॥ कलानेदिनरलैतकतौइह इस
हैमौरै जौ अ्रामहै॥ तातै सषीअतिबौरीविधिपक
रिडारी॥ औरसीभई और है॥ मानौ पहाती मानौ
हेतु उत्प्रेक्षा॥ मूल॥ मौर इह उअ सोई सयोजनह
सवदहुवदत॥ चैतवंदकी चांदनी डारति विचै अ
चेत ४३६ औबिनवति कउहेरा हलासखी सखीवैन॥
सवैया॥ व्याकुलभई अबुमालतीमालहासौरतैपी
रहैपेसरसाई॥ चेतहरे तितचेतकी चांदनी वेधतबा
ननरूपसताई॥ पावक ज्यों जहै स्वेदन चपकचंद्रकला
हलौनहमाई॥ आनिवसौ अब औसौसमयो दुखदेत

रसप्रकास ॥ नायकाकी उक्ति सखी सौं किंवा सखी सखी सौं बैन ॥ वकु
निलरसरस प्रेम सोई समो भयो बहालरूप बदाई दूधबदाई होत है ॥ बैन
कै चंद की चांदनी अचेत कियें डारति है ॥ अचेत करति है
रस अरथ ॥ बैन की चांदनी अचेत करिवे कौ कारन नहीं है
ताहू तें अचेत होनो कारज ॥ विभावना ॥ जाबें अकारन व
स्तु तें कारज वरनन होत ॥ रसल रसो प्रेम बध प्रेम तन लख्यौ
अवधि दुसासन वीर ॥ आली बाडी तन नवि पा ज्यौ पंचा
लीचीर ॥ ५३ प्रोषितपतिका प्रौढा कौ बैन सखी सौं ॥
सवैया ॥ बैन परै नहि जीव रहै विष मैं न मांस रहै जरा
छायौ ॥ सो बैन रहै तो नैन मौन रूप हाव न हाव रीयो परत्ताव
तचायौ ॥ [illegible] प्रेम सत प्रोधि दुसासन
वीर ज्यौं कै वसबे तउ अंत न पायौ ॥ वा सरस के बिछुरैं विरह अ
व द्रुपदी कै पट ज्यौ अधिकायौ ॥ रसप्रकास ॥ सखी सौं विरनी
बैन ॥ रस्त्री कौ उक्ति है जिम्यौ वीर कहति है ॥ हे वीर संबोधन
नायक कै आयवे कौ दिन अवधि सो दुसासन है ॥ किं
वा दुसासन वीर है [illegible] सो विरह कै प्रेम विरहसौं
हैं विरहसौं ॥ धु आवत ज्यौं त्यौं अंत पार नही पावै है आली
विरहावान जैसे पंचाली द्रोपदी कौ चीर बढ्यौ ॥ अवधि
दुसासन रूपक ॥ विरह उपमेय चीर उपमान ज्यौं वा
चिक वाचक बोधक ॥ रसालंकार ॥ रसगन ती
गनि वे तेरही सत रस अंत लेखमान ॥ अलिप्रवंतति प्रो
मलें परे रहे होत न प्रान ॥ ५३८ प्रोषितपतिका प्रौढा कौ बैन
सखी सौं ॥ कवित्त ॥ देवरी के सी करी यन भाव निषेसी धौ

वारि कहा वनि आई॥ औ छिन हूं नीति गई न लई सुधि एती घरी
उरमै कठिनाई॥ ताहि नतीजनि तीजनि लेत रहै नमवेस मए तो
नयासु बदाई॥ एतियै प्रेम सौं छै सबै सौ मनौ प्रानपरे तन
मैं रहै आई॥ रसप्रकास॥ विरहनी को वैन सखी सों॥ गनतीग
नवा ता तें गनिवे तें रही॥ हमारे प्रान गन नामें नाही॥ धूत है
जो है तैसी प्रछन्न समान॥ नहि रोवरि है अरु हिय सखी प्रै
य तिय सौं समान है॥ निति प्रवकी वरंबरि वा तन मै प्रान पारे रहै
जो तिय की हान नहि होत है सो पन्नाये रहति है गनतीमे नाहीं
ति पिउपमान प्रान उपमेय तैसो वाचि क गनती उत्पाद धर्म
९ लुप्ता उपमालंकार॥ रस॥ जाति मरी विछुरति घरी जल
सफरी की रीति॥ छिन छिन होति बरी बरी अरी जरी इह प्रीत॥ प्रसं
ग यह औ नायका की वानाव कहा है वियोग तें बरी व्याकुल है
अरु प्रीत बढति है सु सखी सखी सों कहति है। कवित्त
नैन प्रघात न है मिरखे निरखि नवैन परैन घरी है
व्याकुल है अरु याव [illegible] परी तल पै विन नीर मनो सफरी है
मैन मरंरवि प्यावित ही नित ही नित होत बरी वबरी है॥ जाति
मरी छिन के विछुरे रस प्रीत जरी जग कौ अवकुरी है॥ रस
प्रकास॥ नायक की उक्ति जल सफरी औ सफरी प्राची ना
म मछरी की रहरीत है। एक घरी विछुरति के मरि जा
त। अरी सखी प्रीत जो है छिन छिन मे बरी के रूप के प्र
ति बरी बढ होत है॥ गाढी पत है रस सी प्रीत जरी इह॥
प्रीत लोका तिं॥ लोकप्रवाद है॥ रस॥ मारं सु मारस करे
बरी अरी मरीहि न मारि॥ सीचि गुलाब घरी घरी अरी वरी

यह नायका प्रोषितपतिका उद्वेग दसा नायका कै वैन सखी सौं
अंतरंग सखी वह तरंग सौं कहै तउ वनै ॥ कवित्त ॥ वालम विदे
गते विकल अति प्रान कहूं सु रतन न आन वनै सुख ही
कौं दाउरी ॥ और उपचार करि मारि न मरी कौं जो हितू है तो तू
हेत्म प्रान प्यारे कौं मिलाउरी ॥ घरी घरी सी च तिउ लाव
के सालिल सों तहि कि पैाक हाचाहि तहे मोहू धौं वनाउरी ॥
मारि तिघरी है मर मार की उरी है विरह गिन वरी है अव वारहू
जिवाउ री ॥ ह. रि प्रकास ॥ नायका की उक्ति सखी सौं ॥ कैं वास
सी हैं दिवस भी वाकय ॥ मारैं मताने मारि कै करै प्रति रु
मार वरी हूं वोट लगाई ॥ या तें उ सरीन मारि पैर कैं मा
रे है ॥ घरी घरी ये उ लावसी विवे क्वरी सखी ॥ किं वाहू प्र
रहै है हिर है है ॥ ये सीतल उपचार कारि जिवावै गी ॥ ए सखी
मैं या वात हौं वरी है मोहि मति वारै ॥ विं तानायका रिसति
वारैं ॥ उ आवृत्ति दीपक ॥ म. ल. ॥ विरह विथा जल परस विं वि
मिं वसिय तमें जिय ताल ॥ कछु जानत जल थंभ विधि धुर
जोधन लौ लाल ॥ ४८१ ॥ यह नायका प्रौढ उरा हनौ देति है ॥
नायका कै वैन नायक सौं ॥ सवैया ॥ ह. रि प्रेम सरोवर मांही
व मैं वसि वौ निस वासर ठानत है ॥ तहां नीद ति वैा गति पार
नि दैन उपायक हू उर आनति है ॥ कवि कृष्ण कहै अव मैं उर
कौं दह सर्वौ विय मेदु न या वति है ॥ जिय जानत है दुरजो
धन लौ जल थंभन की विधि जानत है ॥ ह. रि प्रकास ॥ ना
यका की पाती नायक कैा ॥ विरह सो जो है विथा पीडा सो
है ताके जल परसि कै न हमारै सो जीव सो तलाव है ॥

१५६
196

तामेंतमवसततहैपरंत॥हमपेदुषतमेंव्यापतनहीहैं॥हेसाल
दुरजोधनकीतरह तिमजलथंभविधजानतहो॥जैसेंदुरजो
धनपानीमेंधसेपानीनहीलगे॥कपाजलसरवका॥दुर
जोधनउपमानलालउपमेवसोंवाविकजलथंभवि
द्या॥ १२ रोयमाग्रसंक्राय॥ हसोवतसपनेस्याम
[illegible]॥घनसिलिसिहरतिनेंगो॥तवहीटरिकितहुगईनीदे
नीदनजोग॥ ५४ यहनायकास्वपनदरसननायकासकी
सौंकहतिहे॥नीदकीनिंदाकरतिहै॥ सवैया॥ आलीविछु
रमपैजवतेछतीयांवहुलोगतिवियोगतईरी॥आऊलला
मनमोहनसोसपनेमेंभुमानकमेटभईरी॥मेंउनिपा
वतरायवेकोहिलवेमिलवेरसकेलठईरी॥नीदहूनीद
वेलापककैतवहीकछुभागिगईसुगईरी॥ इहप्रकासना
यकाकीउक्तिसखीसों॥घनस्यामकृष्णतिनकसंगसुप
नेमेंसावततवे॥हिलमिलवेताकहायवेविपैगकोहरें
तवहीटरवेतासमेंकिनूकितजातीरही॥नीदहूनिंद्राभी
हमवयासतेंपुगइजातीरही निंदनजोग॥ निंदवे
लायककासमेंजातीरही॥किंवानिंद्रावोनिंदजो
गनहींभये॥ किंवाविरहनीवोनिंद्रलाई॥निंद्राने
जान्यो हमारेनिंद्राजोगजोगमे॥विवादरवसंकार
सोविवादचित्तवोहतोउलटोजोकछुहोय॥ हसना
सोवरनना॥ पियविछुरनेकौदुसहदुवहरविजातियोसार॥
दुरजोधनसोंदेषियेहरितप्रातीहरवार॥ ५५ यहवरस्ता
विकहरवदुषदोउ॥एकुचकवाकीउक्ति॥नायकामदमेंसखीसखी

196A

सवैया॥ नेह लग्यो मन भामनि सो वहि वैरी सु सिरारिको
जी मे रुह हानो॥ वीर रजो कोउ आयो वलामन ताही समे सुनि
थे अकुलानौ॥ ज्यो विदुर रदु बहात मह सुभमाय वे को वि
नसोच समानौ॥ भ्रात को पुत जमो तिय को सुव पूल्यो वध्
कमयो कुमिलानौ॥ रसिक प्रकास॥ सखी सो सखी॥ तिय
को विदुर वे को दुसह दुषदे॥ ज्यो सार पिता को घर रहत मे
नेहर वकहति है॥ ज्यो सार जाति मे रहर बैहै॥ दुरजोधन को
हरावयो॥ जब तमेर इह सोक एक बार है रुजे भव मरैगो॥
दुरजोधन की नारि हिय जैहै॥ इह बाला प्राण तजत है॥
इह सोक की भाव संधि है॥ कहु ज्यो सार इस बार अैसो ना
ठ है॥ रत्ना कहै॥ इहां इह भी अर्थ॥ हे सखी वह नायका प्रा
ण छोडति है ताको हे से को बारण मति छोडि वे देया॥ प्राण
पति पति को भी कहति है॥ एक नार के अर्थ या दिन मे॥ दुर
जोधन उपमान॥ वा सउ वमेय लो वाचिक प्राणन जिवे
धर्म॥ पूर्णोपमा अलंकार॥ स्वल पाती वर्नन॥ विरह विथा
विनहि लिखी पाती दई पठाय॥ आंकि विहूनी यों सुचित्त स
ने बांचित जाय॥ ९४४ प्रोषित पतिका पाती आई याके दौ
नके विरह की अधिकाई॥ कवित्त॥ विरह सरीर ते न तन की
तनक सुधि बाल अति व्याकुल अचेत ऐसी है गई॥ लिख
वे को लई पाती लिखत वनै न कछु हूं अैहे हेत ही लपेट प्राणपति वैप
ठै दई॥ वाकी चित लाई की कहा लो अधिकाई कहे एक सी कुह
की गति एकवार है गई॥ पर पति नीवर जई प्रवेक सीनी तौ उवा
विरह निरिप वै सपाइ छाती सो लई॥ रसिक प्रकास॥ सखी सखी वाक्य॥

व

२६७

197

विरहसों विकल तिनाहीं लिखी नायकानें नायककें॥ पातीपठा
यदई सून्य चित्तसों पठाई है यातें आंक विरहनी काकें चित्त सादृस्य
सो लख्यो है॥ योंपा तरहसों बांचत नाहिं है॥ किंवा दोउ विरह
विकल है॥ नायकानें विन ही लिखी बिन हीके अर्थ॥ हृदयम
न विना लिखी॥ अर्थ पातीपठायदई॥ आंकि विरहनी पातीकें
पातरहसों चितकरि॥ सून्य है जो नायक सोवा पातीनायक है
वाकें दुबसा कहत हैं जात है॥ नायकाकें खबरि नहीं जो बिन
लिखी पातीपठाई॥ नायककों खबर नहीं जो विना आंक की पा
ती बाचत हैं॥ किंवा॥ विरह विकल नायकन तिनाहीं सों बिना
मनसों पाती लिखी पठाय देनी॥ कैसी लिखी है आंक वि
रहनी विकल है॥ दोउ आंक अक्षर करिवे हीन हैं कमि है वा
गदवे पहले स्वासी लिखवे है॥ एसी कें अर्थ कल्पानता
करिवे हीन है॥ तमन आवों गे तोरा मोरे कल्यानन ही
टोसचित यों पातरह सूनचित कीयो॥ लघु उरउरलघु है॥
तो है निजरदता अक सारा॥ सूनेपाकों तमे वाचत जाति है॥
औरवहीं अर्थ॥ आंव विरहनीयों सून चित॥ आंक कहींतो
लालन जीवन बोलत नकरिये विरहीं न सों यो पातरह
सूनचित कियो॥ पर सूनेवांचत जात है॥ विनाही लिखी
पातीपठाई॥ ताकों विरह विकलता कारन है॥ यातें हेतु
अलंकार॥ हेतु अलंकृत हेतु है कारन कारज संग॥
मूल॥ रंगराती रातें हिये प्रीतम लिखी बनाय॥ पातींका
ती विरहकी छातीरहि लगाय॥ ५८५॥ पती प्रोषितपति
का सखी सखी सों वैन॥ कवित्त॥ जबतें वियोग भयो लाल

मनभामनसैांनवहोतेप्यारीतलपतऊरसायवे॥नैनजल
वरसतमिलवेकोंतरसतसरहत्तमद नमरूरवऊआवैवे॥अद्धि
ग्रनुरागसैंवनायलिषीप्रातापत्ति॥ हमैप्रधानकहीदीनीका
रूप्रायवे॥हितग्रकुलातीसूतेविरहकीकातीजानिरातीपाती
रहैजातीछातीसैंालगायवे॥ हरिप्रकास॥नायककोईदि
नमैंग्रावैगोत्तवपातीलिषी॥रंगीनकूंदेवे सषीसषीसेंन
रंगसैंराचीलालरातेहि वैग्रनुरागमयेहृदयसोंप्रीतम
नेवनाई॥कि जायवातसोविरहदूरहोवेग्रेसीलिषी॥वाती
वैसीहि विरहकाटिवेकांतरवारहै॥यहजानिकैनायका
छातीसोंलगायरही॥रियमैविरहदुषदेतहै॥यातेतोके
पातीसोकातीतरवारहै॥जोनीलछमाहोकहो॥रूपका
ग्रलंकार॥ मूल॥ नरं ऊरसीऊवरगरीकजालजलछिरकाय
पियपातीविनहीलिषीवांचीविरहवलाय॥ ४८६ यहप्रो
षितपतिका विरहकीग्रधिकाईपातीलिषवेहेजानीगई
कवित्त॥प्यारेकोसंदेसोलिषवेकोवैठीसाहसवैलिषतवने
नकैरहिविरहमलीनीहै॥ग्रेसीयललवेदऊनसोंवीसज
नीकेहायऊनजायत्योंहीप्राताग्रोरहायदीनीहै॥तरत्तात्तवा
नकेपरसिपरजरीग्रोरऊपरतेगरीग्रसुवनजलभीनीहै॥
घोलतिहेपातीपियपातीकीऊरतिछातीगरवहिग्राईग्रा
षिभरिलीनीहै॥हरिप्रकास॥सषीसषीसों॥ हायपवीगर
मीसोंतरनीसेऊरसीऊवराहीगलगईहै॥फकजलसहतिजो
ग्रांसूजलनाकेछिरकावसों॥पातीलिषतावैसोदनकी
पैहै॥लिपनेविनालिषीहैपातीवांची॥विरहविकलरव

वलायत्तौवेकुछदे॥ वाकौहै लिखी जायतौ वचां वीजाय॥ ग्रत्तरकौ
रनसोजहौ॥ [illegible] ॥ दोत्त
हिसों तिवि सावत्ता॥ विन ही कारन काज॥ मूल॥ कर लैं चूमि
चढाय सिर उर लगाय उर जमेटि॥ लहि पाती पिय की सुघत्त वां
चत घर तिसमेटि॥ ५४॥ यह नायका की पाती आई तासों दे छिना
यका की जो दसा भई सु सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ मोहू
न के विछुरे म्रगनैनी चकी सी फिरै उर मैं अकुलाती॥ प्रीतम की
तम आवत लिखी कछु ऐसे मैं आई अचानक पाती॥ चूमति पा
व के नैन लगावै सी सचढाव ही वै हुलसाती॥ वारहि बार
पिय वौ पसौ वाट हि तिवांचि सुमैं हि छुवावति छाती॥ इति प्रकास
सखी सखी सों॥ यों रहाय मैं लेके चूमति है सिर पे चढावै है॥
उर छाती सों लगावै है॥ अजा को २ टूटे है॥ पिय की पाती तिया
नायका सहिते वांचित फिरि समेटति घरत है॥ पिय की पाती
वांचति है॥ रहसी पाठ है॥ स्वभावोक्ति अलंकार॥ पिय आग
मन रनन मूल॥ म्रगनैनी द्रुग की फरकं मन उछाह
फूल॥ विन ही पिय आगम सुमि पल्लट न लगी दुकूल॥ ५५॥
आगमपतिका सखी सखी वैन॥ सवैया॥ वाल वरी अकुला
ती हिये नंदलाल वियोग विथा उर लागी॥ ऐसे मैं आय अ
चानक ही हुलसी छतीया सो घरी अनुरागी॥ वाम वि
लोचन के तर वै मृगलोचन जी मै उछाह सनपागी॥ फू
लम री विन हीं तिय आग मचार उ कूल सु नाम न लागी॥
इति प्रकास॥ सखी सखी वैन॥ म्रगनैनी नायका द्रुग के
फरके उर मैं उछाह है तन सारीर मैं किंवा कुच सो फूले॥ वि

नाहीतियकेआगमउमगिकैदुकूलतस्यपलटिबेफेरबेस
जी॥मृगकेसे नैननसेनैन हैं॥जोकमृगकेसेनैनउपमान॥सोन
हीहोतातिकमहीहै साधारनधर्मनहीहै॥केवलनैनउ
पमेय है॥उपमा॥अनुमानभीहै॥दृगकेपरखनसो
तियकेआगमनिश्चयकरनो॥जहांआदिकूकेहेतसोजानले
तअनुमान॥मूल॥वामवाहुफरकतमिलैजोहरिजीतन
मूर॥तोतोहीसोंभेटिहैराधिदामिनीदूरा॥५४९ आगमपति
कानायकावामभुजफरकतहै नायकाकोवेनवामवाहुप्रति
सवैया॥काहूविसासीविदेसवसोवसिमेनदईवहुभांतिहिवै
केसेंहूवामनभामनसोंअवजोभरिआंखिनदेखनवैसें॥ना
मउजागरकीतोभलेंअवतेंतोहूहियेनरुखेपनकेसें॥राधि
होदूरिपदामिनीवाहकेतोहीसेंआछेआलिंगनिदैहौ॥
हरिप्रकास॥आगमपतिकाकीउक्तिवांईवाहसों॥एवाम
वाहुजोतोहिफरकतवेपियजीवनकोमूरमिलैतोतोप
र.वैतोहीसोहौंभेटैगीदामिनीवोहिकदूरियालैवे
जौमिलैतोतोहीसेंभेटैं॥संभावनाअलंकार॥मूल
कियोसयानीसखिनसोंनहीसयानेयहमूल॥दुरैदुरा
ईफूललोंक्योंपियआगमफूल॥५५०आगमउत्सवना
यकासोंसखीवेन॥कवित्त॥ललितकपोलआजुमंद
मुलकनिलागेआंनदेमईक्छप्रेरअबनाईसी॥कौतो
कूरीरुचमानितेकछुरचाईठानिघूंघटमेंठाकिमुसकी
ठकोनुराईसी॥नाहीनेसयानपनवीसविसेमूलहै
सयानीसजनीनसोंकरीजोचतुराईसी॥फूलकीसुवाससों

विकासवदलेई होत फूलसहरि आगमकी कोऊ पूछै दुराई री॥ इति प्रका
परकीयानायकाको उक्ति आयो है॥ सखिन सों नायका मैं नहीं
कहतो॥ सखी जान गई नायका सों कहति है॥ अमतो सया
नी है। सखिन सों सपान चतुराई कियो॥ नहीं कियो चतुराई के
आपे ब्रूकराई॥ ऊ ज्ञान तान नहीं है॥ लक्षन हे॥ प्रिय के आग
य सौं फूल है॥ फूलन सौं फूलकी तरह दुराई छिपाई कैयो क
रि छिपे॥ फूल छिपावे तो काँवो नहीं छिपे॥ कियो सयानी
कियो उरवदासी सदै तासों आँसा लगाई ए॥ अमत सया
नी सखिन सो॥ चतुर सखिन सों सयान चतुरता कियो सो
न सिखाही ये॥ पहल मारो मलपुराई है॥ कि वा इह सलन
है कि वा स्वर मेटि सो इह सलाही है॥ औरव है अर्थ॥ प्रिय
आगम फूल उवमेय उपमा अलंकार॥ फूल सिरही है॥ उह
हेतताहीं प्रिय के आगम निश्चय कियो॥ अनुमाना अ
लंकार॥ जहाँ अरिष्ट हेत सो जान लेत अनुमान॥
लक्षन आयो मीत विदेस ते काहू कहतो ज कार॥ सुनि हुल
सी विलसी हसी दोऊ उर नितार॥ प्रथम इह नायका उप
पत्ति सों दोऊ नकों नेह है॥ ताके आगम दोऊ नके रवै ध
यो याही ते परस्पर जानत री॥ सखी सखी सों॥ कवित॥ क
रि के बिछुरे ब्रजलाल उवो मन नहीं मन सौ मुसकानी॥ कूछ
क है बसराय सवै को मनु वीठि उहू मिलवे गरि ठानी॥ मौरह न
मीत विदेस ते आयो पुकार के काहू कही जतनानी॥ सो सु
नि दोऊ दहू नलिलो कि लवी विलसी हुलसी उसिकानी॥
इति प्रकास॥ प्रिय नर्म सखी सो नायका पूछत है॥ सो सखी

कत्ति कोई और रहस्य मैं और रहस्य सों कहति है। नायका सों पूछ्यो है
सखी मीत हमारे विदेस तें आयो तब सखी कहति है॥ काहू ने
तोहि कहे कौ कह्यो है यह बात सुनि कै नायका हुलसी॥ औ
वह हसी तब सखी राजी देखि हसी॥ दोउ नायका औ सखी॥ उह
न निहार आपस में देखि कै दोउ हुलसन आपस में प्रसिध है॥ र
सि सों दुहुन के मन मैं बात की तरह सों कोऊ देखहा है॥ कोऊ कहति है
हुलसी छाती वह हसी हसी औ बै दोउ हु कुचन सों निहार कै
प्रथम मिलन हमारे हाय भयो॥ किंवा नायका पास कोई उपटीस
खी बैठी थी तब काहू ने कह्यो मीत आये॥ सो सुनि नायका वह
सी हुलसी॥ वह है जाहि सखी सौं पहले ही लखावे थी॥ सो हसी
आउ तिहारी प्रीत जानी॥ परस्पर निहार कै इस बात को ई हों
कोई कहति है॥ किंवा दोउ पाय कौ जाहे आपस मैं प्रीति है॥ त
हां काहू ने कह्यो है॥ दोउ हुलसी दोउ वह हसी दोउ हसी॥ स्व
वाहि अलंकार॥ मूल॥ मलिन देह वेई वसन मलिन विरह
के रूप॥ पिय आगम औरै चढी ताली औ अनूप॥ ४४ आ
गमपतिका सखी सखी वैन॥ कवित्त॥ लालम नभावन के
विछुरे में एक सखी अति ही विकल चित्त पर्यो चिंता कूप है॥
अंधक सुअंग पीर तीर सी लगत है पे चांदनी लगत जैसी
ग्रीषम की धूप है॥ की नौन सिंगार बार वे ही पे मलिन
देह वसन मलिन वई विरह के रूप वैसे कहे कवि कूस पिय
आगम सुनत चढी औरै आप आनन पे उमगि अनूप है
॥ इति प्रकास॥ सखी सखी सौं॥ मलिन देह है वे ही वसन वह म
लिन विरह को रूप है॥ पिय को आगम आमनो सुनि औरै ही
आनन रूप वे॥ आप चमत्कार॥ रूप अनूपा और है दिन और आजो

सू॰ल॰ कहि पठई मनभामतें। विरह आंग की बात॥ फूली रे आं
न गन मे फिरत अरी आंगन मात॥ ५५३ आगमपतिका सखी
सखी वैन हर्ष संचारी॥ सवैया॥ वाल वियोग मलीन भई
विसरी सुधि हास विलास हू सूले॥ जब ते आधि विनीत भई उर
एक ही साथ सवैं सुख झूले॥ आवत ज्यों मनभावन नैक सु
नि कै उमहे सुख पुंज समूले॥ आंगन मे हरि लखी विरहें दुर
अंगन आंगन मात न फूले॥ हरिप्रकास॥ सखी सों सखी॥ पिय नैं
विदेस मनभावती मन को भावै ऐसी आयवे की बात कह
पठई नायका सुनि कै अंगन मे फूली फिरत है। आंगन मे अं
गन ही समात है॥ लोक मे अलंकार॥ सू॰ल॰ २६ बरोहै मिल
त पिय प्रानन के ईस। आवत आवत की भई विध की घरी बरी
स॥ ५५४ आगमपतिका नायका को वैन सखी सों॥ संचारि
के भेद मे अधीन सुकुमानी॥ कवित्त॥ आयो विदेस ते प्रा
नपती पीतिया की सुनै छतिया सियराई॥ नैनन लागि रही रि
स साध मनोज उमंग रिये भरि आई॥ कृष्ण कहै मिलिवे क
हु काहू सों वार मे जो लेर हो सुखदाई॥ आवत आवत की
सु घरी विधवासर हूते भरी सरसाई॥ हरिप्रकास॥ सखी
सों सखी वैन॥ दरवाजा ते वाहर की ठौर आवरो है॥ वि
यजो है प्रानन के ईश्वर सो वरो है औ हि हितजन सों मिलै
बो। आवत आवत की जो घरी है॥ अब आवत है अब आ
वत है॥ सब को अर्थ कहत करि बड़ी है सो घरी॥ अति प्रमत्त
अति आतुरता जे विधकी विधाता की घरी भई॥ किंवा
विधकी घरी की घरी स पहर भये॥ घरी सनामयहरि कै
जानी॥ अति वडी भई घरी या अर्थ मे सुक्षेतनमा॥

म्रल॰ जदपि तै जरोहाल वलं पल कैं लगीन बार॥ तउ षें
डों घरकैं भ्रमसें तें हैं कोस हजार॥ ५५९ आगम पतिका कें
औत्सुक्य संचारी॥ सवैया॥ कोन हू काज के प्रात विया प
रदेस सगो वह तो चित पयो है। राधिका की सुधि के कवि कृष्ण
वियाधि न भौन को गौन ठटो है। जदपि तै जनारी निवरे
घर तद्दूप कोस हजार भयो है। वडे को पैंडो न काटै टरै कटै
अभिलाष सबू हिये उमटो है॥ रसप्रकास॥ सखी सों सखी
वाक्य॥ जदपि तौ भी नेजरोहाल सी घरवा लव ले है वलजु
ते है रव हाल सो अध्यजानिये॥ एक पलक बार विलंब
न लगी है॥ तो भी ग्रेहडौं घर की नजीक रहीं हजार कोस
के तें हैं भये॥ औत्सुक्य तातें आगम पतिका जानीये॥
हजार कोस एक पग सों वडें भयें रूपक भाव मा॥ विछुरन मि
लन वर्नन॥ म्रल॰ विछुरति जिन सके चरइहूं बोलत बैनन बे
न॥ दोउ दौर लगे हिये कि वे निबोरे नैन॥ ५६० इहां वरद
सते आगम हूं न कीहूत कै आधिक्य सखी सखी वैन॥ सवे
रवतें आव समे कहते पल आठ भयें पसमागार हे ना॥ आ
विदेस वितें वह वासर ...द ल ल्ला प्रति चैन के अवेना॥ एतौ
विछोह भये हू जियें रहे लाज नेतो लतिवे न बने ना॥ दो
उ मिलें लपटाय हीये पें निचोरे कि वैस कुचो है सेनेना॥
रस प्रकास॥ सखी सखी वैन॥ विछुरे सों जिय पाप संकोच तो
वे नवचन कों लतिन हीं वने॥ लाज ही सों दोउ नी वेन न वि
चे॥ दोउ दौर के हिय सों लगे वे न न नहीं वो लति है॥ या
को है कि यो विछुरे जिय सों किवा निचोरे नैन करिवो ६०

मूल॥ ज्यौं ज्यौं पावक लपट सी तिय हिय सौं लपटाति॥ त्यौं
त्यौं छुई उजलाव सी छतियां अति सियराति॥ १५७ पदपद
कृष्णचंद्र का मैन ही ताकी सवैया प्रवीनोक्ति॥ सखी सखी
वैन॥ सवैया॥ दृ जो हुलास बढै जब ही तब ही वह केलि
के मंदिर जाति है॥ पूछ मषै धरपात री देह प्रकास ते गेह उ
रे दिन राति है॥ ज्यौं ज्यौं हि पावक की लपट सी हू कै यारि ति
या उर सौं लपटाति है॥ त्यौं त्यौं उजलाव की सी चीसी मैं
रन की छतियां अति ही सियराति है॥ हरिप्रकास॥ सखी सौं
सखी वाक्य॥ ज्यौं ज्यौं जैसे जैसे पावक अग्नि की लपट
ज्वाला सी तिय हिय सौं लपटाति है॥ त्यौं त्यौं तैसे तैसे
उजलाव सौं छुई सी ची है॥ मानो ग्रेसे छाती सियराति
है॥ सीतल होत है॥ पावक लपट सी उपमा छुई है मा
नो जानीयै॥ लौ पउत्प्रेक्षा॥ पावक लपट सी॥ नाय
का॥ सो सीतलता विरह तै को जो॥ वियावना॥ काउन
वर्नन॥ मूल॥ दीठ दिये ही नैक मुरि करि घूंघट पट टारि॥
भरि उजलाल की मूठि सौं गई मूठ सी मारि॥ १५८ होरीस
मय नायका की सो नायक सखी सौं कहत है॥ सवै
या॥ मो वैक हा कहत है नव नैक रि जे सीहती वृजनारि गई है॥
दीठ दीये ही मुरी मन कै लै उहि काउन वेलि विसारि गई है॥
घूंघट कै पट उघरि कै मोंहि उसारिकै नैननि हारि गई है॥
ये भरि मूठि उजलाल सौं मारि प्रवानन मूठि सी मारि गई है
हरिप्रकास॥ नायक की उक्ति सखी सौं॥ दीठ दिये ही नैक
भौरो मुरि कै फिर कै कर सौं घूंघट पट सौं टारि कै॥ दीठ दिये सौं

नैक चोरै उरिवे किसेबैकर सैं घूंघट बटसोटारिकै।। भटी
है जो गुलालकी मूठी तासों मूठिसी मारिगई।। मानौ।।
अन्तकासखदाबसुसंज्ञा।। रूल। दिवैासु विपलखिवबन
मै बेसति फागुखियासु।। वाढतहू अति धीरसु नि काजत
बनात गुलाल।। ४५४ यह टोरी समवनावकाकी निका
ई अनुरागकी सखी सखी सैं कहति है।। सवैया।। रुरिवे
लति फागुवधू गनन मध्य सवा सबके सारंगमनैं।। इतका
वन्तरी बृषभानुजू ताउ मध्ये हरिके उन मोद मनैं।। जब
नैनन मै तकि डारचौ लल्ला अपने कर सौं वहराय धनैं।। अ
ति वाढति है जउ धीर तउ बहकाढत नैन गुलाल बनैं।। रूर
प्रकास।। सखी सौं सखी।। फागुको ख्याल खबेलौ है।। अ
तिके अनुचपलखि सो पियनै प्रीया सों अतिलखिकै
किंवा तियाको पियनै अति लखिकै गुलाल डिकोगु
लाल डारचो।। चपनैनन मै वाढतहू धीरखी डावाडे है।।
देखिवेको वाधिक भयो।। यहती गुरुको अर्थ।। सो
गुलाल पियके रूपको है किंवा प्रियाके रूपको है
रूपके रसरसकी प्रीति सो काढत नन हीबनत है।। किंवा
अति धीडावाडे है।। तौ भै गुलाल काढत नही बनत है
कारिवे रूपरसकी प्रीतिकी अधिकाई।। किंवा पियने ना
यकाको लखिकै फागुखियाल मै गुलाल डारिकै डा
रचौ।। कारकै लिये चबनको।। याके चपनैनन मै सा
लीहूप।। ताते सोभा विसेष होय।। सोचन लखसावैति
तमीको लखचावै भटी देबनकी चावै गारी गावै सरकारि कै

तीसरो ॥ आमिलो दोहा की अर्थ न और वहै अर्थ ॥ किंवा ॥
नायकाको कोई और मोहे अति प्यारी ॥ तासों काउ भेबात
बेलत है ॥ जासों प्यारो प्यार तानै साषि दषिकै नायका
के वचन मैं उ लाल रियो ॥ तब जो अति प्यारी पी सोया
वा तासों वाकौ अति पीडा वढै है ॥ इसी सो किंवा नायका
को दुख भयो है तासों ॥ वेपा नायकाको नायक के नेत्र
को ॥ उ लालकाछत न हीं बनत है ॥ परकी प्यारी है यातें ॥
पीडा वाछिवो उ लालका छिवेको कारन है ॥ तो भी उ ला
लकाछिवो कारज न ही भयो ॥ विसेषोक्ति जो है तासों का
रज उपजै नाहि ॥ मूल ॥ उ ज्यौं उ सिषै सापति वदनौं गुरु
तिं वहसिं सकुराय ॥ त्यौं उ लाल रुठै गुठी सिरकावत
विषजाय ॥ २६० ॥ टारी मैं नायकाकी चेष्टा देषि नायक
रहयो है ॥ सो नायक उ त्तिक रत है ॥ सषी सषी सौं कह
है ॥ कवित्त ॥ आजु तू जो देषी है हरी बेलकी समाज वह
सोभा मेरे नैन न न मेरहे है विहारि मैं ॥ राधा वनमा
ली कै विलास लषि आली हाली मैं धवा करा रस उ
मान जागि गरिकै ॥ ज्यौं ज्यौं प्यारी रुषि कुहि सोवति व
दन वह सत सत रायरि हको सोर छक रिवै ॥ त्यौं त्यौं दषि
देषिउ कौ कृष्ण प्रान प्यारो लाल सिरकावत उ लाल
मूंठि मूंठि मूठि परिवे ॥ रसिकप्रकास ॥ सषी सषी वैन ॥ जो
ज्यौं ३ रविके वदन मुषिके सांवति छपतु है उचे है ॥ वह
सति है स त्तिराति है ॥ नायक कौ चेष्टा आछि लगी ॥ ता
सों त्यौं त्यौं उ सालकी मूंठि मूंठि सौं विषवाको सिरका

नायक छल करि उसु वाकी चेष्टा ताको देखति है॥ तरचाके
ति स्वभावोक्ति जानौ॥ मूल॥ छुटत मुटी संग ही छूटै लो
क लाज कुल चाल॥ लगित उर नाइ पै चेर हौ चल ही ६ नैन त
उलाल॥ ५६१॥ टीका सखी पसाव ते सखी सौं कहति है॥ कवित्त
होरी कौ समाज वरसाने के बगर आजु कहा कहौं आली नन्द
लाल नंदनी को ख्याल री॥ इत उत्तरी गज मैया धिक कावि रोरी उत
सर॥ तिस बान नैन्यो मदन उपालरी॥ छूटत मुटी के संग
छूटत है॥ एक वेर गान उन जन सौ गलज्ज कुल चाल री
को है कवि कृष्ण त्यौं त्यौं लागत उर हे के तन॥ के लावव
उचित लोचन उलाल री॥ इति प्रकाश॥ सखी सौं सखी बैन
उलाल की मूठी छूटत वे सोभा विसेस वसों लगहौं छू
टत है॥ लोक की लाज अरु कुल की चाल री तन पर पर व
की ओर न हौ देखने॥ देपति एक वेर ही लागै है॥ चलि
के नायके चित ओ नैन ओ उलाल॥ सहा ति हो सहे
ति उर साथ ही वर मैर हा सर साथ॥ मूल॥ रसभिजा
दोउ हनतो छिवरहे टरैन॥ छवि सो छिर कत प्रेम रंग भ
रि पिचकारी नैन॥ ५६२॥ परदोउ नकी परस्पर विलोकनि
है॥ सखी सखी सौं टीका कौ सम ता दे करि कहति है॥ सवे
आजु वृषभानु की कुमारि मनमोहन सौ नैनन मैराबै
होरी कौ ख्याल करिवे॥ मरहिज वाप को उर कत न द
उरिकरहट वलाय को उजात न हौ टरिवे॥ मिज एव ना
परस्पर तिरि स सो परस्पर आगै प्रेम राग के उलाल रंग टरिवे॥
कृष्ण कहत छिर कत छवि सो छवी लेदोउ नैन पिचकारी

रसिप्रकासा॥ सखीसखीसौं॥ रसप्रबन्ध रागसौं किंवा उला
लके रस जलसौं बरु लेभिजात॥ अथितिप्रबन्ध रागजुत
किये॥ दोउ नायक नायका नैं परस्पर जाकौं अष्टतो
भी छिपे करहे टरें नहीं॥ मोह संचारी के सात्विक नहें
होत है छवि सौं अदावि हे बकहि कैं प्रेम होत है॥ रग
ताकौं छिरकत है पिचकारी सौं नैंन है ताहीं सौं भरि के
रवक अलंकार॥ उपमान रउ पमेय मै भेद वरनन
बाप॥ सत॥ गिरत बंदी कहुँ कहुँ रहत तिकरि वसी जलि
पटात॥ ऊरत मुठी उ लालमरि छुटी मुठी है जात॥ ५१३
यह होरी खेलकी समय सखी सखीसौं कहे॥ दोउनको
सात्विक भाव भयो॥ कवित्त॥ मैरोके हो मानरी उ तैंते
व लिये छिनैक अरु पाउ कृमच घरे होरी खेलकी अनहीं
है॥ केसर मैं सनें अति रस किरसी सो तरसा वरषा जाती
ई सब सूषन को छुठी है॥ जदि परस्पर दोउ सबसों ढु
वे को होत अतिचाव हों उलाल भरि मुठी है॥ कहुँ क
रि केसरंजि पसी जिल बटा ति कहुँ कोते गिर जात ताते
खोल होत मुठी है॥ रसिप्रकासा॥ सखी सखी वेन॥ केवा
सात्विक हाव ता सौं कहुँ गिरत है कहुँ कर मैं रहे सो पसेव
लीनी है चरि के॥ सो छुटत भै मुठी होय जात है॥ उलालकी मुठी
प्रे सो भी पाठ है गिरे इत्यादिक रिस मुठी होंनी को समर्थ
न किये॥ काव्यलिंग॥ सत॥ ज्यों ज्यों पट रटक ताह टताह
सतन्य चावत नैंन॥ त्यों त्यों निपट उदार हू फगुआ देत
बनें न॥ ५१४ यह नायका प्रौढा होरी के खेलको समा

गे नायक सों आदि छिपे कैं सौंप त्यौ॥ है सु सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ फागुन के [illegible] सके सु समाज बनि आगे आजे हैं सो तें होय करसना सो बसंत बनें न है॥ सांकरी गली में नंदलाल कौं तकरि वाल मन भायो करति पढायो चित तवें नहै॥ ज्यों ज्यों नेह चाव भरी लोचन नवाय पट उघटि कहति हसि हसि प्रिय द्वैन है॥ जैसो जैसो चित लाल नके क्रांति पट उघारत उघ-आ कौं देवो कौ हमान तमनें नहै॥ टिप्रकास॥ सखी सखी सों नायक कौ ज्यों ज्यों उघट कहत है॥ एसे हैं नैन नवावै है। त्यौं त्यौं तौ भी नि पट उघारै है॥ सेवा की छवि देखिवे कैलिये घूंघट उघारत बनें नहीं॥ किंवा घूंघट उघारत में पहले जो लाज उब नें है नही है सि रै॥ विसेषोक्ति॥ उघारत आकार न तें दान कुलज नहीं भयो॥ किंवा एक वेर वहत भाव भए॥ वदरट कि को आदि पाते सउजवु॥ सत वसंत वर्नन॥ छ किरसाल सो रसाल नें मधुर मधु रो गंध॥ ठौर ठौर सौरत रवट मोर सौरम धूंध॥ १६४ वहत वसंत रितु में मान वती नायका सों सखी कहै॥ जौ मनाय वौ होय॥ नायकानायक सों कहै तौ सुघपै दूति होय। आसे नायक है कों कहिवो संभवै सवैया॥ फूलन के सार कै चसा के प्रवन माहि पवके सव वेल जितीवन॥ माधुरी के मधु गंध सनें अरविंद परागन सौं नाभि रहे तन॥ मंजुर साल के सौरभ सौं मिलि मत्त भये सुरत्यौन गन॥ टिप्रकास॥ वसंत वर्नन में का विवेक॥ किंवा सखी उद्दीपन विभाव कहि मान छुडावै है॥ किंवा सखी प्रथम

मंजरी के भार सें रसाल अवनमित है। बरसौ रसाल गंधसौ
सने है॥ मिले हैं मधुर मनोहर माधवी वसंती पदमीना
महै। ताकी गंध है॥ ठौर ठौर भ्रमै झूमत है फूलन सौं ला
गिला गिलाति है। सटै सें आनि परै है॥ मधु फूलन
को गंध पहो बसै मदिरा तासों गुंजै है भौंर॥ ताकी सो
र सकल झुनंकार है॥ भौर ताइ है पाठ है। जहां रमनीक
र करन जानीयै॥ स्वागावाक्रियलकाय। मूल॥
पाइ वसंतन करी अपसी गरभन सीतलोकता॥ कहिवेता
प्रगटै देखि वत्तव्रसलक्षपसी जतगात॥ ५९६ यह स्वाव
क अंब देखि सखी नायका सों कहति है। परकीया स
छिता जानीए॥ कवित्त॥ सोहत समान सभी याव
संतरितु वहनाहिंन गरभ अरु सीरकन आति है॥
कहै कवि कृष्ण वलि हम सों तैसो सांची कहि काहे ते
छवीली भई तेरी अैसी गति है॥ कवहु तापत गात
कवहू थला कितान क्सस्दू दसी जअ आवे कवहू कपत है
जांने है री जानाहि तासानी अरगानी देखि दधि
दानी सौं वरसि मैं पगति है॥ सरिप्रकास॥ लछिता
सौं सखी वैन॥ किंवा अन्यसंभोगदुखि: ताको वैन
सखी सों॥ किंवा बडि ताको वैन सखी सों॥ अरी
सखी यह संबोधन दे वै नायक कों सुनावै है॥
३ इह वसंतरितु है। अरी सखिनकरी अति गरमी है

नहीं प्रतिसी तत्तलविचार है॥ तें कहि केयो प्रगट है षियत है
गानि[illegible]गसो तसी ते है। ताहि ७ लषि दषिये॥ कि
नाष ढिताका है तहे है सषी तें कसो रात तमे ७ लषि प्रगट
दषियत है। जानियत है। का है तसी जे राजिमय॥ कि
वामान हु डाय वे के लिये नायक सषी ये षिघरि ना
यका को संसंकियो ७ लषि दि षि नायका वेन॥ कारन
बिन प्रस्वेद भयो विभावना॥ हात हि [illegible] ता विभावना
बिन ही कारन काज॥ [illegible] लिर घर को [illegible] तान पषिकष
सेव कित चित भागि॥ फूले को देषि तलासं वन समही
सम्प्रिदवागि॥ ५६७ पहु वसंत समय नायका को
वैन नायक सो॥ तोपवहाजि पतिका सषी के वैन
नायक सों होय॥ कवित्त॥ देषो रितुराज को समाज व
न वागन मै प्रफुलित सुमन रहे हैं जोति जागि कै॥
फुलमत लासब के श्रृंगार जानि चहूं प्रोर वेच मन सो
वा ति तचको अनुराग कै॥ आगे ते विलोकि फूले
मै न दर सित के लेन तान पषि फूले रसार दिवागि
कै॥ तसी [illegible] उरप्रेल तारदसषी विसारिये लसो
हि च लेघर को च कित चित भागि कै॥ रसप्रकास॥ क
वि की उक्ति॥ लिर के घर को [illegible] तानौं तषि कै चित भै च
कित होय॥ प्राश्चर्य मानि घर को भागि कै चलै
तलाव को वन फूलौ देषि कै समझे है सा[illegible] द
वानल अग्नि समझि कै जा बा मै आग बै [illegible] नि
षिधमी है॥ कितानायक परदेस वसत है॥ तव

नायकाकौंवा॥ सखी कहितहै। तिरकौं ग्रघतितैरौ ग मतर
देतमतिजवौ ग्रौरवहेग्रपेंन्ममहै॥ फूलमें ग्रागि
कौ भ्रांतिमान ग्रलंकार॥ मूल ग्रीषमवर्नन॥ ना
हिनं ए पावक प्रवल ए लवैं चलति वहूं पास॥ मानहु
विरह वसंत के ग्रीषम लई उसास॥ ५६० नायकाप्रो
षितपतिकाकौ वैन सखीसौं॥ कवित्त॥ चंदकरमंद
लतेमंडिकै ग्रसंदुधारवर वनतपावक प्रचंड विथो
रहरी॥ कोमलप्रानप्यारे कीउहाई केधौं ग्राईवड
वानलकी लवैं तातें तवति उपहरी॥ चंदकरमंडले
तेपावक नवर ग्रालवैं न चलतिजातें रवि मतिर
हरी॥ मेरे जान प्रीतम वसंत कौ वियोग भयौ ग्रीषम
वियोगनी उसास लैतिगहरी॥ ५६१ प्रकास॥ विरह
नीकी उक्ति किवा कवि की उक्ति॥ पावक आगि ताते
प्रवल जोराबर लपेंउ उसानी षर्व में लू चलिकर
ति है॥ नाहिन कौं ग्रवनेन है नंदूतालसव हू ग्रौर
वसंतके विरह सैं॥ वसंत नेग रम उसास लीनी
है॥ मानौ ग्रीषम तावैं ग्र[illegible] वहा ग्रनुक्तास्पद
वस्तूत्प्रेक्षा॥ मूल॥ कहैं लाल ए त कंतवसंत ग्रहि
मयूरमृगवाघ॥ जगतु तपोवनसौ कियौ दीरघ
दाघ निदाघ॥ ५६२ मूल ग्रीषमसमय नायका
कौ वैन नायक सौं होय तौ प्रवसतिपतिका॥ स
खीकौ वैन नायक सौं होय॥ सवैया॥ सौं तौ कहौं
नवर है न हरे ग्रहिन कौं ग्रधिक रिसउने वैर धा

2O5A

कवित्त रि... रित के उदर कूं नरहरि आप सो वनतन पावन की
रीत न चहियत है ॥ हरिन की छाती पर वैठत हिरनकश्याप
ह्रु दि वितनायन विरोध विसरत है ॥ ३ (कविरा) ग्रीषम
की तीछन प्रताप सव कहत लाने पर सो नेता करत वस
त है ॥ रसिकप्रकास ॥ इतय हरी मे नायका को प्रेमि सारकया
वन तहै सखी कहत है ॥ कहत लाने जु बीहरि वे विरोधी व
रस्पर ताकन वसत है ॥ प्रसन्न सर्प मयूर मोर मृग वाघ
जगत को तपावन सो किये ॥ तव स्याकें वन मे को
ई काहू सो मारे नहि ॥ दीरघ है दाघ दाह जामे ऐसो नि
दाघ ग्रीषम ॥ तपावन उपमान ॥ जगत उपमेय सो
वाचिक विरोधी के वसि वो ता कव धर्म लुप्तोपमा ॥
रसल वे छिर है प्रत सघन वन पै छिसघन तान माहि
देषउपहरी जेठ की छाह सी चाहत छांह ॥ ५७० नाय
का को वेन नायक सो ॥ सवैया दूति ऐसे ही नायक
कौ वैन नायका सो ॥ जो नायक की सखी नायक
सो कहे ॥ प्रथम गमन नितार न होय ॥ कवित्त ॥
सलिल सबजाल जार प्रकु सात पल जीत जंत
सकल उठ निवरि वरि कै ॥ कहे केव वि कूप अंवर अन
लि सव वाचक हैं ता तको न र है धीरधरि कै ॥ ग्रीष
म के प्रताप को भी षम प्रतापकै रि कन सकताक
रत हो लीडो लेउरि कै ॥ सघन विटपन हवाने कू
ताकूं जनम में छांह है प्रटक ता कछु छांह है प्रदि करि कै
रसिकप्रकास ॥ कवि वैन ॥ प्रति सघन वन में वे छिर है है ॥

उपहरि मै घाटि र छाया न है रहति है॥ सदन घर मै
तन हरि रे मै ते छिर रही है॥ उपहरी जेठ की दुपहर कू छांही
छाया को चाहति है॥ और की कहा बात॥ अथ अनत व
र्नन॥ किंवा दूठ ने अभिप्रित्ति उक्ति अलंकार॥ सूल पावस
वर्नन॥ तिय तरसों है चब कि पे करि सरि हों है मेद॥ धारव
रसों है है है रखवरसों है मेद॥ ५२१ पावस नायक नाना
यक को परस्पर वचन हाय नौ स्वपे दूति कहि उक्ति॥ कवि
त्त॥ त्रिया पहर मि जल भरे वन उपवन चहूं और सों रय के उम
गि उदे रहे॥ सरिस मह लता सहि लहि धवि छावत ही कुं
ज कुंज बग कुल को लाहल करे है॥ उमडि उमडि पर स
त सों पुहुमी घन सों है सरसों है। वर सों है दे मिहे रहे है॥
हेरि हेरि मुनि मन तिय तरसों है सो जर उजाधन वूंद अ
ज राग के उमेरे है॥ इति प्रकास॥ मानिनी सों सखी कहि
कै सखी नायक सौ कहति है॥ तिय नैं तरसों है चाह
मसों तिन किये नाम को॥ तरसों है कोअ अंचाहहे
नेह को सरसों है करि कै अधिक कानि के॥ अरु ल
गाय कै वरसों है मेघ है वरसान वाले है॥ नमता
पधर कै सों है सायनै हा पर है है॥ और नायका
पास जानै के चाहति है॥ किंवा कहुं धर पर सों है
उरु पाठ है॥ नहां प्रेसे जानिये॥ धरती को परिसि
लो हि जे॥ मानो अ[illegible]न करि के॥ वरसों है मेघ
होय रहे है॥ ईहा गम्योत्प्रेक्षा अलंकार है॥ छेकानु
प्रास है॥ उही अवतर समता पद मै परी है॥ वरसों है

मूल॥ पावसकठनजुपीयप्रवलाक्यौंकरिसहसकै॥तिऊ
धरतनधीररकताबीजसमअप्रवत्तर॥टीका सखीसौंसखी
वैन२६ दोहा कृष्णचंद्र कोमैन हीताकीसवैयाप्रवीनोहि
कवित्त॥ पियपनआएवितावदिनावदूहावघटाघनघोर
अंधकारसमै॥पाऐसदसनभाऐभयौअकुलायौहियौदुख
पायौअकुलसमै॥पावसमेवढैपीरमहाविरहीकेसधीरधरैंगे
निराहसमै॥२ऊआवीजमौनतैजेप्रगटेतेऊधीरधरैनहिपावस
मै॥ दरियापात॥सखीवैननायकसौं॥पावसवर्षारितु
सोजोकामनिकौनतकठोरपीडताकौअवलाइस्त्रीक्योंकरि
सहिसकै सघजदपैननहींसहिसकै॥वेभीधीरजनहीं
धरतहै॥जोरक्तइस्त्रीरजनीजप्ररषदेउसमेहोतहै॥
तासौंअवतररहै॥उत्पन्यहोतहै निछसकरइस्वपे॥७
रवकौ बीजअधिकहोयतौ प्ररषउपजै॥इस्त्रीकौर
जअधिकहोयतौइस्त्रीहोय॥जोसमहरनैबीजहोय
तौनिछंसकहोय॥अवलाइहसाभिप्रायनामहै॥ता
तेपरिकुरअंकुरअलंकार॥साभिप्रायविसेषणजहां
परिकुरअंकुरनाम॥अवलाबलजिनमैनहींतेक्योंस
८ हिसैकाम॥ इहांसवद्अलंकार॥ मूल॥ पावसघन
अंधियारमेरहौ [illegible] तदग्यान॥रातिद्यौसजान्यौ
परैलखिचकईचकवान॥टीका वर्षासमयसर्वधृति
कोनायककोवैननायकसौं॥नायकाकौवैन
नायकसौं॥सवैया॥अंबरिअंबरिदिसाविदिसालग
रैतमहीकोवितानसौतान्यौ॥सविकरंगसवैजगमौ
पै/नि अतिमौदिहि [illegible] सवासरमान्यौ॥ पावसके घनके

अहि पार रहैं ये दिन कछू न परै दरसच न्यौ॥ दौस सनि सि को वि
नेकि रहतै यासु चकई चकवा नके बोलते जान्यो॥ इति प्रकास॥
सखी ते न नायका सों॥ पावस बरषा रितु मै घन मेघ के अं
धकार मै श्रौर अंबर ह्लौ नहीं॥ चकई चकवा को लखि के रा
ति दिवस जान्यो जात है॥ दिन मै मिले रहत है॥ रात्ति मै विछु
रत है॥ किं वा हरस बीत लखि जानो चकई चकवा कों राति
दौस नही जान्यो परत है॥ किं वा चक्रवानि इ का संत
पा छै॥ चकई श्रौ चकवा नाम चक्रवाक को॥ ताकी वानि वा
नी सब हैं सो राति दिन जान्यो जात है॥ या बात को र
लखि जानो॥ रात्ति मै कूकत है या को सिंगार॥ मूल॥
छिन कब लत्ति ०० कन्तन छिन कर सुज प्रीतम गल डार
चढी अटा देखत घटा बिज्जु छटा सी नार॥ ५४ स्वाधी
नपतिका नायका पति संजोग सिंगार सखी सखी सैं क
ह्यौ॥ मो लिसु जा मन मोहन वे ब्व ल ०० वे ३ मग समु
मारी॥ ताछ विवेकावि कुल्म करै घन दामिनि कौ लिख
रैं वलि हारी॥ कुंदन से तन बानिक हैं वनी सारी
सुरंग लसे लहकारी॥ कारी घटा छवि सौं अवि लो
कि तासा मन सा अटा चढी प्यारी॥ इति प्रकास॥ सखी
सों सखी॥ छिन कब लत्ति है एक छिन ०० कततर हू
त है॥ ३ ज प्रीतम के गल मै डारि कै अटारी पै चढी
घटा देखत है॥ बिज्जु की छटा चाकच का सी जो
नारि है॥ किंवा औरही स कीवत कहि सखी मान
छुडावति है॥ धम्मिलु ग्रा॥ मूल॥ पावक रस ते मेह सर
दा सक दुसह विसेष॥ दहै देहु वाके तरस पाहि दृगन है

यह प्रोषितपतिका वैन सषी सौं ॥ उद्वेग मन मैं नायक सषी
सौं कहै तौ संभवै ॥ सवैया ॥ धरै धुरवा गरजै अरु अंध
कार रहि मही अवगाहै ॥ देषटी पावक की गरतो रहै मे घकी
गल करा सम लहै ॥ वा हि मार वरहे ही दहै पर नैन न है
भिर हैं तान दाहै ॥ वा गिरधारी विना विवि वै को न है वहि
ओर उपाय कहा है ॥ इति प्रकास ॥ विरहनी की उक्ति पावक वि
ओगिता की रव ज्वाला ॥ ताते मेरु की गरवृद्धि अधिक है
विसवदा हक है ॥ और दुसह है ॥ सहौ नहीं जात है ॥ पा
वानक के गर ॥ ज्वाला सौं तो तैं रवि किवै दहदहै है ॥ अरु पा
म घवै गरवर्षा सौं नेव हरि तो ॥ आ विन ही सौं देहवरति
है ॥ दाह कवि सवव है ॥ या वात को दृढ करै पातेका व्यति
ग ॥ व्यतिरेक है ॥ सल कुढंग को पातजि रंगरली करति न
वति जगजोय ॥ पावस वात न गरुढ इहू तू ढनेहू रंग हाय
५२५ वर्षा समय सषी वैन नायका तें मनाय वैं
सवैया ॥ पानहा आवत है वगरं जान मोद सौं कूकम
चाय दई है ॥ चाव भरी अति भाय भरी मिलि रंगरली वनि
तान वई है ॥ कोप प्रसंग कुढंग निवारि मिला रस घटा उमडी
जोन ई है ॥ गरुढ नवे इह वात उसाय मन वूढहहै विसरंगम
ई है ॥ इति प्रकास ॥ सषी कौ उक्ति मानिनी सौं ॥ हे कुढंग तो
मै उमन नहीं ओढ ॥ तिं वा कुढंग जो है कोप ता को तजि कै
रंग अनराग सौं ॥ जगत मे ॥ रलीरमन जैसौ नायका
कै संग करति है ॥ ता कै पर जोय देष ॥ पावस वर्षा रितु
मे इह वात गरुउ उमन ही ॥ वूढन हू कों वृद्धिन हू कौ रंग लेत हैं ॥

नवीनस्त्री विषै रंग अनुराग होत है ॥ सो उत्तम ॥ बूढ वीर वृद्धी
ई देषवे की कहत है ॥ ताको भी रंग लाल होत है ॥ स्नेह षट्मै बू
ढ मै अरु अपात्रन्यास ॥ कहते अपेजन तांतें विषै गौ
र अपर्न सों मीत ॥ सो अपात्रन्यास है ॥ कहै उक विकोपी
त ॥ मूल ॥ धुरवा होय न अलि उठे धुम्रा धरमन चहू कोद ॥
जारत आवत जगत को पावस प्रथम पयोद ॥ ५२६ प्रो
षितपतिका सषी सों वैन पावस मैं ॥ कवित्त ॥ औरै कहै
लौ मानि जिय न हहै वो वै मानि आली प्रथम सीत वात
कै वल उधरत है ॥ सीतल समीर अति लिये तें सोई सहाय
करै विरही विचारे कहि कै से उबरत है ॥ जगत जारत आ
त आवत उमडि घन ताहि सा ससग कुल सो रहे कहै
चपला न चपल सर रचना है ज्वालन की तेई धूम धार
एन धुरवा परत है ॥ इति प्रकास ॥ विरहनी की उक्ति सषी सों
है अलि सषी धुरवा मेघ नहीं है उह ॥ चहूं कोद चहूं ओर
धारनी अग्नि ताको धुंआं है ॥ जगत को जारत आवत है
पावस वर्षा रितु के प्रथम दिन को पयोद जो है सो उ
ठे है मेघ सो धुंवा ताके धुंआं को आरोप करि छपायो
सुद्धापन्हुति ॥ धर्म दुरै आरोप्य तें सुद्धापन्हुति जान ॥
मूल ॥ रूठन हठी लीकरि सबै रस पावस रितु पाय ॥ आ
नंग छिजे जो छुटत है मान गांठि छुटि जाय ॥ ५२७ ॥ यह
मान मोचन ॥ प्रसंग विधि लिस सषी को वैन नायका सों
सो ना द मनी वप लगत सोई स्यामघन है हों मिलावहु रतिअ
ति सुषसार सानि है ॥ इमन हौं लहलहि लति कलपतिरु है

208A

सबहि के उर प्रीति रीति अधिकाति है॥ कैसी पहेली कोउ
रसनो न जानति है मदन मरोर मनसो छाती अरु सज
है॥ देसो रितु तावन सबै नेह की निकाई ई आन गांठ
परै मानि गांठि छूटि जाति है॥ तस्य प्रकास॥ माननी सों
सखी बैन॥ हे हठीली कि॥ हठीली जे है नायक सो हठ नहि
कर सकत है॥ नायक सौं इह न बनाव न है र आर पावस रित
है वर्षारितु ताकौ पायकै॥ वर्षा मे जैसें जैसें आन गांठि स
ना की मुंज की परि जात है॥ गाढी होय जात है॥ मान की
जो गांठि है॥ दृढ ता सो छूटि जाति है॥ हठी ली हठ नहि क
र सकत है॥ या बात को प्रकृ कियो॥ पावस वर्षारितु उद्दी
पन हैं॥ काव्यलिंग॥ मूल॥ वेई चिरजीवी अमर निध
रक फिरो कहाय॥ छिन विछुरे जिनकी न हो पावस आ
वसि राय॥ ५२८ वर्षा सखी के बैन नायक सौं॥ नायका के
बैन सखी सों॥ कवि उक्ति॥ कवित्त॥ धार चर उमडि वहे औ
र आ करै बहु भांति न मोर बिरसावौ॥ सकि हरी वहे सीत समी
र गहे गति मंद सुगंध सुभावौ॥ ऐसे समै छिन नायक ति
होह ता तिनकी गति ढूंढ न आवौ॥ वे चिरजीवी सदा जग
मे अजरामर को न निसंक कहावौ॥ तस्य प्रकास॥ विरहे
की उक्ति॥ लोग चिरजीवी कहाय के फिरे॥ बहुत दिन जी
वे सो चिरजीवी कहत है निसंक है सो अमर कहाय निधर
क निसंक फिरे॥ छिन नायक विछुरे जिनकी वर्षारितु मे
प्रान रहत नहि सिरा [illegible] वन हि घटे पावस पहले नायक
नै नायक कौ पाती लिखी है॥ वो ऐसें भी कहति है॥ गा

क्षितपतिकाकीउक्ति॥ अत्युक्तिअलंकार॥ लक्षण॥ अवतजिना
मउपायकैंआटोसावनमास॥ बेलनिरखिजोबेमसोंबेम
कुसमकीवास॥ २२९ वे कोऊ प्रोषितपतिकानायकाकोवे
नसखीसों॥ कवित्त॥ जोलोमनरह्योताप तोलोनभिसा
सीजाय आगयोविरहदुखसहलनिखोसहिवो॥ प्यारेनयने
पनचोअननिकेअपधिआसजेसोरह्योजीवतेसोअवक
हाकहिवो॥ आयोसखीसावननआयोमनभावनातेअ
बउपायनकोछाडिवृथावहिवो॥ कदमकुसमकीस्वास
कोप्रकासभयाबेललैहेनप्राननकेंकुसलसेंरहिबो॥ प्रका
स॥ यरकीयानायकाहै॥ रूठीहैसखीनायकसोंकहितहै
मैवाकोंकुंजमैयहकायकैलेआवतहौ॥ इमवलो॥
नायके किया॥ इमसखीचवककिल्लैलो ततानायककोवैन॥ अ
वतैमलायवेवैउपायकोतजिबो॥ कामोदीयसावनमा
सआयो॥ यहबेलनतेअबमोमनयहतवेहै॥ बेलजोहै
सोबेमहोकत्पानमानहोरह्यो॥ केमकदंबकेकुसमकी
बासनैऔरहानभीकाउनायदीनी एकनायकहोतिहू
रहीरह्योबेलबेमहानहीयहे॥ यहांसोकोत्रिअलंकार
लक्षण॥ उक्तिठकठाकंए तौकहां पातसकेरअभिसार॥ देखि
दशैतोजानबीदामिनधनअंधियार॥ २३० यहसखीना
यकसोंकहितहै॥ अभिसारकोसहजहीसमयहै॥ परकी
याहाय॥ सवैया॥ कैयातेननीलनिचोलसजेसखीकोयामग
मेघकेमेतकरैंगी॥ तावेलकेअभिसारकोकेतोविचारक
हाजियमंधरैंगी॥ कुंजकेमैननिसंकहै कौनचलेदहवैं

209A

स्याम घटा मैं अंधेरी मैं तेरी तन दुति दामिनी जान परैगी ॥ हर
प्रकास ॥ सखी वेन नायका सैं ॥ ३ ॥ भैव लै ठक ठकु विलंब
इहि संबन पाहरै ॥ वह्यु पहुंसै पातर है कौ विलंब कहा
कौ तात सब कौ कुलके अभिसार मैं नायक पास जात
ये है छिपरी ठिक हा कों देखिवे मैं आई तो यौं जानि वी के
जानैगे ॥ दामनी वीजुरी है ॥ घन मेघ के अंधियार मै
मानिन मानैं ॥ गम्यो प्रेक्षा ॥ किंवा भ्रांति ॥ किंवा नाय
कनजी क प्रस्थ नो कियौ ॥ तब सखी अभिसार पर
वति है ॥ देखवरी देखौ कि नहूं तौ पहरी अब सरा जानैगे
यातरह लगाय प्रसंग भिरै है ॥ अब सदा पाव सवे
प्रसंग करि लिख्यौ सल तिर स्रुधि दें सुधि घाव कै
इनन्हि रदई लिरास ॥ नई नई वह है दई रई ३ साहि ३
सासि ॥ ५९ प्रोषित पतिका की अवस्था सखी सखी सौं क
हति है ॥ सवैया ॥ ४ आली वियोग भयो वनमाली कौ ब्या
कुल बाल भई अकुलाई ॥ पाहन की उतरी है परी उपचार वि
चार कछू न बसाई ॥ ७ ऐसे मैं काहू दई सुधि दै सुधि घा
ई लिपाइ बरालि जगाई ॥ कानि रदै सौ कहा व हि वै जिन
प्रेम समुद्र की तीर न पाई ॥ हरि प्रकास ॥ सरछा ये नाय
का की सखिन सरछा धुडाई ॥ तब नायका कहति है ॥
[illegible] मैं सुधि चेतन्न देके सरछा धुडाय कै सुधि धाई
[illegible] नायक कौ सुधि तारि दिवाय के पहुंच्यो परे है ॥ दे
वन नई नई उसास उपर के सास कौ उसासि दई रकसा
[illegible] मैं उपर दमी चली ॥ कैसी सखी है ॥ निरदे है

सर्वसे निरास गाली है॥ लगाई लगाई कै निरासी गाली
देत है॥ किंवा इहू जो विधि निरदई ता की खधि रिवाई कै
सो कैसी है। निरास है। जीवन की आसा न रहे है॥ औ
रवही अर्थ॥ निरदई सखी कों विधाता कों नायक कों
विसवन॥ साभिप्राय है॥ ताकों ध्यान है। वस सुं ऐसी
करै॥ परिकर अलंकार॥ हे परिकरि आसै लिये ज
हां विसेखन होय॥ मूल सरद घन नैन॥ घनघेरा छुटि
गो सरवि बली बहू दिसराह॥ कियो सुवैनो आय जग
सरद सूर नरनाह॥ ४४ सरद राजरीति प्रसंग॥ कवि उक्ति
कवित्त॥ घनघेरा छुटि गयो अधियारो मिटि गयो वि सद
प्रताप जग मग्यो छवि छाय कै॥ कहै कवि कृष्ण श्रुरुरुते
निरवेवलो वल्कि बहूधां हरिमय विसाराय के॥ फूलो
रिय कमल अमल भा जल पथ लप्यो अप चलन उ
छाह उमगाय कै॥ सरद सुघर नरनाह की निकाई
नीत दे बोलव जगत सुचैनो कियो आव कै॥ सरिका
सरद जो है सो सूर नरनाह राजा है॥ सो आसै आय
कै जग कों सुचैनो सुंदर सुष कियो रहे जानि ये॥
घन मेघ घेरा दिखे बोधु छुटि गयो॥ जहां राजा के आ
छवि न हीं तहां प्रजा पर घेरा सुउ [illegible] तरै है॥ औ छवि
गा वे आवे छुट जाति है॥ किंवा मेघ को घेरा छुटि
गयो॥ बहू दिसमे रारह चली॥ रार कोंवलनैनही
से भवे तहां लछन लछना कर रार गीर जानी ये॥
सरद सो नरनाह राजा॥ रूपक अलंकार॥ मूल॰

अरुनसरोरुह करचरन दृग खंजन मुख चंद ॥ समै आइ कै
दरसदु को दिन करलि अनंद ॥ १०३ सरद को चित्र ॥ क
वित्त ॥ सोहत अरुन सरसी रुह चरन करि जिन हंसगत
प्रिय सदन गमनाबई ॥ कलापरि हरन मधा निध वदन ल
है जाके अदभुत छवि करत न आवई ॥ देखिये तौ खंजन
तरल करारे नैन कहै कवि कृष्ण देवे जीव सचुपावई
कमें छबपज सनी संपूरन सरद आइ कौन के न उरमें अनं
द सरसावही ॥ टी० प्रकास अरुन लाल सरोरुह कमल
तेई तो कर हाथ अरु पाव रहैं जाके ॥ अरु दृग खंजन है
सरद पून्यो को चंद्रमा मुख है ॥ जाको ऐसी जो सरद सर
द है ॥ समै ते पाय के कौन को अनंद न ही करै ॥ अनंद करै
हेमंत ही है ॥ ३ हेमंत को चित्र ॥ सरदरितु सौं न्याय कृष्ण हेमंत ॥
मूल ॥ ज्यौं ज्यौं बढत विभावरी त्यौं त्यौं बढत अनंत ॥
ओक ओक सब लोक सुख कोक सोक हेमंत ॥ १०४
हेमंत समय कवि कोउ ऐसे कहत है ॥ संजोग सिंगार हू मैं न
[illegible] ॥ विप्रलंभ हू मैं बनै ॥ कोक को दुख है अरु नेरो ज्यों कि जा
निये ॥ कवित्त ॥ हिमरितु आई भई सीत सरसाई देखि भा
जि गई गरमाउ रोज अरु लनमैं ॥ बासर की लघुता विलो
कि कुमिलात तमी तरु बढ़ मैं रहै नेजत दिन केतन मैं ॥
कहै कवि कृष्ण ज्यौं ज्यौं रजनी बढत त्यौं त्यौं उमगत मो
द प्रिय के रति नवे मन मैं ॥ ओक ओक लोक लोक वा
ढत अपार सुख सोक है वियोगनि के कोकन के मन मैं ॥
टी० प्रकास ॥ मानिनी सौं सखी वैन ॥ ३ रे दिखाव सुख सहजता
य मान छुडावति है ॥ ज्यौं ज्यौं जैसे जैसे विभावरी राति बढ

लोक त्यौं त्यौं ते हे ते से इत नी उत नी बहु रू अनंत बढ़ति है ॥ सब लो
कैं के अप्रेक अप्रा सुघर घर मे रुष बढै ॥ को कहवेवा जाको
लोक बढै है। अगार नपो अ कीयाति बढी होत है ॥ याते पुब
बढै है। औ लोक बढै है ॥ बढत बढत की आवृत ॥ आ
वृत दीपक बढत है ॥ इ ही या रूप सौं लोक रचै है ॥
याते दीपक अलंकार ॥ मूल ॥ कियो सब जग काम
बस जीते जिते अजेय ॥ कुसमसर हसर धनव कहि
अगहन नंग हन न देय ॥ टीका सखी वैन मानिनी सौं
औ से अगहन मै तमानि कहि है ॥ इह है मैं तरित काम
उदीपन अधिक होत है ॥ सो नाम कू अपकाम नायक स
खीसो कहै ॥ औसे हे सखी कौ वैन सम है ॥ कवित्त ॥
कवित्त ॥ पंच जी से मु नी सिद्धि ईस से सत कूतो से केती
की ने विकल गांउ कहि काहि काहि ॥ मानिय तनाको
नौउ खंड मैं अखंड धाकु जाते मही मंडल के अजती जि
ते काआहि ॥ कहै कवि केसव जिन फूलन के आयुध वे
कै से वे सब लीने दसा हसरनीक चाहि ॥ जो ते जसि सि
खो लोक अैसो बली मन नम अगहन गहन न देत
सरवा पताहि ॥ इति प्रकास ॥ सखी वैन मानिनी सौं ॥ औ
से अगहन मै तू मान न करि सब जग कौ काम के बस कि
यौ ॥ जिते ने अजेय जो गी उनि ताकौ जी ते सौ उनि सौ
न ही जीते जाहि कुसमसर काम जाके सर अप्रा धन वा ॥
कर हाथ मै अगहन गहन नै न ही है मदेत है ॥ इस कासा
रे देवक हम हीजी ति लाए काम के कर धन व न ही गहि
वे देत ॥ या कौ सम र्थन कियौ ॥ काव्य लिंग अवउ त्रु सो

211A ११५

मूल॥ मिसिसिवि सरति विधुरसमरतं दवतप्रतिरस लीन॥
सजनविधघरमंतरितमगत उराकाकीन॥ ५९६ पद है से
तरि सबै व मनाव कासैं॥ तो मान वत्ती कविकी उक्ति
कवित्त॥ दोउ एक दूसरे विधुहन वीतत एक प्रानदिता की उ
मंगनई नई वगरत है॥ प्रतिरस लीन दोउ मिलि ति
विहार करे कहे कवि कृष्ण चितप्रतिउमगत है॥ विधुरे
निमखहू तौ जीव कौ मरै सौ नाह प्रतिव कुलाव मै
न विचार न सहत है॥ और एक दूजौ सिमरतकीन वस
तीत जातिनु मै सनवही उराका छूरहत है॥ तरिव्रकास॥ स
लोवै न मानननी सौं॥ उराद वधू ईरानत हरानकी तर
फ रहत है॥ एक एक और पै बैरहत है॥ एक और एक की औ
र औं कुल होत है॥ एक और एक कौ कुलावा हैत है॥ प्रकु
लकुलावा मै डारि दैउ घुर रहत है॥ मिलबे विहरत उद्दे
वरत है॥ विधुरे सौं मरत है॥ ये तत्र क्रिड रव कै सैहै॥ रप्रति
रस मै श्रृंगार मै लीन है॥ मगन है॥ हमंतरित कौन तनौं विधा
की याहै॥ जगत के उराका छिया॥ रवक उरापाकै औ
रवधकौ भ्रेषा॥ मूल॥ आवत जात न जानियें तेजहिं तजि जह
सियरानि॥ घरह जमाई लौं घटयौ रवरा दिन मान॥ ५९७
वह सिसिर समय वर्दउ न के दिन की अधिकाई करत हू ही
आदि लागत है॥ सो सब ही दिन की सह ताकरत है॥
विरही है ता दिन की निंदा करै है॥ कवित्त॥ वा मन की हुग
है विमागमरी वृति तेमाहि त्यौं विमो जिन कौ हि कैरप कुला
त है॥ दपत उमरि अवनराति उर रलकता एक दैर हत्ति मिल

ति उ सिसर नई घटे

इसके दिवस लघु मान भयो अरु जैसो सरद के घर मैं
जमाई सकुचात है ॥ तेज कौन लसर है सो सीतल सभाव
भयौ जानत न कोउ कब आयौ कब जात है ॥ हरिप्रकास ॥
सखी वे न मानतनी सो ॥ दिन आवत जात न ही जानिये
जमाई र याद को नाय ॥ जमाई की आवत जात नहीं जानि
ये ॥ स्त्री को मान भी आवत जात धू रहत नहीं जानीये ॥ ज
माई ने भी तो ताको तजिकै ॥ सिव रानि सदिन नाहीं लगटीवी
लीनी ॥ ३ स्त्री ने भी ते जत जिक सी लाचार लीनी ॥ पर जमा
ई घर द माद को सो ले हो मिटै ॥ पूस मास मै घटे ॥ १ प्रति
दिन औ मान आदर औ मान स्त्री को रहत नै ॥ २ ॥ लता मा
सा ॥ सरल लगत हंस अमि सीतल किरन निसा दिन सब
अवगाहि ॥ मा हं स सीं भ्रम स्व रन्यौ रही च कोरी चाहि ॥ ५८८
सिसर रितु क वि उ तिमुख्य ॥ कवित्त ॥ सिसर मै सीत तामै कही है
क औरै सीत आवधाम है मे चादन के चैन अहता है ॥ संपूरस
से जगे रके मदि विं साब है मिलन नाह कत का कविरद
रतो है ॥ सीटी सीटी रुपनी वे किरन लगत्ति गाति राति
के विलास सब होय सत सहत है ॥ ससि के उदे को रुषमा
नि सविता की अनुपवें तसै च कोरी चित वता ही रहति है ॥
हरिप्रकास ॥ पूर्वी अनुराग मे नायका की अपार सखी ना
यक को दिखावे है ॥ १ ग्रह व कानाक हूं पे रूप अगहंसरर
सीतल किरन लागति है ॥ निसा राति को रवि दिन
मै अवगाहत है विकार के ताप के ३ हस्र अधिक माघ मै स
सि त ३ मा के भ्रमते सरदौ सरस को अपार चकोरी चाहि है

भ्रांति तो दाहा मैं कही ॥ सूर्ज के और की साह हरै ॥ या
कौ हम त्रिन किये ॥ काव्य लिंग ॥ अर्थ ॥ तपन ते जगताप
न तपन अनल लाई माहि ॥ सिसिर सीत कौ हुन चटो
बिन लौटे तियनाह ॥ ५८९ यह सिसिर रित नायक कै बैन
नायका प्रति सखी सौं होय ॥ कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ राय
रुछाय निहालिन मैं तन पावक हू जग ग्रीष्म सजो उ
आल विसाल की कोट हू सास दिने सवैर हेजरहो परह
आ ॥ माह कौ सीत विहातन कै हू सेहू कोउ उपाय कैसो जिनको उ
जौ लगि पिय पियारु बतावत है सवगाय न एक मैं दउ
हरि प्रकास ॥ ए कोउ अनुरागवती सौं किंका मानन्नी सौं ॥ स
खी बैन ॥ तपन सूर्ज के तेज औ तापन तपनको ताप
बो ॥ ताव नेके आसा बाल गावति है ॥ एवं मैं धूर करह
त है ॥ कोउ कहति है ॥ तिनकौ ताति वो माघ मैं कहू
हर आई एसब अरु नल है ॥ सं जौं र स्त्री पर सकै ताकी व
रोबरि न ही ॥ सिसर सीत कोई तरह नही मिटै ॥ तिय अ
रु नाह के लपटे विन ॥ और सै हीतु नहि ॥
संजोग होसी तहत ॥ पर सं ख्या अलंकार ॥ परसंख्या
इक पद लवर जिह जोण्ह लह ठहराय ॥ अर्थ ॥ रहींन स
की हा व जगत मैं सिसर सीत के त्रास ॥ गरम भाजि गढ
बै गई तिय कुच अरु बलमपास ॥ ५९० सिसिर रितु ॥ कवित्त ॥
सिसर मैं आयो जोर सीत कौ प्रबल ता कौ जाके त्रास
सबही कंत नहरा ह राय वे ॥ ताहि लखि हर महर मते निकसि
न जौ सरम गरम व लीहि पर हा पर कौ ॥ अबर अबनि सौन

पानी तजि तरु लता क्यौं टिक न तहाँ उ सकै मगी यह है व
कै ॥ ऊंचे ऊंचे प्रचलउ वन बना गरी के विकट मगा
स जाय रहि ठहराय कै ॥ इति प्रकास ॥ मानी नायक को
व सखी वैन ॥ सो जगत मैं सरूप नं जगत मै विं वा ॥ ती
न्यो लोक मै ॥ सिखर के सीत के वास और हू न हि स
की ॥ जामी जो है सो आनि कै गठ वैम ई है ॥ दीपक कु
च सो अच सपरवत सो मवास उर्ग म जिये ताको रहत
है ॥ विं वा अब समवास है का रु सोंधु डाय जात ॥ दी
पक कुच सो अब सप हार है ॥ सो मवास है ॥ रूपक अ
लंकार ॥ मूल ॥ है जत धाटी धत कला रह लबिडी
ठ लगाय ॥ मनो अप्रकास अग सो पाइ के कली लखा
य ॥ ४४८ चंद्रोदय सखी वैन नायक सो ॥ अग सि पावे
तर ते संकेत स्थान सूचन है जे ते सिसि वकी अधि
क सूचन साधारन ते कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ देखिउ
२ तैउत पाके मयंक के ती कलो नभ जोति जगी है ॥
सो ह विचारि चकोर न कीं अवली हुलसी हिय माय रही
है ॥ कौ निंबी अरु नाई सिये उर मा क विके उरमे अपी
है ॥ मानहु न्यौम अगस्त के पहराक कली बहलो ती लगी है ॥
इति प्रकास ॥ उर जन पास नायक को है ॥ घूंघट सौं जो
अवउघाहो है ॥ नाय कु अटारी पर है ॥ ताको सखी
सिखावति है ॥ अग ज है जहै ॥ वह जोह धाटी धत वं अमा
ताकी जो कला है ताको डीठ लगाय देखो ॥ वस कै
हहै औरह जो वंद्र कला है ॥ ताको कह दषत है ॥ यह चंद्र कै

213A

ता

कौ कहत है बतहां वह चंद्र कली सो मानो प्रकासै अगस्त
वृक्ष ॥ ताकी एक कली है सखी बीलखाति है ॥ कली है मा
नौ ॥ सखी नायका को चंद्रमादि खावति ॥ तहां लखै अग्र
छलकरि उलहाचेऔ है ॥ पर काटो है ॥ चंद्रमा मैं अगस्त
वृक्ष की कली की संभावना ॥ उत्प्रेक्षा द्वादस लच्छन ॥ स
धानि वहै है जहां सखी तजैयो है गनं द्वंद्व ॥ तामि
न पूर्व उक्तौ गहें अपूरव चंद ॥ प्रश्न पाठ चंद्रदप सखी
प्रसंग मैं वैनानायक सौं ॥ प्रजो जननायक कहि आयवे ॥ अन्योर
पहि संभवे ॥ कवित्त ॥ सकल लोक लोचन पर पूरन मयंक
निघसतो है अकहलंक सब ठबनको कंद है ॥ जाहि देव
वारिजचदन और तियनके सकुच उरति ऐसी प्रभाको
अमंद है ॥ धानि पहू हैं जतहानी कै कै निरखपायो देव
तहि दृगनको गयो दुख द्वंद है ॥ पूरन की ओर तम पूर
वसु कृति पल निरख अपूरव उदित भयो चंद है ॥ इति
प्रकास ॥ सखी वैननायक सों ॥ धान्य रहहे जहै ॥
जहा लखौ ॥ जातें है जमै लखौ ॥ नायकको दृगन
को दुखद्वंद तज्यो ॥ उत्प्रेक्षा द्वाली है ॥ दुख द्वंद किंवा
दुखको जोडा द्वंद नाम जोडाको ॥ अकुलानि और नरनि
को आगिन ॥ तेरे आगिन सैं पूरव और उयो है जाके दिन
अपूर्व चंद्रमा नायका जानी ये ॥ प्रस्तुत चंद मा ताते अप्र
स्तुत नायका जनायो ॥ प्रस्तुतांकुर अलंकार ॥ प्रस्तुत
अंकुर है कि वै प्रस्तुत में प्रस्ताव ॥ लक्षण ॥ जो कुन हीं रह
त भव है कि यों लखि आगत निकेत ॥ स्त्री उदै सखि केम
रो मानु हूँ सखि हरि सैत ॥ प्रश्न पाठ चांदनी वर्नन वियोगी

सवैया॥ हरि रिस सौं अधउरध मे घर अंबर सौं जरदै हवै
है॥ जाय विलोकि वियोगी उरे अब उरगन के मन मोद भयो है
हौ पन जो पूव है तम है रहे जाने सबै जग छाय रह्यो है॥ ह
न उदै जल छयो ससि को गहि लंक मनो तन होत नाग को है॥
हरिप्रकास॥ विरहनी को वैन सखी सौं॥ ज्यों हू च्यांदनी
उहु न ही है॥ यहु तम अंधकार है॥ किंवा तम राहु है॥ जो
नना उवक गयवती है जिन ने जगत मे निके ताघर कीयो
है॥ चंद्रमा को अर्ध आनंद दे न पारै॥ उहु दुखदाई॥ जो
तम है तो सूर्य मत्यारियो॥ ससि के उदे होत मानो ससि
हरि के उर लि कै होत उजै सोम यो॥ ससि हरि माने ग्रिया
हो मानो को अन्य पाते॥ अब हो स्पद वस्तु कुंवा॥
अथ समीर वर्नना॥ रति अंग गादावली सरतु दानम
छनीर॥ मंद मंद आवत चल्यो कुंजर कुंज समीर॥ ४५८
वचिउ हि॥ कवित्त॥ दंतन के सब दल अबंध उत ईस लिपत
गुंजत अलिंद मसौ अलिन को वृंद है॥ सुमन सुगंध
न की धूरि सौं धूरे उमगात मद जल सउ मनि अरति मकरंद
है॥ रंग रंग फूलन की देल मैं न माय तन जगत विदति ता
को विक्रम अमंद है॥ मान तर तोरवे को आवत उमा
न महौ मंद गति पवन मनोज को गयंद है॥ हरिप्रकास
कवि वैन॥ रति अंग सखु कर ताजे है संगा घोरा॥ सो घं
टावली है॥ घंटा हाथी के होत है॥ ताकी आवली पंक्ती
है॥ दानमद सो नीर सरति है॥ सो मधुर सो फूल को
रस है॥ मंद चल्यो आवत है॥ समीर सो कुंजर हाथी है
कुंज मैं सो न सौं॥ हाथी सौरदाको॥ अथ रहीर कीयो

लोकी नीरलोई दानअरती मद

रुउवल्लिआधिकरातिनधारि॥ हरिजनायकसवरुहोतहकै उर
लगिवारेनवारा॥ १५५ कवितु॥ कवितु॥ ऐसीरहैरुकी
कोहूँ आमननपाईजाकूविनमिलेप्रानकीगतिअकुला
तीहै॥ लोचनिनविकितजाकौ आगमविलोकिवेकौ वरहू
औरचितवतिछातीहूतनातीहै॥ कैसेहू कैसेहू चलिवे
अवधानककतेआधीरातिआईगईवारिकेववारिआव
जातीहै॥ हरितिनवतिसववहोतसनेहचेतलालिकहेहैकवि
कृष्णरुबद्धिसरसातीहै॥ हरिप्रकासा॥ विचारसोधारिहै
सोउरछातीसोलगिवेसंपूरनदिनकेनायकुवतीकि
हरतिहै॥ कोहूकाउतरहसोंदिनमैरुचीरहैनायकाजु
रजनकेउरसोंआधीरातिकेपैनवलीनायकाआ
धीरातिकेवधारीरतनकरअलंकार॥ किंवानायककहत
तहै॥ तेंजानकोहरितहै॥ उतरीसखीघरकाहरतनतहै
तेपरछतितिहैतउज्यारीवारिहै॥ नायकविकावेहै॥ नहीं
वयारिहै॥ पधारिकेअधिआईचलिआईऔरवहैअध
याअधिमेछेकापनुति॥ छेकापनुतिजगनतकरि
परसोंवातदुराय॥ रुला वुवनसोंदमकरंदकन
तरतरसतरविरमाय॥ आनतनदतनदेखतेपकौवहो
हीवाय॥ १५६॥ कवितु॥ कवितु॥ निरखतगातजल
जैननकेविमलासलिलतरहिअ ऐसीधारसोंछरैं॥ क
हैकविकृष्णजहांतहांसीरेछाहदेखिवहरतितरसतरत
सकेतरेंतरें॥ उमगितपराउनिजधामिरहेतेंआंगआं
गस्वेदकनवुंदमकरंदकेधरेधरैं॥ उरधिलकूहछा

कौरद त नदिखा ते बापु पाकै सौ बहुहित व स्यैं आवत है
रैं हैं॥ इति प्रकास॥ कवि उक्ति॥ मकरंद फू लकौ रस ताकी
कन चुवत है सो स्वेद सीनता है॥ वृत वृतके नीचे विल
व करै है॥ २आवत है॥ २त नदे सहे पाकौ व पारि सो व
टोसै न लिक॥ रूपक अलंकार॥ मूल॥ लवटी पहुपपराग
पट सनी स्वेद मकरंद॥ २आवत नारि नवोढ लौं रुषद
बागन ते मंद॥ ५५७ कवि की उक्ति पवन नवोढा करि कहि
ही॥ कवित्त॥ फूलन कौ रज पुंजर मैं न बसो सिर लौ लव
टी छबि छाजति॥ स्वेद सनी मकरंद फुही सु छिपै नैं सें घ
रैया सिंहरावहि॥ कुद्र मब कहै वपु अंगहि नवे तनसोरम
चाहौ दिसा महकावति॥ मंद गहै गति नारि नवोढि लौ
मारवौ कुंजगलीन न आवति॥ इति प्रकास॥ फूलनके
जौ पटपार ससो पट है ताशें लपटी है॥ किं वा उड उड
पहुप पराग सो लपटी है॥ नायका पट सो लपटी है॥ म
करंद सों सनी है॥ स्वेद सों सनी है॥ २ ऐसो कामचा हिये
नवोढ नई ज्यों है नारिकी तरह २ आवै है॥ रुषद जो है
बाव सो मंद गति सों॥ पहुपन की रज हों पराग पहुप व
द२ अधिक है॥ परीछा पमा॥ मूल॥ रसैया तावरी कुंजम
गकरति सों किरवकराति॥ मंद मंद मारत तरंग बहु दत
२आवत जाति॥ ५५८ कवि उक्ति॥ कवित्त॥ सो हितहिं
गारव हुमाति न जरात सा जरंग रंग कु सम तरलि २ अति
अंग है॥ लति का ललित नरम राव सो लसति रूव पहुप
परागकौ उमगि अमंद है॥ २२ वतत सों कर तकुंजमग

2 1 5 A

३५

निरखत संक सीकर ता ऊकरात त स्यो रंग है॥ पुदी सीकर ता संक स्मं
र मलयाचल ते आवत पवन कामदेव के तुरंग है॥ रहिप्रकास
संकीरन ठौर जामै कुंजन जामै रक यासाकर लगामै। तामै य
मै तासौं रकौ ही देखन दै पावै है॥ कर ता संक रकरात॥ संच
त है रख वत है॥ मंद मंद गति सो आरतत पवन सो तुरंग धो राहै
कूदन सो सौं धुरी सौं आवत जात है॥ रव कर प्रसंकास॥ अलंकुल
तिय वर्नन॥ कहित रान देवर की कुमति कुलतियकलहि उरा
ति॥ बिंजर छि गं मंसरंग तें बैकु लो रूखन जाति॥ ४५८॥
अवर सदेवर की मिसु ता सखी को बैन सखी सौं। नायका
वकिय॥ कवित॥ देवर चपलचित उरमै कुभाव धरे कर
त प्रसंसी वातन सौं दिन राति है॥ कहै कवि कृष्ण यह सरस
रु सील वाल सबु विसकुचि मन है मै प्रकुलाति है॥ कहि
न सकति कछु आन ने ति वै वौरे कु लतिय कुटम के कल
हि उराति है॥ निकट विसाउ के वदह तिं जराय जैहें अ वे
र सवासन सहिन सकी जाति है॥ रहिप्रकास॥ सखी सौं स
खी वैन॥ देवर जो जाई सो कि लो वा स ता है॥ रसाभास रूप
सोन है कहि त है॥ कुलतिय वर्नन मा है॥ देवर की कुमति बुरी वा
ति लिजरा व छि गन नी क गति गके संसार विला ता सों
रुक जे हस र है है तो सीस काटी जाती है॥ कि वा जिठानी
देत है देवरानी सौं ता है मारे देवर की वात कहि तो है बाटी न
सैं वाको तो सार ठौर है कि प्रौरे सौं आस है॥ कि वा उन सो
नई कलहि ता हि तो न्यौपान करे डरति है कहि तो है आगे वह रित वर

३ टी॰ रसिकप्रि॰

श्री

ग्रांनायकको वर्नन ॥ मूल ॥ पंघुला हार हिये लसै सनकी बेंदी
भाल ॥ राखित बेतां बरी बरी बरे उरोज नवाल ॥ ६०० यह जाति
बर्नन ॥ नायकको वन सखी सौं ॥ कवित्त ॥ पातरी लांकु
कठोर बरे कुच गोरी ग्रंग मैं ठिलनाई भरी है ॥ मेचकि पांति ग
रैनउडे हूं गंभ्रोठ नैम ग्रसनाई धरी है ॥ राखित बेत बरी बृज
नागरि जोवन जोति भरी निबरी है ॥ हार हिये पछुला कौ ल
हे बिंदु लीलाकी पंखुरी की करी है ॥ टीका ॥ प्रकास ॥ सखी ना
यकसौं कहति है ॥ पछुला पूलबि सेब नाके हार हिय मे सो
भै है ॥ पछुला रहस्य पीपाठ है ॥ तहां पछुला कमोदि नी जा
निये ॥ कहू पछुला हार है ॥ सनकी बेंदी भाल
मैं है ॥ बरी बरी बहुत राखित है ॥ कि काजा को नि हारें हैं ॥ ता
को बहुत राखित है ठोर राखे है ॥ बतिरा बलि है ॥ [illegible]
दोहित ॥ मूल ॥ गोरी उदकारी धरें हसत कंकतो लन नगाउ ॥
वे ही लसति गमार डहं कनि किर वाकी गाउ ॥ ६०१ ॥ दिसच
यह दोहा कू सम्बंध काके नहीं ताकी सवैया प्रवीनो दि
सखी बैन नायकसौं ॥ सवैया ॥ राजै बरी विरहानर भाव
ति लाल बिलोकि ये पाकु सरस है ॥ का निकजा बसंध
गन कौ नरन्यो न ति जात गिरत भई बूडत है ॥ गोरी उदारी बंता
लनगाउ परे हसत मैं मनोछवि कूपहै ॥ वे सी लसे है गमा
रउ है कनकी टकी गालमें गाउ ग्रनरूप है ॥ टीका प्रकास ॥ स
खी नायककौ दिखावै है ॥ गोरी के उदकारी ग्रंगहै हसति वे क
पोलन में गाउ परति है ॥ वैसी ग्राछी लसति है ॥ सो ये है
गमार सहनायक ॥ कनि किरवा मेनाव रेहाती है ॥ ताकी पांव

216A

ताकी आउ दिढेहै। स्वभावोक्ति अलंकार॥ जौ असें अर्थ करें
इहु गमार सो सुन किरवा की आउ है सी आछि लसै है। अ
थोन्य॥ स्तल गदराने तन गोरटी अधपनं आडि ललार।
इह छैयां देइ उठ साति हुग नकर ति गमारि छुमार॥ ६०२ नायका की
सोभा नायक सखी सों कहै है। कवित्त॥ सोभा वे अरति [illegible]टीला
के खेसा वेढ श्रवि नहीं सिंगार है विकहे न परते है। ल
सित लेनाई सन गदराने गात तन मैं सरस तरु नाई आ
नियदी वो अरित है। वटदार वदन मैं अवैवन की सोहै आउ
रैसिय चितुक गाउ मन को हरति है। सहज सुभाव उठि ला
व के गमारि गोरी इह जोबन लाव ने नवाव लखे करति है॥
हरिप्रकास॥ नायक बैन सखी सों॥ गदराने वाके तन मैं
न ब्याहौ यतां के गदराना कहिये॥ परिनक जोबन न नही है॥
गोरटी गोरी पीछे वा अरु बोहर दीठा है सो अबवन ताकै
आउ लिलार मै है। इह ओर इस ठी तावि कहि हाथ लगाइ
उठ लाव अंग मरोरै है। इग ने देखो मारि नायक कू स्मा
रि करै है। यह छन्नावरे है। स्वभावोक्ति अलंकार। स्तल॥ अ
स्मान करनन॥ सुनि तगध्वनि चितई उते हसाति दिये हे पीठ
चली बली सा कुची उरी हसी लजी ली डीठ।। ६०३ वहु ना
यका जानक नायक ने देखी॥ तासमै जो चेष्टा उनकी॥
सो नायक सखी सों कहतहे॥ सवैया॥ कामकी वाम हु
ते अभिराम लसे उतै जोवनकी रससानी॥ हसाति दिये पीठ
दिये इक सी सकलीघु निमै पगकी तहवानी॥ जाहु वि
धे चितई जहत्र्यार सबै इह सोवेन जाति बखानी॥ चौकि च

ऊके

कीसकुचीउरचीकरडोलजोहोतुकीमुसक्यानी॥ हरिप्रकास
सखीसोंसखीबैनवरकीयानायकाबकावकीध्वनिसुनि
कैचितई॥इतेनायककीओरपीठदियैठाढ़ीथी॥वकीवा
लीकोरसमेंठाढ़ीमेंदखीतुकीनीचीभई॥संकोचकीउरी
कोईओरचितिदेवो॥फेरहसोलजीलीडीठहबलजितहै
मानो॥विलक्षितनायकेसबलक्षनहोहै॥भावसाव
लयहोहै॥जोवाकेआगेसोवाचकहै॥अउक्तास्पद
वस्तुप्रेव॥अनेकभावकीआदिउपजै॥पातेसमुच्चय
अलंकार॥दोषसमुच्चयभाववहेकहेउपजातअेंगो॥
मूल॥ नहिंअनुठाबनतेंजाबघरबिनेचहृटयौंतविंतीर
परसिकुरहरीलैफिरतिंवहसतिधसतिनीर॥६०५॥
नायकापरकीयाक्रियाविदग्धा॥सखीवैनसखीते॥
सवैया॥ठाढेवकैजमुनागईबालतहांवनितानको
हैरप्रतिभीरो॥त्योंहीअचानकवृदावकेहेकदूदूवहौनटना
गरनीरो॥वापतुआंवितठावरकेनगवोनहिजातकपा
तसरीरो॥अंगऊलीनीरमरेंगहिडारतिनांकसकोरिकहै
रहसीरो॥ हरिप्रकास॥सखीकीउक्ति॥सखीसों॥नायकको
आवनेनोदेखतिह॥नहीजातिहैतहीघरकेंजातहै॥हेसखी
रीतबकिताकोदेखवाकोचितनिरजनजोहैतीरतामैचहु
ट्योहै॥लभिजांकहै॥जलकोपरसिबेकूवकेकुरहरीले
वैअंगकेपायवेफिरतिहै॥बहतहैहमीरमनहोधहैहै॥
किवानायककुवाठोरमैहै॥तीरमैनायकनेतीरमैताकिके
वाकोबिनैरहतहै॥किवातीरमैनायककोताकिकै॥वाको

के

217A

तितवरं देखि लिछिगवैनायकमैं प्रासक्त भयो॥ सीतके छलक
रि नायककौ देखतिहै॥ परिया दोहा॥ मिसकरकारजसाधिवे
जोमन छुवितहमैहाल॥ लाल मुखंपवारिं गउरमिजें सीस
सजलकर छुवा॥ मोरउचैं दोहूंकने नारिं सरोवरिं न्हाय॥ ६९५
जातिक विकीउक्ति॥ सवैया॥ वेठिकेतीर पवारि कैं प्रानन न्हाय
मिजैजलकेसन द्वैकै॥ कृस्नकेहूवकरसौं उसरायककधाध
रचोसीसिं वीरमिजैकै॥ दवकरिवंककजदेउ सराधरि मोरि
उचैकटि तीनन्हचैकै॥ यौं बृजवाल सरोवरि न्हाति महा छ
वि सौं घटवानतनेवे॥ सरिप्रकास॥ उवन्हायवे उ हर
पर्वमैंकरितहै॥ वप्यार जाहि मिजायवे सीसकौ सज
लजोहै हाथ ताकौ छुवायवे मोरिग्रीवाके पीछै॥
ताकौ उचौकरिवे॥ घटमेंहवैमेवहून कहत है॥ ता
सौं नैकरिनी चीताव करि नारि सरोवरि मैं न्हाति है॥
स्वभावारि॥ २५ लकार॥ लाल वहसाति सकुचतसी हि
वैकु चअंचर विचवारि॥ मीजेपटतटकौ चली नायस
रोवरि मांहि॥ ६०६ जातिकविकीउक्ति॥ सखी कौ वच
नायक सौं॥ सो मानिवे दनिकरति है॥ सवैया॥ देव
दिवाकरकौ करिवंदन कृस्नकहै मनही मे मनावति॥
वावतन॥ भीजदुकूल रहे सवहाय महा छवि कंचन होतन छुवत
तौनवनागरि रूपउजागर न्हाय सरोवरि तीरकौं प्रानन॥ ह
रिप्रकास॥ सखी सखी सौं वैन॥ वहसति है॥ रूपउजे
मानो सकुचतहै॥ कुच अवाहअंचलाके वीचमे है
किंवा कुचअंचरके वीचमे है॥ वांहहै दोउ हाथ॥ मोरि

को

गलसों लगावै है॥ तब नाहि कुं वक्के बीच मैं आवै भी जे नट
है। ताहि को तीर कौं चली है॥ सूक्ष्म चेस्टा वरि माहि सो
ई है। सखि कुं कुन सी की या के आगे ती है॥ मानो या के अर्थ
पै॥ अथ कोमल देव सत्वदा॥ और स्वभावो हि अलंकार
सूक्ष्म मूल भावति॥ ढी धिसत हसति अनगवत तीर
धसति नै इंदीवर नयनं कालिंदी के तीर॥ ६०॥ नायक
की चतुर सखी सखी सों नायक से तहा नायक सखी
सों कहि तहै॥ कवित्त॥ सूक्ष्म के आइ अति रस मंडरा
इ है ये बृंद आन [illegible] सर वदर सत है॥ इंदीवर नैनी
अति गावत अनेक भांति वेन हवि कालिंदी के सलिल धस
ति है॥ परिति ऊसा रैकर को हिसो भाइ निधान ना सि
का सक्कोरि [illegible] विहसति है॥ वदनायका रति है कौं
को हूंगडार ति है [illegible] धिसति अति रंग वरसत है॥
टी० प्रकास॥ नायक नायक को [illegible] है सो वाति
जानि कै सखी नायक सो परिहास करति है॥ कहति
है मुख धोवति है॥ ए डी घिसति है धंसे है। प्रकार नाह
सति है॥ औ तीर मैं अनगनन विसंच करति है। इंदीवर
नयन नील उत्पल नयन॥ कालिंदी जमुना के नी
र कूं कौन हे धसति है॥ इंदीवर उपमान नैन उतम
कालिक धर्म सु [illegible] उपमा उअलंकार॥ नायका की
पाविदग्धा क्रिया तीर मो॥ अनंग का मलन्य है नायक
ताकुं देखि के नीर मैं न हे धसति है॥ सूक्ष्म॥ नायक
हि रबट गुट किये वे दीमि स पर ना मा॥ दृग चलाव घर
कौ चलौ विदा किये घनस्याम॥ ८८॥ क्रिया विदग्धा

कवित्त॥ हाव वट वदि र मगा छै बार चातुरी सों उ हिम न भाम
न को प्र रि अलि का नी दै॥ कृष्ण कहे है दीके स धारि वे कै बिसक
रि कै नै है अनाम तिरि तरु बसा नी है॥ कहा के है आ ली
कहु कर त त वनै न को। रहू जे है वर सर सत ना ने र रीत ठानी है
घर को च ल त बार हा स न बला भ ला वे॥ चातुरी सों चारि
विदा की ने द धि द नी है॥ हरिप्रकाश॥ सखी सों सखी वेन॥ कृ
व वे न दू तह र वै नाव कृष्ण ने ओर उ कै अर कर कै दखि वै रह
अर्थ॥ ते हि ही वे है ने वे मिस छल सों प्रनाम कियो॥ हम
हानाव क कौ व लाव वे घर मिलाव हाव जो अवलंघ
र कौ चली किंवा नावक वे घर कौ चली॥ या तें हरि
स्याम को बिदा कियौ॥ किंवा स्यानी नायक को ताको प्रनाम
मकरि मनायो॥ घर तें कै त व ताको पराव के अवरि प्राव
को जानै ता सौं परवसि प्राय सहित वचन कहै॥ सूत्र अथ
लंकार॥ सूत्र सम तर अवहै ता वे हौ न नजै कहु भाव॥
स ल जब वर्नन॥ चितवत जितवत हित हि तै फिर
छवि नै न॥ टीका॥ तन दे उ क पत कौ रहू जवति व नैन॥ १६८
दे उ परस्पर अभास रहै॥ सो जब करति देहि तहे सखी स
ही सों कहै है॥ नायका तरकीया॥ कवित्त॥ जमुना के तीर
नारि नारि नवेली नीर तरे जहाँ वनिर छवि तिन हर बैं रहे नैन
वा है न विकुहम चितचोर को लगत अवकु राग हों लगत उमग
त मन मै नहै॥ तो हि दैन चितवति वे है हेरा जितवति चित
वति चाव सों दिर है छवि वे जैना है॥ टीका॥ जे तट कवतन्न का है
हे वन न हा उ अधिक तन त कौं रहू जवत व रै नहै॥ हरिप्रकास

हि

वज्रव तहै

सखी सौं सखी वैन॥ दंपती नैं मैं ग्रस्तान्कर ताहू तें ईजे
वस्त्र हेतें आप करती है॥ परस्पर देखत है॥ हिय मैं जो हतु है॥
ताकै जिनवत है॥ ताकै उतकंठ करत है॥ याते वतु है॥ वि
नां सीतम भयौ है॥ तासौं हित को जिउँ वत है॥ हित सौं सी
त कौं दवाव तु है॥ कि वाहित को हदय वे मन ताको वढाव
त है॥ तिरछौ है मैन विचै है॥ दाउन के नैन भी जे है॥ तासौं चा
ते है॥ कोई तरह जब निचरे है॥ हां दै है नहीं॥ ४ प्राहै दो
हा कै लच्छया को कि अलंकार॥ के ता जब छो उविव को है ता
है तौ भी जब नहीं छुटे है॥ वि है बोछि जहि देत सौं वाउ त
उपजाता है॥ म.ल. अथ गर्ववतीवर्नन॥ दूगाधिर कौ है
अथ बुद्धेरहा को है तार॥ सुरति सबिता सौ है हि तउ
क्तिनगरभ के मारा॥ ६८ दोहा प्रीतिवर्नन॥ गर्ववती नायक
की सोभा सखी नायक सौं कहति है॥ सखी सखी सौं कहै॥
नायक सखी सौं कहै॥ सवैया॥ दोसतिवैन हरैंउ हरै
हम ईछवि प्रानन की विवरी है॥ अथ बुद्धेप्रल हो है
सलोवन देर पकै सकारही है॥ गर्भ के भारस है सुके
भार तउ दति तो न बनाति बनी है॥ नैवो तउ प्रति स्यागति
है॥ मनो के लक सो सबै रंग भरी है॥ हितप्रकास॥ सखी
सखी सो॥ दूगाधिर से है॥ अथ बुद्धे॥ देह यकीसी॥ तहा
वु न जाम्न बनात ही है हार या ते हिहै॥ सुरति यउ हद साहै
त है॥ सुरति सी सौ देखिवत है॥ गर्भ के भार सौ दुखी है॥
सुरति सौ उवमान॥ गर्भनी पउ व मेव॥ सो वाविक॥ पि
र को है अथ प्राधिध यर्म॥ दूसौ तत्वा॥ म.ल. का तन लारी वर्नन॥

219A

जैसे करतो चहु बीच लैजे ॥ बहु दी जेतो नारी ॥ छवि सों गति सी
लै चलति चातुर कातल हार ॥ ६११ ॥ जाति वर्नन ॥ नायक के
साखी सों सखी सखी सों वेन ॥ सवैया ॥ जैसे करि तो हि चले
चहु दीउ घर जमुनाजल वहीं छवि वाकी ॥ चारु कराई कोसे
र मेखी च की डोर नजी तेट हैन ही हारी ॥ ओर इउचै तिर छके
र लोचन लेति मैनो गति सरउ आरी ॥ पातर मानो मनो
जस ही पकी चातुर कातन हारी निहारी ॥ हरि प्रकास ॥ नाय
क की उक्ति सखी सों ॥ जो है हाथ चलै है जे हे चहु दीच ले
है ॥ जे है चहु दीच लै है जे से है नारि छवि सों गति सी
लै चलति है ॥ नां चमे गति लेत है ॥ जे हे उह चातुर जो
कातन हारि है ॥ कि वा नायक कहै है ॥ हे चातुर सखी
हमारे मन की बात जानति है ॥ कातन हारि सों ॥ मिला
पउ ह प्रर्थ ॥ सो मावो हि ॥ जति सी मानो लै चलो ॥ प्र
उक्ता सरव सु त्रिता ॥ उसो चरि तव मैन ॥ मूल देवर
फूलनि ले गुहि सु ३० हर छि प्रगपुलि ॥ सखी करति प्रा
वाधि सवैन दे इ सर दार नम सि ॥ ६१२ ॥ नायका पर की
ताकुदि ता देवर की आस कहै ॥ सो सखी सखी सों कहै ॥
कहि हि हसे चाहि ॥ सवैया ॥ ये लसै देवर के कर के बेज
लि गहे फूल लतनि बातन ॥ आनन्द उजउ मंगन ही
वरफूल ३० सुति कंपल तना ॥ देवर दार नम सि
ली उपचार लहै कहै ॥ ओ पकी बातन ॥ जानति जो
त्रिपकी वति पारस वंगिति याहि हिर तत बातन ॥ हरि प्र
कास ॥ पै सौ दिन के वेन ॥ प्र २३ लि सो ॥ अरे देवर जे

गा

वा नायका को रूठि के रूसबकूं लसा यारें जे॥ ग्रैसरू ठिके फूलहनो
फूलसें मारहो॥ नायका के रूपंगरू छि के फूल उठे रहे बे दर
राहें फूलि के॥ सखी के ग्रेबधवकरति है॥ तासों पढे सिन
रूसी॥ मेरे देवर सें ग्रसन्न है॥ कारूं सिखू थे सों पाठ है
यातें सिखकों ग्रेन्चव सखी सों॥ को जिये॥ लिलग्रहान
जो सखी है ताकों रूसी॥ कि वा नायका ने पढें सिन के सि
खूदेवर के हाथ फूल दि ये वा नायका पर उलराब्रावे
नहा पढे सिन को बेन नायक के देवर कों सबद सें फूल से
सान्त कुमये॥ ग्रंथ ति ग्रलकार॥ स्वल तिय निज रीव
सुकल्यो वलति ति पिय न बरबबरै ट॥ सबन दाति नसर
सई बेउ खोट बन है रु॥ टदरू प्रोलित पतिका सबीन
बोवैन लक्षण॥ सै न ये संग रवीर सरंग थनंगन
रंग उग्यान रूहाई॥ काहू रके कर के नहरे बकरू तिय
के उरमें लगि ग्राई॥ तिय पर दे सगये सो जब तें तब तें उन
नो धन को धन पाई॥ वे बत कोटूब तेट बसे रि नसू
बन दत्ति चहे सर साई॥ टीका॥ सखी सो सखी
रहे तिय निज नक हीये वा की ग्रावन है दयमें जो लागी है चल
न मे तिय के न बकी रबा ताको बरे टहलन ताकी सरसई
सू बवन हीं देत है॥ पेर बर बन को लोटे है॥ नायक के
ता पकी है जाते॥ कि वा तिय के हियमें निज पिय केवल
नन बल्यो॥ निज पिय परवति न हो॥ निज पद निरपेक
न हो॥ तीनि बार लो रि ग्रायो है॥ सो वी निरखि कु दाय
वार वा हिये सखी कहि तो है॥ यह बात नायका में बाट की है

220A

स्ल पहौ सोर कहा जकौ उह हैनहीं पियके तेह ॥ उनेदै हैं अखिया
कके वैरअस सौं हैं रह ॥ ६१४ यह नायका सौ तिकैं अलिस वाले
तेछि गैर रसअसी अधिदृछि सखी सौं अ पवानायका धु
निकरिकह तहै ॥ अन्य संयोग दुखिता है ॥ रूप बकहा कहै तो
वनै मान वतीहाय ॥ सखी नायका सौं कहै तो अपराधि पराय
वो जानिये ॥ नायक कहै तो ईर्षा संचारी होय ॥ सवैया ॥ हेक
रि अंग्रिछि उनीदे करी अध उजर सौं कछु तौ लउचाहौ ॥ वारही
वार जलाय के यौं है जगी यह जा विन जामन चाहो ॥ रूहै
नतावत है कब से नजगौ यह जा विन जामन चाहौ ॥ दसते प्री
तमकी विन प्रीतहू रागकै सार कि नौइ न पाहै ॥ ६ ॥ प्रकास ॥
सौ तिकी सखी को बैन ॥ रूठा हो काहहु इह्वी सौं इन नायका
नै तिय के नेह विना रहु रागकौ सार पाह्यौ ॥ सौभाग्य प्रीत
रु किये ॥ उनीदे अंग्रा बैक रि अग्र लस भरी दर करि कैं रात्रि
नायक कैं संग जागी है ताते आंखिन मै नीद लगी है ॥ पीव
कौ नेह रु रहाग प्रसिद्ध है ताने कौ कारन नेह सो नही ॥ विभावना
होत छि भांति विभावना विन है कारन काज ॥ किंबहा
हाग प्रसिद्ध है ताने इह है ॥ तातै कह लंकरि साध्यौ ॥ पर
पाटोहि ॥ कह लंकरि काज साधिये जो कहूं विनहल
हात ॥ संदेह अहं अलंकार के हाव ते तहां संकट ॥ स्ल
वाधि वचनवैन ॥ वहु धनु स्यो प्रति सानु है तातै दहसत
हि ॥ [illegible] वैवहहु सिर दहौं रहै नाह अवचारि ॥ ६१५ ॥
हास हस [illegible] रकै परिहास कवि उक्ति ॥ सवैया ॥ विंबी चिक
तासा के [illegible] है तौ यह सारथ हौ नो ॥
काहू [illegible] कौ वहराय चनौ धन लेव है तैं परकैनो ॥

२२१

पारै प्रचंड वचन कहित है चित्त के लिये लोभ कै चाउ नहीं है ॥ ते
वहि पास निवाकौ निर्मल पति के सब ओर चित हि देखै है ॥ इस
काम ॥ काहू कैसे देन ॥ वहु तै धन लै करि अप्रहित मान उत्कृष्ट
रहै ॥ पारायण तो उनहीं उपकारी आपकार तिनि करै । जो
कछु वस्तु देत है वाकै तारा सरा सहित देत है ॥ इह दूसरो तारो है
तारा सा दुआवे माहि सा उत्तवैद्या की वध मेद सो अद्भिमाय सो
हरि कै वचन कयौ नहीं मानत है ॥ नाहक सब चाह रही दुषदे
कि वाइही कोई अपने पति सो कहत है ॥ इ नाहं अर्दी
अपने पति को सबवाहि रहै भेद सो इसी तमाह हे तम बात
है ॥ अैसी कोई सुन वचन को अर्थ करै है ॥ सब
अर्थ तो है ॥ ताको तिन ओर पश्चाताप है ॥ सदा माहु
नवहु न धनको लेवे ॥ हरि वै तेर काके उपर अप्रहित मान उ
नकार करि वै तारै देत है ॥ संसार समुद्र ताको वारो देत
है ॥ वेरसत हि वे रम हो रे धान रहै ॥ ते इ माहि म तिन न
हि छाडि स्यावाहि तोहि ॥ वैद्यो नारायणो हरी ॥ संसार रु
तरोग को दूर करति है ॥ तिनकी वध लव मी सो रे रहै सो रु
हिये वाको लवमी तो कहै वाको कारन जानिये ॥
मय हमे छाती सो लगाये कोर हित है ॥ तहा लछमी को
वैन नायक सो ॥ धनी नायक सो लवनु ॥ रसिक प्रि
या मे कहै है ॥ अव छमी संपर धनी सु चित विसदाकु
लीना ॥ वहु धन जो तह नायक है ताको हे से प्रकास
लगाय ॥ जैसे है कोकार जवि सो ॥ अब वहमाह अप्रहित मा
न उपकार करै ॥ सबी नहीं ... जाहू जो नारी मे पहरे

221A

दूती सौं सखी सौं नायक पारौ है ताते जब नायका मैं नावन चला
है को । जैसे तैसैरु वसरा हिये लाई है । सोई दूषक है ॥ तासौं
लाई है ॥ २ तनौताविक है ॥ तब वेद्यां जो देव धू नावन का
ली रूप वानके समुरन वारी ॥ जो वधू है सो येद है सो दूती
की ओर हली ॥ जै सौ हहू ताहीत करे त्यों ते सोई नायक है
३६ सो ॥ तब नायक को गब चाहिए लवै कहै तब हियरही
६० किरही ॥ स्वयं सात्विक भयो ॥ किं वारु रहै हीं ॥ किं वा वृहन
धू को बद तासे ॥ है वधू धाम है ते औ सो नायक के तोरा ताऊ
न जो म्पू प्रायो ॥ अब लेकि है सो ॥ और वही अर्थ ॥ यह ले
अर्थ मैं सखन समग्र संकर । और श्लेष ॥ सखन समय पर आहे
सहै करै जी या वधू भाव ॥ सखन तोरे वरन उराम जेक
नआवन तरह रस ॥ कैवा लखे सखी सखे लगे पर हरी दर
६२६ यह नायक का वरकी पाहत ३ प्रानायक कौर दिवि
सात्विक भयो तिनको सखी को उपाय वेकों कहि ताहै ॥
कविता ॥ प्राय कोर रंग गेरै चिर क्रिके हराधरे अरु छिवकौ
२ तन का [illegible] काम ॥ ३ ही विसाति सीस पर पै हाक वीरी सौ
अरु ठ वांधयो ताते एक वरही कीव कि पापर रहत ति ॥ म
ट कि वलि दिउर का मनों सौं सौंग लिदे जव जवर हर और
आवत अधीर जाति ॥ तब तब दिसहसी के ३ पारै दिया
है दसें उरलागें देह लखि पर हत ति ॥ ति प्रकास ॥ ३
पसी को ३३ सखी चैठी है ॥ तहां नायक आयो है ॥ नायका
कौ के तासात्विक भयो ॥ ताको छिपावति है ॥ ३ है जानन
जाय ॥ ३ पर वातत भी है ॥ दूसरे अर्थ मैं हसी न है ॥ है

इकारे वरन उरामनेय वकारि मूलरैग प्रर्थ॥ कारे जितने है॥
मेघ सो नीलोत्पल प्रहसी कुसम ताहे॥ मवर भ्रे बृहे॥ न
उरावनै॥ मग प्रानंद कारी है॥ कत प्रावत रहु गेह॥ प्र च्यप्र
धि कौ प्रावत रे इह पुर बघर मे॥ यह जो हमारे घर है ता हो
मकौ प्रावत है॥ कुजमोन मैच सो रम हि प्रावत है॥ यद गह
वद सो॥ निप्रय माथि॥ ह सबमे कई वार रहो है॥ याहि
द बेसो रह मे कं ता पर रही सागो है॥ नायक को हाय प्र
वे है॥ मप्रे हे सुंदर है॥ मे देखे माहे सात कहो ते है हह
है॥ प्रा संकर॥ सव्र लेक प्रर्थ वह जहां सय मे हि
या जो हि॥ या जो हि कछु प्रार विध वहे रैग प्रकार॥ प्रव हिय
से चारी॥ प्रानायक॥ स उचाविते सराहि यत गिर हूय
वृत्तर लेत॥ हग रलव कत लवितन दन तन लवत कीतो॥
यह नायक को वृत्तर देखि नायक को सतव कम्पावय के
हस बीनाय का सो कहि तहे॥ पर हि मा स्थित॥ कवि द्या प्र
वर मे सो आसा जि उ तहे पार वत वजीकरै र्गम मे गिरह
प्राद्धि लेत है॥ ति नै सवको उने न उ चव करि यात ति है टीर्री
मघर सरा हत सरे तहे॥ याहि वो सरा हि वो विसरग यो
हो पार है तहे दे बरहि हरै वितावे तहे॥ रल ते नै न मल
कत है स्वघर तरे सो वी कहि प्रंग लक तको न हे ते हे॥ प्रका
स॥ नायक प्रटारी पर चउ गिर दवाज तोहे कवृत्तर ताकै
उडावति है॥ नायका कवृत्तर के छल करि नायक को पवै
है॥ सो वात जानि कै सबै तरकी वा सो कहि तहे॥ उवे वितै
उपर हृदृकरि कै सराहे है॥ कहूं प्राद्धे कवृत्तर गिरह लेते है

गिरन उठन विलसनि दृगन नैन अरसात कहत हैं॥ समवकत है। वरनन
लकहत है। कछू रसीस दे तहां तहां है॥ जानत है म लखि चित वैनन को
रत है॥ किंवा नायक के कछू कूतूर कें दृषि वैसा ताव कू। तोह
सी नायक को हो कहत है॥ सा वक को सुनत नाव तिहै दूहैता
सहेश्वास कहे॥ तो गरके हि कवू तर वे छल लसो नायक
को देखे है॥ पदि या को गिम्र लकर॥ अौर सवै हर बीति
रै गावत अरीउ छाह॥ तहि वहु विलसीनि रें को दे। वरवे ता
र। ६२८ यह नायका वर की अरजन को वैन॥ दवर सौ रहे
आ॥ सवैया॥ एवन साजे अप्रन के सिंगार वनी ठनी डोलै हुलास उ
मा है॥ अमैर सो हर दवेवर से सब का हू की सब धरै चितनाहे। ऐसो
नमे मंगल साजय अरेवद होई लाह सब जो चितचा है॥ देवसेर
रक्ताहतहू विलसी सी फहै लखि कै कहि का है॥ हरि प्रकाश॥ दवर
सो रति वरने तो रसाभास होय॥ यहै तिन के दवर सौ नायका
को प्रास तपी॥ एक गामके नव वधू को तो सवाहे वधूके देर
यह टीत है तासों तिन कै वैन नायका सों॥ और सवे हर बीत
रैं हैं। उछाह मरी गामे है वधू॥ कतही को विलसीनि
रें है देरे दवर के ब्याह मे॥ तारु उनसों रमउछाह अले
कार॥ किंवा रे वरकौ उत्प्राये नायक साछंद घर मे नहींग्र
वे जो॥ तातें विलसी सव को याही सी पछतोहै॥ किंवा नाय
का वृत्तांत रैहै॥ तातें तति हू सरे वितहकर वचाल्यो है॥
ताहि सखी वैन॥ और जो तेरी सखी है॥ सो तोहर बीति रत
है॥ नायका पछितिहै॥ कहा वि रैं है॥ उगाई सब तो नाव
के कूव्याह की गति उछाह मरि गावति है॥ ताहि अप्रे सी उरसी है

कौरे वर अस्नान नायक कौ॥ त्थ सत्य करि मोसीन ही मिलैगी
रहस्य री॥ सा लक्षण विवं दोन करि जोर कै सुनत सखा यके वैन॥ ग
हु सों हूं सतननके आतें अनछों हु नैन॥ ६२९ वहहा स्वर सनी
रहरनकै सम वसबी कौ वेन सबै हैं॥ कवि उक्ति॥ कवि
नायक वधू नते चीर चुरावैं देव धाव वचनहु रि जात हो॥ हाथ
सो गात धि नायके वे सकुची सतरायवे मन जाति त्यौंही॥ देवरि
वा करी कौ करि जोर प्रनाम करे कहै वा तर हैं हि॥ कोल निवे
वहू सो हि भई सबके अखियां सहत अनखौं ही॥ इति प्रकास॥
चीरहूं रनकौ प्रसंग॥ रति सखी वें दे हाथ जोरिकै॥
रहूं मेरे वेन सुनि के अन सो ही मोन चवखि विनायवि
नै दे॥ पावा रिसों अति हसौ हैं भयो वें वा प्रदि अनबौ है
अरे जा किदै॥ तह हा सखा रस रूप भयो॥ ताकौ कावग्र
नाय हैं परसपर्यो लाज रसवत अलंकार॥ ग्रंगन हास रस
भाव कौ रस नाहीं रसवत जानि॥ रहूं हास्य अन भाव विन
वस्त्र कौ सब विभाव तहि है कौ वपीछे रसी॥ एक वि
है अनेक भावन रिताव अलंकार॥ है परिया अनेक कौ
जै यते आसवा क॥ अथ परस्पराविकता हूं वर्णन रस
अरे हूंस तान गएे जातें भाव विचार॥ का जम हैं तौ जि
नद्दी न करि काय सपई विडार॥ ६३० वह दाहा कहे चंद्र
कामैन ही ता की सवै या प्रती नो नि॥ को उ गमन गाम से
क विगये हैं॥ ताहि को उ कहि नहै॥ कवित्त॥ अद्यानसीवे सखा
वन अंवतं बूरवचे वदलीन उ आरिके चारे न चित कुलीन व
धूर सदा तिना यक रै परनारिकै॥ हैस अरे उहि दास मै रहूं अ

[illegible]

223A

वापलसें करिकै प्रतिप्रीतनिकार दई जिनको व मारिवे॥ अरि पक
सा॥ कोई गुनी गमार के गयमें बखैरो है॥ ताहाकोई वहि तहैं अरें
सपान गरमें आप विचारके गईलाक गन सों प्रीतकरि को पल
कौ विहार दीनों॥ काक स्वर्ब कोक लगुनी वं गजा सोजनि ते
ना गन्दाहि॥ मूल तंत्रीनाद कबित्त रस सरस राग रति रंग॥ अनबूडे
बूडे तरे जे बूडे सब अंग॥ १२० बरसा बिन का विडहि॥ कवित्त
तंत्री की मधुर धुनि तालसके विवधारा ऊजामें लटन की विव
धतरंग है॥ वचन विलास चतराई के प्रकास चाल कविता दे
स जहां रस की उमंग है॥ राग की विहार न वनागरी सों हिलमेत
बहिरति अंतरति सुरत प्रसंग है॥ जगतमें बूडे जे न बूडे उन
वा गान में तरे ते ईजे बूडे ते बूडे अंग अंग है॥ रसिक प्रकास॥ कवित्त न
तंत्री बीना ताके नाद धुनि अरु कवित्त कौ रस मजा सो सरस
है बनतो रस जामें मगन बहु अयक होय॥ और राग रस को जो
रंग आजन लोना के गाय वमें रंग यको आऊ रंगवर हैहैं॥
रंगके अर्थ लाघवना है सब कौ चमत्कार या में जे अन
बूडे नहि मगन भये ओ वे संसार में बूडे॥ औ जो या में सब
अंग है॥ बूडे जे हैं तंत्रीनाद नाद हादिक विहार सक हि सव
सालिसिवादिके रितरंगमें मगन प्रादिभए॥ तेते हैं हो पातव
तेहिके तरे मनवचक्रम सों॥ बूडे मगन भये॥ ते हंसार सागर कौ
तरे पार भए॥ विरोधाभास अलंकार॥ भा हो जहां विरोध सो
बहै विरोधाभास॥ म॰ल॰ नीरस बर्ननि॥ गिरत तऊ चर लिखम
न बूडे तहां रजार॥ वहै सदा वसु नरन कौ प्रेंमगत के दिगतार॥
६२१॥ रहतपरता विक संग दुकी अधिकाई कविकीउहै॥ संवेया

जाके प्रमान के तैसें न तरे कहूं ग्याज लोकाहू न पार सहा है
कृ... कहू है सो अंधार हू लगको उन कैसेहू पावत नाहीं है॥ और ते
उ चरसा वनके मनतूं उ अनेक प्रवत्ता गहता है॥ सो पल पावर लो
गनको वर प्रेम पयोधि पगार सदा है॥ इति प्रकास॥ कवि वाक्य
गिर वहार रत्ताने उ वे जोर हि कुग गवान वेरस मै ग्रास नाहीं है॥
जिनके मन जाके लोकिक॥ विषयन ही हू पसके साज
हो है आर न तूं उ वह जो मग हू वय के प्रेम पयोधि सक
प्रसापन जोतन रहे॥ जिनके ज्ञान हू कूं नहीं॥ तिनको वसार
होत है॥ पातजा मे तूं उ सो वगार॥ तत विषय मे प्रासह है॥
लोक विषय के प्रेम को मानत साधारन अर्थ मे जाको मन
ललना सौं लगे तो है॥ प्रेम ते जोरहि कन के मन प्रेम हे जा
नि है॥ जोन उगन्न लिय तिलन की हार मुत्तो उ वदीन॥ पल
जोबर विचार रहे तो॥ लक्षणा सा॥ प्रेम पयोधि रूपक॥ मूल
सो उनन वर्नन॥ वरकु नाहीं उ न घटत न हू सबकुं मैं न हू गंभीर
क ता को पार न वर... है रंगन सो सरंग चीर॥ ३२२॥ पर सा विक
क विकी उ हि॥ सवैया॥ ... जन के जगदे हाव्व जिन को उच
वा निसदानन है॥ सो लखु भाय गहे सह जेगम न राग सक तु
हि वै उ व है॥ ने न करें कबरे गहरे उन हूं के घट हे न कये उघटे
बोलवे रंग नि चोलर चोप सन फीके न ते वटत हूं वटै॥ इति प्रका
वटक वस्य हाकार पर कैसे मान रं जन तो कोन ही है उ तोहे॥
सा ज्ञ नमके सनेह गंभीर है॥ जो भी तरि जाय संपत्त जातीर
है॥ तो भी चोला रंग वस्त्र ते हैं बर ग्याको रंग ज्ञानबोल रंग वर
घटै वाके वस्त्र तौ फाटि जात है॥ पे फीका नहीं परति है॥ मित्र

224A

णस्वरूपकनहिपावै॥ इति नागअलंकार॥ जहां दृष्टांतके दोसैवो है
तबिंबप्रतिबिंब॥ मूल॥ संपतिकेसाथदेसनसनवैंन्दुदनअस्त
वान॥ विभवसंतरउकुचनीचनरनरमविमोकीहान॥ १२४
टी॥ परस्ताविककविकीउक्ति॥ कवित्त॥ वेसंगओरुदेसनरहै
सदाएकरसकहेकविकृष्णगहेताकेसौवैवानहे॥ जैसेंजौव
७ वारिलहेतैसोंहि तैसेंवरिजातदेउ सनसप्रवीनउहरवानउरप्रा
निहै॥ औरदेखोवहठिनउरेजअरुनीचनरअवकेरहित
करैकाहूकीनकानिहै॥ संपतिसहितलालतैसेंत्यौरहतनै
मैनरओरेहैनरमहोतअपविसोहानिहै॥ रसिकप्रकास
कविवेनजानिदे॥ संपतिवृद्धितातैसोंकुसनवतहै॥ संप
तिहोलतितातैसोंसदेसनरसुपरसनग्रहोतहै॥ नविवै
एकवानिदोउपैहै॥ कुचऔनीचनरविभवसोंसतरहो
तहै॥ वकहुतजातिहै॥ औजहां विभवकीहानिभईतहां
नरमहोतहै॥ जोवनसंपतगये॥ किंवानरमाईजोहैसो
ई विभवकीहानिहै॥ विभवसंपतसहदयेदअपणेएकअ
कृतदीनवरओरसोनरमाईहै॥ सोई विभवकीहानिहै॥
ओसोकरिदोउवाकोकरिएकपनौ ऐसोपावितासि
यो॥ निदरसनाअलंकार॥ उरजोनवर्णन॥ मूल॥ नए
विससिरेअपतिनाउकोनदसाहकमायौ॥ आंटे परिप्रा
ननहरितकोटेलौनकिआव॥ १२५ टी॥ परस्ताविक
नायकाकौवेनसखीसों॥ ध्रूनायकअधीरानो
यकाराजनीतकेप्रसंगमेसमझेंसबैपा॥ उपरनौ
दलिपतअधिकमलाईमेरअंतरकेदुसहतुराईकेनि
केतहै॥ कहेंरकविकृष्णवहुभांतिनवैरैवनायदाउपरै

२२५
225

देषत है नैन तऊ भान ता विरोधी नत रषत न कौ है ए विचारि कै त
चे ते है ॥ कहुं के सौरी तऊ रजनि के समय नि के रु औरे वर पावन
है हास मिकाल होत है ॥ हरिप्रकास ॥ ए हां बोधन ए मि व्रद
ई नि कौ न ए न म लहि कै न दै विससिये विस्वास न हीं की
जिये ॥ वन के सभाव दुसह है प्रसह है ॥ किंवा लछिन
है विनि कहे औरे के ए न के नबेरे प्रानन कौ हरे है ॥ दृष
ष्टांत व्यंग ॥ मूल ॥ जदपि गराहौं बे तऊं सरवर लौं
द कुचाल ॥ न एथ एतु कहत ध वो ए मन हर न मराल ॥
टरक यह दोहा कृष्णचंद्र कौ कैन ह्वै ताको सवैया प्रवीनोद्दि
का है राजा को निरगुनी औगुनन करनि वारे व हत रहे है
ति नि तें व हत हित है ॥ प्रवर गुर मान प्रावे दिन नें हित से
रे करै त हों प्रसन्नो द्दि ॥ सवैया ॥ नीरघ के तर सरमानी ज
ल परन तो भेर है सव काल है ॥ ही मै सरोवर है दृष्टि विचार
कि टैन हि औव लिबे विधाभास है ॥ जदा पतेरे मरे रहे स
दा वास तरोन तऊ वगुला वे कुचाल है ॥ प्रानन ए तो कहा
भए ए सब ही के मनोहर न मराल है ॥ हरिप्रकास ॥ जो प्रीत
रा तौ के वे है ॥ जौ भी ए सरै वारि होय मै नित टर कुचाल है ॥
किंवा कुचाल बुरी चाल जाकौ पुरै सप्त राग के वे है ॥ तो
कहा न एमा ए तो कहा भरे ॥ ए मराल हैं सब मन के हरण
वाले है ॥ कोई प्रसंग मै राजा कौ व हत रहि न सों ॥ ताकौ राजा
प्रीत ावरै है ॥ नवीनन कौ ईव डै गुन ले प्राये ता हौं सौ रहि
न कौ प्राये जानकमप्री त करै है ॥ त ह ए त ह ना ह व जा
ना वृ त है ॥ गउ डा दि ॥ कृतमनवर्जन ॥ मूल ॥ जेती संपति कृपन
कै तेती सुमति जोर ॥ वढ त जात ज्यों ज्यों उरज त्यों त्यों होत कठोर

परदारा स्वाविक कृतन के जेती संपति तिन नी दै कृतनता का र
छांत ॥ कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ कै न रूप भागि सहाय कै दायन
सें मन नै जो कैउ संतत नाई ॥ जैौव सै हाय वैरोई कठोर विलो
कि वै सम नजकी सरनाई ॥ नाहि निहार कहौ स्वा हि ये वकहु वानर
है कवि के जि व न आई ॥ ज्यों ज्यों उरोज न वढै तिय के उरज्यौं ज्यौं नढै
न आति हि कठिनाई ॥ हरिप्रकास ॥ जेती संपत्न कृतन के वढै होती
सम्पन कृतनता मो होय न प्रधिक कहै य उरजन कुच जैसे वढै तो है
तैसे कठोर होत है ॥ दृष्टांत अलंकार ॥ नीच वर्नन मह सु ॥ नीच हि
दे हु लसै हु नहू नंदकों वोना ॥ जैसे सापके मा रि वे ते तेउ चेतन
६२६ परदारा स्वाविक कवि उक्ति ॥ सवैया ॥ जन्म गयो कुच हूं वल
ई ते न मेरि माई जगत्न मै कोरि कुटि करि धारियत है ॥ सदा जसु
मापदार का जहै वि गार डारै न औगुन सहित गुन तें जडारिय
त है ॥ नीच नर ते जैसे है दैव हू लसत हूर है गैंद दे उसआवर है तै
निहारयत है ॥ जिन ही न चाय दे दई तिन ही उर कि जाय उचेह
ते जौ जौ हौं हि साये मारयत है ॥ हरिप्रकास ॥ नीच लोक
कृपर सम न जे हां आनंद रहत है ॥ यो न नाम दाव को वारघे
ना मवो न ताकु लोन एक वार ईहा लखि नाहें नरहू जानि वै
गैंद को नरहू गहै ॥ जैसे जैसे सा को न और दव मारै मारि वै
है ॥ तैसे ते सऊ वहात है ॥ गैं द उछलै है नीच प्रावनी व डाई मा
नत है ॥ गैंद की सम जानगे है जैसे जैसे मैं र नै हैं नीच उराथै ॥
उपमा ॥ अलंकार जतन को उकटै परे कैतेनव नीचा ॥ नल
व लजा लउ सो चढै नउ नीच को नीच ॥ ६२७ परदारा प्रन्योक्ति ॥ जा
कै सभाउ नीचो होय ताकी वढवार होय तउ सुभाउ न छूटै
कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ और हे जैसे सभाव वसौ वह और प्रक

रनकै सहू हूँ है ॥ कारक कौ न उपाय करै कबि कृष्ण कहै निरधनता
है है ॥ सो जैसे लखि तेपरजतन करै जल ज्यौं च न तेन न हो है ॥ के जे
उ उ बैाचटे न लखे ब लानीच त उ ठ रिनी कौ है है ॥ हरिप्रकास
कौ रजतन न कौ उ करै तौ भी प्रकृति सु भाय जाहि ऐ बीच बिहै बन
है वरै ॥ बुरी प्रकृति तेम लीप्रकृति न है है य ॥ पु हात हूँ है
त हा न लाके के ब हाहैं उ वै जल चढे है ॥ तौ भी वै कलसु भ
व नीचाही परवे कौ है ॥ किं वा वा लानि है सानी व सा नी चाही हू
काई इ हां सो के अघ धि ऐ नीच सो नीच हो है ॥ सामान्य अर्थ
कौ दृढ करिवे कौ विसेष अर्थ कहै ॥ अर्थान्तरन्यास ॥ मूल
घर घर डोलत दीन है जन जन जाचत जाइ ॥ दिये लोभ च
समा च खनल घुन बडे लखाहि ॥ २२८ परस्ताविक लोभ की
अधिकाई कवि उक्ति ॥ सवैया ॥ ठौर है ठौर दिखानति रैल
छता जितहै तित आपुप्रकासै ॥ जाचत हू है वहो पर जाय
वकायहि वे बुरु आंत उ रासै ॥ लोभ को अरे सोधरे बस
मामर नैन के सदे बर पासै ॥ जहां पर प्रति सु दमहू
वह व्याहि त उ प्रतिदीरघ भासै ॥ हरिप्रकास ॥ घरघर मे डोल
तिति रजत दीनदुखी ह पवे ॥ औ जन जन के जाचत जात
है ॥ लोभ सोई है समा उ वनै इ दिये ता कां ता को लघु
छौ र ज बडु लखात है ॥ देखा जात है ॥ किं वा लोभ च
समाहि वे ॥ डारि दियौ कान्ह को देडोरे ॥ उर ओढे सौ लघु
दिखात है ॥ लोभ ही सौ सब सभा हरपक ॥ मूल ॥ ओढे बडे न हूं
कि लाके वेस नारौ है वेन ॥ दीरघ है यन नै कहू कारिज
हारै नैन ॥ २२९ परस्ताविक कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ ओन
गदि सरवे महमाय वेहे सोई दीसे घर हूँ नव देना ॥ धीर

226A

हि वेगहि संदरगहे गतिवे वगुहंसगके सोतल लहै ना॥ २ प्रौढ़ा सो ग्रैसे
हे हात्तवडेन वेकायउचावगहै त्रिनग्गैना॥ फारि निहारो किनौ
करि हारे सो धीरघ हावन वे सहै नैना॥ रसप्रकास॥ कवि कीउक्ति
२ प्रौढ़ा वडे नहीं हैं नवे हैं लमि किन्तने हैं लगे नानहे हैं करो
सो उनहीं हाय रहे वे नो हैं वदन को॥ सो रघ हायन [illegible]
हायन हैं नैन कहे॥ वाहि विनतनो है फारि कैं निहारे॥ नैनान
ते ग्रैहे है नीच गर जनके म नवडो नहीं [illegible] रहे दृष्टान्त
अलंकार॥ रस लगन प्रकास॥ लरिकालो सभु करि गहे निगु
नी गुन लवहाय॥ वेहे गुनी कर ते छूटै सो न गुनी है जाय॥
६३० [illegible] हाव कहे कंदुक सेन हैं हा की [illegible] प्रवीनो कि
६५८ कवि की उक्ति परस्ता विकदा हा॥ सवैया॥ [illegible] रिवानि
गुनी कै गहे कर वाल वकत्तारि गुनी कर लेत हे [illegible] सो
२ गुनी कौ [illegible] तो निगुनी हि हे आन तिहान नहे [illegible]॥ [illegible] प्रभु निर
गुनी को गहि हैं अपने गुन सों लवटाय हो लेत है॥ सोई
गुनी कर ते छूटि कै निगुनी है प्रगट दिखाई ले तहै॥ रसिक प्रका
स टीका [illegible] लगाय वे वालक परवे है॥ धरती [illegible] न लाव
त हैं॥ प्रभु जो श्री जपति हैं जी निगुनी गुन परसित हैं॥
ताकै अपने गुन लवटाय के लर घा की तरह कर मैं गहे
है॥ वह जो गुनी है॥ सोन पवके कर ते छूटै॥ २ प्र [illegible] जो रह
जार ते [illegible] जाहोर हैं॥ तो निरगुनी हो जाते हैं॥ लरिका तव
वालक अपने गुन डोर लवटावै॥ किर वाला कै कर ते छूट
टके निगुनी हो ते हैं॥ लरिका उत मान लो वा चिक निगुनी
रहउ वमेवा॥ निगुनी हाय जानो धर्मा उवमा अलंकार॥ रस

२२७

तोरेई उदं उन्नु जदं डुवे मरी सैं तोउरहूत निसंक अब दात रहू जायहैं॥

२२७

चलत पाव निरगुनी गुनी धनि मनि मोतिव माल॥ मेरे प्रनजन बस
हसौ भाग बाढ्यौ वत भाल॥ १३१ राजा को दान कवि की उक्ति॥ क
वित्त॥ दीजत मगाय केतरे गरंगरं गन केत रत्न भंडार सिरपावन
कौ यहि है॥ कि मति विसाल छबरन मास लाल हीरा हुक
मान बकसि रुठरठर रहि बै॥ गुनी अरु नगुनी सब पावें मन
निहाल महाराज विक्रम की नीति अनेक भांति हरि बै॥ गोपी
एक नयन ता कवाई जाय सो राज जैसे ही नव उ भाग बस भाग कहा
चाहिये॥ हरिप्रकास॥ निरगुनी होय वा गुनी होय सो धन अब
गज ऊद्रा मनि हीरा पचा ग धरा ज ओ कूसौ की माल ताप के
चलत है॥ ऐसे सोव देव दारवार है॥ जो या सभाग्य को अब कहा
तहे॥ तो जैसे सार सो ठरि हो तहै॥ कि वा का कुस्वर सो जैसे सार
सो मरि हो तहै॥ सोक हू भालसि लिसारमै भाग्य बाढ्यो वत
है॥ भाग्य होय न होय जैसे सार सो ये रिमको चाहियत है॥
का का दृष्टि अलोकाय॥ कि वा भाग बाढ्यो वत भाल॥ जाके
भालमै भाग्य नही है जो सार की ये रिमयत वा को भा
ल भाग्यन को चाहिये॥ बहुत जात ओ अस्मात व्राप वे है
मूल॥ सामा है न समाज की सबै सार हुके साथ॥ बाढ व
ली जय साह जस [illegible] दिहा रेहाय॥ १३२ कवि की उक्ति कवित्त
राजनकी जय सिद्धि वर्ननं॥ जगमगयो दिल्ली दल [illegible] तुति को
प्रताप वन तव डुगे अब डुडावे अरि नके माथे है॥ सम
र समाज साम सब न सघान [illegible] बस भांति नके साहू [illegible]
ताहे॥ रहि नसवाई जहां सिंहसम हाथा जम [illegible] हाथ विजय की सि
द्धि रावरेई हाथ है॥ हरिप्रकास॥ कवि उक्ति॥ सामा सेन समा

हो नाके संबूर की सामग्री कहा है प्यार दार गोपाल तल दृम
गुसवार त्ती ए सामासैन की है ॥ सपान न्ति न की चाकराई
सो सब साहि जो पान साहि ताके हाथ है ॥ दरं नवा हु ब लीज
बसाहि [illegible] बड़ी है भुजा ताकी पर्यं कहि बेजी ता हो ति हारे हि
पहै ॥ अग्र सं गति ॥ स्लल दोर दल काढें वे लक हैं तें ज बसाहि
गुंज माल ॥ उर ग्र घा सरवे तरे ज्यौं हरि गाय गुपाल ॥ ६३३ ॥
दर सरजा दरा जसम कवि उक्ति ॥ वर्नना ॥ कवित्त ॥ एक र हनाते
आदे के से कहि तरै जे ते बिजे अग्र नेव की नेन्ततन सवाई तें ॥
के सव अग्र घा सजे राघे वृज अग्रे हैं गै हे र जन अग्र ली की
मिल्ली रिंचो उमि साई तें ॥ जे जिया विना सो रवान लहै
प्रबल उ बवन बैं त्रिपति हि इमान की दाहाई तें ॥ काली [illegible]
कुचाली काढि हरि की नौ दह मे है कीरत प्रकास जाग गुपा
लौ उजराई तें ॥ हरि प्रकास ॥ वलक के पातसाह हौं साहि ति
हा हौं विरोध मैं ॥ जहांगीर पातसाह की जहा पातसाह दी भी
र दिल्ली की कौ जगई पीक पाव है तहां लराई भई महाराज ब
उ जत सिंह लरि कै पातसाह हि कै जत्ति वा ही पातसाह ते ॥
सो बलक ते काढे तें ने तें से साहि मत्ताल ॥ उर घा सर वे उ
दर मे तरे जैसे हरि ने गायन कौ गोपालन कौं काढे ॥ दृष्टां
ता लंकार ॥ सल दोरघर हिंदु कितरवि नीदे त अग्र सीस
धरि ॥ व तिनरा लिचा दरि वुरी तें राखी जवसा र ॥ ६३४ ॥ यह
राजा कौ तरा ज मक वि की उक्ति सन तर उ व कार ॥ कवित्त ॥ अग्र
कौ रन उअरि अजीत सिंह ग्रै डा ईल नंगलै के बिकट [illegible]
न समाज कौ ॥ कहै कवि कृष्ण उ नदि ली के प्रबल दल निकसे

सकल साजै समर के साज जाकौ । अथ लसमै वीर विलसै
सकै । अथ जान का ह्यात की तें उद की लाजु कहिके साज
कौ ॥ घरघ रजारकन हिं दुन्दु जीमे लावद ति है । अथ लीस
जयसाह महाराज कौ ॥ हरिप्रकाश ममहिं उदाहरण ॥ घर घरकै
हिंदुन लूर कमैं देत है । अथ ली लसदाहू ते कहा नारी बक
रिकै ॥ वतिहि मारे क्काव दनकौ पाषि कै कहि नारी बादरि
अरचूरी तें कहिये तजाने दाबी है । जयसाह अथ घेकस
हुगता कौ ॥ हे तज अथ लें कूतहे हे है कारन कारजै संग ॥
स्लोक रह तिलरन जयसाह स्ब लखि लाखन की पौज
जाचित निरावरह ह्वै लै लै लाल सन की मौज ॥ ६४५ यह
स्तरवा दान कवि उदाहरण ॥ कवित्त ॥ कूरम कुल साईं जयसिं
ह वे अथ अंग जाग आग ता दिने समकै है ताते जयथंग अंग मै
लोउपै ईरहिता नित समर विजय कै चाउ दान कहिवे
कौ मन रहिताउमंगे है । लरद ल लाखन कौ नृप कौ वद
नेलखि सनजम बरहि नसवि कूररनरंजमे ॥ अथ बरन
जाने ताउ लाखन लहि ज्वलस जाचै सै अथ जाचीहोत
सौ जवैकु अथ संजमै ॥ हरिप्रकाश ॥ मैं जयसाह कौ सदा
लाखन सउन की पौजन हि हि नये भाजे सौ ॥ निरा
बरस्र स्रहोथी जाचिकै लाखन की मौज जब कहि सलै
के चलतो है ॥ अथ तिउदाहरण ॥ स्लोक ॥ प्रति विंवत जयसाह दति
है तन पर्दलधाम ॥ सवराज गजे तन कौ किये काय कूरस
म जकान ६३६ ताहराजा कौ सुंदरताई को वर्नन ॥ कवित्त
उदाहरण ॥ सखी कौ वैननायका सैं नायका कैं वैन सखी सौं है

कवित्त॥ राजत दर्पन मंदर मैं महा मंडन श्री जयसिंह सवाई॥
तैसें प्रतिबिंबन की अवली चहुं ओर लसै अनतै द्युति छाई॥
केतौ अनेक सरूप धरे रवराजत मंडली मैं छबि छाई॥ मान
हु जी नव कै जगतेस्वनानरूप हु की कामना नाई॥ इहां प्रका
स॥ प्रतिबिंबन माहि समान जयसाहि की द्युति दीपत है॥ सोभित
है॥ दरपन के धाम मैं सी सम हु लसै॥ सब जगत पति तावे कौ
मानौं कामरूप सरीर ताकौ रूप हु कियौ है॥ अनेक सरी
र कियौ है॥ रूप रवना जगनग जीति बौय कलस कला सोभेता॥
सरल अनी नडी उमडी सबै प्रति वाह वंत तनंरूप॥ मंग
लकरि मानौं है सो [illegible] मंगलरूप॥ ६३॥ यह रूप जा
की सरूपता वीररस कवि उहिं॥ कवित्त॥ सरस हरिके [illegible] उ
पडे अभित रल सेप दल मह महा विक मनिधान है॥ गर
जै गरूर गहै मिलि कर भाव विवह रूप र साजन र
सजवान है॥ साहि सी सवाई जय साहि रूप [illegible] स सै वी
रर सरा वैसा सिर भयौ तिहि ध्यान है॥ उमडि उद्दाहि महा
संगत के मध्ये है ये वदन कौं रंग भयो मंगल सम्मा
न है॥ इहिं प्रकास॥ अनी सेना वडी उमडी चहै॥ और तेज प्रा
ई ताकौ देखि कै॥ प्रति वाह कूर मार कै चलाय न सार
अे से भर जोधा है॥ जामै जय स्वरूप जो है महाराजा जै
जयसिंह जी सो मंगल सकल हरिकै स्थान करि मान्यौ मन
मैं आनंद रूप मान्यौ॥ इहां अर्थ सबजो है सो मंगल
के रसमयो मंगल लासा है सो लासमयो॥ उत्साह तें मंगल
सजकौ विहरत कारजकी सिद्धि विभावना॥ दलवर्नन रूप

अब सुवरन जेठके पवे सबै जलसोधि ॥ सरधर पाव मतीर हू मा
र करि तब बोधि ॥ ६३५ पद प्रबन्धौ लि ॥ अब बौकाज सिद्धि मये ॥
जैसे ते सेताबाँधे सबै सब न मिले ते हां कहि ॥ कवित्त ॥ कौन काम
जगत मे ताकी वडाई ताते कछू गरजन सरें और न काहू पनये
होहि है ते अब पनो सबला है पाका जानो ते वै वाकी सरबर अब
प्रा कौन करु वनमे ॥ जाके तादार न निदधकीत्र बासे वा मतीरे
ताव बचें सिंधु राई भई तन मे ॥ ताके आगे कहे वाकी सागर को
वात औरो है सलिल अपार है से आते ताके मनमे ॥ हरि प्रका
स कविउक्ति ॥ जेठकी दुपहरी के आहे ताधिक जल सोधि के
दक जल कौं कूठि के सब है न मिल्यो है इह अर्थ ॥ सरधर जो देस
ताके मतीर जो नर कू जो ताकू पावे कहा बापके ॥ सब स
सर उजई ॥ याते वा मारहदेस को बड़ो धि कवि कहो ॥ पद दूध
के समुद्र हू ते सब आस दोउ जात है ॥ पर अद्भुत वन अले
कारा ॥ कं हि जहस ते अधिक वलवायौ ॥ अब सबै उ बाहे सो
रूः आस सदोउ गई ॥ द सर मे दहे जानि ॥ सर सरु दुसहदु
राज प्रजान कौं कौन बचै दुबहुदद ॥ अधिक अंधेरे जग
करै मिलाप बसरविचंद ॥ ६३६ पद करसाविक कवि उक्ति ॥
सवैया ॥ एक रजाय सम मै प्रभु है सुनमो उन कौ बहुभांति बढा
वति ॥ हो तनम हाउ बदद प्रजान के ॥ और सबै सभ काज
पकावत ॥ सूध्यत है दिन ताप निसा कूरि एक है मेउ समे जब
आवत ॥ दैवौ प्रतनाप्रभाव सबकौ अंधि यारे कि तो जगमे सरसा
वत ॥ हरि प्रकास ॥ एक दहामे दोउ कौरा जेहां बदउ वे हु के स
सें प्रजान को उ सह है ॥ ताहां प्रति दं प्रति नगरा बैयान हुा पले
जोहां दुवी होते है ॥ इह अर्थ ॥ प्रभाव सकौं रविचंद मिलवे जगत

सल लोकरीत वर्नन ॥ न सति बुराई जासत जन ताहि कों सनमा
न ॥ भले भले करि छाड़ि कै औगुन गरू जपदान ॥ ६४० वारत्तावि
कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ आतन मांझ बुराई न सै कछु सो जगमें
सनमान नहिं पावै ॥ ताहि कों जी मै सबै उर आनंत दै कोउ नी
मै अनादर भाखै ॥ आदि बी जो गरू भावै भलो तो भलो ई भलो
करिकै करि रावै ॥ ताहि वहै गरू होत सनेत न दान करै अरु जा
पकरावै ॥ हरिप्रकास ॥ जाके सरीर मै बुराई बसै है ॥ ताही कों लो
ग आदर सनमान करत है ॥ भलो गरू आवै ताके भले आछे
करि छोड़ै ॥ ओछे बुरो गरू आवै ताके लिये जप करावै दान
देत है ॥ दृष्टांत अलंकार ॥ मूल ॥ कहै बहु सो श्रुति समृति इहि श्र
ने लोग ॥ तीनि दबाव तानि सबकहि तातकर जा रोग ॥ ६४१ ॥
वारत्ताविक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ कहै उ है श्रुति अर सकल
धर्मे लोग समृति रान न मै सब कोई है त है ॥ कहै कवि वृद्ध
इह जगत विदत वात जानत सबल जै है समदाहि कै दिहै ॥ हि
राजरोग अरु पातक रहै ता तो एवे वानि गहै अरु है बाधे नेमने
त है ॥ जहां दबै बल तहां करै न अमल जहां दबै निबल ताई दैत हाईंदु
सदत है ॥ हरिप्रकास ॥ वाहि वात ताकों श्रुति वेद समृति धर्म सास्त्र म
उक्ति ता तरीं दिन दिन तै है वही नातकों सत्रान रोग कहिं त है ॥ तानि
क ता य अरु राजा अरु रोग पातीन जो है सो निसकहि कों दबाव
त है ॥ दान दै कै तोर व जाव कै औरये प्राछि तक रिव कों वाव
त ही न कों दबावत है ॥ अरु अरु है राजा व
रै कुतप करै तौ रोग दवा दे बलवान कों सबवपः वहव

मूल॥ बडे न हूजैं गुनन बिन बिरद बडाई पाय॥ कहत धतूरे सों
कनक गहनो घढ्यो न जाय॥ ६६२ यह परस्ताविक कवि की
उक्ति॥ कवित्त॥ बडो जो बनायो जगदीस सो बडोई है है ताही स
बजग चाहै आदर बढायवे॥ कहै कवि कृष्ण उहू जो गोसाई सक
ल्यो ताल कूं चन को देखो क्यों न कै वे कारताई वे॥ एक ठेठो जो
से बडो गुन तिन वो हि बडो होत नाम की बडाई सहि मंड सबै
ताई वे॥ जो पै कहत कनक धतूरे ई कहावत है कैसो नत हर नको
अ गहनो घढायवे॥ टीका प्रकास॥ गुन बिना बडे नहीं होत
है॥ बिरद की बडाई पायवे॥ जैसे हेमगराजनी को पावत नाव
ना बिरद है॥ धतूरा को कनक कहत है॥ सो गहनो नहीं घड्यो
जात है॥ होने ही हो गहनो घड्यो जात है॥ अर्थांतरन्यास
मूल॥ गुनी गुनी सब कोउ कहै निगुनी गुनी न होत॥ सुन्यो
कहूं तरु अर्क तें अर्क समान उदोत॥ ६६३ परस्ताविक कवि की
उक्ति॥ कवित्त॥ बिन करतूतन्हूं ठौ पदवी सही कैसो उन नीकी न
लगित उपहास पेखियत है॥ गुनी गुनी सब कोउ कहत एक अस
हूं निगुनी गुनी न स्यात्रि लेखो लेखियत है॥ जैसे तिय दितिजा
सों सीठौ कहियत सोई निपट विषम विषुआग गैरिष वत है।
ताउ ते उ अर्क को कहावत अर्क तो उर अर्क समान को
उदोत पेखियत है॥ टीका प्रकास॥ निगुनी को सब कोई गुनी
गुनी कहे तो गुनी नहीं होय जाय॥ अर्क नाम आक के
वृक्ष ते अर्क सूर्य के समान उदोत प्रकास कहूं सुन्यो है॥
नहीं सुन्यो काहू नें सुनिये॥ सामान्य बात कहि विशेष
बात कहै॥ यातें अर्थांतरन्यास॥ मूल॥ नाहिं गरब जिन भरत

रन्तिवन सु माधौ पूरि ॥ दासी कौ जके वंदि विचहसी उबन सबे हैं
॥ ६५५ द्रौपदी समय कवि उक्ति ॥ [illegible] ॥ साधारन ने ग्रामीन प्रसं
ग मैं वंदि मै अबने नजि कै भरो हो विभ्रम कौ जानि हसी ॥ कवित्त
आप्रधा अध हता जै भटन कौ भारी भी स्ता स्यौ और विकट हि
ते हि जान घेरे है ॥ नाहर की गरज गररे सौं गरजै पति ताहि सं
मै पाछे ते सु नाये वो सिहरि के ॥ नाके अति विभ्रम को भा
व जिय जान्यो यह जी ते गो सपर ।का।क के लि वरि है ॥ प्रव
स्य म के बीच वंदमे न नही है तव उ उ मधि उ छ हह सी सब न
नो हसि है ॥ सखिप्रकाश ॥ जब द्रौपदी को हरी कि ताह कुम
नी रस रन के प्रसंग मै ॥ किं वा सं बचू दु के प्रहं ग है ॥ नाहर
को गर जा सत नाम सत्त्व [illegible] के भयकारे ॥ नहि को जु गरजि वे
है ॥ तहां वाल कीजो हरे उ वीध निसु नाई ॥ तो ज [illegible] मै वंदि
वित रहीर की पीसावन के तन और हेर वे हसी ॥ नाहर कै
गर्जी समान नाहर कौ गर्जे नायक कै वो लाइ नाये ॥
नाहर कै हेर धुनि सौ ल ग्रामा ॥ मूलसे मित सुमन जिन
तान ही तरे कुम हवे ध्वै ॥ या बेम सिक दर मै हिं गन हो वस्तु गं
धा ॥ ६५५ पर स्ता विक जो उर बुद्धि वे ठार मे न है ता को सं भि
त है बुद्धिन ही होत ता को दृष्टांत कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ और गु
न को गाहक न होय तो कहे ते पाय हो गुन सिखाये तो औ
गुन गहा करे ॥ लोक लीक लोते एक पाप हो की ठीक जा
हि ठीक ता न ताको नहि चीक नोर हाकरे ॥ लाज न कहे की ए
क नेकी न है टेक न कहे की और सुने वे ठो वदि ये समहा करे ॥
संवतिप्र संगते नु रो ह भलो होय दवी वे है वा अप्र संग ति कहा करे ॥

२३१

231

हरिप्रकास जे लोग कुमति के धंधाकार जो मै परे है॥ वे हंसगति सं
ग का कै सुंदर मत नहीं पावै है॥ कहूं रै मै लिखि राखे जु हरि राके
तौ भी हिं गमै बकदूरह गंध नहीं होवे॥ ग्रंथरउन हंसगति ते
कछु उन लोगन ना है॥ औरहू बहुत भये है॥ मूल॥ परती पद
बरह नरु नि हसी मूल कि रुबदानि॥ कहु करि राधी
मिश्र हू मूलग्राई ग्रसकानि॥ ६४६ यह पौरानि कवि परिह
रु कवि की उक्ति॥ सवैया॥ वेडितरा जस राजमै वे ठिक पावें
पुरान प्रसंग मै भासी॥ जाहि नरे पदवी सवि सतर दार सें जो
हित थे ग्रपिलाषी॥ सोरु नि कै मूल की मग लोच नि जा सें
ईडी ठ मिलाय कै राखी॥ यह जु चाहि चि लो कहत है उन गीरु साक
नि मरु कु रि राखी॥ हरिप्रकास॥ पुरान न बाचे यो ता ही सो ना
यका की आस ज्ञा की॥ तरउ स्त्री कै संजकि ये दारु है॥ पुरा
ना मै रु नि कै रु चि दानि जो नायका मूल कि कै रहि वे दखै
मिश्र हू के ग्रथ मै उसि वा न पाई॥ सा क ठि के बैं चके राखी॥
पौरानी की निंदा न चाहै तौ पैं ग्रंथ करे॥ पौरान न वा स्वे के
तहां या त्री या नायका उत पत्ति भी सुने॥ तरत्रिय दे बप्रान थे
रु नि कै॥ सु चि दानि नायका नायक की औरु मूल कि वे दे
खि॥ मिश्र चे छा हो जा भग गयै॥ तब मिश्र ने रु सकल ...आवनी
कसि कै राखी॥ सलक्षण अलंकार॥ सलक्षण ता आके लक्षे करे क्रि
या का १८ मावा॥ मूल सवैह सति करता रहै नागर ता को नाम
गपे गरवउनको सबै वहै गमै रजाम॥ ६४७ ग्रन्यो हि परस्ता
वि कहूं सम घक वि उक्ति॥ सवैया॥ कौ सम मैर रसरीत वै अदि हि के
नाह मैन रपती न उचारे॥ ज्ञान की गौन करे रव त्वात हू मूठता

231 A

नागरताई कौ नाम सकुनै सब वेद करि ता री है सो तिलकारै ॥
दूनी ओगुन मानत गवारन हू वको वा सुमृथौ सब गांम मयौ हैं ॥
हरिप्रकास ॥ सब हू बसि तौ ही देवै हुसाति है ॥ यह नागर
प्रवीन है याते नाम सौ गमार कै गाम मे बसे है ॥ सबा ह्सा
रुन के गरव गये ॥ सवे कू प्र[illegible] सबा ॥ पुनरुक्त नही ॥
गमार गाम वसि वौ है ॥ गुन गर्व वसि वौ है मान ॥ हरि
प्रकास ॥ नर की अरु नल नीर की गति एके
करि जोय ॥ ज्यौं ज्यौं नीचौ ह्वै चलै त्यौं त्यौं ऊंचौ होय ॥ ६४८
यह दोहा कृष्णचंद्र कामे न है ताकी सवे या प्रवीनाति ॥
सवैया ॥ ठामहि नामवि राजत ॥ नजहां तहां उत्तम धाम सत
सात हे ॥ पुराणी है जमरे करे काज विलोकि जिनै सब लोक हि
साजत है ॥ मानस की श्री कुहार कू नीर की एक ही वानि लखौ सदाव
त है ॥ नीचे ही ज्यौं ज्यौं चहै जग मैं त्यौं त्यौं ऊंचे ही होत प्रकासत है ॥
हरिप्रकास ॥ नर मनुष्य कू हा रे नीर की जल की गति
एकै करि जोय ॥ गति तरह है ताको एक करि निवट समझ की
जै जो यह देखि ॥ जितनो नीचौ होय कर चलै ॥ नर बल वसौ
निमत होय कर चलै है ॥ तितनो ही तू नौत ऊ को कहा वत है ॥
और नल के नीर तितनो नीचौ होय उतनो ऊंचौ हो
य ॥ ६४८ ॥ दृष्टांत प्रसंकार ॥ सलिल वढत वढत संप
ति सलिल मन सरोज वढि जाय ॥ घटत घटत फिर न
घटै वरु समूल कुम्हिलाय ॥ ६४९ ॥ परस्ताविक कवि की
उक्ति ॥ कवित्त ॥ सदन सरोवरि की सब की हलोरन सो संपति
सलिल ज्यौं ही ज्यौं ही सरसात है ॥ यह तौ प्रगट सबको गत व

भानत है मनसरोमन हू सोंराजत ज्यों ही ज्यों अधिकात है॥ ज
ब आनंद को उ आतप प्रदिनताउ जल को प्रकास निर
मिघटत जात है॥ रहे ह कविकुमुउ हू कमल सब कोस ब
रो कों हू तेन घट सूल भूल कु मिलात है॥ हरिप्रकास
संपति॥ प्रेम सलिल बढ़त बढ़त वै मन ग्रीष्म सरोज सब
मल बढ़ि जात है॥ संपति॥ सलिलन के घटत वै मन अरु
सरोज न ही घटै बसमसल्पस्पसस हितकु मिलात है॥
संपति सो जल मन सो सरोज॥ अै सोवि ये नव पक। उप
मान उपमेय में अभेद॥ मूल जो चाहत चटक न घटै रं
लो हाथ न मित्र॥ रज राजसन छुवाइयैं रहीक ने वि
त्र॥ ६५० यह पररस्ता विक चित्त मैं रजै उनन रजै तौ
रहि है मित्र को चैन॥ कवित्त॥ जग तामैं सब ही ते सरसी है
ताकी प्रीत सों चित तिनको उ जासों चेस हू न दरसैं॥ यही है
जतन कविकुल मयाके ता सेव वै सा जैसें मत दाव जो न
आपस न हूँ रसै॥ तौ ये काहू भांति पाहि मैं लौ मनि क
रै री तर्प्रै होराछि जैसे रजा तजसल नपरसै। जो ते रस
रीक ने हित कीर कर सहा ये स्वारत्तचर कउ जराइ उप्रति
सरसैं॥ हरिप्रकास॥ जो चाहत है चटक चमतकार न ही घटै
और मित्र में लों न होय॥ तराजी न होय इहप्रथ्था॥ रज धूर सों
रहै राजस रजो गुन न होहु ताई यै। उन पर हू रस न ही
चलाइये। नेह प्रीत प्रेम स्नेह अमै तो लगा सौं चीकु मैं जो चित्त
है॥ ताद्धनि मैं कहत है॥ तर के भीतर रहै धोवत है॥ चीकनो
रहै स्नेह अलंकार॥ तासों राजस रपक॥ मूल॥ अप्रतिग्मना

232A धं प्रति औ टेरं नदी कूप सर ताय ॥ सो जाकौ सागर तहां ताकी
प्यास बुझाय ॥ ६५१ ॥ अपनो कारज छोडि कै दूजे हाथ जात अ
१ न्योक्ति ॥ सवैया ॥ तूं गंभीर सरोवरि बापी कि तीमहि मैं नहि
जातन पानी ॥ छोटी नदी रवडी सरिता नद और बनाजग
दी सबै ठानी ॥ उत्तम मध्यम के उनला साय है उ अगाध
कै उथरे पानी ॥ ताकै वही कछि [illegible] समुद्र है जाकी बखा
न है और कितानी ॥ ६५२ ॥ प्रकास ॥ अति अगाध अपार प्रति औ
रे ॥ प्रति उलखन दी औ कूप औ सरोवरि ॥ औ बापनी
ती ॥ होइ ताकै सोइ ताके सागर जहां जाय ठोर है ताकी
प्यास बुझाय मिटै ॥ औ छोटे राजा सौं बडी आस लगैं तौ
बडे राजा कौ लैन हावरें ॥ जहां कछू मिलैं नहीं ॥ सदो
हि ॥ सदो कि मिस औरवे की जै पद उपदेस ॥ सल सबै
सबै संदेरं [illegible] रवर न कौं पा ॥ मनकी रुचि जैतीं जि
तें तिन तितनी रुचि होय ॥ ६५३ ॥ पर स्वाविक कवि की उक्ति ॥
नायका ये रिसै सखी कौ वैन नायक सौं ॥ कवित्त ॥ सुं
दर सब कहे है कि हकाम है जो अपने चित मैं नहीं आवै ॥ जो ति
न में [illegible] सो उहे उर को अति मोद बढावै ॥ हा सम
मे ही सम सब सुंदर [illegible] उलखावै ॥ जाकी जितीज
ह ठोर बढै रुचि जो जह ठोर जितीत वे पावै ॥ ६५४ ॥ प्रकास ॥ सवैस
मैं अपने पै सब ही सुंदर है [illegible] ॥ [illegible]
वै होई होय ॥ [illegible] मनकी रुचि जहां जितनी होय तहां
तितनी ही रुचि बढै [illegible] जो जाके प्यारे लगै सोई [illegible]

परसंख्या तथा संभावनालंकार॥ जानिये जो कै तो
तो संभावना॥ एक पै लवर जिहू जे पल ठहराय वो तर
संख्या॥ सवैया॥ मीत न नीत गलीत है जो धरिये धन जो
र॥ खाये खरचे जो जुरै तो जोरिये करोर॥ ९५३॥ बहुतर
साविक लोक मै है ते धन जोरै तोउ विनान ही याते बाप
नो खरच वो उचित है॥ सवैया॥ जो वे गलीत भये ही जौ
धन तौ वह जोर यो काहू न भावै॥ जामन के सन भीत है
आजन को जग मै प्रति स्रमक होवै॥ मीतन सो जिन के
धरिवे कउ जोर करोर लों जो व निग्रावै॥ खाये दिवे ब
रचै जो जुरै वो धुजे गप्रति मारहि वे उपजावै॥ इत प्रकास
है मीत गप्राप गलीत हो य के कोची सहाय पवे बुरी दसा
वनाय कै धन लै वै जो रिधरि गउरह नो मन ही॥ खा
कि
ये खरचिये सों जुरे संग्रह होय तो करोर जोरिये॥ जो ज
रात सों करोर जोरिये॥ संभावनालंकार॥ लक्षण॥ सोह
त संग लमानि सों उहै कहै सब लोग॥ तासन तीव रप्रौढ
न वमीनै नंकु जर जोग॥ ९५४ प्रौढ बंदि ताको वैन
नाय कहै सो॥ सवैया॥ गंधन मै उहवाच प्रमान है पौंच
लोग्राये मनोहन ही को॥ जो हवे है ते हाउ जो गजरे राव
हो तम हास वदायक जीवै॥ जो विदरीत विलो हिवे संग
उठे तग ह्रोर जल गतरी को॥ तानकी तीव वनै तिय प्रौ
ढ न म्राकिन हो तामे कजरनी को॥ इति प्रकास॥ वरयामी सों
संग कि ये सो भयो है॥ ताहे सब लोग कहै हे प्रौढ मैला ली है

233 A पातेपानकीपीकवनैहै॥ सोईहै॥ नैननमैस्यामलतातेपाते
काजरकेनैननसौंजोगहरहैगसोहतहै॥ किंवाबंकुरताकी
उक्तिनापककेसों॥ ७ अरुपानकीपीकनैननहौंलगीहै॥ अधर
मेंकाजरहै॥ किंवावरोवरकीनायककोहासकेसुगसोहतहै॥
नहिं रूपजातकहिहैनहै॥ ७ ब्रधीराकीउक्ति॥ तहांपानपीक
है पातहै॥ पहला ७ प्रथमेसमताप्रथमकार॥ ७ प्रसंगका
र हप्यतीनतीननविधजपाजोगकेसंग॥ ममलहि
ताते घातक जोगलखिंधरेअंकतहोग॥ फिरहुलहेपे
जियजोनतसीं समरहे॥ जागेरं जोग॥ ६५५ पहलाअरथजो
तसीकेपहिलास्थलनविकीउक्ति॥ सवैया॥ पतनमयोउप
जोनतसीकेग्रहसोधनतसौचतरे ७ प्रकुलावे॥ डीठपसो
तित घातकजोगविचारहीवे ७ अनतहीकुमलावे॥ आरजे
जोगलाखेजवहीहुलसेउरमानिहुलासबढावे॥
सरवागकेडुखफूलउठीमअग्यानदपुंजहियेप्रधि
कावे॥ हरिप्रकास॥ तिताकेमाहेगायहजोग[illegible]न
केकतषउमेवितहेलोगमये॥ तीरगामकेजियहेहुल
सैंजोनतसेआरजजोगसमयो॥ आरपरपतितासौंउत
पनाममयोहै॥ पहमारेजोहासनरहदोषमैंनेमानयो॥
लेस्प्रलंकार॥ ७ नमेरहरदोषमैंगनमानेता हाले
॥ किंवाजोनतसीकीनिंदवचावेतो ७ धर्षकरे॥ कै
रजोनतसीकोरछहेआवे॥ हमारेपहदेहोमये॥ कोई
साकेईपहतेहै॥ जोनतसीनैतितमारगजोगगनैयो॥

सो लक्ष्मि के जावें उत्तम थे ते जावे ती तमें उत्तमपद होत सो कया
के॥ पद्म तल के जी में जो ती जो ज्यार जो गस सम सवैया॥ मूल
पद पदां हैं मन कौं करे सब रस रहे इ संग॥ सखी दरवाजन गत में ए वे
नही विहंग॥ ६५६ पद्म प्रत्योक्ति कोई पराधीन पुरुष तरेसी
नाहि नहीं कहिये॥ कवित्त॥ पराजन के आगरनी निवरे नकरे
अंधीन है काहू सौं सेवा॥ पांव नहीं के वने वट चार तिला
है कौं जान न भाव न देवा॥ नीचे रहे द्वार जो तेवे सब संग पू
रव अन्न नजो न लहेवा॥ को नहू भांतिन आप सताई सुखी
अपनी ते नहीं है तरेवा॥ ६५७ प्रकाश॥ पांत लेत हे रवट है॥ को
करते रमद न है॥ अनाताल लतं के लिये है। साफ रकसाय
सी ताम पर्ई इसी संगमें है॥ है तरेवा नगन मेंते जो विहग
रपती है तल सी है॥ कोई पररसी तट वे लिये महन तम
रत्नाकी वी पासंग ताके रहि के उव हित है॥ पद्म पां छेहप
के अग्रोगरहो द्वि॥ मूल अरे नरहों कों कैर नहीं हि लोक
विचारां॥ कि हं नर करि सरिता हि येंबरे इ पर वार॥ ६५८
पद्म वरता वि कप वि उहि॥ ले तार वि तारते अप्रतीव है ते
मदद है॥ कवित्त॥ दोते मतनार वे ते म सार जाति कछु गन
जो नाहि भाषी॥ जो लें वदे अन्न मान गहे मरजाद है ते
तब हि लहि साषी॥ के नाके के नवरे बे करे तरमान कहत
पर तन के साखी॥ वे प्रति की वढनारि मधे अपनी परताई कहत
कि न तावी॥ ६५९ प्रकाश अरे संबोधन॥ काहू सो पेमन तरे
हो करे॥ नही हि वार वेद वि के न न रवे वे न की तरे वरताबि
है तवे तेन वन अप्रितर वार वदे॥ अनतरप्र संकार॥ मूल कनक

२. मर्सिद

२२

व

कनक तें सौगुनौं मादकता अधिकाय ॥ उहि खाये बौरात जग
यो पाये बौरात ॥ ६५८ ॥ यह लाटानुप्रास कवि उक्ति ॥ कवित्त
कनक धतूरे तें सोंनों दुगुन कनक है सोंने कौं धतूरे तें
मादकता अधिक है ॥ कहूं कवि कहे याहि खाय तन सको याहि
निरख निरख जोई सोई बौरात है ॥ सोंने में मादकता सौगुनी धतूरे
तें सरसता परस तें अधिक होत है ॥ याहि सों सा
सरस सोना ई प्रकास है यह बाचे तें सरस पाहि सोई परस है
इत्यर्थ प्रकास ॥ कनक सोंनौं कनक धतूरे तें सोंने सौगुनौं मा
दकता अधिक है ॥ प्रगट कहत है ॥ धन मद बड़ो है ऐसे प्रगट ॥ व
से धतूरे तें भाई तें बाबरे होत है ॥ ई है सो नैनों पाय तें बौरात
है ॥ सौगुनौं मादकता है ताकी मर्यादा नहि किये ॥ काव्य लिं
ग ॥ सरल ते हैं छोटे नर न तें होत रावडे न कौं काम ॥ मढ़ो
दमामौ जात क्यों कहि चूहा के चाम ॥ ६५९ ॥ यह लाटा लि
क छोटे तें बड़े की गरज न सरै ॥ यह कवि की उक्ति ॥ सवैया
ताकौ जितौ जग है सरस्यौ बल ताके तबे तिरनै सोई आरै
बात विचार है अपने जिय तें वृथा मति सोच विचारै ॥
छोटे के काम बड़े न सरै उह के तें उसा हस को न विहारै ॥ को
ऊ कहै पर चूहा के चाम मढ़ौ कहौ नहि जात निगारै
इति प्रकास ॥ वे न हूं छोटे तें नरन सों बड़े पर बकौ काज न
होत है ॥ चूहा के चाम सों दमामौ न गाढ़ौ
मढ़ौ जात है ॥ कयि यह तात के सर्व सिद्ध ते नहीं मढ़ौ
जात है ॥ यह जानिये ॥ नेत्रा कहि सर्व सहस्र सों अर्थ ते जब

[illegible]

२३५
235

सत॰ बुरो बुराई जो करै तो चित धरै सकात ॥ जो निकलंक मयंक लखि लोग गनै उतपात ॥ ६६० यह दोहा कृष्णचंद्र को मैनहि ताकी सखी यप्रवीनोक्ति ॥ कवि की उक्ति परस्पर विकलवैया ॥ जो हेम होवे वनै वरदो जगहि कै नवसुधि सवै होसिद्ध जाते है ॥ ज्यों सर उत्सान हि ये सकोदुई मृदुजन होइउर विरुद्धि बात है ॥ होइ रु इ बाई तजो कोई तु हारि कै चितस वैं बयान है ॥ जो निकलंक मयंक कि वितो चिकि कै ज्ञानता लोग दिठे उतपात है ॥ इस प्रकास ॥ बुरो बुद्धि जो करत सबुराई दोष ताको तजे तो चित न अति डरत ॥ जैसे चंद्रमा निकलंक करि दिखै लोग उतपात गनै ॥ दृष्टांत अलंकार ॥

मानमती
नानमती

सत॰ मानसहि प्रन मानसरि सरोवरै को रिवचंवार ॥ अपनी अपनी भांति सों छूटै न सहज सुवाद ॥ ६६१ परस्पर विवक विकी उक्ति ॥ कवि ॥ काहू लोगों से कारबुरो लगै बात सिर परी जिव मैं धरै कोउ ॥ लखि न कैसे न करो वकवाद पलौकिक लोक सो हो पर्यो होउ ॥ अपने मन को परलख आउ उहे निवेर नहि तुम कहि ॥ अपनी टेव को सिद्ध सादस आप छूटै न कि ताकरो कोउ ॥ ६६१ इस प्रकास ॥ सो बात सहाय सो मानस हीन हि यावे सो अपन मानसहि मानस अपन मानस रि सों ॥ अरे जो सब लोग को रिबवाद करै तबको ॥ अपनी अपनी भांति सुभाव ताको जो सहज को सवाद है ॥ सो नाहि उबज्यो है ॥ सवाद सवाद होत नहीं छूटै है ॥

ध
सवाद [illegible] विवेक देत है ॥ सवाद नहीं छूटै है ॥ विशेषोक्ति

२३३A

॥ अथ अन्योक्ति संतापवर्णन ॥ मूल ॥ जिन दिन देषे वे कुसुम
गई सु बीति बहार ॥ अब अलि रही गुलाब में अपत कटीली डा
र ॥ ६६२ ॥ यह अन्योक्ति कोई धन मान निर्धन भयो तहा धन के
लोभी जे सेवक कौं कहि है ॥ अरे भ्रमर वे प्रहांग कहा [illegible] जौबन को
रस है वो संभवै ॥ कवित्त ॥ जब लौं उदित न रितुराज को प्रताप त्यौ
हो कहै कविकुल ष्ट जाको वित्र स्प्रतिष्ठ प्रणाय ॥ तो लौं न चारि कु
न देषे है सु सरस कुसुम भरे अब न सुगंध धरा ॥ वही
॥ मास सु बीत्यो रसा अबतौ न च लखौ केरे अलि रसु जे वहती हाई हु ना
सुरहि बहार पंछ सुगंध ताहू राग को न लो सर सो अब रहे अ
पत सु ताव की कटीली डार ॥ इति प्रकास ॥ संतापहीन पर सुनौ व
नीर [illegible] प्रतिस्पर्धी वे ॥ जिन दिन नैनौ वे सा वे
दिन गये वसन्त वोहरहू जदे षे हो पनहरनी तागई हे अलि मो
र अब रहु सा ववे रस व नाना ते लिन कटीली डार को अधीर है है ॥
रु सा ववे ६६ रस करि कै सौं कहि ता है ॥ एको ते अन्ताका
र अन्योक्ति भी कहि तो है ॥ ए को जिमि सर्प्रो सुविकैल्यो
परस ॥ मूल ॥ कहिस प्राह अरकपर हे अलि उ सो न वे मह स
अहि वस्वसंत रितु रनडार न व फूल ॥ ६६३ ॥ सप्र न्योक्ति
सावैन तक ६० ताप वोह पत्ता हे ते ही ही अब सा लाग बे रहे ॥
का गुन निर्दै रे रू रूप वे रे चहि मरा सकोर है ॥ सव पा
वे उनडार के पूर सु हते जिन वे कर सत्ते सा बहु तन सौं नौ ॥ वीत
न हार गई जिन वो कु सम्भाव ति विन चुभैन हि अब सो ॥ अबै
लेव हार वसंत नत वे यहू वा सु ब हो रमही सौ विनी नौ ॥ अब
सरे हे जिव अंध धरिं सं ग्रिय सा व वेर है रहे सवता मैं ॥ इति प्रकास

कोई राजा की सेवति गई है ॥ उनी वाको सत्रे है ताको रूठि त
है ॥ अह ही आस से ॥ उ लाख अलि यो ताउ ला तइन डारन मे
लोप अरु कोर है जाते लग्यो रहै ता है ॥ परखं ताति रतनमै ॥ वे
बाता रह के मनो हरपू लू है है हाद्दरौ ॥ गन्धो ही ॥ अ लक्कार
उज्जार रहल सरस कुसम अम उराजत अलि न उ निगपुहि लाता टाहि ॥
दरसत अति ह कुमार ... न ... म न त त्यजता ॥ ६६४ न
३३ विहबल कुमार ताको वर्नन है ॥ अत्र के उक्त है सर्व
नायक के अनंत मिले जामत है ॥ हे नायक की
लोभे भमर वे ऊ हे गकरि अन्यो तिहि सों वाको अमनि
वारन कहि तहे ॥ कवित ॥ सुब कौ अगार उपवन को सिंगा
र अ प्रद्धि हो रम विविध उमग त जात है ॥ सरस कुस
म के रस अति लो भासन्ये निरधि लुपान्ये अलिं दे
खैन अघात है ॥ कहे कवि कुम अति धीर धरे आसव
सें पुलु उरानो नरत रि लपटा है है ॥ सरस नवा के तन
अ ति ह कुमार तो हे परसत बाको मन को हून पाय
तो है ॥ इति प्रकासवा ॥ सारस वे समुमरे ॥ ताम प्रलियो
या महुत तत्र कवि के ॥ वा ही वे लपटाति है ॥ नहीं प्रति
ह कुमार ताप रसे है ॥ ... परसा वे मन नहीं प्रती
त करति है ॥ प्रौढा राजा है कवि जनगामे है ॥ राजा
कौ सेवन नहीं करे है ॥ समार वार ही दे सै है ॥ दान
सहि नहीं ॥ अमानत ॥ सब की तिहि को सन है के
उन्ने सौवै है ॥ सेवन करि वे को नहीं मन पत्यात है
॥ हमै कयादेहे ऐसे पुरस्कार पै ॥ कोई कुमार अस्ताता
लगावै है ॥ कहे तिरसिकु सम अप्रे सो शीतावहे

मूलं॥ बहुरि तबडाई। आपनी करत राब तं मति स्मल॥ तिनमें
धुंमधु करके हिके गडेन। गडहर फूल॥ ९९९ यह कहै ग
नहीं न है। अस गरब अधिक करि तहै॥ ता सें गडहर वो
प्रसंग॥ कवि वाकत मतो जो ते तौ सह अप्रतारं
गडुमभि लिलि तन विरहे तन छवबै। व हि कि वहि
व चित अपनी बडाई में तहकहै चौर बित गरबाई सो
नताव कै॥ आवरस लेत है कौ चसको लाग्यो है सो
कौ कमनल गंध तजि तोत मडरात है॥ गडहर फू
लरस तत कै तो फूलि फूलि विनमवरर अफ लि सत
है अपावरै॥ दोहाय स्तवका सा॥ कोई कृपन धरब सो कहि
तहै॥ आपनी बडाई कैं केरि बेल मैं कविकहि के॥ क
ता कौ राजी हीत है॥ ता सों मतिमलि जि जम्र लेपाकि
नाहै मतिमलहै अरता न मधु फूला कौरस सुगंध वि
ना मधुकर ओरा कहिसे मन मै गडहर कौ फूल ला हो ग
है कि ता मैं नहीं। आवे॥ गडहर जाय स्स॥ पुर्व में अर्ड
है ला कहित है॥ रा न स्वनु कि ना लो है आचक नहीं
वा है॥ हह कंजनावृत्ति कौ अर्थ न तौ वोध व्यवचन
को अर्थ तव तैं प्रघीति जना॥ जहां अप्रति धातलोकना
ता न पर्द न लखम र्थ॥ सह अर्थ कौ जनार है सक्षौ
रहि अर्थ॥ पदार्थ कौ अन्याय बुसावै॥ होता तपर्द अ
नो हि मैं है जो अर्थ तारे है॥ ऐसा कंजनावृत्ति ग्रहौ हि॥
मूलं॥ कानह सों चहुन सों। सहैं बडी ह्य स्लि॥ दी
नौ ईगला न को इन ओरन वे फूलि॥ ९९९ यह अनो

२३७

237

ति कोई प्रवीन सहज न अन जानैं ॥ अविवेक लोग काम करै
तहां कहि है ॥ कवित्त को रस नाहि पावै वहि [illegible] लिये काम करै
करतार ने जैसे ॥ एती कही जग की रचना ते विचार बिना
न करै नहीं है ॥ देखोन को उजास है सो सब ठौर
नहीं काम आने है ॥ वे सिव के ठकुरायत लाल की फूल
गंध ही तैसे अन्धे हैं ॥ इति प्रकास ॥ वेई अरसिकों को कहि नवे
बडो सरल अथाई देखि के रत्न विधाता सैं उलाव कै अ
हां कां हुआ है डारन कौ ॥ अंधे होतुं पर फूल तरीने है ॥ उपदे
स पाहि ॥ नासिक के भाव छत्रकुतन को सारतछ ॥ अ
बोहि ॥ सरल वेन तहां नागर बडे जो आदर हैं आ
न ॥ फूल्यो अन फूल्यो भयो गमई गाम उलाव ॥ ६६ ॥
यह अन्योक्ति ॥ प्रवीन लोगन को सहुदा है ॥ उनकी
कुहिको उनकरे तहां कहि है ॥ सवैया ॥ चाय हैं आदर
जैसी करै अरु जो हित सों राखै है रोग्रान कू लैला ॥ सो यह सो अ
को रस लो जिन के मन होय [illegible] प्रीति उलो ॥ किया लिये
रीव ढामे धनी [illegible] निवाहि [illegible] लो ॥ अइसे
गमारन के वहि गाम मैं फूल उलाव [illegible] अन फूल्यो ॥
इति प्रकास ॥ वेव डे नागर प्रवीन रहत नहीं है ॥ जिन के
आदर किये सो [illegible] आव न चढे ताकि वबढे ॥ ई जाव ठौर
अर्थ ॥ गई गाम गमई गाम मै एउ लाल नहीं ॥ फूल्यो सो
विना फूल्यो होय भयो ॥ अज्ञान के गाम मै उनी जाव
तहां कहि है ॥ फूल्यो अन फूल्यो विसेस [illegible] ॥ अरे गठे
ति ॥ सरल [illegible] धन [illegible] हैं [illegible] धरी के [illegible] ॥ ह
[illegible] री [illegible] ॥ ६७ ॥ यह अन्यो

त्रि कोउ काहू सौं कछु बात हो सो ताहि दे नौ ॥ प्रावे तहां कहिये ॥ स
वैया ॥ कुनि कैं हों सखी कसम गावन गीत जो को तिलक कुभाव
न हो ॥ बहु भांति निन के तक नाम बनाय मनावे तबै सा भाव
न है ॥ अब गोधन नंद कु बताय दिवे बहु भांति जाय लेवाव
न हो ॥ यति है रुद्ध जो दिखावे तब हो वसु जहां नेम वताय न हो ॥
इति प्रकाश ॥ कोई धर्म परि पुरजा को अधिकार मिल्यो है ॥
ताको कुनाय कोई गोधन हों कहितु है ॥ गोधन नद दिन में
मन में धरलो ॥ घरी एक कहूं जाय ले ॥ प्राय कराय लेय
तब तो मैं सन कि परेगी ॥ तब तेरे सिरपर पकरन कूं नाय परेंगे
तब स जात सब रचे वरजी हो परो तब जानेगो ॥ किंवा ॥ कोई
काहू के कहना वेहै ॥ तात सों तपीलक मको नोनय
तावेगो ॥ तब पकरन तो नाय परजावे जानेगो ॥ दोहा ॥ प्रल
कार ॥ ताकौं अन्यो कहितु है ॥ भाषाभूषन ॥ दोहा ॥ कि
मि और वे विजोगर उदेश ॥ किं नानाय का कोई इस्त्री सैं
कहितु है ॥ वह जन मैं वे ही है ॥ नाकहि दे इस्त्री मीत को
ताको धन पावे दरदि है ॥ तहां श्री कृष्ण ॥ है धाम गोकहू
देने किं वाई श्री माव ॥ हमे दरदि है मे हर लेत दासी एक जा
त लेय ॥ हमकों प्रादर कुपाव लेवें हमा सो मिले रस ॥
नाय काव चनन मन रिपरें जी ताको प्रष्ठ ॥ औ कहि वे वचन स
मकि तरे ॥ दोय अर्थ की बात है ॥ तह कोई जानो तो सो तातर पर तात
हैं सो तन नवे ताय नवे यह ताकी तायवे ॥ अरे श्रवन के वे राह
हों नहि तो है ॥ सवैः करले ॥ कहि ॥ सराहिवे ॥ सवे रहे गरैं मोन ॥

गंधी अंध गुलाब कौ गमई गाहक कौन॥ दोहा यह अन्योक्ति
कोई उनसौं कूरन हीं करै॥ तहां कहत है॥ कवित्त॥ रे गंधी हे गुला-
ब तें अमोल विरमत या गाम मैं जाके मध्य गंध हौं मरि कर सौमै
न है। अप्रेम [illegible] प्रेम हित पवन वहीं मैं लीनै दरिब को संहि लहि स-
व न सरत है गहौं मोन है॥ मो तन मैं सब हीं मैं हल्के मना-
ई कूकत पग दि अव तहूं करत कौन गौन है॥ रे गंधी बावरे हि
ये मै एतो हो विकरि गाहक गुलाब को गमेरे गाम कौन है॥
इति प्रकास॥ गुलाब को हाथ मैं लै कै सौं हि कै सराहि कै
सा थमौन गहि रहे॥ इह है कथा॥ रे गंधी तें अंध है। बुद्धि हीन है
नाहि जानै है॥ गमई मैं गमेरे गाम मैं गुलाब को कौन गा-
हक है॥ गमार के गाम मैं तौ है गुनकौ न जानै॥ गहु दोहि
मूल को छूट तौ यह जाल तरि कैतं कुरंग अकुलात॥ ६
ज्यौं ज्यौं सुरझि भज्यौ चहैं त्यौं त्यौं उरझत जात॥ ६७०
अन्योक्ति॥ संसार जाल अथ वा प्रेम जाल के बंधन मैं
कहि दे॥ कवित्त॥ तव तौन जान्यौ तमि लालन सुजान्यौ
चित अवतर व सवर को हिय धितान है॥ कहै कवि कृस्न [illegible] के
बंधन की यह रीत मैं करत कते अंग अंग गाढ जात है॥ देखौ
ते पलेर कौ उद्धूट तौ इह जाल तरि काहे कौं तूं बावरे कुरंग अ-
कुलात है॥ ज्यौं हीं ज्यौं सुरझि भागै चाहै तासयाना कवि त्यौं हीं त्यौं
तरे ई बटे उरझत जात है॥ इति प्रकास॥ ज्या त्रय मे तरि वैकौ न छू-
टै है॥ कुरंग हिरन तें वौ अकुलात है॥ जैसे जैसे सुरझायवे
भाज्यौ चाहत है॥ तै से तै से उरझत जात है॥ यह दोहा दिक साक्ष
ज्ञान है॥ इह दौहा दिक कै [illegible] अग्नि रहै [illegible] सौं तहां पर

मूल· स्वारथ पं सुकृत न श्रम वृथा देखि विहंग विचारि। बाजि
पराए पानि पर तू पंछीनु न मारि॥ ६७१ यह अन्योक्ति कोई परा
ई षुसामन कहू अपने गुरैतन से तहां कहिये॥ कवित्त॥ बाज कहौं
किसान ने बुरे करत्ति पराए काज अपने सो स्वारथ विचारत है का
है कौ॥ ए तौ श्रम नाहक सरीर कौ तू है करत है देखि दाउ लाव अपने
बिगारत है काहे कौ॥ जामे कछु सुकृत न स्वारथ समझि है यह
पातक कौ भार सिर धारत है काहे कौ॥ कहा मबै जो पै आ
न पस्तौ तू पराव पानि ताज पानि जाय दीनन मारत है काहे कौ॥
रथ्य कास॥ है बाज तू विहंग है॥ आपनी आस मैं परि गति है॥
सो है जहां उडि जाय पराय हाथ मैं परि है॥ तब बस है पर वे॥
पंछीन कौ मति मारे॥ स्वारथ न हि और है जात है॥ अ
नत अन्य भीन ही है॥ याते तेरे श्रम वृथा है॥ तू विचार के देखि
ऊंच के बाके रते रहे उ दि॥ विहंग विसेषन साभि प्राय है॥
पाते पति कै रथ्य अलंकार॥ है पति करि आहे लिखे जहां विसेष
न होय॥ मूल· दिन दस आदर पाय के करि लै आपु बखान
जब लग काग सराध पख तब लग तो सनमान॥ ६७२ अन्य
अन्योक्ति॥ को अपने दिन थोर बढ़ वारि ते गर्व करै तहां कहि॥ सवैया
थरसर के ठक ठोर मह हा सराक ही लोच मरंग है कोरो॥ नीबक
हावत ताति नैन अरन पत कै साज कुचील निहारे॥ आदर पाय दि
नाद न कौ अभिमान न है अब मे मन धारे॥ ताय स जौ लौ ल
दल आदर ता पये॥ अब नौ नाम नत डाई तक रहि लोउ है काग आ
धापन है॥ तौ तब तोई रहै तेरे सन्मान आदर॥ ताहि प्रति सरा
धा पत्र कहे जाब तोई॥ वह जाहि आवे॥ गढ़ो हि अलंकार॥ मूः

239 ला॥ भरत व्यास तिं जरव तो सुकं वासरवे दरा॥ आदरदै कैं
सिवे सावसं वंसि की वेर॥ ६२३ भले मानस कों उ बदी जैं
अरु जीव कों आदर हृ यत हों कहिवे॥ सवैया॥ देखो सब मैं
वे प्रभाउ कैं भाउ अवौ जग [illegible] औ उनहि को हिसावै॥ बूर
गई उन तूं दरनकी प्रगहु अब बूर कुरवअ जावै॥ व्यालै सम
हे विजरा भेतलौ सुक हे मइ वैनानको जानहै सो॥ आदर वै
वसिष्ट वकी वेर नु लोयत चाव सौं वाह हौं कै वो॥ इहप्रका
विजराभै तहौ सुकूव्य सौं मरे है॥ वरस मयकौ फेर है॥
समय वसिष्ठ है॥ वसिष्ठ नकी वेर नाय सकौं वा आदर है
५ के॥ बुलाइ [illegible] है॥ कोई कारज वन हौं जीव कों आदर करै
६ है॥ सत पुरुष कौं न ही पु [illegible] है॥ [illegible]॥ विंवा पद्दे
सनाव कर यो है॥ सो कूआ ववे के लिये सउन लोत है
सखी हौं सखी वैना॥ [illegible]॥ जा को नाको एक हूं जगकौ
साइन कोइ॥ हो निदाघ पूलैत से आक उ हृ उ हे [illegible]॥ ६५४
यह प्रश्नो [illegible] का हू के वक वार वृ हता है धनकी अरु काहू के
का मन आवे॥ ता मधन ना ही आवे॥ तहां कहिवे॥ क
वित्त॥ छां हनकाहू के वे ठि वे के जो ग नही छै रअ वै के उ
देह मरे॥ फूलनतेरा सेतेरलते उ ग मै नाहू काहू कौ कामर
रे॥ [illegible] त्रिसमै जर अरु पवे [illegible] उ विराजंत रे॥ हेज
५ हतौ उ हहकाम निकस निदाघ स मैं रहे [illegible] है॥ इहप्रकार
जाके लिये ताकौ [illegible] कोई॥ एक है [illegible] सीता बुलाय उहा
य कोई नहीं नरहै॥ नही [illegible] है॥ नहीं [illegible] सौं
रहा कौ॥ [illegible] आरु निदाघ मीलन मै॥ फूलै [illegible] है॥ उर
उ हृ हो ते अरु नासक कोर हक तमाम सारहै॥ [illegible] अलवेकार

स्रल॰ नहिं पावसंहि तेराजपदूं तजांतर बरवितम्रसि ॥ अप
तमवे विनकापदें बेचो नं बदसव लपूसा ॥ ६७५ ॥ परस्परन्यो
काहू नतावे धोबैस सपै को ईक छू याहू ततहाव कहिये ॥ रंग
रवेप्रसंग मैं है सभते ॥ कवित्त ॥ मधवा के जल सों उमगि
अधिक ना नौबहू पवन वेरा वेयो तेव सावसउ [illegible] पहे ॥ छ
ठि चित्त रह लिवांभरा हे यति रह सा अवब श्रेणी तावनिक
नीठ नीठ व निकराइहे ॥ पावसन जानि हिमराज वैस
माजाइह पैलही के से हरित अरित छ तिछ पहे ॥ उनिनरव
र जौलौं नू हैन अवतत तौ सो नवद सहू सपल संपगान
पाइहै ॥ हरिप्रकास ॥ हेतरवर हमजित मसलि मम के पाति
छाडि इहसावस ववारि तेन नहीं रितराज वसंत है ॥ अपपत्र
गए बिन पात हीनभए बिनपह सी सपति दोहे ॥ निना न
वदस अप्राप्त स अप्रापत्त को पावहै नहीं [illegible] पावहै का
कानि ॥ किंवा पू लैरजा हाय पके ॥ वहसी संपत्ति कौद
नकरेंगे ॥ नावन ई संपत्त चिलैगो ॥ रितवसंत ना जा
चकमको ॥ अरदेवे हूमताता ॥ पातेनवपल्लव मदेहि
कोहू रनहिं जात ॥ किंवा बहुतक बसहें गातवकाराजा
तेपत्त साचे गौर हेठोहि ॥ स्रल॰ सीतलतां हसगंधकी
महिमा घटैनं मूहरि ॥ लीनसवांराजे तजें होंदा जानि
कपूर ॥ ६७६ ॥ टीका अप्र ज्यादि कोई आधे उनी है ॥ महो
मानहाहै ॥ अरकाहू कहै नेवाको सतकारना हो की
नौ तहावकहिये ॥ सवैया ॥ जोहाव भांति रचे जोगरतौ
विधजा कौ बढे जगते होइ तोरा ॥ कोहू करू है विक जा
नेअप्रजान कहै वारस्प्राप्त है नहूं थोरा ॥ तीनहराज

तेकाहू कपरतन कि ताने छुड्यो॥ सकुमानि ये सेता॥ सीत
लताई सुगंध घटै पहके डकरै जियमै जिन गेता॥ सुप्र
काश॥ रको अप्रर्थ अप्रस सीतलता ताकी औरा सुगंध की
महिमा वडाई॥ अरु एक छू भीन होय घटै तीनि सजा कोरै
रहत है॥ ताने सातो वै भुगन हीं कपूर को छंड्यो तो क
पूय तो पे कपूर की वडाई न घटी॥ जो अज्ञानत ईग
नी कौ नहि राहत्वा न्यो॥ तो कहाम तो॥ भ्रांति अप्रतुली
रूढोवि॥ मूल गहेन तकौ गुनगरव हहे सकुसंव
सार॥ कुचंडव पद लासचं रहे गरै तरै हू हार॥ ६७७॥
अप्राहीे रढै जाने अनादर होरहै तासो कहिये॥ सवैय
छ तेवडे कुलकी तदवी गुनकी गरताई न नीके घरै॥
कूनसवैह सिवो करै जगपानि पहान हू तेमहरै॥ ठा
रन हार विवेकरे हर प्रास विधायो हियै तन रेन रहै सउ हाउरै
जनवकु सब होय रहै हिय पाने गरैउ तरै॥ हसिप्रकास॥ जो
नी कौ हार वंपु माको लाछ मी को भाई है॥ लम प्रोउनप
न्यते॥ गुनकै प्रभु॥ गुन डोरा को जानि वै पोर गीगु
न॥ ताके गुन गरव कौ नहि गहितो है॥ अप्रो लक सहसा
र हसै है॥ हारकहि ये हार वंधन को कहिये लच्छिना सो
वंधवो होय॥ ताकू जानिये॥ भगवान ज्ञान॥ गुननिध
नी कै रत नहूं नीको अरकै हार॥ वुच जो है हारु वो स्थान
तोक ला लचहीं॥ गरै तरै भी अप्रनादर होहि रहै है
वडेन जाके कोई प्रतिष्टा वुलियै है वे है॥ ताजा अप्रा
दर नहीं करै॥ जाहां जहां जानि ये रूढोवि॥ मूल जान

240 A मंजलधिं पानिप विमलं मौजरां साधु अपार॥ रहैं गुनी हैं
गरं लसैं ता मलें न गुन्हाहार॥ ६२८ यह अन्योक्ति कोई सुपा
त्र है भलीठौर रहिवे लायक छोटी ठौर आनंद सौं रहै तहा
कहै ते॥ कवित्त॥ जनम जलधि कुल पानिप विमल अ
ति तैरी कमला भाजग गमग गात सुहाई है॥ गुनि को जग
त मैं चौ चक्र रिचा हितो रहितौं सौ चस किं मित जवाहिर ते
पाई है॥ ते तो संगता पाय छित तला सग्रह वा लसन की वे सी
नी की दखि हासत्व की निकाई है॥ अैसो तोसु गुनी है गरत
र बैरहि ताल निगुक ता वे हार पामै कहा धौ भलाई है॥
a हरप्रकास॥ जनम जलधि समुद्र पानि कहा आवत
ते अैसौ विमल निर्मल मैं जग मत्तै जगत मै साधु क
हा अपार वडो साधु॥ रहौ गुनी गुनी है वे गरप तौ गले
नहीं हैं॥ मुक्ताहार॥ लाव विहु अैस विहारी मैं निछन कहें छै
ट कैं जेरे गहिरै है ता दें अन्योक्ति॥ सत्व सं उंचना पे हूं रहै
तरे तीठ कच अपार॥ रहैं गरे परिसा छिवे न उहिवै नरहार॥ ६२९
परस्तालिक कवि को उक्ति॥ नायका भेद में सबी को वैन ना
यक सौं॥ कवित्त॥ कांहू वे सर उच उर हि टे नय हे गहि टे ति
न मैं चतुराई॥ नी को मैं तो रहि वे जो गरे परि तो लाहि है अ
हि वै गह वाई॥ सं उच उर तर रहु पा छे किं धन की गति के
सन ताई॥ दे और हौ जो गरे है तत्यो तो विहार करै छ दिया
ते हसाई॥ हरिप्रकास॥ ंगा च्यै त चढावे की कच के सगा कैं
भार इह संबू हु सो पी ठवे रहै है॥ ती छे रहे हैं नीच सभा वहै
सौं तार रहि तहै॥ तो भी हार कौ हृदय पर सा छिवे॥ वडो जो अ
पर है ग्राह हैं तो भी नीच पद कौ न हिं जाया॥ सखो हि अप सं ॥

२४१ मूल॥ जो सिर धरि महिमा मही लहियत राजा राव॥ प्रगटत जड़ता
आपनी मुकट पहिरियत पाय॥ ६८० यहां अन्योक्ति॥ आदर मान
सहित लायक ताहि निरादर सों राखे तहां कहिवे॥ सवैया॥
मो वह भांति जनावत लै वह भांति तिरस्कार अनादर छवि छाई॥ ताको
जग मैं नाहि प्रभाव तिनाहि लखैं सब कौं लखाई॥ जाहि धरै सिर
रतनन की महिमा लखि मैं अब तासर साई॥ ताकु कहै पग मैं पहरै अ
गैं तब वाही की मूरखताई॥ इस प्रकास॥ जो मुकट कों धरिकै सिर
दै महिमा बड़ाई महि मैं राजा राव लहियत है। आपनो मुक
ट पावमै पहरै है जड़ता जाहिर होय॥ मुकट पहिरियत पाय॥ यासों
लाव प्रतीति या मै ताकौ सब आदर करै॥ ताकौ अनादर करै॥ आप
नी मूरखता॥ मूल दोहा॥ मूल॥ चले जाउ ह्यां को करै हाथी न को व्यौ
पार॥ नहिं जानत इहि पुर बसैं धोबी ओड़ कुम्हार॥ ६८१ यहां
कृष्णचंद्र कहैं नहीं ताकी सेवा वकीलो नाहिं॥ कूरनि के गांव मैं
मान गयो तहां अन्योक्ति॥ कवित्त॥ गाम मै गये कोई आप ओड़नी
सच है नर कूर उदार ताना सहै॥ ताप्रति कोउ कहै चतुर अन्योक्ति
सरस बनाय प्रकास है॥ जाउ चलो इहां को बकरि है इन तीन के वंज
र जाय सपास है॥ गाहक गयंद हाथी के पावर धोबी ओड़ कुम्हार
को वाहा है॥ इस प्रकास चले जाउ इहां कोउ नहीं करै है इन तीन कौ
व्यौहार॥ बरी दिन नहीं जानत है या गाम मै बसत है॥ धोबी ओड़ वे
लदार अरु कुम्हार॥ तीनौं गदहा राखै है॥ कोई गयार के गाम मै
गुनी रहो॥ ताहि तहें ताहि प्रति गूढोक्ति॥ मूल॥ करि फुलेल कौ
आचमन मीठो कहत सराहि॥ रे गंधी मतिमंद अब इतर दिखावत काहि॥ ६८२ यहां अन्योक्ति॥ मूर्ख जानि वासों चतुराई नन

कवित्त॥ नगर के बगर ते जो ते सेउ चींटें रस नचैं वसैं बुलाय लीनीक
हीं आगें आउरे॥ वे न लैं निकट अति प्रीति सें। ह्वै मद नैनों धौवे
सखि सत्त को रस मकैं दिखाउरे॥ आचमन करि के फुलेल कौ कहि
तमीठौ तैं ने अजौं जान्यौ रूपराई कौ प्रभाउरे॥ काहू कौ उदार
त उ सावकौ अत्तर गंधी कहू राई ते री सकराई अत्ति वाउरे॥ हर
प्रकास॥ फुलेल दीवे सराहि के कहू आछौ है वुहू न मीठौ है
कहित है रे गंधी मत्त अंध तैं ताहि अत्तर दिखावत है॥ काहू अ
सान तें गुनी कों छोडौ गुन जान्यो नहीं ता सों गुनी बडौ
गुन जानि करि कहत है॥ ताहि प्रति कहे हैं अलंकार॥ मूल:
विषम त्रिषा दिन की चखा जिय मत नीर न सोधि॥ अमित अ
गाध अपार जल मारु कहित पयोधि॥ ६८३ अब नीच जो
जन काहू छोटे तें सिद्ध भयो अरु बडे कौ वृहत सामर्थ है अ
पने काम न हौ आने तहां कहियै॥ कवित्त॥ वृष के तरन तावे
विषम किरन सत सहित सरस बाधा कहूं ओडे है रहत है॥
जीव जंतु जल थल प्रबल अबला सब अबकला विकल है
लहे तन लहित है॥ आतप के आये अति प्यास के सताये जल
हेत धाये फिरत प्रान राखवे न हित है॥ ऐसे से समै ताप का
हू भांति सोंम नीर जा सों मारु लोग जलनिधि न्याय हित कहि
त है॥ हरप्रकास॥ विषम सताने ही जाय ऐसे हो जो वृष कौ सू
र्य जेठ मास मैं लागी प्यास॥ किं वा विषम जो जासा न तस
प्रमान अगाधा गहरे जल अरो सो जल है॥ जाव पयोधि स
जो मारवाडे संग उ माहो ताको अनादर कि देवे॥ किं वा माहौ
जो मारवादेस अरु सो जो मरु ठ ऐसो जो वाट सो ताग्र दुकीमा

242 और अर्थ वैसहि॥ कोउ ही देलति कै मन छतें काहू कौ काज
सरजावत है गलौकिक॥ अथ वसंता तिरसावर्नन॥ मूल॥ ज
गत जनायौ जिहि सकल सो हरि जान्यौं नाहि॥ जह आंखिन
जग देखियै आंखिन देखी जाहि॥ १६४ यह हौति रसम है
कौ वैन निर्वेद अथ स्थाई॥ कवित्त॥ जाहि तजि कैं तिर स्रमस्र
लैत यह कनत मेरे जाते लहि यत सबसु बनके गातहै॥ मा
नि अनत चित हरि भजन तप छांडि जानबूझ विषय विष
म विषमे जात है॥ जिन सब जगत जनायौ भली भांति वेद प
थ तेन जान्यौ और सो माह कौ उदोत है॥ यह खोजि आंखिन हि
सब दरसावै तिन आंखिन को काहूं भांति देखवौ न होत है
इस प्रकास॥ जिन हरि नै जगत संसार कै जनायौ उपजायौ
सो हरि कैं रछक जान्यौ नाहि॥ जैसे आंखिन हौं सब दे
खियत है आंखि देखी नहीं जात है॥ इहां तात्पर्य लोक रा॥
मूल॥ जपमाला छापैं तिलक सरै न एकौ काम॥ मन कौ
चैनौं वृथा सांचे राचै राम॥ १६५ यहा परस्ताविक और लोय
न में कचाई है तौ लौं उपर कौ स्वांग काम न ही आवत॥ स
वैया॥ ही कौ मनोहर माल न नाचवै माल धरे उरमें किन सौ लौं
छापै न सौं तन मै डिगावै अरु ध्यान लगावर है मन किन कौ लौ
३२ मे चाउ नाचत वृथा कवित्त इक चाई रहै भरि जो है॥ का जव
ध्यइ हम ऐब सरै न ही सांच रहै मन नाहिंन जो तौ लौ॥ इस प्रका
अंतर्गत जपन कियौ माला और छापा और तिलक या तेह
कहीं काम नहीं सरै॥ कांचे मन होन नाचे है वृथा है॥ रा
म तो सांच करि राचै रामजी है यह दूसरो अर्थ॥ वैठ सब नर्के म
नहीं बिरस है॥ दूसरो अर्थ॥ जाके जपमाला छापे तिल

242A

तासो जानत हैं नम्रमाए है तिनकौ जिनश्राराम कियो है तासो का
मसरै है ॥ सिद्धि होत है ॥ ताको मोक्ष मिलै है ॥ औरे कोई कछु मन
सौं वृथा नाचत है ॥ वैष्णव की नकल करि नाचत है ॥ तौ भी रा
मसों वी मानिकै राजी होत है ॥ यह हमें राजी करिवेके लि
ये नाचत है ॥ किंवा अज्ञान गुरु सिष्य सौं कहतो है ॥ जब माला
छावे तिलक सों एक भी काम नहीं सरै ॥ सिद्धि होय ॥ चार कार्ज
है ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष उरझ हित है ॥ जब माला छापे तिल
क सौं एक भी काम न हो सरै ॥ नहीं सिद्धि होय ॥ चार कार्य है
अर्थ धर्म काम मोक्ष ॥ उरझ हित है जब माला छापे तिलक
सौं ना जो वैष्णव भए है ॥ तेरा [illegible] मनने वैराग्य लये ॥ है ताकै
कार्ज सिद्धि होय ॥ तेर सिष्य वचन पढ़े है ॥ कछु मन सौं
वृथा नाचै उरझ बचन रामते वाके नायको सांच मानो रा
जी होवत है लाग्रर्थ मे वार संख्या अलंकार ॥ और सौं राजी न
हो होय सांच सौं राजी होय ॥ वार संख्या इक पद लवरजि है
पलठ हराया ॥ उर सिष्य के वैन मे चित्र अलंकार ॥ चित्र प्रश्न
उत्तर दुह एक राख्यौ होय ॥ [illegible] मे मंक [illegible] हरं तरं हरं दस्यौ इहं ध
रं हरं चित्तं लाय ॥ विषय विषाद [illegible] अजौ न [illegible] के गुन गाय
[illegible] संतापित [illegible] वैन मन सो सब संसारी ॥ कवित्त
[illegible] निसान [illegible] ध्याय रहैला [illegible] धाम [illegible] सोवाकै वि
[illegible] कौ [illegible] प्रभाउरे ॥ तिनका हे तेरे ती न्या लोक कै
सकल सब ली कोउ तैन ना च्यो [illegible] कियो [illegible] उपाउरे ॥ ऐसे
उरे ॥ [illegible] मानि विषय विषाद [illegible] तारहर [illegible] सि तला
[illegible] मानि विषय विषाद न वारि [illegible] हरि देव के [illegible] गुन गा

रसप्रकास॥ अर्थानिर्वेद अप्रथम आईभाव॥ जस जो मांसौ है कही हाथी
ताके कुहकी नरहरके अर्पित रहै है मैं होय रहू तातें मन नेके धा
रन करिकै हरि विखै चित्र लगाव॥ किं वा नरहर सौ धरहरै है॥ वचा
व है॥ तामें चित्त लगाव॥ कौन धरहर सब भी विबवई द्रवके
रूपके परिहर छाड़िके। नरहरिन सिंह जी तिनके गुनकै
गानकरे॥ सिंह सो हाथी भाजै है॥ किं वा हे नरहर के गुन
गानकरि सिंह हरतम गवानै है॥ ताकै जगत सो वरी सबक
सोरठा॥ मैं समझ्यौ निरधार यह जग कांचो कांच सौ॥ एवै
रस अपार प्रतिबिंबत लखियै जहां॥ ६८७ यह तौ निरस सरवेय
ईभगवान वहीदेखिवे॥ कवित्त॥ निपट अपार दुखदंद कै अगा
ध असभांति भांति महा भवभ्रमन के भारहै॥ सोचे कौ सौ ढाहो
तातें सांचो सौ निहारिये तन जोजो लखियत सो सोकछु थिर ना
रहै॥ एतो मन संभ्रमै तो समझ्यौ विचारकरि यह जग कांच अबै तौ
कांच निरधार है॥ जित तित तप्र रहै सो रतन भरख बह रएकै हरि जित तहं
प्रतिबिंबत अपार है॥ रसप्रकास॥ मैं निरधार निश्चय समझ्यौ॥
जो जगत है सो कांचसरी कौ कच्चो है॥ टूटै है नहीं है॥ एक रत
नरूपन ब्रह्म को सो अपार जामें वह प्रतिबिंबत या समा
न जहां लखियत है॥ लखियत किं जपत है॥ कांच सो कांचो
उपमा॥ श्रीसत्य गुल वहार॥ सर्व जगत्त विष्णुमय है॥ सब प्र
मानै है॥ स्लोक॥ वृद्धि प्रमाण मानं प्रमानं श्रुतिं किं गनीठिंठहरा
वा॥ सद्व्योमगति परं ब्रह्म की अलख लखीन हि जाय॥ ६८८ हू
करि वर्नन॥ साखी सबौ सो कहै नावका सो कहै॥ कवित्त जि
हाय॥ कवित्त॥ दोस मन्यारे न्यारे अलग सगाय धरे नाहिं प्रति

कै नचकराई सों विरंचा निरमई यह संसो न टरति स्याजनीनहूवे
आनतें॥ निरषीन पटत्ति कृ सोदरी की तीन कहि जानन्त स्त्रजा
ननीठ बुद्धि अनमानते॥ देषत नकूं ज्यि व जानत न सो उ पख
स्त्रकी अलख वेद वचन प्रमानतें॥ हरिप्रकास॥ अनमानको
अर्थ निश्चय करनो बुद्धि तें निश्चय कियो अरु श्रुतिके प्रमान
सों निश्चय कियो॥ नीठ कहूं ई तरह ठहरत है॥ जो भीतर ह्म की ख
स्त्रगति है॥ ब्रह्मादि देवनकों अलख है ह आकार तें नाही॥ ल
षी जात है॥ द्वैतवादी व सिष्ट द्वैतवादी॥ अद्वैत अद्वैतवा
दी आपुस में विवादा वाद करतें है॥ वचनन अनुयाव ते संगति
रसत्वेत्ति॥ लषी न हि जात है वा तें हूं छकीयै॥ काव्यलिंग॥
मूल॥ नवं सलि पामनं सदन यें हूहिं आमे कहिं वार॥ निव
टं विकटिं जवस लग जु है सुलैन क वटं कमार॥ ६८९ सों निरख
म है कै वे न मन हैं सो॥ कवित्त॥ सर लखया उ गहि हे तनके
हे गर हि संग तिधरम लागि मगन के पार सो छुड़ि और पाई
उन माय करन नाम एके रहे ह स्म राय जो सो कहि चाले परे॥
जात है विकट खुपा गायके न भौरन सों तो लोग सुलत नाहि
कपट कृ तार है रे॥ हरिप्रकास॥ तवत्तां ई तरह जो म[illegible] न होत सद
न घर है जामें सरि कें न पारि कै न त षिसों आव जो लेत॥
जव कोई विकट जो नि तत कहि न जा है जो कवार तद कला
दषू है नही॥ समाधन तरत वक॥ मूल॥ पामन पाराबार कें
उतर पार कें जाय॥ तिय छवि छौंया ग्राहिनी गिलत वी (साँवसे) (निरमल)
च ही आय॥ ६९० यहां तरसा तिक ह स्तार सागर के पार है
वे को एक इद्रि विरोध है॥ कवित्त॥ सोम सो हूता सन ना मया

वाही

र

ननमसरजहां अरु समनोज जाको विक्रम महत है॥ औ ऐसो मन
सागर अपार विकराल महां कहे कु विकृत्य को उ लंघन न सौ है
सहत हि है कैधौं धरि जगत मैं अनेक करि सन को उ पाहि तरिवार मो
चहित है॥ तरनी कीदृ विद्ध याग्राहिन ति करि गहि राखत प
वलता तें वीच ही र हित है॥ द्वितीय प्रकाश॥ यह जो मन संसार पार
वार समुद्र है॥ ताकैं लंघिवै कौं न कार आय जु रहो है याप
र अर्थ॥ तिय रु स्त्री ताकी दृ ति सो छाया ग्राहनी ता न सौ है
छाया ग्राहनी नै हनुमान कौं पकरयो॥ वीच हीं आय कै
पकरे है॥ दृ ति छाया ग्राहनी रूपक॥ सूल॥ जैसे ताकैं
पतात हैं। साखैं हिये हमाय॥ मति के वहु प्राण इहां फलक
वसी जैसे स्याम॥ ध्यान कन्ह कैं वैन क विउ क्ति॥ कवि ज्ञ गावै
गन है सु ताकैं ध्यान ता महेस रु नि साधत समाधि वहु सां
ति सि तलाय कै॥ औ हरे कौं कु विध मोहै आव ता न वनि ता
नैव सकरि नम्र वन पति कैं रिसाय कै॥ एक वात उधरि आ
नौहि कै कै करि राख्यो है हमाम क्रियता न सोत चाय कै॥
वहक हता मवक हवत है दीनत है मति कहू वलावै वसी
जैसे ताआय कै॥ स प्रकाश॥ कछु ताके व्यक्त नहीं॥ लगे
नायक कौं सुनायवै नायका की उक्ति॥ जैसे ताया तीनि
तिन सैं॥ अर्थ मन ते जो प्रानी हो दृष्टा॥ ऐसो तिसै
एक ता न भये॥ दूसरे अर्थ देव कुर्वता तैं हिया॥ दूसरे
ता तकाम सें भये॥ तीसरे अर्थ ध्यान कु आतमा विषै हय
इहां अर्नीदर सें मन कै दुषमे यह तीन ताव सेंद्र य वहे है॥

244A

हमारमलोहहकौकुमाहराओरहितहै॥ कोउरेसमैंवाकौजनलि
मरिकैंगरमकरतहैं॥ तहांलोगभ्रमहोतहैं॥ तासोंतनावरावके
हैं॥ मन्तिआसंकाविवेकरतहैइहांआवेसोतदेवसपरेहैं॥ आ
आै गनोउर्लमछलकंटसीजै॥ विवाकवहइनैमन्तिस्मरन
आवै॥ हमारेवहनीप्रियाहेउभीहै॥ तोफलावहै॥ हमेंदेखि
कैंआपसीजनेकोअवथे॥ राजीहनाभीहे॥ स्यामवाइ
नैहमनकोउछि॥ हमारेमनुहोतानैसहावछलाकिकैंवाकछू
मोहिविवेकसन्नताकरै॥ हियकोहमारमरवको॥ सूत्र
मजनककोतापमज्योंयजोंनराकैंवारा॥ दूरमजनजा
नैकसोहोतेमज्योंगमारा॥ ८४२ मनकोवैनामनहैं
सोतैया॥ मरीहैसीबकुलीअद्युनीकरितैमनआरम
तोअगवोरे॥ जोहैवहोअतिदूरमजोरहैसोतैमज्योंहितस्ता
नजनकोरे॥ कुस्मकहेंवहस्यानेवहोसवपकहेवारकहाते
रे॥ हरिप्रकास॥ ऊरवैनजोमगनानकोमजिवेकोहेव
वैकोकहेसोताहैतेमज्योंसकवारभीनहैमज्यो॥ विव
परवरसाहिहोदूरमजिवेनकहोरेगमारसाहितमज्यो
जमक॥ सूत्र पनंवाहिमानोनकरिआैरनकछूउ
ताव॥ तरिहंसारतदेधिकैंहरिनामैकरिनाव॥ ८४३
होतिरहामहांकेवैनामनहैं॥ कवित्त॥ जहांकामक्रोध
मदहासताहिमेगनादेखनकौंहतारवरिहेकैंदाउरे
होवरवोसलिललहिरतामैलमकेहेजहांविक
रालमाहिमीनकोंगाउरे॥ क्रोधकहेंतहोहेविकराम॥
वहांगरहैअवकछूआैरहउपावचितलावरे॥ मेरेकहैं

मानियहि रूकहो तरै गै पगवारी करि माल हरि नाम कै करि नाव रे
दृढ प्रकास॥ नाव कौं रसी लगाय लावरि ऐसे वह न लोग कौं ये
हैं॥ ताके नाम पतिवारी॥ माला है तातवारी॥ ताकूं हृदय क
रि किंवा॥ पकरि वाके ग्रंथि॥ मंजन बरे॥ और कछू उपाय
नहीं॥ संसार तोयधि के तरे हरि नाम कौं नाव करि तीरथ
पतवारी लगदि है॥ जहां तार उतरनो है तहां॥ तहां पतवारी
नहीं लगै॥ यातें जानिये॥ है कवि ने तन वारी न हीं दई॥
मला॥ रूपक॥ मूल॥ पहवरि पानहि और की करियै तें वहुं सोधि
पाहन नाव चढाय जिन कीने पार पयोधि॥ ६५४ सो ति
रहागन कै वेग मन है॥ कवि ने सागर प्रप्याह सौ रंगा
री विकराल गाहि जहां पतहार हं ते दीरघ लहिरे है॥ देखिन
उराहि कातयाहि मति बारंबार वा ते रो ता उ तरे कछून
लिग रहै है॥ बांध्यो जिन सिंधु सो है दीनन को बंधु जिनसे
नाव दिवे जरकै कीनी घरकहि है॥ ति रीति महा राज
धरि है विरद लाज सोई यामें हम कौं निवाहि पार करि है॥
हरि प्रकास॥ यह ऐश्वर्य हम और कौं नहीं है॥ रघुवंसि
रिपा के वहि श्री रामचंद्र जी तिन के साथि हि चारै ता
पाहन पसरत है भये मानो नाव रचनाय के वानरन कौं
पयोधि लगबु के पार कियै॥ रघुनाथ जी कौं सोधि
वौ समर्थिन कियो॥ काव्यलिंग ताहि नाव रूपक॥
मूल॥ रंमजात प्रबोधि दै गुन विसारन काल॥ प्रग
टैत निरगुन निकट रहि चंग रंग भूतल॥ ६५५ पासा
न॰ तो को वेन॥ तब याकौं गुन अभिमान है॥ तब यातें दूरि है॥
प्रस निर्गुन है॥ ता ते प्रगटे है॥ हरि तव कुलिकाल के राजा न कै

245A

कवित्त ॥ कृष्ण के हेत बिलास री रीत प्रभू अरु संगत वार नसा ऊ ॥
पीठ है दूर रही है रिम जे उन को बिसतार करे जब को ऊ ॥ नीके ही
कौन सहे उन उने है सो बचे वा दिया मति को ऊ ॥ निज
नता प्रगटै जब होय तहाँ निकट प्रगटै जब दोऊ ॥ इस प्रकास
पीठ है गोलोक हि ॥ प्रउन के विसतार नम भयो विशेषी
ठहके दूर आजत है ॥ जब सउन के कोबा जै है कहत है ॥ तीर
सम्बन्ध में गना मैं है ॥ कोई वैकुंठ देवता मे है ॥ जब निर्गुन
स्वरूप ठहरा है ते है तब तब सब अग्र है बसत है ॥ या ते बंग को रंगक
रिवै नारद समान गोपाल है ॥ बंग उन विसतार ते वैराग्य
का सब प्रकार पीठ है वै दूर आजे ॥ तब संग की ओर बीच लि
लिजे ॥ तब नजीक प्रगट है ॥ के रूप पाल रहे पीठ है
राजा तहाँ श्री ऋषिपाल गोपाल सति जानिये ॥ राजा व
वल्लभाचार्य नमस्कार नहीं ॥ लजे ॥ उपमा प्रतिकार ॥
बंग को हरि रंग तार है जाकी ॥ तहाँ हो ताबिक को लोप
है ॥ कि बाजन व अप्रवनो उन नहिं बिसतार ते में वेद पाठी ऊ रोम
कुल ॥ जब दूर आजे तब प्रभु निरगुन नर रूप होय ॥ ब्रह्म प्र
भु में जान तब छह नहीं ॥ तब प्रगट तातो के प्रत तहाँ है ॥
सल जात जात वितहोत है जो जिय में संतोष ॥ हो तहाँ
तो जो होय तो हाथ घरी में मोक्ष ॥ इत्यादि परसाविक व
विवेक उहे ॥ कवित्त ॥ रतन के पंन्ना सबे ज्यों है । पढ़े मन
न सब बैठे रहे हि लिखि दिये ॥ जान नहीं कौ देख मे ॥ औ है
म मन हरि जो घर है ताकर सबको ते का रहे कौन मन ते तिरै
चौरासी प्रदेख में ॥ संवत देख जात जात प्रेम हि या को वि
तोड़ि रिप्रावृन है सम कि संतोष कवि विवेक मै ॥ कहे कवि

कृष्ण प्रेम सो हैं जहां तहां यथा तें हैं त्रय प्रनाम ताकू ही रूकने घरी
एक मै ॥ रसप्रकास ॥ चित्त धनके जाननै जै है जो ग्रमे
संतोष है तै है ॥ जो है ज्यों धनकूं दे तुरत मैं ॥ सो तो कहे
य ॥ गोपाल कुं घरी मैं माव है त्रय ॥ घरी क्यो ग्रंथ विचार का
ल मैं ॥ वचन ग्रन्थ गाव है सो ताकू तथी ॥ सो भाव ना
ग्रलंकार ॥ सबैया ब्रज वासिन के ३ चित्त धन सो धन तें
चित्त तें कृप ॥ रूचि चित्त न ग्राये रूचि ताई के ता कहत है त्रय
॥ १५९ ॥ मत्त के वैन प्र जो जन यह चित्त ना श्री कृष्ण के
ध्यान रु चिताई न ही ॥ कवित्त ॥ जाकी गान सो मान व
नीरद सी देह छवि गात लीला माल बिनिर समवि छवि छवि ईहै
लोचन ललित हैं सेर समरे ताम रस कुं वि ज्ञ प्रलोकि ग्रलि
ग्रवल रु हाई है ॥ प्रेम सों वृजवासिन के ३ चित्त है धनता
मैं दे जो है के मन मति वि घर चाई है ॥ जो न मौजे रुचि
ताई जिन जो है सो लोमन की निका ईव है जियवर्मे न ग्र
ई है ॥ रसप्रकास ॥ वृजवासिन के ३ चित्त धन है ॥ श्री
कृष्ण विना ॥ श्री कृष्ण वि बर कूं प्रेम सो धन का हूं के
नरवै सो चित्त मैं न हीं आवे ॥ जो रुचि ताई तिन के ३
सिंगार ता निरम लता कौ कहत है त्रय ॥ श्रोटो पहर
मन उदै नारहे है ॥ धन धान ग्रकुत दे ध क ॥ सवैया ॥ श्री
कींद ई प्रना कनी बी की नहीं ३ हैर ॥ जो ज्यो रस कै
तारन बिरद वारक नारन तार ॥ १५८ मत्त के वैन
कवित्त ॥ सेवक हंकार लिवारे के सावधान कहि
त तिहारे वेद विरद कारके ॥ कहे कवि कृष्ण त्यो हि रसी
दर त्रातद सा ब्रिदे मनके दोनै है ॥ ग्रवनेकुं दुखरा रिके ॥

अनकनी नीकी करी मेरीय की बीवरी लागे न उहार रहे निठु
राई धारिकै॥ जानिय तातारिवे कौ प्रेम अब बढ्यो गौतम जास जीता
वा एकौ॰ रवार नकौ तारिकै॥ रस प्रकास॥ मरहौं ना॥ नीकी भली
दोनी अनाकनी देखत हैं तो भी टरिजात हे। प्रगे म है न हीं उहा
रकरै चे॥ सो अब न मेरी बीवरी॥ वा सो अरज नई॥ यह अर्थ
मानौ तुमतारवेकू विरद प्रतिष्ठा कौ नाम अधम उधारन दीनद
याल इत्यादि॥ ताकै हे गौतम एक वार कवार न हौ॥ ताको तारिवे
जाकै आह न गहे सो प्रे॥ उत्प्रेक्षा॥ मूल॥ कौन भाँति रहिहै विर
द अब देखिवी मुरारि॥ बीधे मोसों आनि कै गीधे गीधहं तारि॥
टीका॥ प्रवीत॥ कवित्त॥ पतित उधारन कहै जा सब कोऊ सोऊ
सोच नहूँ अब व रह्यो गोवनाय कै॥ कहे कवि कृष्ण जिन अपरवे
भरम रहे लौ हो तो हें गरब वाती मन वच कायके॥ तासौं है
व रहि एक गीध तारे गीधे तुम सोई जस राख्यो है जगत व गरायकै
कौन भाँति राखि है विरद अब देखिये जु कठिन वनी है अब बीधे
मो सों आनि कै॥ रस प्रकास॥ हे मुरारि तिहारे विरद उधम उधा
रन इत्यादि को रहि रहेगो॥ अब हम देखवी देखहुंगे॥ मो सु अ
धम जानि कै बीधे हो लाज है॥ अदि आस है भये हो॥ गीध कौ
तारिवे गीधे हो उरानी हो॥ किंवा गीधे हो रि ले हो अैसे जानि
ये। अस अपलंकार॥ मूल दीरघ सांस न लेहु दुख सुख सां
ई हि न भूलि॥ दई दई कौं करति है दई दई सु कवूलि १००
यह कर नारद महा कौ चैन मन सौं॥ कवित्त जो तुहे दुख लहे
तो तू जिन अकुलाय पलै लै दीरघ उसास चित चिंता मैं न डूलै रे
सब जो लहै तो तो हि विसमै तिसा वधान रहै सेवति भगवान हूँ वे
हर बन मन हि रे॥ भिरनार है ता तो सुख दुख है तन जात कृष्ण

काहे कैं करता प्रति आतुर है दई दई दई सो दई सो भली भांति सो
कबूल कर ॥ रसप्रकास ॥ उरकी उक्ति सिक्ष सों ॥ दुबमे है दीरघ
स्वास मति होय ॥ आसु बमै साई स्वामी भगवान तारिस ति
मूलै ॥ देव देव लियै प्रकार तो है ॥ देवक मी देव जो है भगवान ॥
तिन तेनैं जो दिये है ॥ सो कबूल है ॥ परमेश्वर को प्रकार पद
अर्थ ॥ अमक छेकानुप्रास ॥ मूल ॥ वंधु भये कां दीनन को
तारौ रघुराय ॥ हठं हठ फिरत हो मूल हठ विरद कहाय ॥ ७०१ ॥
यह्न वैन भगवान सों ॥ कवित्त ॥ कौन से दीन भये की नीदया
अपराध ही कहा तुम कौं न उधारयो ॥ कौन अनाथ के बंधु
भये प्रभु कौ तुम दास महातम तारयौ ॥ ऐसे ही के स प्रतीत अक
रौं कवि कृष्ण कहै है प्रकार बैठाये ॥ हठ ही हठ नि हंक कि
रौ प्रभु जू हठ ई धाउ अनाह कवायौ ॥ रसप्रकास ॥ तुम दीनन दुखी
के बंधु भये हो ॥ के नही भये हो ॥ य स्व थे वह रघुराय रघुकुल
सब कौन कैं तारयौ है ॥ हठ हठ राजी रजो फिरतो है ॥ तारबे
को नाहौ विरद बुलावै का कातिं ॥ मूल ॥ फेरि ई उनरी अ तेवि
साराई वदिवानि ॥ तुम हू कहु भनोभाग आज कालि ह्वै दानि
७०२ ॥ दृष्टांत ॥ कवित्त ॥ हैं अति प्रान प्यारी बिन तौ वहु भांति करी
कर तार सभीनी ॥ कृष्ण कृपानिधि दीनन कौ बंधु सुनी अरु चनी
तुम काहे कौं कीनी ॥ रीझ तं संत वहीं उनके उहू बानि बिसार भनो
तुम दीनी ॥ जानि परी तुम हूं प्रभु जू कलि काल लवे दातान की
गति लीनी ॥ रसप्रकास ॥ आगे है प्रभु तुम फेर ही गुन सो
रीझे है ॥ वह बानि वको बिसराई है ॥ का हू तुम भी भानो आज
कालि के दाता भये ॥ किं वा कोई को सभै के दान न्याय न टहूल
क कौ कहै है ॥ जब नट वसा बैठे है ॥ तासे मैं न वदी कहै है ॥
ताकौ नौके दान है ॥ तासे आगे फेर ई रीझै है ॥ उनको अब

२५१A

ग्रवनबदी कैरैमे॥ इनानीगतिकैरैहै॥ तौभीहकरू मानोधेदनभ
दे॥ लेताको हि उत्प्रेक्षा है॥ म्रल॥ कवको हेरतां दीनरहिं हो जतन स्या
म सहाय॥ तमहू लागी जगत गुर जगनाथ कां जगंवाय ७०३
जगतको वे जमगतान सैां॥ सवैया॥ हैाववको रहलायरहैताव
हि दीनसभाव मनैाववकानाथक॥ नंदके नंदक हाव तो हे हरिकाहे
ते हो जतन आनिसहायक॥ ए तौ चिलेवकतोकर नायक कू ध्य
कहे प्रभु हे सवलायक॥ जानत रीत महंकू कछू अवध्यारल
गी जगकी जगनायक॥ हरिप्रकास॥ कवको वितनी वेरको
तमको दीनदुखीहायवे रहिवे रहिनालायवे॥ हेरत हो एकार
तेहे॥ हे स्याम सहायनहीं होत दे॥ हे जगतगुर जगतको
सिक्षादेनवाले॥ जगतके नायक जगतके पति॥ जगत
की बयार हमकोभी लागी॥ इहवोलनि है॥ संसारको होय
भाव हमारे भी भयो॥ यह अर्थ॥ किंवा जगत विषे उरवडी
जोहे सव के मनको पेरतो है ऐसी जो जगतकी वायसे ता
महू को लागी॥ किंवा रुववे हेरतदीन हायवे नहीं रुको के
हि कौन हेरहे॥ स्पष्टहे स्याम तम सहाय नहीं होतहे॥
कैा जगतके उर वडे होयवे तमहू तेरी मरीय हलागी है॥
तातें हे जगतनायक तें हमहू को जगतवाय लागी॥ जग
तमेकहा रीतहे॥ जो जाकूं दीन होयवे हेरे सोई सहायहोयव
हे जगतके वैानहे॥ किंवा जगतकी वाय है सो जगतकोनाथ
यकहे॥ मानो गम्योत्प्रेक्षा॥ तमहू को मानो लागी है॥ गम्यो
त्प्रेक्षा॥ जगवाय लोकोक्ति॥ म्रल॥ प्रगटभवे हि जरा जकु
लसरुवसभ्रवे वृजराज॥ मेरेंहहेरे ताकलेस सव के सावे सो
रुख॥ ७०४॥ यह दोहा कृष्णचंद्र का बैनहि ताकी सवैया प्रवी

सवैया ॥ जन्म दियो जग मैं नरदेह दियौ प्रतिपाल दियौ सब ता न जे ॥
रावरे ई गुन गावत है तुम ही कौ निहारत जान न आन जे ॥ सो अग
टै द्विज राज ही कै कुल स्व वस वास कियो वृज मैं ब्रज जे ॥ मेरे कलहु
हरौ सब है अब के सब के सब राय ऊ जान जे ॥ हरि प्रकास ॥ कै
सब विहारी कै पिता अरु के सब राय भगवान द्विज राज वंश तो
कौ कुल मैं ॥ जो भगवान प्रगट भये ॥ सोई द्विज राज ब्राह्मण हो यह के
कुल मैं ॥ अब वृज मैं आय भये हैं ॥ हमारे कुल के सकौ हरौ ॥ इहां नाम
कप्र प्रभु लाभ लोक पास तु ॥ कीजे चित सोई तरैं जहि हितन
नके साथ ॥ मेरे [illegible] ॥ १०५ ॥ महाकवि
वैन भगवान सैं ॥ कवित्त ॥ निगम पुकारत है दीनन के बंधु हरि ग्रम
सरवर कौन सहारो निहारि यै ॥ असरन सरन हरन दुख दंद ताते तेरे
दरवार छाडि कौन सैं पुकारियै ॥ तैसे तुम तारे तिन नके अनेक जन के
है कवि कृष्ण अब से मोहू कैं उधारियै ॥ कीजे चित्त सोई जासों होय निरधार अब
मेरे उन अवगुन कछू न उधारियै ॥ हरि प्रकास ॥ सोई उपाय चित मैं
कीजियै ॥ जिह जिस तरह सौं पतित तरत हैं ॥ जाय साधवैं भी तरैं
गाथो सिख ॥ तारिवे कों दृढ विवेक काव्य लिंग ॥ स. स ॥ मोहू दीजे
माथ ज्यों अनेक अधम न दियो ॥ जौं बांधे ही तो अब तो बांधे तो अ
पने उमन ॥ १०६ ॥ महाकवि बैन भगवान सौं ॥ ऊहा कहै बांध रा
खे तो अवलौं करि राखे ॥ कवित्त ॥ अंतर्यामी नाथ आरतन की अरज ति
वारत हैं प्रगट पुकारत निगम सा बिचै ॥ ताते कवि कृष्ण दीन बंधु
पद पादिप जहां सौं वारवार विनती पुकारत वहमा छिवै ॥ अध अप
नेक नके जौ हैं जो हैं दीने मो सत्तो है मो को मेरे दीनो चित
अभिलाख छिवै ॥ बांधि यो ई जैते मनमान्यो महाराज तो वे अब
कोई गुन अवगुन न बांधि राखियै ॥ हरि प्रकास ॥ दोहा उलटो सोरठा

२४८A मारदृढ़ कै ॥ ताकूं भी आदर दीजिये ॥ ज्यों जै संप्रदाय वृत्ति तिनकै
रिक्षा है। और दृढ़ ही मैं बांधे है सो संतोष तो आपने गुननसों बा
धै सो ॥ गुननकी डोरी गुनक्षे बाधन संतोष ॥ यह ले आपकछू करै ठेरके
है आश्रै दृढ़ करी है ॥ मूल ॥ कोउ केरस संग्रहे कोउ लाष हजार ॥
जरुगत मो हंस वृत्ति सदा विपत्त विदारन हार ॥ १०७ ॥ सांति रस भक्त को वैनो
मन है ॥ कवित्त ॥ संग्रह करोर करोर करै सठ धरै कोउ लाद के सब
में हारै ॥ कोउ हजार को ओर धरै वहु अंत नसै है मन मैं भ्रम भारै
कृष्ण कृपानिधि दे नित को वंध संग्रह ज्ञान प्रताप उज्यारै ॥ सं
तत मेरे वही जदुनाथ विपत्ति सदा ज विदारन हारै ॥ १ ॥ प्रकास ॥
कोई के टिक संग्रह करै कोउ लाष औ हजार मेरे तो संपत्ति
सदा विपत्ति विदारनहार जदुपति है ॥ कान्ह विपत्ति विदारन ता
पभी जाउ है ॥ जो भी संपदा यह लै आरी कहिये ति छै वहु ताक
हिये तो लोक मे यह लौ वहुत ना कहि तहै ॥ तिछै पैरो कहि तहै
ए सो एक कोटि दस लाष लां वहु हजार तीन से सवा सतवास
तां वहु हजार अर्थ से नहीं कहि ते है ॥ किं या के त्रै संग्रह होय कि
वा हजार लाष संग्रह होय ॥ कोटि सो हजार लाष वहुत ॥
जदुपति सों संपत्ति होत है ॥ जदुपति हेतु से पति हेतु मान जा
को हेतु अलंकार है ॥ मूल ॥ ज्यों है है त्यों होय जो रहे हरि
भावतनी वाल ॥ हठ न करो अति कठिन है मो तारवो गुपाल
१०८ ॥ टीका ॥ कवित्त ॥ उनकी जिन तीनमें हौं प्रभु जे जन तारे
ते आवनी गोई ॥ कृष्ण कहे गनते न वने कछु तातनके वरमा
वदि होई ॥ होनी है जो कछु है रहे है गति मारिये वालकु चाल
नसोई ॥ बेलान है प्रभु मेरे उधारिवो अस लिन को जे वृषा हठ वें

हरिप्रकास॥ जैसे जैसें हि पवगैता तैसें है पवगैता है हरि हैं बहु वें है॥
अपनी चाल सों करनी सों हठ मति कैसे॥ अति कठिन है सो
को तारिबो॥ उपाल विसेषाभास॥ आछेप अलंकार॥
मूल॥ करौ कुनत जग कुटलता तजौं न दीनदयाल॥ दुखी
होहुगे सरल हि बसत त्रिभंगी लाल॥ १०८ भक्त के वैन भ
गवान सों॥ सवैया॥ चाहत हो अब नें जिव मांग न हाय कमै प्र
भुजै हों हूं तैसे॥ कौन कुनात बैरी सगरे जग मो चित एक हू अ
वैन वैसे॥ हे कुटलाई तजौं न कृपानिधि जानत हैं अब नें जि
य ऐसे॥ दीनदयाल कहत वह दैउ सधौ गयो वहिबो न मवौं दै
हरिप्रकास॥ जगत हु मारि कुवत्त निंदा करै है॥ सो कहे है दीन
दयाल मैं कुटल ताके छिठई को नहीं तजौं हे त्रिभंगीलाल
तीन ठौर वांके ठाम है॥ भी बांके चरन॥ सो घे हृदय मैं बसत
बसत ते दुखी हुंउगे पांठि तरवार को ठेई म्यान चाहिये॥ हम
दीनदयाल हैं हम दीन हैं और प्रगुनह मछोडे कुटिलता
हमारे सबवाय वेदे लिखे राखी है॥ कोई कू वरी के वचन मेल
गाये है॥ सम अलंकार॥ अलंकार समता न तिधजाया जोग
को संग॥ किंवाकुटिलताको नहीं त्याग वो दृढ करै है॥ काव्य
लिंग॥ मूल॥ मोहि तुम्हें बाढी बहस को जीते जदुराज॥ अपने
अपने विरद की दुह निबाहन लाज॥ ११० हरितोषि॥ कवित्त॥ हम
जो है तारे तेते आहैं नव ते तुम्हारे मान सोऊ राधापाको दूसरा न
ताहिये॥ तुम्हें वान परी अघ तै अधमउधारवे की मेरै एक वाय ही की
टेक अब तिरछिये॥ दोउनें को लाज आय आपने विरद की है हरी पैज
करिबे निबाहनी विहै लिये॥ कहै कवि कृष्ण मोसों तुम्हसे विहद

हरप्रकास॥ महि देसें तमहों वहस वादी है॥ किरम जीतें है विजंग
जीते है॥ एवा तव हस कहामें॥ तजु दायकों जीतें है॥ तमगप्रध
मउधारन है॥ हमागप्रधम है॥ तम्हारी दीनदयास विरद है॥ हमा है
दीन विरद है॥ अघावग्र पावन विरद कों निवाहि वेकैं लाज तोनें
कों है॥ हमगप्रवन विरद वे है तो तमागप्रवन विरद कों कैसे करिछ
डोंगे॥ हमें निश्चय तारोंगे॥ हमें तारे तय रचना सोंक है॥ वरिय
सोहि॥ परकाया हि प्रकार है वधू स्वना हों वात॥ मुहा निज
करनी सकुचें हिं कत्त सकुचावत पहचान॥ सो हमहें प्रति वि
रुष कों मनमें अस रहित जगत॥ २२२॥ टीका॥ कवि ए जानी
वरन तिह हरि प्रगति वेदक॥ नी कुंवे भेदन दायत॥ हम तेरे वृज
याल नके मन तावें न ध्यान समेट धिसगाव त॥ ताक तो है प्र
तनी करत तन हैं सकु वें वहु सें सकुचावत॥ है तमसें नित
हीं विमर्षें तमदेन दयाल मन कों बग्रावत॥ हरप्रकास॥ सेस
में तेणा प्रतनी करनी हैं सें तको चव करत है॥ हिये मन में हि
यो मनमें रमारस प्राप्ति कुमन नहीं कियो॥ हम जो हमारी वा
तनि दुजोग ता हैं सें कनकों तम सके चरत है॥ मो हहें सें प्रति
विरुष ते हमें सरी बेजे विमुख है॥ तमहें सें महतें रचें ठें है॥ जो पा
तस हिया सके ता हैं सें तम संमुख सें हमें तो तम्हारी प्रारब्ध
नहीं है॥ जो तम्हारी प्रारब्ध है तो तमें लाज प्रावे तो हमें प्रावे॥
तमें कौन लाज प्रावे॥ विरुष वो हं कबरहनो॥ विरोधाभास
सं तेप्रवन कें पौगुन भरहिं चाहें याहिं वलाय॥ जो पवनें हं
ताते हूं विना जडु तातें राखें जाय॥ २२२ पहचास्या विरुहं तनिवि
नाहे रहित यहि व्यंग॥ सवैया॥ प्रोगुन ए जम री प्रादि वेचक

पाईयतु हैं। पियके प्रेम लाखैं॥ नंदकिसोर कृपा करि कैं कबहू
हं पतित हू विन जौ पतित राहै॥ या बिन कछु जक छिन सरै स्यामको
ई रहैं नाहूँ चै मत्त भाबैं॥ जानियत है चित्त चाहत याहि उपाय देवहू
बतताबैं॥ रसप्रकास॥ राजा को भय चोर को भय चित्त विकार
को है ता पै हैं प्रनेत्र धनसौं पर जो है संपत्ति तो या कों
बलाय चाहै॥ औ संपत्ति नाभी जउ पत्ति पति लाजको रा
खैं जाय॥ फल सीतल चढाय श्रीभगवान कौं दइ जो कछु
मिलै सो भोग लगावै॥ संगत वनालंकार॥ बलाय चाहै
लोकोक्ति॥ मूल॥ या अनुरागी चित्त की गति समझै नहिं को
य॥ ज्यों ज्यों बूडै स्याम रंग त्यों त्यों उज्जल होय॥ २८३॥ पद
प्रकार नरस॥ अत्र कवित्त॥ प्रेम नाव कौं नैनन सबी सौं
हंमने॥ सवैया॥ नैनन मांझ रहौ बुधि कैं वह नंदकिसोरकी
डीठ कहाई॥ प्रानन मै तउ सां लगा है कवि कृष्ण कहै छवि छा
निउलाई॥ या अनुरागभरी चित्तकी कछु अद्भुत रीत कही
नहि जाई॥ बूडो रहै रस स्याममै ज्यों ज्यों त्यों त्यों गहै अति
उज्जलताई॥ रसप्रकास॥ सो तिरस कोई अक्र बैन॥ यह जो अनु
रागी चित्त है जाको श्रीकृष्ण सौं प्रेम है॥ ताकी गति कोई न
ही समझै है॥ जैसे जैसे स्याम श्रीकृष्ण के रंग मैं॥ रंग मैं बू
डै तैसे तैसे उज्जल होत है॥ स्याममै बूडै रहै उज्जल होय॥
रह विरोध॥ उज्जल नाम निरमल विषयवासना रहित मल
नाते है॥ ताते बुद्धि होत है॥ सब मै विरुद्ध भासै॥ याते विरोधा
भास अलंकार॥ भासै जहां विरोध सो न है विरोधाभास॥
शृंगार समै लिख्यो है॥ शृंगार मैं भी लगाय नो॥ नायका कौं वे

250A

यह जो मेरे अनुरागी चित्त है नायक के उनमनि कै रंग रह्यो
है॥ याहू सौं भरि रह्यो है ऐह जानियै॥ ताकी गति कोई समझै न
ही॥ ज्यों ज्यों स्याम श्री कृष्ण के रंग में चाह में बूडै है॥ ऐह त्यों
त्यों राजी होय वे॥ उज्जल नाम श्रृंगार को है॥ श्रृंगार कवि
उज्जल रह्यो तीन नाम पत्रिकावत है॥ श्रृंगार में होत नाम है॥ कविता
सखी सौं सखी वैन॥ या नायका को अनुरागी चित्त है॥ रंग महो
चित्त ताकी गति दसा त कौन है का कहा सौं नाही कोई स
मझै है॥ सब ही समझै है॥ स्याम जो है श्री कृष्ण सौं ज्यों ज्यों या
के चित्त के रंग में चाह में बूडै है॥ या के चित्त को चाहे सो वारे है॥
त्यों त्यों उज्जल होत है॥ या नायका के लखै अनेक ना
यका को जो रागन सो है मेल ता को त्यागि के रह्यो होत
है॥ मूल॥ हरि कीजै तुम सौं यहै विनती बार हि बार॥ जाहि
ताहि तासे यतो रहौ उहौ रहौ दरबार॥ ७२४ सौति रस मजु के
वे नागवान सौं॥ टरप्रकास॥ दीनदयाल अनेक रन को उदयानि
धने रोई एक सरे सो गहे है॥ वेद पुरानन की सु निसा बि
दि तो दूरि प्रभु सुलासल है हैं॥ दीन उधारन वार ही बार
रही विनती कर जोर करै हैं॥ के सौ हूं जै से नतो हू उ तौ
दरबार उदारि निहारे न तो हो॥ टरप्रकास॥ हे हरि यह तुम सौं
हजार बार विनती करत हौं॥ जाहि ताहि भांति सौं अपनो स
टीर को उरे तुम्हारे दरबार में पतो रहो॥ किं वा उहै दौर है॥
तुम सौं उ हौं रहौं उ सौं पतयौ लोकोक्ति॥ मूल॥ तौ वल
है मति रिपैवली नागर नंदकिसोर॥ जो तुम नीके के लखे मो चव
रनी की ओर॥ ७२५ यह दोहा कृष्णचंद्रका में नहीं ताकी सवैया
प्रवीनता ति॥ सवैया॥ ष्णवरी कीनी नमनके छून विसेष तसंगत

व

है॥

पेट भर्‌यौ वैरहैसो सदा सो ३ वृ चारिन बाय दियै दुव मारि जौं न लिहारे
मलीवनि है प्रतिनागर आवत हिय मै विचारै है॥ नंदकिशोर जू
नीके हू वैत म अपार जे मो वरनी वै निहारि है॥ इस प्रकास॥ न
लिजां ३ नंदकिशोर तैं ३ हू वा तू मलीनता ये॥ त मनागर प्रवीन
है॥ जे त म अ छि तर हू हू मारि वरनी की गैर रद वो जे॥ त म अ
धम ३ धारन है॥ इस अधम है॥ तै मलीवनै गी॥ संभावन अलंकार
है ल सौ मै पलटि पलटै प्रकृति कौन तजै जिन चास॥ मो ग्र
करन करनावरै पसकृत कलिकासि॥ गद्य यह परस्पाति कैसे
हि वो संभवै॥ कलिजुग को वरनन॥ सवैया॥ कासो प्रकार करै वि
नतो ३ क सार भयो सगरो जग सो ३॥ जात स मै प्रगटै प्रकृती फिर
कौन सुभा ३ तजै सव के ३ अपार तवे धुरधा वो सम प्र प्रनाथ
के नाथ कहावत हे ३॥ हे गयो देहौ महानिरदै कलिकाल व
स तह आवत सो ३॥ इस प्रकास॥ सम पवार कुतार ३ त्यादि विं
ब आलस कास विनास तजुग ३ त्यादि समै वे पलटै विरे प्र
कृति सुभाव ही पलटि जाव है कौन आपनी सुभाव री तकै न है त
जै है॥ यो संसार सों अकारन है वृ पाही न है॥ तासो है राधानागर
वरनावरै॥ यह जो मै हो तापर व सि काल वहत जो है॥ जा के मं
गला चरन कियो है॥ ताहि है सो व हित है॥ किंवा प्रकरन मिवते जो
यह मै है॥ ता मै तभवय हू देव श्री कस्तव नाम जल के ता के प
व ता मै ३ वज्यो वृ दा अगै कलि कासि॥ कलि पलि जुग तावो का
लता को दूर करनवालो भगवान सह मैनाम मै कलिकाल ति
लो पक वृ लके वे नाम है॥ नीज्ये दवतान सों अर्पनावरै है
वरनावरै॥ किंवा कलि देवता दैत्य को कलहि ता को कालह
रकारन वालो पाप छै मै समाय के पेरे॥ आपनी लालजी कैं

२५। A कि विपात ओर भजन करने तें मैं छुट्यो है ॥ यो वाएतें वसि
कालपाहे सोग्र सेंकार ॥ मूल ॥ अपने अपने मत लगे वादि
मचावत होर ॥ जैसें त्यो सबको सरइयैं ॥ यें नंदकिशोर ॥ २३ ॥
मतके वेन स्यहैं ॥ अधीश्वर एक श्रीकृष्ण है ॥ पहलिं हंत ॥
सवैया ॥ जगमें अपने अपने मतिलागि कहें कवि वाद वृथा
मरमै ॥ सब कोउ वहहैं इवो नंदके नंदन व्यापक है जो चराचरकैं ॥
बरहैं तमसैं विननी रकह सब प्रानि समान है सागरमैं ॥
जिय सोच सो कहा है कीहे वा कैर वश्राप मिहै नरनागरमैं
रप्रकास ॥ अपने अपने मतसैं साजिवे ॥ हेतर प्र हेत वसिवू
हे तो इत्यादि हेलागे ॥ वे वाद करि होर मचावत हैं ॥ किंवा वादिवृ
था होर मचावत है ॥ ज्यों त्यों सबतर हसो सबही को एक नंदकिसो
रके हे पवो जोग्य है किंवा वडी संपति है पनो वडी सायत्री
सो ॥ सोइ है न हैं तो भजन विवैं ॥ जो कछु विसै सो वरछइये
तलसौ जीके दसव डायपे ॥ वातको नें वेधजतायके
पवै सोरके सव नो ठहरायो ॥ पर संख्या ॥ वर संख्या इक
पक्षवारक हूजे पक्षठहराय ॥ इती श्री मूलटीका दोउ स
माप्ता ॥ अथ कृष्णचंद्र कारुन्नीकी प्रार्थना ॥ दोहा ॥ हे चिनउंस
ते सवनके चरनकमल सिरनाय ॥ अगाह करौ तिहलोकमैं
कविता जाहि वृह भाय ॥ १ ॥ सोक विना है आंतरी अपार व पोरव
जोन ॥ आवरहरअस उनन कृत नरकृत पोरव मानि ॥ २ ॥ पो
रखक विना त्रविध है नरसव कहि तावमानि ॥ अपर दृवानीव
हर प्राकृत भाषा जानि ॥ ३ ॥ सब्द तो हैं तिन सो भाषा बहु प्र
कार ॥ वरनन तिन सवनमें गासिर संसार ॥ ४ ॥ वृजभाषा
भाषत सकल सुरवानी समतूल ॥ ताहि बखानत सकल

देस भाषा भनी कविन बहु विध बुद्धि विलास॥ सबको मत अनुसार सत
है करी बिहारी दास॥६॥ जो कोउ रसरीति को समझ्यो चाहै सार॥
पढै बिहारी सतसई कविता को सिंगार॥७॥ उदय प्रकासै ग्र
बनि पै सब बड़े या के चाहैं॥ जनता बिहारी सतसई कविता कै
सिंगार॥८॥ भांति भांति अर्थ बहु याके रहत अपार। जापर सनै
रसरीत कौं मन सम्मत अनुसार॥ विविध नायका भेद अरु
अलंकार नवनीत॥ पढै बिहारी सतसई जानै सब रीत॥
१०॥ ऐसे राजा प्रगट पुहमि धर्म अवतार॥ विक्रम सिंध जय
साहि जू जेहि विहंड उदार॥११॥ तब बिहारी दास सों तिन कीनो
प्रति प्यार॥ बहुत भांति सनमान करि दीनों सब प्रकार॥१२॥ राजा
श्री जय सिंह के प्रगट तेज समाज॥ राम सिंह उनके भए
मनपति गरीब नवाज॥१३॥ कृष्ण सिंह तिन के भए बहुरी
जे कुमार॥ विष्णु सिंह तिन के भए सरन कै प्रवतार॥१४॥ महा
राज विसन सिंह के धर्म धुरंधर धीर॥ प्रगट भयो जय साहि नृप प्रग
ट सवाई वीर॥१५॥ प्रगट सवाई वीर के मंत्री मति सुबास॥ नाग
र अनन्त सील को नगर परम उदार॥१६॥ प्रावस सुत प्रबंड जेग
सो है तो हे जानकार॥ राज को नौकरि कृपा महाराज जय साहि॥
१७ मन वच क्रम सों भगत हरि तिन को दार॥ वेद वचन
निज धर्म को ताके दृढ विश्वास॥ १८॥ श्री कुल सिद्ध तिये भए
वे है जगत विख्यात॥ पर दुख बैरी खंड नौ संड न उन प्रवदात
१९॥ लाल दास निज सलिल गुन प्रगट भये तिस वंस॥ राम
चंद्र तिन के भये तिन कौ जस प्रवतंस॥२०॥ महाराज जिन के
भाग तिन के गुन प्रबंध दान॥ राय तजा व सहज सुत मनउ ता जो ति
न के सो न॥२२॥ तिन के प्रगट हो तीन के तत विक्रम बुद्धि निधान॥

निछन्द दान करमान॥२२ राजाग्रा वामल्लज
रतकल्ला सलगायके [illegible] यास भग रस्न पसुमग्र
ग विदनराव सिवदास॥ लसतनरा [illegible] सोहाव निबेत्त॥ राजणप्रा
कास॥२३ लीलिजै गल वि सोरकौरसलो हौ कवैर कुल सहेतो
वामलूकैपाक विनाके हेत॥२४ माचुरत्रग्र कवैर कुल सहेतो
कृष्ण कविना॥म॥ सेवक है सवककवित्तकौ बालनमध्ये वरी गाय॥२५
राजमल्ल कविकृ सरछेरत्न पावककार॥ भांतिभांति विवदाहरी दोनी
पर्वगप्रकार॥२६ एक रनाक वि हैोन्हव तिकहि कहै कैों जान॥
दोहा दोहा वरकरैो कवि श्र बुद्धि प्र विदान॥ वहू सेदहू मैरवहैहि
वमैहतैविचार॥ करैनाय कामेद हैोंग्रं पबुद्धि प्रकैसार॥२८
जैकै नेके नेदर्वेक तिनसार सगं चसुवदाय॥ तिनहू
छाडिमैर कि वित्तकेयाठिहै चित्तलाय॥२९॥ जानि उहरम दने
दिवे विवेनग्रंथप्रकास॥ नवयेग्राछसपायके हियमै भवैोहुल
स॥३०करे सातसे देहराव विरविहूदीदास॥ सवकोई तिनकैाव
डैउनेस नेस ~~ससस~~ तिलास॥ वडे भरैसैोजानिवे गलेप्रा
सरैग्राय॥ वाने उनेदोहा नसंगनेकवित्तलगाय॥३२ जैतिउ
त्तिदोहा नवे ग्रंथतर जोर नवीन॥ करे सातसैदिल वितनैसैो स
सवसप्रवीन॥३३ सैग्रतिठेोबरैक विहि कुलसरलरु
भाव॥ सरलचूक कछु हैपसौ लीजौ समझितनाय॥३४ सत
हैहै ग्रागरे[illegible] सैोवरस विचार॥ कातिगवदी चउर्थी भयाकवित्त
सकल रसलार॥३५॥ इति श्री कृष्ण संद्रका समाप्तः हरिप्रकास
करिताको प्रार्थना॥ दोहा॥ जद्यपहैहैो भासहजऊ तनानाउस
देह॥ ताहै छारकुठैरके लरहैहा तविहेव॥ रसालग्रामसरज
जहां चित्तीगनग्रावार ग्रंतकालसमैदेहसो हरकविकोदरसाया॥२

२५७
२५३
253

सिवइहुं संभ्रम बहुत रूप नवरस रस सारा॥ कहुं सृंगार कहुं वीर रहु
निकहै लै हंसकरुना [illegible] जगसबि सारवै प्रान नायका जो
नाम॥ सप्रसिद्धि तिन सों पढी सब सिंगार वढ नाम॥ ४ ॥ जनकनं
दन सिंगार वर्णनको लक्षन विपन लखे देस॥ [illegible] सम हेतु जाहि
देषत होत तब हेत॥ ५॥ एसोहि श्री नंदके नंदन सौं उ लक्षन हान
ऐसो है लावे [illegible] मोहन सो जन मान॥ [illegible] नाम महा उदार
न जिन्ह प्रौढ जानिये काहि॥ संपति [illegible] दामा वै दई ई प्र सहीन
हि जाय॥ ७॥ [illegible] सम्मत ता ते विध वात सल भाय॥
राधा नाम कहै सजै प्रान पर कै नवढा या॥ ८॥ सेव [illegible] प्रकार कहै सो
वि नै ताकर तीस रचना॥ [illegible] वो कृष्णचरन मन धा
रि॥ इति श्री हरि कवि कृत [illegible] प्रकास वि[illegible] नया की [illegible]
[illegible]॥ श्री रघुनाथाय नमः राम राम राम [illegible] राम राम राम राम

दोहासंख्या		अंकदोहा			
					१
१	अत्रवतदोहा	१	१९०		१
२३	~~...~~धिवर्न	३	१११		१
२६	~~...~~ जोवनव	६	१९२		१
३२	केसवर्नन	५	१९३		२३
३६	ग्वलकवर्नन	१	१९६		२०
३७	बेंदीवर्नन	७	१५७		६
४५	टीकोवर्नन	२	१६२		९
४६	भौहवर्नन	३	१६८		६
४९	नेत्रवर्नन	२०	१७३		४
७२	चितमनिव	२९	१७७		२९
८४	नासावर्नन	६	२०६		५
९०	श्रवनव	१	२११		२८
९१	अधरव	१	२२९		२२
९२	चिबुकवर्नन	५	२४१		२
९६	दिठौनावर्नन	२	२४२		७
९४	बेनीवर्नन	१	२६९		२
९८	कुचवर्नन	२	२६०		१७
१००	[illegible]वर्नन	१	२७७		२

२५५

254

254A

२५५

255

255A

२९९
२५९
256

२६ तौ तलपमता (वनीर)

४	तजि तीरथ हरि साधि	१	२५१	तरहरि हो हो लघोव	२२
२२४	तरवनकनकवचोत	२	३५५	तोहु तारेरे त्योरकरिकत	२३
१२६	तनम्हवनग्रंजनहगन	३	१३२	तोजपरवसों तिनसजे	२४
१५९	तजतग्रठानमहठवले	४	५५	तोलछिमोमनजोरही	२५
२०१	तजीसफे सकुचतनहि	५	४५३	तोरसरत्येप्रामनवस	२६
३९१	तसनवोकुनरवरवरन	६	२६१	तोपरवोरेउरबुसीस	२७
३३४	तनव[illegible]निसवारसी	७	४६२	तोहिसोंछृमानमोर	२८
५३०	तोज्योग्रावग्रतिविरह	८	१६७	तोतनिग्रविधग्रमण	२९
५४४	तरुरसीउपरगरीव	९	२२२	तोग्रनेकरग्रेगुनमर	३०
५८९	तावनतोजतावुतनाव	१०	२५१	तोहिनिरमोहि लग्यो	३१
४४	ताहिदेखमनतीरथन	११	६०९	तोलगयामनसदनमे	३२
२४	तियतियतरनविसे	१२	७२५	तोपवतिहे मलिवेत	३३
४३	तियमुखलखिहिराज	१३	२६३	त्योत्योप्यासईरहिता	३४
७५	तियकितकमनेतीपठ	१४	६२०	तेत्रीनादकतितरस	३५
५७१	तियसरसोहितिनतिः	१५		३०७	
५७३	तियनिजहियजस	१६	२८	थकारादि	२
१६८	त्रिवलीनाभदिखायकर	१७	१८२	थाकीजतनग्रनेक	१
३९८	तरतावततवेसुर	१८	७०२	थोरेइगुनरिजतेविस	२
४६३	तेहितिवरितोहेप्राव	१९		३०९	
२८५	तेसोहृनमनगहिर	२०	१९	दकारादि	३६
२९९	तमतिमानेमकत	२१	४६१	देहनिजोडेनैनतग	१

२५८

257

३५२	छिन कउ बारत्त छिन	१०	५५५	जरिव तेजो [illegible] हा लवल	११
२५७	छिन छिन मे घट कतास	११	६२४	जगत जनायो जि	१२
२३	छूटीन सिर ताकी रलक	१२	६०५	जय माला छाये	१३
४५	छूटै छूटा वै जगताते स	१३	६०८	जमकरि मुह तरह	१४
७७	छूटै न लाज न लाल	१४	६२५	जरि वहरा ने कव	१५
२१८	छूटन न पैयन छिन नक	१५	२१६	जालरंध्र मग अग्नु	१६
३९६	छूटु छिउ नीप दुबोलि	१६	२३५	जात सयान अजा	१७
१५४	छिन क चल तहहकत	१७	५३५	जातमरी विछुरत	१८
५६१	छुटत मुठी संग ही छुटै	१८	६७४	जावक एको एक हूजा	१९
[illegible]	~~२१३ जनकरादि~~	[illegible]	६९६	जान जात वितहार	२०
११	जनकरादि	४४	४२७	जिह आविन न मत	२१
६	जहां जहां ठाढो लखो	१	५२५	जिहि निदाघ दुपहर	२२
६३	जदपि च वाव नचीकनो	२	६६२	जिहि दिन देखे कुसम	२३
२४	जदि नामी लम नि जगम	३	६६	जोरे दुहू नव दूगम	२४
८६	जदि पहलो जल लितो	४	३१५	जउ बति जो [illegible]	२५
७३१	जरिके अरगोरे वद नमैयो	५	५६०	जउ जै उ अ विसाप	२६
१२७	जहां पर्स रर सुधर	६	२२०	जोतव हात ते बारि	२७
२३६	जस अपवजस देखत	७	६२५	जोतीसंपति कुपन	२८
३४३	जरि [illegible] नाहि नाहीन ही	८	५०	जोग अगात सिख	२९
५१६	जब जब वे [illegible]	९	४११	जो तिय तनमनम	३०
६७८	जन जलधि पानिय	१०	६५०	जो सिर धर महि मायं	३१

237A

३३२	ग्र्रंथ्री निउ चिमतभी	२२	५२५	ग्रैंधाईसीसीस्तलः	३७
३५५	ग्रवनेकरिग्रहिग्रा	२३	६१८	ग्रोरसवेहरली फिरैं	३८
५१५	ग्रवत्तजिनामडवाय	२४	५२२	ग्रंत्तमेरैंजेत्तालिजरैं	३९
५८३	ग्ररुनसौं [illegible] हूकरव	२५	१४७	ग्रंजग्रंगान [illegible] जगम गनगन	४०
४२५	ग्राजकहू ग्रैरैग ए॥	२६	१५४	ग्रंजग्रंगप्रतिविंवदर	४१
४५३	ग्रातेग्रावभली करीमट	२७	१५५	ग्रंगग्रगच्छविकीन लेक	४२
४६८	ग्रावदयोमनते रलैण	२८	३८५	ग्रोरैंग्रावन नीनव न	४३
५०२	ग्राउदैग्रालेवस नजा	२९		४३	
५५१	ग्रावैभीतविदेस न	३०		३कारादिदोहा क्रम	८
५८७	ग्रावत्तजाननगारी निवै		२७	३कभीजेचहलैवेरबू	१
६२५	ग्रोद्धवडैनहै हावैहैं	३२	२००	३त्ततेउत्तउत्तैडत्तौद्धि	२
७२	ग्रैंनत्तसीत्तितमनि फिरे	३३	२४५	३नग्रविद्याउछियान	३
२४३	ग्रोठउवेहांसीमंशी	३४	५६६	३हूवेसंत्तनवरीगरम	४
३८०	ग्रोरैगतिग्रोरैव चनै	३५	५१५	३दविनसत्तनगराछि	५
५१८	ग्रोरैअंत्तमतम	३६	६६३	३हैग्रासग्रटकेयोरहेतो	६

.५५

५२ र ना प्रावना च लिप्यातिउम

258

६२५	३२ विरिवानि रिझ्रौ रकी	७	४४४	एसीयहृतेरीदई कीथे र	
८८	३६ हेई सोप्धी सुग ध	८		कलारादि॥६८	
	३कारादि दाहा क्रम ५५	११	३४	कावसप्रेरिकारध्यम नल	१
२२८	३रम्यानकी ३रव सी	१	३६	कुहितासचै तैं दीदि टेउना	२
९२	३३ताउ डौलब ला लेकी	२	६२	कहिताननिजरीत त	३
१८	३ निहरकोहस केर है	३	७८	करेबाहि सेंचुठि विवे	४
२०७	३२३२ चौवित चोरसं	४	२८१	कहि लहि कौनस बैउरी	५
२०२	३२ लीलेरवनचर पटी	५	१५२	कटुतिग्रमिलग्र छै छ	६
२१६	३नक्वोहितउ नहि वनै	६	२७	करतिजातिमोती कहनि	७
२४६	३२ केसवजियकी कहि	७	४०२	कतसकुचतनिध रकु	८
३५१	३२३ठावधं घरकर नो	८	२८५	कहाकुसमकहा कोम	९
५८०	३ठि ठकठकत नौ कहा	९	२८७	कहितासवेकुवि कमलाहे	१०
६१७	३चैवितै सराहिय नो	१	२८०	कहाकेहोवाकीद साहि	११
३२४	३जोसरदराकास सी	११	२८३	कहालडेतेदगवि एव	१२

६६ ॥

(२५)

259

१४६
५२८
१

[illegible]	दृतन चिपद्वै वामवध	२	६३४	दुसह दुराज प्रजान कौं	२२
५७	दृग[illegible]गन वेधत जाहि	३	७६	दूहौ बरे सभीत वकौं	२३
१५४	दृग उरझत टूटत कुटुम	४	६५५	दूरभजत प्रभु पीठि दै	२४
३५४	दृग मीचत मृग लोचनी	५	२९	देह दुलहि की बढ़ै	२५
६१०	दृग थिरकौंहैं अधखुले	६	१३६	देखी सोन जुही फिरत	२६
५५५	दृष्टि जु[illegible] चित	७	१७१	देख्यौ अनदेख्यौ कियौ	२७
[illegible]३४	दिसि दिसि कुसुमत दे	८	२१४	देखौ जागत वैसियै	२८
६२२	दिन दस आदर पावकै	९	२२२	देह लग्यो ढिग गेहपति	२९
२८२	दियौ जु पी सीस चढ़ाय लै	१०	२६६	देखत चुरै कपूर लौं ॥	३०
२५२	दियौ अरघ नीचे चलौ	११	२७३	देखत कछु कौतुक इतै	३१
६५	दीठ परत बाँधी अटनि	१२	६२२	देवर फूल हनै जु सिसु	३२
१४१	दीठ न परत समान दुति	१३	३२८	दोऊ चाह भरे कछू चाहत	३३
३३५	दीप उजेरें हू पतिहि हरत	१४	३७३	दोऊ चोर मिहीचनी खेल	३४
७०	दीरघ साँस न लेह	१५	४३४	दोऊ अधिकाई भरे	३५
२७३	दुरत न कुच बिच कंचुकी	१६	५५१	दै जु सुधा दै धन कुला	३६
१६५	दुसह सौति सालै सुहि	१७		३४५	—
२२५	दुचितै चित हलति न चलत	१८	२०	घकारादि	२
२४५	दुरत हार वन चरचा नहि	१९	५५२	घनि यह है जन मँह लखौ	१
२२५	दुरै न निघरघटौ	२०	४५५	घनम आन ठिग प्रान वति	२
४२६	दुसह बिरह दारुन दसा	२१	५७६	घर ना हू पन प्रति उठो	३

.५५

६०

260

धरतार

७ अथविरहलठनीविपाध्रु

७२१	निजरूपजीसकुंवे	३२	३२४	पवरंगरंगवेदेवनी॥	५
४५	नीकैतलसतालूसा	३३	६४४	पहरजहिजोरेगरे	६
७४	नीचीपैनीचीलि	३४	३०२	पलनचलैजकसीरहीं	७
३२५	नीठनीठउछिवेठहू	३५	३४१	पतिरतिकीपाचिपोकहै	८
६२६	नीचहुवेहुलहेरै	३६	३४४	पसोजोरविपरीतरति	९
६२८	नीकीरईश्रनाव	३७	३९७	पलनदीकउंजनदृगन	१०
३२०	नेरनैनैननकोव	३८	३९३	पहुवकीछिगकजठोविपत	११
३००	नैकहूहोंहितान	३९	४२५	पलनसेहरभीतीतरंग	१२
३२५	नैनलगेतिहलग	४०	४२३	पहुसोंतोंछिपरीकरै	१३
३४२	नैनानैकुनमान	४१	४३०	पतिरतिरश्रोउजउनगन	१४
३८१	नैकनजानीपरत	४२	४५१	पलनप्रगटवरनीनिवरु	१५
३०६	नैकेउइनकदीप	४३	४५२	पजलतेप्राभिविषेमिकी	१६
३६०	नैकउतैउठिवैठि	४४	६००	पहुलाहूरहिवेसहैस	१७
५२३	नैकनकुरसोविरह	४५	६४६	परनीपदोठतालसुनि	१८
५८१	नैनकरेगमग्रलव	४६	६५६	पठपाबेयछकेकठोसप	१९
	३२४		६९३	पनवारिमासालतकरि	२०
२२	पकासहिरहू॥	४४	३०७	परसतपौंछलाविरह	२१
६२८	पहचतिउतृरनसम	२	६३६	प्रतिविंवजनपसाहदुति॥	२२
२४५	पत्राहितिथपारवे	२	१२	प्रलपकरनवरसनलगे	२३
१२२	पगपगमगग्रगम	३	७०४	प्रगटमधेहिजारजकुल	२४
२११	पहिरनमसनकन	४	५९२	पावसघनअंधियारमें॥	२५

५७३	पावस प्रगट ऋतीर रंग बनला	२६	५८	फिरि फिरि दौर दिखि	१
४७	पाय पाय लगी रहे ले	२७	१२०	फिरि फिरि [illegible] उत्तहीर	२
२२४	पापन [illegible] उच्च पद	२८	२४६	फिरि फिरि [illegible] कहि	३
२०८	पाय महावर देन कौ ना	२९	२७८	फिरि फिरि बिलखी है ले	४
४०३	पावक सो नैनन लगै	३०	४२०	फिरि [illegible] प्रगट [illegible]	५
५७६	पावक झर ते मेह झर दाह	३१	५६७	फिरि घर को नूतन	६
६२८	पाहो सोर सुहाग कौ	३२	५०८	फिर सुधि दै सुधि	७
६३५	पाहे दुपहर जेठ के	३३	८२	फूले फदकत लै फ	८
५७२	प्राण प्रिया हिय में बसे	३४	३९३	फूली फाली फूल सी	९
९७	प्रिय प्रिय प्रिय [illegible] के कहै	३५	२२८	फेर कछू करि [illegible]	१०
२०४	प्रिय के ध्यान गही गही गही	३६		४४८	
२९९	प्रिय मन [illegible] चिहुँ [illegible]	३७	२८	बकारादि	४२
५४२	प्रिय बिछुरन को दुसह दुख	३८	५५	बरजी [illegible]	१
५०१	प्रिय प्रानन की पाहरु	३९	१५३	बर [illegible] कमार	२
५५८	पीठ दिये ही नेक मुरि	४०	२८७	बसि सकोच [illegible]	३
३५५	प्रीतम दृग मीचत प्रिया	४१	२३४	बन तन [illegible]	४
२२८	पूछे क्यों रूखी [illegible]	४२	२६६	बढ़ि [illegible]	५
४८१	[illegible]	४३	२८४	बड़े कहावत आप	६
२२३	प्रेम अडोल [illegible]	४४	३५४	[illegible]	७
	४३८		३६६	[illegible]	८
२३	फकारादि	२०	३२२	[illegible]	९

५० बाही की चित चटपटी २८

२६१A ९ वारैंबलिजोदृगनवरपा · ५ · वादृलखेषसोयनलेगर ·

५३३	वनवी [illegible] वृकवदनरा	२०	५०४	विरहजो काई देहनेरु	३४
६२५	वरुधन [illegible] व्रदि सा	२१	५०६	विरहविषमदिनवरना	३५
६४४	वसंततुराईजासुताव	२२	५२४	विषसनननवतल्लीकुस	३६
६४२	वढेनह जैजुननबि	२३	५४२	विरहविषाजलधरज	३७
६४९	वढ्ठिनवढ्ठिनासपाति	२४	५४४	विरहतितासविनही	३८
६६५	वहिकवमुईरमाछनी	२५	५५६	विछुरेजितसकेचडु	३९
२२५	वहिविनवहवहना	२६	६०६	वहसननसकुवतसौवि	४०
६२९	वृजवासिनकेउवितदे	२७	६८२	विषमवृषादिककीन	४१
२५०	वासुधवीलीतिपन	२८	६६०	वुरेवुराईजोतजेजोगि	४२
२२७	वालवेलिसखीसुख	२९	६८८	वुधिअनुमानप्रमान	४३
२११	वामताभाहेकररहे	२०	८५	वेधकअनिपरनयन	४४
२४५	विनतिपरजिविपरीत	२१	८९	वेसरिमोतीधनतही	४५
२९०	वालकहालालीगही	२२	८७	वेसरमोतीदुतिझलक	४६
७४३	वालमवारीसौतकीसु	२३	२३५	वैंदीभालतयोरमुख	४७
४४६	वाछतोउररजमारख	२४	५८०	वैठिरहीअतिसघनव	४८
४८७	वामाभामाकामिनी	२५	७०१	वंधमयेकादीनके	४९
५४९	वामवाहफरकतमि	२६		४९७	
२७७	विहसवुलायविलोकि	२७	२९	मकारादि	३३
४२६	विलखीलखेखरीखरी	२८	११४	मईजुतनछविवसन	१
४४२	विधुविधुकेनिकरे	२९	४९७	मनवडाउमोहतजि	२
४७१	विले [illegible] केहवष	३०	६९२	मजनकसौतातेमजैयार	३
४७७	विलासीउनकोहैचष	३१	११९३	मउटीमपवुनवीनच	४
६७५	विथुरोजावककेसौति	३२	३९	मालसालवेदेछत	५
६९५	विरहजरीलखजीगन	३३	२६	मावकउघरोहोमयो	६

विषमसौंतितजेधवनाईछी ।

५२

262

४१	आसलालवैदे [illegible]	७	१८५	मा [illegible] मनी	१२
६६१	आमरिग्यनुआमरिम	८	४३०	मानंद [illegible] जतनहै	१३
१५७	रत्न नमारिवमारि	९	४७०	माहेरम उहारनगयो	१४
३२२	मेटनपनतानआमा	१०	५६०	मारसमारकरीवरी	१५
७१	मोह उवेग्रांवरउलटि	११	१७	मिल [illegible] हसिजैा	१६
३२९	मोहनग्रासदिसलन	१२	४२	मिलवंदनवेदीरही	१७
५२६	मोहरग्रेसौईसमोन	१३	३३३	मिसहिमिसग्रातवदू सह	१८
	५१०		४८९	मिलचहिचलिहि	१९
२६	मकोतारि	५१	५८६	मिलविहसाविहुरनम	२०
२७४	मननधरतामेरोव	२	६५३	मीतनजीतगलीत	२१
३०९	मनमोहनसोंमोह	३	३६५	मुखउघारटेकोलहि	२२
३९९	मरकताभाजनसलि	४	४३१	मुहमिठासहगचीक	२३
४२४	मरिवेकोसाहसकवे	५	६०७	मुहधोवतिएडीघि	२४
४५६	मननमनामनकोव	६	६०५	मुखपखारिमुडहरमिजैर	२५
५१३	मरीडरीकिहूरीविप्पा	७	५८८	मुगनैनीहगकीफर	२६
५१३	मरनमलोवरविरह	८	६७५	मुंडमुंडावहूरहित्त	२७
५५२	मलिनदेहवेईवसन	९	१	मेरीभवबाधाहरोराधा	२८
६९३	मरतप्यासपिंजरव	१०	३४६	मोरेवूरेवातातकफताम	२९
९८६	मानोविधतनअछ	११	२६०	मोनरजीवैवारकहू	३०

१६/मकराकृतगोपालके २

५० मोह्.गरीसोटी २६.३५

२४०। मेनोसंमेतीलीकीसी ३४

२६३

263

४०५	रहोचवि[illegible]नाचहुघो	१३	३१	[illegible] चनतन	१
४२५	रहाकी[illegible] नसखिमुरी	१४	८०	लासनहै [illegible] नाटोठचेो	२
४८०	रहि[illegible]चेचलप्रा[illegible]	१५	९३	ललिता[illegible]मलीर्सल	३
५३१	रहोप्रेचग्रं तानललतो	१६	१०५	लर्ग [illegible]नलगीसीज	४
५५४	रहूचसोहुऔमिलनातिय	१७	१२५	ललन[illegible]लसाहिपक्र	५
५९२	रसमिजाएसङुहूल	१८	१९५	लईहोहसीस[illegible]ननसी	६
५९०	रहि[illegible]नसकोसवजागत	१९	२६२	लति[illegible]लटवकु	७
५९४	रनितम्रंगधेटावली	२०	२५०	[illegible]केवेकेविसनले	८
५९५	रहोलकोकोहुङचलि	२१	२७२	[illegible]वेपनलके	९
६१९	रविवदोकरिजोरवे	२२	३२९	लाहि[illegible]प्रभुसहेतो	१०
६३५	रहि[illegible]नजपसास्स	२३	३३६	[illegible]लिपकरक	११
५६५	रंगटाजी टानेहिये॥	२४	३५०	[illegible]प्रलहिये	१२
३४९	र[illegible]रंगरंजतियहिये	२५	३७८	[illegible]लिपनाद	१३
३४७	रंधतहतिहरिराधिका	२६	४४८	ललनसलोकेप्रत्ये	१४
४५९	रातिदिवसिहोसेहित	२७	४५१	लमो[illegible]नहूंहैसफल	१५
४३८	रहत्रीविसतेमलब	२८	४५५	लहि[illegible]जनविवकम	१६
४२८	रकोसातरीकुंजमा	२९	४८४	ललनचलनकनपलन	१७
१६४	रत[illegible]धाप्रासवहको	३०	५८८	लगति[illegible]गिसीतास	१८
१५६	रचमलखिपतनादिर	३१	५९७	लपटीपहुतताराग[illegible]	१९
	५९८		४८२	ललनचलनकल्लि	२०
२१९	लाकातदि	३६	६३०	लटकाले प्रभुकरगाह	२१

२१	लाजग[illegible]मदन	३	३१६	वोई गहि[illegible]	६
२५	लाखग्र[illegible]सर	२३	३३	[illegible]ईकर दोर[illegible]	७
५०	सागनकुहि[illegible]	२५	२९२	बेठाके उमाहि[illegible]	८
२११	लावदि हारे [illegible]	[illegible]	४०	वेई जानीवरत	९
२०६	लाजल गामन मानही	२५	४५२	वाहि [illegible]नामि	१०
२६५	लाईलालति[illegible]	२७		२४४	
३२६	लाजगर[illegible]	२८	३१	[illegible]सारि	११
३५७	लाखल लहि[illegible]	२९	१	[illegible]कुजनह पाल	१
५११	लाल[illegible]हरे[illegible]	३०	७	साहि[illegible]गोपाल[illegible]	२
२६६	सिवन वे ठि[illegible]	३१	४६०	सन[illegible]बेवचन	३
६७	लीने[illegible]साह[illegible]री				[illegible]
२.५	[illegible]जल[illegible]	३२	४२६	सवे[illegible]नविरस	४
१४	[illegible]वे[illegible]	३४	१४७	सवे[illegible]ताकर तारे	५
२५८	[illegible]रतपदे	२५	६५३	[illegible]सवे॥	६
९६१	[illegible]नसज	३६	७१६	सव[illegible]	७
६२४			६६४	सरसकु[illegible]	८
३.०	[illegible]तारि	१०	३२	साहि जसहि[illegible]	९
२.४०	वाहि लखेलोइ[illegible]	१	३७	सवे[illegible]॥	१०
[illegible]	[illegible]गनवर	२	६१	सतहि[illegible]	११
	[illegible]केविनु[illegible]	३	६३	[illegible]गकर[illegible]	१२
	[illegible]नागर[illegible]	४	३३८	सकु[illegible]	१३
	[illegible]वीग्रमर	५	७३	[illegible]सी	१४

२६ 264

264

॥ सीसरदाय हूं हूं ॥

264

३५१	सखनिकबनातेबिचना॥	१५	६०५	सखारयसुजानं	३५
१७१	सखिकेजुसमहारबसन	१६	५००	सीरेमननन नाहि	३६
२०६	समरसमरससकोच	१७	२	[illegible] नूकाटि	३७
२५५	सहितासकेहसकोचबस	१८	६०६	सीतलतासरुगं	३८
५२४	सविनदनीमोहोनक ह	१९	५१	सदुगिदुराईदुरना	३९
२७१	सनसूकौपीत्येबनौ॥	२०	२१३	सुबसोवीतीसब	४०
३१२	सघनकुंजघनघन	२१	२३६	सरजनमालसजा	४१
२४०	सकुचसुरतिरंभारंभकी	२२	४०१	संरंगमहलरहौ	४२
२५१२	सरससकुक्रिससकारंग॥	२३	४१०	स्वमहमहौकिमग	४३
३५८	सहीरगीहेरतिजगे	२४	६०३	समबगल्पलिविजई	४४
३२९	सदनसदनकेफिरन	२५	५०८	सनतितवधिकज्यहू	४५
४४९	सकुचनरहि के साम	२६	४१३	सघरसोकितनाहि	४६
२१९	सहिजसेतनचकोरिया	२७	५४२	सोनाजिसदनेस्याम	४७
२०९	साखीसबाचजिमानति	२८	२०	सोहतओढेस्याम	४८
१३२	सामाहेनसबनका	२९	१७	सोनजुहीसीजगम	४९
५१	सावकसमगायकन	३०	२६४	सोहतधोतीसेतमे	५०
१२७	सालतिहैनटिसाल	३१	४३४	सावतिलछिमनमा	५१
१२५	सारीडारीनीलकी	३२	५२०	सावतजोगतासबन	५२
२३०	साजेमोहनमोहकौ	३३	६५४	सोहतअंगसमानै	५३
५३१	सबमकुरतिबतिरा	३४	४३९	सोहतचाहीनतै	५४



			...ह [illegible]
			...ति [illegible]
...रवा	[illegible]	५४२	सो॰ [illegible]
...रतिमानति	२८	२०	सो॰ ह [illegible]
...न सब[illegible]	२९	१७	सो॰ न [illegible]
...क सम माय[illegible]	३०	२६४	सो॰ ह [illegible]
...लति ह नरि साल	३१	४३४	सो॰ [illegible]
...री [illegible]	३२	५२०	सो॰ [illegible]
सा जे मोह [illegible]	३३	६५४	सो॰ ह [illegible]
...स[illegible]	३४	४३६	सो॰ ह चा[illegible]